हिन्दी
काला मोती
ब्रह्मकण शक्ति
6
Ring of Atlantis
शिवेन्द्र सूर्यवंशी

काला मोती

ब्रह्मकण शक्ति

Shivendra Suryavanshi

कॉपीराइट © 2021 शिवेन्द्र सूर्यवंशी

सर्वाधिकार सुरक्षित

यह उपन्यास पूर्णतया काल्पनिक है। इसका किसी व्यक्ति या घटना से कोई सम्बन्ध नहीं है। इस कहानी का उद्देश्य किसी धर्म या संप्रदाय की भावनाओं को आहत पहुंचाने का भी नहीं है। यदि उपन्यास में किसी स्थान या घटना की जानकारी दी गयी है तो वह मात्र उपन्यास को कौतूहल वर्धक व मनोरंजक बनाने के लिए की गयी है।

इस पुस्तक का कोई भी भाग लेखक की लिखित अनुमति के बिना, पुनर्प्राप्ति प्रणाली में पुनरुत्पादित या संग्रहीत नहीं किया जा सकता या इलेक्ट्रॉनिक, मैकेनिकल, फोटोकॉपी, रिकॉर्डिंग, या किसी भी रूप में अन्यथा रूप से संचारित नहीं किया जा सकता है।

लेखक की कलम से

ॐ नमः शिवाय

"प्रचंडं प्रकृष्टं प्रगल्भं परेशं। अखंडं अजं भानुकोटिप्रकाशं॥
त्रयः शूल निर्मूलनं शूलपाणिं। भजेऽहं भवानीपतिं भावगम्यं॥"

अर्थात् प्रचण्ड श्रेष्ठ, तेजस्वी, परमेश्वर, अखण्ड, अजन्मे, करोड़ों सूर्यों के समान प्रकाश वाले, तीनों प्रकार के शूलों को निर्मूल करने वाले, हाथ में त्रिशूल धारण किए, भाव के द्वारा प्राप्त होने वाले भवानी के पति श्री शंकर जी को मैं भजता हूँ।

तो दोस्तों इन्हीं कथनों के साथ मैं शिवेन्द्र सूर्यवंशी एक बार फिर आपके समक्ष अपनी नई पुस्तक 'काला मोती' को लेकर उपस्थित हूं। दोस्तों यह पुस्तक 'रिंग ऑफ़ अटलांटिस' सीरीज की छठी पुस्तक है। दोस्तों मैं चाहता था कि मेरी पहली ही रचना कालजयी हो, जो कि पाठक वर्ग को सदियों तक मेरे होने का अहसास कराती रहे। मेरे लिये मेरे पहले कथानक की रचना करना एक भव्य सपने के समान था। मुझे नहीं पता था कि लेखकों के इस असीम सागर में मैं अपनी उपस्थिति का अहसास दिला भी पाऊंगा कि नहीं? परंतु आप लोगों ने जिस प्रकार से मुझ जैसे एक नये लेखक की रचना का स्वागत किया है, उसके लिये मैं आपका हृदय से आभार व्यक्त करता हूं और यह आशा करता हूं कि जिस प्रकार आपने मेरी पिछली पुस्तकों को प्यार व सम्मान दिया है, उसी प्रकार से आप मेरी इस पुस्तक को भी अपने नेत्रों की कृपादृष्टि से अभिसिंचित कर मेरा उत्साहवर्धन करते रहेंगे।

दोस्तों इसके पश्चात् मैं आप सभी लोगों से दिल से क्षमा मांगता हूं क्योंकि पहली बार मैं अपनी पुस्तक को, उसके दिये हुए निर्धारित समय पर प्रकाशित नहीं कर सका। ऐसा मेरे परिवार में आई कुछ अकस्मात् परेशानियों के कारण हुआ था। बहुत से पाठकों ने मुझे सोशल मीडिया और ई-मेल के माध्यम से अपना संदेश भेजा और 'काला मोती' पुस्तक के प्रति अपनी चिंता व्यक्त की। मैं उन सभी लोगों को हृदय से आभार व्यक्त करता हूं, जिन्होंने मेरी परेशानियों को समझा और ऐसे बुरे समय में भी मेरा उत्साहवर्धन करते रहे।

दोस्तों आपकी अपेक्षाएं मेरी प्रत्येक अगली पुस्तक के लिये बढ़ती जा रहीं हैं और आपकी यही अपेक्षाएं मुझे प्रत्येक अगली पुस्तक को बेहतर और बेहतर लिखने की प्रेरणा दे रही है। मैं नहीं चाहता कि किसी भी पुस्तक को शीघ्र प्रकाशित करने के चक्कर में, मैं उसकी गुणवत्ता और कथानक से कोई समझौता करुं? मुझे पता है कि अच्छा कथानक वही होता है, जो किसी भी पाठक को प्रारंभ से अंत तक अपने सम्मोहनपाश में बांधे रखता है। इसलिये मैं इस सीरीज की आखिरी 2 पुस्तकें लिखने में अपनी समस्त शक्ति और कल्पनाशीलता को झोंक देना चाहता हूं, जिससे मैं इस कथानक का अंत सर्वश्रेष्ठ तरीके से कर सकूं। इस कार्य के फलस्वरुप मैंने इस पुस्तक में चैपटर एवं पृष्ठों की संख्या को थोड़ा और बढ़ा दिया है। परंतु मुझे ऐसा विश्वास है कि आपको इस पुस्तक का कोई भी दृश्य उबाऊ या थोपा हुआ नहीं लगेगा। बाकी इस पुस्तक को मैंने कैसा लिखा है? यह तो आप पाठकगण ही उचित तरीके से बता सकते हैं।

दोस्तों पिछले कुछ समय से आप में से कई पाठकों ने मेरी पुस्तकों का ‘पेपरबैक संस्करण’ खरीदने की इच्छा जताई थी, मैं बड़े हर्ष के साथ उन पाठकों को यह बताना चाहता हूं कि अब मेरी इस सीरीज की प्रत्येक पुस्तकें ‘सूरज पॉकेट बुक्स’ के माध्यम से, आपको ‘अमेजान’ व ‘फ्लिपकार्ट’ पर मिल सकते हैं, जिन्हें वहां से सर्च करके आप खरीद सकते हैं और उसे अपने पास संग्रह कर सकते हैं।

दोस्तों मेरी नई पुस्तकों की प्रकाशन तिथि के लिये आप मेरे फेसबुक पेज को लाइक या फॉलो कर सकते हैं, जिसकी डीटेल्स आपको नीचे मिल जायेगी।

फेसबुक पेजः @shivendrasuryavanshitheauthor

तो फिर तुरंत इस पुस्तक को पढ़ना शुरु करिये और इसे पढ़ने के बाद मुझे रिव्यू या कमेंट के माध्यम से इसके बारे में अवश्य सूचित करें।

आपकी प्रतिक्रिया की प्रतीक्षा में ....

आपका दोस्त

शिवेन्द्र सूर्यवंशी

प्राक्कथन

सप्तशक्ति- ब्रह्मांड के निर्माण के लिये ईश्वर ने पहले सप्तशक्तियों का निर्माण किया। ये सप्तशक्तियां थीं- वायु, जल, अग्नि, पृथ्वी, आकाश, ध्वनि और प्रकाश। इन सभी सप्तशक्तियों ने मिलकर ब्रह्मांड में उपस्थित सभी ग्रहों की रचना की। परंतु अभी भी जीवन की उत्पत्ति संभव नहीं हो सकी थी। जीवन की उत्पत्ति के लिये ब्रह्मदेव ने एक कण की रचना की, जिसे बाद में ब्रह्मकण के नाम से जाना गया। इस ब्रह्मकण में जीवन की उत्पत्ति के अलावा इन सभी सप्तशक्तियों को नियंत्रित करने की शक्ति भी थी।

ब्रह्मांड की रचना के बाद ब्रह्मदेव ने इस ब्रह्मकण को एक काले मोती में समाहित कर समुद्र की अथाह गहराइयों में कहीं छिपा दिया। परंतु एक दिन एक नीली जलपरी की गलती से 'काला मोती' ग्रीक देवता पोसाइडन के हाथ लग गया। इसके बाद शुरु हुई रहस्य व रोमांच से भरी ऐसी कहानी, जिसने पृथ्वी ही नहीं वरन् ब्रह्मांड के कई ग्रहों को अपनी चपेट में ले लिया।

फिर शुरु हुई एक ऐसी प्रश्नावली जिसने सभी के मस्तिष्क को पूरी तरह से झकझोर कर रख दिया-

1) क्या हुआ जब ब्रह्मदेव का जन्म सहस्त्रदल कमल पर हुआ? क्या ब्रह्मदेव अपने जन्म के रहस्य को समझ सके?

2) क्या हुआ जब ब्रह्मकण से जन्मी लावण्या, अरिगंधा के राजकुमार मेघवर्ण को लेकर अथाह समुद्र की गहराइयों में चली गई?

3) क्या नीलाभ महादेव की शक्तियों को प्राप्त करने के लिये, काशी जाकर कालभैरव से आशीर्वाद प्राप्त कर सका?

4) क्या हुआ जब समयचक्र ने भविष्य को बदलना शुरु कर दिया?

5) क्या हुआ जब तिलिस्मा में घूम रही 12 राशियों ने अलग-अलग प्रकार से तिलिस्मा में प्रवेश किये लोगों पर आक्रमण कर दिया?

6) क्या था काँच की तितली का रहस्य, जो लोगों का अपहरण कर उनका रुप धर लेती थी?

7) क्या हुआ जब व्योम का युद्ध यमदेव व महाकाली से हुआ?

8) क्या सुयश व शैफाली कैलाश पर्वत पर लिपटी महादेव की जटाओं को खोलकर मायाजाल को पार कर सके?

9) क्या था भगवान श्री राम की बालरुप वाली मूर्ति का रहस्य, जिसे लेने के लिये नीलाभ को गरुणाक्ष पर्वत पर जाना पड़ा?

10) क्या था ब्लैकून के अंदर छिपे फीनीक्स पक्षी का रहस्य?

11) क्या था न्यूयार्क शहर में स्थित 'एटर्नल फ्लेम' का रहस्य, जो झरने के नीचे भी सदियों से जल रही थी?

12) क्या था सीरीनिया के जंगलों में छिपे 'निम्फिया महल' का रहस्य, जिसे देवी आर्टेमिस ने अपनी सबसे प्रिय सुनहरी हिरनी के लिये बनाया था?

13) क्या क्रिस्टी रोम के पौराणिक शहर 'ट्रॉय' के तिलिस्म को पार कर सकी?

तो दोस्तों इन सभी प्रश्नों के उत्तर को जानने के लिये आइये पढ़ते हैं, ब्रह्मदेव के जन्म से शुरु हुई एक ऐसी महागाथा, जिसने मनुष्य ही नहीं अपितु ईश्वर को भी हिलाकर रख दिया। जिसका नाम है-

"काला मोती-ब्रह्मकण शक्ति"

◆ ◆ ◆

चैपटर-1

ब्रह्मज्ञान

सतयुग, क्षीर सागर

क्षीरसागर का दुग्ध के समान श्वेत जल, सागर की सतह पर हिलोरें मार रहा था। दूर-दूर तक लहरों की हलचल और उसकी तेज ध्वनि के सिवा कुछ भी सुनाई नहीं दे रहा था।

नीला आसमान अपनी छाया को, क्षीर सागर के श्वेत जल में निहार कर मुग्ध हो रहा था।

तभी वातावरण में एक सुनहरा दिव्य प्रकाश उत्पन्न हुआ, जो कि नीले आसमान से निकलकर, क्षीर सागर के श्वेत जल को, एक स्थान पर स्पर्श करने लगा।

दिव्य प्रकाश का श्वेत जल के स्पर्श करते ही, उस श्वेत जल के मध्य से, एक गुलाबी रंग की आकृति ने उभरना शुरु कर दिया।

कुछ ही देर में देखते ही देखते, वह गुलाबी आकृति पूर्ण रुप से, श्वेत जल की सतह पर आ गई।

अब उस गुलाबी आकृति ने, एक विशाल दिव्य कमल के पुष्प का आकार ले लिया, पर यह पुष्प अभी खिला नहीं था। यह तो मात्र एक पवित्र कली थी, जो किसी अद्भुत शक्ति के दिव्य प्रकाश से जन्म ले रही थी।

कली के प्रकट होते ही, श्वेत जल हवा में तेज हिलोरें मारने लगा।

श्वेत जल कमल की उस कली को उछलकर, इस प्रकार स्पर्श कर रहा था, मानों वह दुग्ध जल, उस पवित्र कली के पैर पखार रहा हो।

तभी वातावरण में 'ऊँ' की एक ध्वनि उत्पन्न हुई, जो कि कुछ ही पलों में सम्पूर्ण सृष्टि में फैल गई। यह ध्वनि निरंतर वातावरण में एक मधुर

रस घोल रही थी।

लगातार ‘ऊँ’ के स्पंदन से, कमल की कली ने कुनमुनाकर अपनी आँखें खोलना शुरु कर दिया। एक-एक कर कली की पंखुड़ियां खुलती जा रहीं थीं।

कुछ ही देर में इस सहस्त्रदल कमल की एक हजार पंखुड़ियों ने, अपनी निद्रा भंग कर, इस अपूर्ण सृष्टि के दर्शन किये।

सभी पंखुड़ियों के खुल जाने के बाद, उस सहस्त्रदल कमल पर एक दिव्य पुरुष लेटे हुए दिखाई दिये, जिनकी पलकें अभी विश्राम की अवस्था में थीं।

प्रकाश की किरणें अभी भी प्रस्फुटित होकर, पवित्र कमल को स्पर्श कर रही थीं। उधर ‘ऊँ’ का निनाद भी अपने चरम पर था।

तभी क्षीर सागर की कुछ बूंदों ने, हवाओं के झूले पर बैठ, उस दिव्य पुरुष की पलकों का एक चुम्बन लिया।

अब उस दिव्य पुरुष ने अपने नेत्रों को खोल दिया।

कुछ क्षणों तक सृष्टि का अवलोकन करने के बाद, उन्होंने अपने सीप के समान अधरों को खोला- “मैं कौन हूं? मेरा जन्म क्यों हुआ? यह कौन सा स्थान है?”

तभी कमल पर पड़ रहा दिव्य प्रकाश कुछ कम हुआ और उससे एक ध्वनि वातावरण में गुंजायमान हुई- “मैं निराकार परम ब्रह्म हूं, मैंने ही तुम्हें इस सृष्टि की रचना को पूर्ण करने के लिये अवतरित किया है।”

“हे परम ब्रह्म, तो कृपा करके मेरा नामकरण करते हुए मेरा मार्गदर्शन कीजिये।” दिव्य पुरुष ने अपने दोनों हाथ जोड़ते हुए कहा।

“तुम्हारा अवतरण ब्रह्मज्ञान को अर्जित कर, सृष्टि को पूर्ण करने के लिये हुआ है, इसलिये आज से तुम्हारा नाम ब्रह्मदेव होगा। आज से समस्त संसार तुम्हें ब्रह्मदेव, सृष्टिकर्ता, ब्रह्मा आदि नामों से जानेगा। पर इस नामकरण को चरितार्थ करने के लिये, तुम्हें पहले ब्रह्मज्ञान लेना होगा।” परम ब्रह्म ने कहा- “उस ब्रह्मज्ञान के बिना, तुम्हारी उत्पत्ति अर्थरहित है।”

"तो फिर मुझे उस ब्रह्मज्ञान का श्रवण कराइये परम ब्रह्म।" ब्रह्मदेव ने कहा- "मैं उस ब्रह्मज्ञान को पाने के लिये व्यग्र हूं।"

"वह ब्रह्मज्ञान तुम्हें स्वयं से प्राप्त करना होगा ब्रह्मदेव। इसलिये अभी से तुम उस ब्रह्मज्ञान को तलाशना शुरु कर दो। जिस क्षण तुम्हें उस ब्रह्मज्ञान के दर्शन हो जायेंगे, तुम मेरी वाणी को फिर से सुन पाओगे।" यह कहकर परम ब्रह्म का दिव्य प्रकाश और वाणी कहीं वातावरण में लुप्त हो गई?

अब 'ॐ' की प्रतिध्वनि भी वायुमण्डल में विलीन हो गई।

"पर परम ब्रह्म .... मुझे तो यह भी नहीं पता कि मुझे ब्रह्मज्ञान कहां से और कैसे प्राप्त होगा?" ब्रह्मदेव ने परम ब्रह्म से कहा।

पर अब कुछ भी कहना व्यर्थ था, परम ब्रह्म वहां से जा चुके थे।

कुछ देर की प्रतीक्षा के बाद ब्रह्मदेव समझ गये कि अब उन्हें स्वयं ही ब्रह्मज्ञान के रहस्य को तलाशना होगा।

अतः वह कमल के पुष्प की सभी पंखुड़ियों को निहारने लगे। सभी पंखुड़ियां आकार में छोटी-बड़ी थीं।

"यह सभी पंखुड़ियां छोटी-बड़ी क्यों हैं? अर्थात् प्रकृति में सबकुछ एक समान नहीं होता। .... यह श्वेत जल, नील गगन, पाटल (गुलाबी) पंखुड़ियां, हरित दलपत्र ... सबकुछ भिन्न-भिन्न रंगों से बना है ..... वायु, जल, गगन, प्रकाश, ध्वनि ... यह सब प्रकृति में विद्यमान हैं ... पर इनका नियंत्रण कौन करता है? .... लगता है मुझे इन सब चीजों के बारे में जानने से पहले, अपनी उत्पत्ति के कारक के बारे में जानना होगा?"

ऐसे अनेकोंनेक प्रश्न थे, जो ब्रह्मदेव के मस्तिष्क को उलझा रहे थे। आखिरकार बहुत सोचने के बाद ब्रह्मदेव, उस सहस्त्रदल कमल की डंठल में प्रवेश कर गये।

ब्रह्मदेव जैसे-जैसे डंठल में आगे बढ़ रहे थे, वैसे-वैसे डंठल का आकार चौड़ा होता जा रहा था।

ब्रह्मदेव को उस डंठल में चलते हुए कई घंटे बीत गये। आखिरकार ब्रह्मदेव उस डंठल के उद्गम स्थल तक पहुंच ही गये।

वह डंठल एक ब्रह्मांड रुपी विशाल वृक्ष की बेल से निकला था।

इस विशाल वृक्ष की 7 शाखाएं थीं और हर एक शाखा में पत्तियों के स्थान पर करोड़ों ग्रह विचरण कर रहे थे।

उस विशाल ब्रह्मांडीय वृक्ष के आगे, ब्रह्मदेव को अपना शरीर, एक कण के समान प्रतीत हो रहा था।

“मैं तो यहां पर एक साधारण से पुष्प की उत्पत्ति के बारे में जानने के लिये आया था, पर अब तो यहां मुझे विशाल ब्रह्मांडीय वृक्ष दिख रहा है .... जो कि एक धरा पर लगा है। यानि कि अब मुझे इस ब्रह्मांडीय वृक्ष की जड़ में जाना होगा .... वहीं से मुझे इस वृक्ष के स्रोत पता चल सकता है।”

यह सोच ब्रह्मदेव ने धरा के कणों को टटोलकर देखा और फिर स्वयं उस ब्रह्मांडीय वृक्ष की जड़ों में प्रवेश कर गये।

ब्रह्मदेव वृक्ष की जड़ों को पकड़े हुए धरा के अंदर चले जा रहे थे। कुछ समय के बाद वृक्ष की वह जड़ें ब्रह्मदेव को लेकर, धरा के अंदर स्थित एक सुरंग में पहुंच गईं।

वह पूरी सुरंग भूरे रंग की चट्टानों से निर्मित थी। अब ब्रह्मदेव ने उस सुरंग की यात्रा शुरु कर दी।

लगभग एक घंटे तक अनवरत् चलने के बाद, वह सुरंग एक विशाल मैदान में निकली, जहां पर एक वर्गाकार सफेद पत्थर की बड़ी सी चट्टान रखी थी।

उस चट्टान में एक द्वार बना हुआ था।

चट्टान में द्वार देख, ब्रह्मदेव उस द्वार में प्रवेश कर गये। वह द्वार ब्रह्मदेव को एक वर्गाकार कमरे में ले आया, जिसके बीच में एक सफेद पत्थर की चौकी पर, एक विलक्षण बालक पालथी मारकर आसन की मुद्रा में बैठा था।

बालक की आयु 6 वर्ष के आसपास प्रतीत हो रही थी।

पूरा कमरा बिल्कुल श्वेत नजर आ रहा था। यहां तक कि उस बालक ने भी श्वेत वस्त्र ही धारण कर रखे थे।

उस बालक ने अपने सिर के घनेरे बालों से, किसी ऋषि की भांति अपने सिर पर एक छोटा सा जूड़ा बना रखा था। उस बालक के चेहरे पर दिव्यता विद्यमान थी, जिसका ओज उसके चेहरे के चारो ओर, एक गोलाकार आकृति में प्रस्फुटित हो रहा था।

वह बालक इस समय ध्यान की मुद्रा में था, इसलिये ब्रह्मदेव उस बालक के सामने जाकर बैठ गये और अपने नेत्रों से उस दिव्य बालक की मनोहारी छवि को निहारने लगे।

कुछ क्षणों के बाद उस दिव्य बालक ने अपनी आँखें खोल दीं और ब्रह्मदेव की ओर उत्सुकता से देखने लगा।

"मेरा नाम ब्रह्मदेव है।" ब्रह्मदेव ने उस विलक्षण बालक के सम्मुख हाथ जोड़कर कहा- "मैं यहां ब्रह्मज्ञान की तलाश में आया हूं। आप कौन हैं दिव्य बालक? कृपया मुझे अपने बारे में बताएं।"

"मेरा नाम नारायण है, परंतु मुझे स्वयं नहीं पता कि मैं कौन हूं?" नारायण ने कहा- "और मैं कितने समय से यहां पर हूं? तो फिर मैं आपको ब्रह्मज्ञान कैसे दे सकता हूं? परंतु आप चाहें तो पूर्व दिशा से इसके बारे में पूछ सकते हैं।"

यह कहकर नारायण ने पूर्व दिशा की ओर इशारा किया।

नारायण का इशारा देख, ब्रह्मदेव ने अपने सिर को पूर्व दिशा की ओर घुमाने की चेष्टा की, परंतु वह असफल रहे।

"मैं अपना शीश पूर्व दिशा की ओर क्यों नहीं घुमा पा रहा?" ब्रह्मदेव के चेहरे पर उलझन के भाव उभरे।

"अगर आप इतना छोटा सा कार्य नहीं कर पा रहे हैं, तो आप ब्रह्मज्ञान को कैसे तलाश कर पायेंगे ब्रह्मदेव?" नारायण ने कहा।

नन्हे बालक के कटाक्ष सुन ब्रह्मदेव ने अपनी पूरी शक्ति लगाकर, अपने शीश को पूर्व दिशा की ओर घुमाया।

ब्रह्मदेव के अति कठोर प्रयास से, ब्रह्मदेव का सिर तो पूर्व दिशा में नहीं घूमा, परंतु पूर्व दिशा की ओर उनका एक सिर और उत्पन्न हो गया। अब ब्रह्मदेव के 2 सिर हो गये।

“यह मेरे 2 शीश कैसे हो गये?” ब्रह्मदेव ने आश्चर्य व्यक्त करते हुए कहा।

“हमें तो नहीं पता ... पर हमें लगता है कि आपको ब्रह्मज्ञान प्राप्त होने लगा है।” नारायण ने मुस्कुराते हुए कहा।

अब ब्रह्मदेव को पूर्व दिशा में जलती हुई अग्नि दिखाई देने लगी थी।

अब नारायण, ब्रह्मदेव से बिना कुछ बोले, पश्चिम दिशा की ओर देखने लगे। उन्हें इस प्रकार पश्चिम दिशा की ओर देखते पाकर, ब्रह्मदेव ने अपने सिर पश्चिम दिशा की ओर घुमाया।

इस बार फिर ब्रह्मदेव का एक सिर और बढ़ गया। अब उनके 3 सिर हो गये थे। पश्चिम दिशा में ब्रह्मदेव को जल दिखाई दिया।

कुछ सोचने के बाद ब्रह्मदेव ने स्वतः ही अपना सिर पीछे यानि कि उत्तर दिशा की ओर किया। अब ब्रह्मदेव के 4 सिर हो गये।

उत्तर दिशा में विशाल आकाश नजर आ रहा था। तभी ब्रह्मदेव के सामने की ओर, यानि की दक्षिण दिशा में धरा तत्व नजर आने लगा।

“लगता है कि 4 दिशाओं में देखने के लिये परम ब्रह्म ने मुझे 4 शीश प्रदान किये हैं?” ब्रह्मदेव ने कहा।

“पर दिशाएं तो 10 होती हैं।” नारायण ने कहा- “पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण, ईशान, आग्नेय, वायव्य, नैऋत्य, ऊर्ध्व (ऊपर) और अधो (नीचे)। लगता है कि आपको बाकी दिशाओं में भी देखना चाहिये?”

नारायण के वचन सुन, जैसे ही ब्रह्मदेव ने ईशान, आग्नेय, वायव्य और नैऋत्य दिशा की ओर देखा, हर एक दिशा में देखने पर, उनके प्रत्येक शीश के मस्तिष्क में एक ऊर्जा प्रवेश कर गई।

अब सिर्फ 2 दिशाएं बची थीं- “ऊर्ध्व और अधो”।

अब ब्रह्मदेव ने ऊपर की ओर देखा, जिसके प्रभाव से उनके ऊपर भी एक शीश प्रकट हो गया। पर पांचवा शीश प्रकट होते ही विलोप भी हो गया।

“यह एक शीश प्रकट होने के बाद विलोप क्यों हो गया?” ब्रह्मदेव ने नारायण से पूछा।

“वह शीश अदृश्य अवस्था में रहेगा। जब आपको उसकी आवश्यकता होगी, तभी वह प्रकट होगा।” नारायण ने कहा।

नारायण के वचनों को सुन अब ब्रह्मदेव ने नीचे की ओर देखा। परंतु जैसे ही ब्रह्मदेव ने नीचे देखा, ब्रह्मदेव की आँखों से एक प्रकाश की तीव्र किरण निकलकर भूमि पर पड़ी।

उस प्रकाश की किरण ने एक मानव शरीर को जन्म दिया, जो कि उत्पन्न होते ही उठकर खड़ा हो गया।

“ब्रह्मदेव को वास्तुपुरुष का प्रणाम।” वास्तुपुरुष ने हाथ जोड़कर ब्रह्मदेव की ओर देखते हुए कहा- “हे परमपिता, मैं दसों दिशाओं में विराजमान वास्तुपुरुष हूं, मेरा जन्म आपके प्रत्येक निर्माण में सहयोग प्रदान करने के लिये हुआ है। इसलिये मैं आपको यह वचन देता हूं कि मैं सृष्टि के प्रत्येक निर्माण में उपस्थित रहूंगा और उस निर्माण को सदैव शुभ फलदायी देने के लिये प्रयत्नशील रहूंगा।”

यह कहकर वास्तुपुरुष हवा में विलीन हो गया।

वास्तुपुरुष के हवा में विलीन होते ही ब्रह्मदेव फिर से नारायण को देखने लगे। ऐसा लग रहा था, मानो वह नारायण से पूछना चाह रहे थे कि अब उन्हें क्या करना चाहिये?

उन्हें इस प्रकार से उलझन में पड़ा देख, नारायण बोल उठे- “आपने दसों दिशाओं में तो नियंत्रण प्राप्त कर लिया ब्रह्मदेव। अब आपको इन सप्तशक्तियों पर नियंत्रण प्राप्त करना होगा।”

“परंतु कैसे नारायण? मैं इन सप्त शक्तियों पर कैसे नियंत्रण कर सकता हूं?” ब्रह्मदेव ने उलझन भरे नेत्रों से नारायण की ओर देखते हुए पूछा।

“आप अपने गुरु या ईष्टदेव को याद करिये ब्रह्मदेव, वही आपको सप्तशक्तियों पर नियंत्रण करने का मार्ग प्रशस्त करेंगे।” नारायण के शब्द अर्थ से परिपूर्ण थे।

नारायण के शब्द सुन ब्रह्मदेव और विचलित हो गये क्योंकि उन्हें अपने गुरु के बारे में पता ही नहीं था। आखिरकार ब्रह्मदेव ने अपने चारो मुखों के नेत्रों को बंद कर लिया और मन में ही परम ब्रह्म का आहवान किया।

अब ब्रह्मदेव को अपने मन में फिर से वही ब्रह्मांडीय वृक्ष दिखाई देने लगा, परंतु इस बार उस ब्रह्मांडीय वृक्ष में नारायण का अद्भुत बालरुप भी झलक रहा था।

ब्रह्मदेव ने मन ही मन उस ब्रह्माडीय वृक्ष को प्रणाम किया और फिर अपने नेत्रों को खोल दिया, परंतु अब उनके चेहरे पर असीम शांति दिख रही थी। ऐसा लग रहा था कि जैसे वह सम्पूर्ण ब्रह्मांड को एक क्षण में समझ गये हों।

शायद यही ब्रह्मज्ञान था, जिसमें कमल की उत्पत्ति का कारक भी था और ब्रह्मांड की अद्भुत बेल के दर्शन भी।

अब ब्रह्मदेव, नारायण के सामने हाथ जोड़कर बैठ गये।

"हे नारायण, मैं आपको ही अपने गुरु रुप में स्वीकार करता हूं। मैंने आपके दिव्य दर्शन भी प्राप्त कर लिये। अब आप ही मुझे इन सप्तशक्तियों के नियंत्रण का रहस्य प्रदान करें, जिससे मैं सृष्टि का निर्माण आरंभ कर सकूं।" ब्रह्मदेव के शब्दों में अथाह भक्ति झलक रही थी।

ब्रह्मदेव के शब्दों को सुन नारायण मुस्कुराये और बोल उठे- "मैं आपको सप्तशक्तियों के नियंत्रण की शक्ति तो प्रदान कर दूंगा ब्रह्मदेव, परंतु आपने मुझे गुरु माना है, इसलिये उसके पहले आपको मुझे गुरुदक्षिणा प्रदान करनी होगी। गुरुदक्षिणा के बिना किसी भी गुरु का ज्ञान अपूर्ण होता है।"

नारायण के शब्द सुन इस बार ब्रह्मदेव विचलित नहीं हुए। वह मुस्कुराये और भूमि पर पालथी मारकर बैठ गये। ब्रह्मदेव ने अब अपनी आँखें कुछ क्षणों के लिये बंद कर लीं।

अब ब्रह्मदेव के सभी मस्तकों से एक ऊर्जा की तेज किरण निकलीं और उनके गोद में जाकर पड़ने लगी।

इस ब्रह्मऊर्जा ने एक दिव्य पुरुष को उत्पन्न कर दिया, जो कि देखने में लगभग नारायण के समान ही प्रतीत हो रहे थे।

ब्रह्मदेव ने उस दिव्य पुरुष को भूमि पर उतारा और स्वयं उठकर खड़े हो गये।

“इस सम्पूर्ण सृष्टि में आपकी भक्ति के समान कुछ नहीं होगा नारायण। परंतु आपकी शक्ति और भक्ति का ज्ञान भी प्रत्येक जीव के लिये आवश्यक होगा। अतः मैं गुरुदक्षिणा के रुप में आपको, आपकी भक्ति के प्रसार के लिये, अपने प्रथम मानस पुत्र को समर्पित करता हूं। आज से मेरे इस मानस पुत्र का नाम ‘नारद’ होगा और इनका सम्पूर्ण जीवन आपकी भक्ति के प्रसार में रत रहेगा।”

ब्रह्मदेव की बात सुनकर नारद, नारायण के सामने अपने हाथों को जोड़कर बैठ गये।

तभी ब्रह्मदेव के हाथों में एक वीणा दिखाई देने लगी, जो उन्होंने नारद को दे दी।

“इस वीणा का नाम ‘महती’ होगा नारद। इस वीणा से सदैव नारायण की ध्वनि उत्पन्न होगी।” ब्रह्मदेव ने कहा- “जाओ और जाकर सम्पूर्ण सृष्टि में नारायण की भक्ति का गुणगान करो।”

“जो आज्ञा परमपिता।” नारद ने कहा और वीणा को लेकर अदृश्य हो गये।

“हम आपकी गुरुदक्षिणा से अत्यंत प्रसन्न हुए ब्रह्मदेव।” नारायण ने कहा- “अब हम आपको इन सप्तशक्तियों के नियंत्रण की शक्ति सौंपते हैं।”

यह कहकर नारायण ने अपने दाहिने हाथ की तर्जनी उंगली को हवा में उठाया। अब नारायण के हाथ में सुदर्शन चक्र नजर आने लगा, जो द्रुत गति से उनकी उंगली के मध्य घूर्णन कर रहा था।

उस चक्र के मध्य सम्पूर्ण ब्रह्मांड दिखाई दे रहा था।

तभी उस चक्र के मध्य से एक कण निकला और हवा में तैरता हुआ ब्रह्मदेव के हाथ में पहुंच गया।

ब्रह्मदेव आश्चर्य से उस सूक्ष्म कण को देखने लगे।

“यह सृष्टि का प्रथम कण है ब्रह्मदेव, यह प्रथम कण आज से ब्रह्मकण के नाम से जाना जायेगा। इसी ब्रह्मकण के अंदर इन सप्तशक्तियों को नियंत्रित करने की शक्ति है और इसी ब्रह्मकण से आप इस सृष्टि का निर्माण भी कर सकते हैं।”

इसी के साथ एक तेज रोशनी उत्पन्न हुई, जिसकी वजह से ब्रह्मदेव के नेत्र एक क्षण के लिये बंद हो गये।

जब ब्रह्मदेव की आँखें खुलीं, तो उन्होंने स्वयं को वापस सहस्त्रदल कमल के ऊपर पाया। परंतु अब ब्रह्मदेव को ब्रह्मज्ञान और ब्रह्मकण दोनों ही प्राप्त हो चुके थे।

अतः ब्रह्मदेव ने एक बार फिर अपने हाथ में उपस्थित कण को देखा और फिर सृष्टि का निर्माण करने में जुट गये।

एक हजार वर्ष के अनवरत प्रयास के बाद ब्रह्मदेव ने संपूर्ण सृष्टि का निर्माण कर दिया।

अब उनकी दृष्टि वापस उस ब्रह्मकण पर थी।

“निर्माणकार्य तो पूरा हो गया, परंतु अब समस्या इस छोटे से मूलकण को सुरक्षित रखने की है। कहीं यह किसी बुरी शक्ति के प्रभाव में आ गया? तो बहुत मुश्किल हो जायेगी। इसलिये इसे किसी ऐसे सुरक्षित स्थान पर रखना होगा, जहां पर किसी भी जीव की दृष्टि इस पर ना पड़े।”

यह सोच ब्रह्मदेव अनंत सागर की गहराई की ओर चल दिये।

गहराई में पहुंचने के बाद ब्रह्मदेव ने एक अद्भुत सीप का निर्माण किया और उस ब्रह्मकण को एक छोटे से काले मोती में छिपाकर, सीप के अंदर रख दिया।

ब्रह्मदेव ने उस काले मोती को एक बार देखा और फिर पता नहीं क्या सोचकर अपने हाथ की अंगूठी को निकालकर उस सीप में रख दिया?

ब्रह्मदेव की वह अंगूठी, सुनहरे रंग की धातु से निर्मित थी, जिसके आगे एक गोल काले रंग का रत्न लगा था। पूरी अंगूठी तेज चमक बिखेर रही थी।

अब ब्रह्मदेव ने सीप को बंद किया और उसके चारो ओर एक सुरक्षा कवच बना दिया। सुरक्षा कवच के कारण अब वह सीप अदृश्य हो गया।

ब्रह्मदेव अब पूरी तरह से संतुष्ट दिखाई देने लगे। उन्हें लग रहा था कि अब इस ब्रह्मकण को कोई प्राप्त नहीं कर सकता? अतः वह वहां से वापस क्षीरसागर की ओर चल दिये।

◆ ◆ ◆

जलपरी

20,100 वर्ष पहले ....
समुद्र की तली, स्वर्णाक्ष द्वीप, दक्षिण अटलांटिक महासागर

प्राचीन काल में नाइटिंगेल द्वीप का नाम स्वर्णाक्ष द्वीप था। यह एक बहुत ही छोटा सा द्वीप था। इतने बड़े महासागर में इस छोटे से द्वीप पर मनुष्य कहां से आये? यह भी एक रहस्य ही था।

पर द्वीप के वासियों का हिन्दू देवताओं की पूजा करना यह बताता था, कि अवश्य ही इनके पूर्वज प्राचीन भारत से रहे होंगे?

स्वर्णाक्ष द्वीप की रेत में सोने के कण पाये जाते थे, शायद इसीलिये इसका नाम स्वर्णाक्ष द्वीप रखा गया था। स्वर्णाक्ष द्वीप पर्वतों और घने जंगलों से परिपूर्ण था। इसलिये यहां पर खाने की चीजों का अभाव बिल्कुल भी नहीं था।

पीने के पानी के लिये भी यहां पर पर्याप्त झरने, झीलें एवं अन्य पानी के स्रोत थे।

यहां के घने जंगलों में छोटे-बड़े अनेकों प्रकार के जीव-जंतु थे, पर सबसे ज्यादा इस जंगल में पक्षी थे।

यह पक्षी आसमान में उड़कर दूर तक जाते थे और फिर लौटकर वापस इसी द्वीप पर आ जाते थे।

इस द्वीप में जंगलों के मध्य, एक छोटा सा राज्य था, जिसका नाम अरिगंधा था। अरिगंधा स्वर्णाक्ष द्वीप का एकमात्र राज्य था, जिसमें अनेकों छोटे-छोटे कबीले थे, जो अरिगंधा से संचालित होते थे।

इस द्वीप में मनुष्यों की कुल जनसंख्या मात्र 9,000 थी। इतनी कम जनसंख्या के कारण यहां पर प्राकृतिक संसाधन परिपूर्ण थे और सभी खुशहाल थे।

स्वर्णाक्ष द्वीप के आसपास के सागर का पानी बहुत ही साफ था। पानी के अंदर अनेकों रंग-बिरंगी मछलियां घूम रहीं थीं।

अरिगंधा का राजकुमार मेघवर्ण, समुद्र के किनारे एक चट्टान पर बैठा मछलियों का उछलना-कूदना देख रहा था।

मेघवर्ण की आयु इस समय 21 वर्ष की थी। कुछ समय बाद ही उसे अरिगंधा का राजा बनाया जाने वाला था, पर मेघवर्ण का मन राजा बनने का बिल्कुल भी नहीं था। उसे तो दूर-दूर तक जाकर इस विशाल पृथ्वी को घूमने का मन था।

पर स्वर्णाक्ष द्वीप का संपर्क, पृथ्वी के किसी भी अन्य देश से ना होने के कारण मेघवर्ण ऐसा करने में असमर्थ था।

मेघवर्ण ने अपने दादाजी से पृथ्वी के अन्य देशों की कहानियां सुन रखीं थीं और शायद यही कहानियां अब उसके मस्तिष्क में दूसरी दुनिया के प्रति कौतुहल भर रही थीं।

....

इधर मेघवर्ण अपनी कल्पनाओं में सपने बुन रहा था, उधर स्वर्णाक्ष द्वीप के नीचे गहरे समुद्र में एक नीली जलपरी लहरों में अठखेलियां कर रही थी।

रंग-बिरंगी मछलियों के झुण्ड के साथ तैरती, वह जलपरी इस समय बहुत खुश थी, वह तो मानों आज लहरों से प्रतिस्पर्धा कर रही थी।

तभी उस नीली जलपरी को समुद्र की तली में एक विशाल लाल रंग का गोला दिखाई दिया।

समुद्र के अंदर ऐसा लाल गोला देख, वह जलपरी उस गोले की ओर आकर्षित हो गई। धीरे-धीरे लहरों में तैरती हुई, वह उस गोले की ओर बढ़ने लगी।

कुछ ही देर में वह नीली जलपरी उस लाल गोले के पास पहुंच गई। उसने धीरे से अपना हाथ आगे बढ़ाकर उस लाल गोले को छूने की कोशिश की।

पर जैसे ही जलपरी के हाथ उस गोले से छुए, वह पूरा गोला पानी की लहरों में तितर-बितर हो गया।

असल में वह गोला नहीं बल्कि लाल रंग की नन्हीं मछलियों का एक बड़ा सा झुण्ड था, जो कि किसी अदृश्य गोले के चारो ओर चिपका हुआ था, पर जलपरी के हाथ लगाते ही वह मछलियों का झुण्ड डरकर, इधर-उधर बिखर गया।

यह देख जलपरी ने उस स्थान को अपने हाथ से छूकर देखा। पर जैसे ही जलपरी ने उस अदृश्य गोले को छुआ, उसे तेज बिजली का झटका सा महसूस हुआ।

यह देख जलपरी थोड़ा पीछे हट गई और अजीब सी नजरों से उस स्थान को देखने लगी।

तभी जलपरी को अपने पीछे किसी आहट का अहसास हुआ। यह महसूस होते ही जलपरी तेजी से पीछे की ओर पलटी।

पर पीछे पलटते ही जलपरी की साँस हलक में अटक गई। उसके पीछे एक बड़ी सी शार्क मछली, पानी में खड़ी उसी को घूर रही थी।

शार्क को देख उस नीली जलपरी ने अपनी साँस भी रोक ली।

तभी शार्क बिजली की तेजी से उस नीली जलपरी पर झपटी। शार्क को अपनी ओर झपटता देख जलपरी ने पानी में नीचे की ओर, एक तेज गोता लगाया, जिसकी वजह से शार्क पानी को चीरती हुई, उस अदृश्य गोले से टकरा गई।

शार्क के टकराने से, उस अदृश्य गोले को एक तेज झटका लगा और उसमें उपस्थित एक बड़े से सीप का ढक्कन खुल गया।

उधर शार्क को अदृश्य गोले से टकराने की वजह से, बिजली का एक तेज झटका लगा, जिससे घबराकर, वह जलपरी को छोड़ उस स्थान से भाग गई।

शार्क के जाने के बाद वह जलपरी चारो ओर से घूमकर उस अदृश्य गोले को निहारने लगी। पर उसे गोले के अंदर कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा था और गोले को छूने की हिम्मत वह फिर से जुटा नहीं पा रही थी।

इधर गोले में उपस्थित सीप के खुल जाने से फुटबाल के आकार का काला मोती, सीप से झांकने लगा था। ऐसा लग रहा था कि जैसे वह भी

उस खूबसूरत सी नीली जलपरी को निहार रहा हो।

तभी उस काले मोती से कुछ सुनहरी किरणें निकलकर, अदृश्य गोले के एक भाग में गिरने लगीं।

अब उन सुनहरी किरणों ने, गोले में झांक रही नीली जलपरी के समान, दूसरी जलपरी को बनाना शुरु कर दिया।

कुछ ही देर में हूबहू नीली जलपरी के समान एक दूसरी जलपरी सीप के सामने खड़ी थी।

अदृश्य गोले के बाहर की जलपरी, जब गोले के अंदर कुछ भी देख पाने में असमर्थ हो गई, तो हारकर वह एक दिशा की ओर चली गई।

अब गोले के अंदर उपस्थित नवजन्मी नीली जलपरी आश्चर्य से अपने चारो ओर देख रही थी। उसे सिर्फ इतना समझ में आ रहा था कि उसका निर्माण, काले मोती ने किया है।

उस जलपरी ने अपने चारो ओर देखा। तभी उसकी निगाह सीप में उपस्थित सुनहरी अंगूठी पर गई। कुछ सोचने के बाद इस जलपरी ने, सुनहरी अंगूठी को उठाकर अपनी बांयें हाथ की अनामिका उंगली में पहन लिया।

जलपरी के अंगूठी पहनते ही, काला मोती से एक तीव्र प्रकाश की किरण निकली और उस जलपरी के शरीर में समा गई।

जलपरी ने आश्चर्य से उस तीव्र प्रकाश को देखा, परंतु उसे कुछ समझ में नहीं आया।

अब वह जलपरी उस अदृश्य गोले से निकलकर समुद्र में घूमने लगी। वह अपने आसपास के प्रत्येक जीव को अपलक निहार रही थी।

समुद्र की रंगीन सुंदरता उसे खूब भा रही थी। वह हर समुद्री पौधे को छूकर, उसे महसूस करने की कोशिश करने लगी।

तभी उसे अपने से कुछ दूरी पर एक नारंगी रंग का ऑक्टोपस घूमता दिखाई दिया।

उत्सुकतावश जलपरी उसकी ओर बढ़ गई।

वह ऑक्टोपस आकार में थोड़ा बड़ा था। ऑक्टोपस आश्चर्य से अपनी ओर आ रही जलपरी को देख रहा था। शायद पहली बार उसने किसी शिकार को अपनी ओर आते देखा था।

जलपरी जैसे ही उस ऑक्टोपस के पास पहुंची, उस ऑक्टोपस ने अपनी भुजाओं में जलपरी को पकड़ लिया।

अब उस जलपरी को समझ में आ गया कि हर रंगीन जीव अच्छा नहीं होता। जलपरी ऑक्टोपस की पकड़ से छूटने की कोशिश करने लगी, पर जब वह ऑक्टोपस की पकड़ से छूट नहीं पाई, तो ऑक्टोपस को खींचकर, समुद्र की सतह की ओर चल दी।

....

उधर मेघवर्ण अभी भी अपनी कल्पनाओं में उलझा था कि तभी उसे समुद्र में एक जगह कुछ तेज हलचल होती दिखाई दी।

अब मेघवर्ण की दृष्टि समुद्र में उस ओर चली गई।

मेघवर्ण को पानी में एक जगह पर निकली हुई, एक मछली की नीली पूंछ दिखाई दी, जिसे शायद किसी ऑक्टोपस ने अपने शिकंजे में जकड़ रखा था।

यह देख मेघवर्ण ने अपनी तलवार उठाई और तेजी से पानी में छलांग लगाकर तैरता हुआ उस ओर बढ़ने लगा।

मेघवर्ण का पूरा शरीर पानी के अंदर था। पानी साफ होने की वजह से मेघवर्ण को पानी के अंदर का दृश्य बिल्कुल साफ नजर आ रहा था।

तभी मेघवर्ण उस मछली को देखकर चौंक गया, वह मछली कोई साधारण मछली नहीं, बल्कि एक जलपरी थी, जिसके शरीर को एक ऑक्टोपस ने अपनी भुजाओं से पकड़ रखा था।

वह जलपरी तेजी से ऑक्टोपस की पकड़ से छूटने का प्रयत्न कर रही थी।

यह देख मेघवर्ण ने ऑक्टोपस के ऊपर अपनी तलवार से आक्रमण कर दिया। एक पल में ही मेघवर्ण ने ऑक्टोपस की 2 भुजाओं को काट दिया।

ऑक्टोपस के नीले खून ने समुद्र के नीले पानी को और नीला कर दिया।

जलपरी की निगाह अब सिर्फ मेघवर्ण पर थी, जो कि पानी के अंदर तलवार लेकर, लगातार ऑक्टोपस पर प्रहार कर रहा था।

कुछ ही देर में जख्मी ऑक्टोपस समझ गया कि मेघवर्ण का मुकाबला नहीं किया जा सकता, इसलिये उसने जलपरी को छोड़ा और तेजी से पानी में तैरकर कहीं गायब हो गया?

ऑक्टोपस से छूटते ही जलपरी ने एक बार मेघवर्ण को देखा और फिर वह भी पानी में कहीं गायब हो गई?

मेघवर्ण को जलपरी से ऐसी आशा नहीं थी। उसे लग रहा था कि जलपरी उसे धन्यवाद देगी, पर वह तो बिना कुछ बोले ही चली गई।

मेघवर्ण अब पानी से निकला और अनमने मन से वापस उसी चट्टान पर आकर बैठ गया।

जलपरियों को उसने बस कहानियों में ही सुना था। आज पहली बार उसे किसी जलपरी को सामने से देखने का अवसर प्राप्त हुआ था।

उस जलपरी का चेहरा तो मानो मेघवर्ण की आँखों में बस गया था। नीली आँखें, लहराते काले बाल, सीप से होंठ, लहरों में बल खाती नीली पूंछ .... सबकुछ सपनों सरीखा ही तो था।

तभी मेघवर्ण को पानी की लहरों पर, फिर से वही नीली जलपरी दिखाई दी। इस बार वह उससे कुछ दूरी पर पानी में तैरती हुई उसे ही निहार रही थी।

यह देख मेघवर्ण को ऐसा लगा, जैसा उसका सपना बस अब साकार होने ही वाला है।

मेघवर्ण ने जलपरी को देख धीरे से अपना हाथ हिलाया, पर जलपरी ने इस पर कोई प्रतिक्रिया नहीं दी। वह तो बस मेघवर्ण को देखे जा रही थी।

यह सिलसिला कुछ देर तक ऐसे ही चलता रहा। दोनों ही बस एक दूसरे को देख रहे थे।

कुछ देर के बाद जलपरी, मेघवर्ण के थोड़ा और पास आ गई।

“क्या तुम बात कर सकती हो?” मेघवर्ण ने हिम्मत दिखाते हुए जलपरी से पूछा।

मेघवर्ण के शब्द सुन जलपरी जैसे व्यग्र हो गई। उसने पहले अपने आसपास देखा और फिर मेघवर्ण के और समीप आ गई।

यह देख मेघवर्ण ने फिर से पूछा- “क्या तुम बोलना जानती हो?”

“हां .... मैं बोल सकती हूं और मैं तुम्हारी भाषा भी समझ सकती हूं।” इस बार जलपरी ने जवाब दिया।

जलपरी को बोलते देख मेघवर्ण बहुत खुश हो गया।

“तुम्हारा नाम क्या है? और तुम कहां रहती हो?” मेघवर्ण ने जलपरी से पूछा।

“नाम! .... ये क्या होता है?” जलपरी ने कहा।

जलपरी की बात सुन मेघवर्ण चौंक गया- “हम सभी एक दूसरे को संबोधित करने के लिये उनका नाम लेकर पुकारते हैं .... जैसे कि मेरा नाम मेघवर्ण है। .... वैसे ही तुम्हारा भी तो कोई नाम होगा?”

“मेघवर्ण ...... ।” जलपरी ने मेघवर्ण के नाम को दोहराया- “पर मेरा तो कोई नाम नहीं है?”

“क्यों? तुम्हारा माता-पिता तुम्हें क्या कहकर पुकारते हैं?” मेघवर्ण ने जलपरी से पूछा।

“माता-पिता! ये कौन होते हैं?” जलपरी ने कहा।

“बड़े आश्चर्य की बात है कि तुम्हें यह भी नहीं पता कि माता-पिता कौन होते हैं?” मेघवर्ण ने आश्चर्य से कहा- “अरे जिसने तुम्हें जन्म दिया .... तुम्हें इस धरती पर ...... म... म ... मेरा मतलब है कि सागर में लाये। मैं उनकी बात कर रहा हूं।”

“पर मेरा जन्म तो एक काले मोती से हुआ है .... क्या वह काला मोती ही मेरा माता-पिता है?” जलपरी तो कुछ समझ ही नहीं पा रही थी।

“काले मोती से!” मेघवर्ण, जलपरी के शब्द सुन अब थोड़ा उलझा-उलझा सा महसूस करने लगा- “यह कैसे संभव है? भला कोई मोती कैसे किसी को जन्म दे सकता है? .... अच्छा यह बताओ कि तुम्हारा जन्म कब हुआ?”

“अभी थोड़ी देर पहले।” जलपरी ने कहा और मेघवर्ण के पैरों को निहारने लगी। उसे मेघवर्ण के पैर अपनी पूंछ से थोड़ा अलग लग रहे थे।

“थोड़ी देर पहले?” अब मेघवर्ण के आश्चर्य का ठिकाना ही नहीं रहा- “तो फिर तुम इतनी बड़ी कैसे हो गई? .... अच्छा छोड़ो .... जाने दो इस रहस्य को। पर ... पर ... तुम्हारा कोई नाम होना बहुत जरुरी है। ...... रुको मैं ही तुम्हारा कुछ अच्छा सा नाम रखता हूं .... क्या रखूं? ... क्या रखूं? ..... हां, तुम बहुत खूबसूरत हो इसलिये मैं तुम्हारा नाम लावण्या रखता हूं। हां यह नाम तुम्हारे ऊपर जंचता है।”

“लावण्या!” जलपरी ने अपने नाम को दोहराकर देखा और फिर से मेघवर्ण के पैरों को देखने लगी।

तभी जलपरी के निचले शरीर में बदलाव होने लगा। देखते ही देखते जलपरी की पूंछ गायब हो गई और उसकी जगह पर इंसानी पैर दिखाई देने लगे।

अब वह एक खूबसूरत लड़की नजर आने लगी थी।

यह देख मेघवर्ण के आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहा और वह बोल उठा- “अरे वाह! क्या तुम जादू भी जानती हो? ..... मेरा मतलब कि तुमने अपने शरीर को किस प्रकार से परिवर्तित किया?”

“मुझे नहीं पता? .... मैंने तो बस तुम्हारे पैरों को देखा था, हो सकता है कि उसी की वजह से ऐसा हुआ हो?” लावण्या ने कहा।

“शायद ये सब उस काले मोती की वजह से हो रहा है?” मेघवर्ण ने कहा- “क्या तुम मुझे वह काला मोती दिखा सकती हो?”

“हां-हां क्यों नहीं? पर तुम्हें इसके लिये मेरे साथ समुद्र के अंदर चलना होगा।” लावण्या ने खुशी से कहा और उठकर खड़ी हो गई।

“क्या तुम बता सकती हो कि हमें समुद्र में कितना नीचे तक जाना है? क्योंकि मैं समुद्र के अंदर ज्यादा देर तक साँस नहीं ले सकता।” मेघवर्ण ने उदास होते हुए कहा।

यह सुन लावण्या को ज्यादा कुछ समझ नहीं आया, उसने तो मेघवर्ण का हाथ पकड़ा और पानी में छलांग लगा दी।

मेघवर्ण तो बस लावण्या के स्पर्श को ही महसूस कर रहा था। वह तो कुछ क्षणों के लिये यह भी भूल गया कि वह लावण्या के साथ जा कहां रहा है?

समुद्र के पानी को स्पर्श करते ही लावण्या का शरीर का निचला भाग फिर से जलपरी में परिवर्तित हो गया।

अब वह तेजी से मेघवर्ण का हाथ पकड़े, समुद्र की तली की ओर जा रही थी।

अभी वह कुछ दूर ही पहुंची थी कि मेघवर्ण की साँसों ने उसका साथ छोड़ना शुरु कर दिया। मेघवर्ण अब तेजी से अपने हाथ पैर हिलाते हुए छटपटा रहा था।

यह देख लावण्या, मेघवर्ण के पास आई और धीरे से उसके चेहरे को छुआ।

लावण्या के छूते ही मेघवर्ण के शरीर का निचला भाग, किसी जलपुरुष के समान बन गया और अब वह आसानी से पानी में साँस भी ले पा रहा था।

समुद्र की अथाह गहराई में इस प्रकार खुल कर साँस लेना, मेघवर्ण के लिये एक अनोखा अनुभव था। अब वह अपनी नजरें उठाकर चारो ओर देख रहा था।

प्रकृति का खूबसूरत रंग देखने के बाद, अब मेघवर्ण की निगाहें सिर्फ और सिर्फ लावण्या के चेहरे की ओर थीं, जो कि उसे खींचते हुए समुद्र की गहराई की ओर जा रही थी।

अब मेघवर्ण की पृथ्वी देखने की इच्छा उसी प्रकार समाप्त हो गई थी, जिस प्रकार से किसी अमूल्य हीरे को पाने के बाद लोहार की लोहे के

प्रति इच्छा समाप्त हो जाती है।

मेघवर्ण भी अब अपने अमूल्य रत्न को निहारता सागर की अथाह गहराई की ओर जा रहा था।

◆ ◆ ◆

अगाध प्रेम

20,100 वर्ष पहले ....
पोसाईडन महल, ऐजीयन सागर, ग्रीक प्रायद्वीप

नीले रंग के समुद्र के जल में नोफोआ, अपने मगरमच्छ पर बैठा, तेजी से पोसाईडन महल की ओर जा रहा था।

नोफोआ, पोसाईडन का एक जलीय गुप्तचर था, जो सागर में घटने वाली किसी भी अजीब घटना को पोसाईडन तक पहुंचाता था। इसलिये पोसाईडन, नोफोआ को सागर की आँख भी कहता था।

देखने में हल्के हरे रंग का नोफाआ, कई जलीय जंतुओं से बना विचित्र जीव लगता था। उसके हाथ की उंगलियों के बीच मेढक के समान जालीदार संरचना व कान के पीछे मछलियों की भांति गलफड़, उसे पानी में भी आसानी से साँस लेने में मदद करते थे।

पानी के बड़े से बड़े जीव भी नोफोआ को देख अपना रास्ता बदल देते थे।

कुछ ही देर में नोफोआ, समुद्र की तली में बने पोसाईडन महल तक जा पहुंचा।

पोसाईडन महल पूरी तरह से मूंगे, मोतियों और कुछ सुनहरी धातुओं से बना हुआ था। उस विशालकाय महल की भव्यता, समुद्र में भी ग्रीक देवताओं की शक्ति का बखान कर रही थी।

नोफोआ मगरमच्छ से उतरकर, हर बार की तरह घंटा बजाकर, पोसाईडन के दरबार में पहुंच गया।

इस समय पोसाईडन अपने समुद्री रत्न जड़े सिंहासन पर विराजमान था। पोसाईडन के घुंघराले बाल पानी में लहरा रहे थे। पोसाईडन की पोशाक भी पानी में अपनी स्वर्णिम चमक बिखेर रही थी।

नोफोआ, पोसाईडन के सामने सिर झुकाकर खड़ा हो गया।

“आज तो बहुत दिनों के बाद आये नोफोआ। बताओ क्या समाचार लाये हो?” पोसाईडन की तेज आवाज वातावरण में गूंजी।

पोसाईडन की आवाज सुन नोफोआ ने अपना सिर ऊपर उठाया और फिर धीरे से बोला- “ऐ समुद्र के देवता, कल जब मैं दक्षिण अटलांटिक महासागर में घूम रहा था, तो मैंने एक स्थान पर पानी में कुछ हलचल होते महसूस किया। उस तेज हलचल की तरंगें तो मेरे शरीर से स्पर्श कर रहीं थीं, परंतु मुझे उस स्थान पर कुछ दिखाई नहीं दे रहा था? मैंने उस स्थान को छूकर देखा, तो मुझे बिजली का एक तेज झटका लगा। ..... मुझे महसूस हुआ कि वहां पर कोई अदृश्य गोल चीज उपस्थित है, जिसमें अपूर्व शक्ति भरी हुई है। अभी मैं उसके बारे में सोच ही रहा था कि तभी मुझे उस स्थान पर, लहरों में कुछ अजीब सी आकृतियां बनती-बिगड़ती दिखाई दीं। उन आकृतियों को देखकर मैं हैरान रह गया क्योंकि सभी आकृतियां वाद्य यंत्रों की थीं। ऐसा लग रहा था कि जैसे वह अदृश्य स्थान किसी संगीतज्ञ का है और वह वहां पर अलग-अलग प्रकार के वाद्य यंत्रों की रचना कर रहा है। मेरे लिये यह सभी घटनाएं किसी आश्चर्य से कम नहीं थीं, इसलिये मैं यह सब आपको बताने चला आया।”

इतना कहकर नोफोआ चुप हो गया और सिर झुकाकर पोसाईडन के अगले आदेश की प्रतीक्षा करने लगा।

नोफोआ के शब्द सुन पोसाईडन के चेहरे पर भी आश्चर्य के भाव उभर आये।

“ठीक है नोफोआ, मैं तुम्हारे साथ स्वयं उस स्थान पर चलता हूं। जरा मैं भी तो मिलूं, उस विचित्र संगीतज्ञ से।” यह कहते हुए पोसाईडन अपने स्थान से खड़ा हो गया।

पोसाईडन अब चलता हुआ, दरबार में एक ओर रखे एक बड़े से ग्लोब के पास पहुंच गया। वह ग्लोब पूर्णतया पानी से बने पृथ्वी के एक मॉडल जैसा था, जो कि पानी में होकर भी अपनी अलग ही उपस्थिति दर्ज कर रहा था।

उस पानी के ग्लोब के पास, एक छोटी सी सोने की टेबल पर, लकड़ी में लगे कुछ लाल रंग के फ्लैग रखे थे।

अब पोसाईडन ने एक बार नोफोआ की ओर देखा।

नोफोआ ने पोसाईडन का इशारा समझ, टेबल से एक फ्लैग को उठाया और उस पानी के ग्लोब पर, ध्यान से देखते हुए एक स्थान पर लगा दिया।

“यही वह जगह है देवता, जहां मैंने उस अद्भुत स्थान को देखा था।” नोफोआ ने कहा।

पोसाईडन ने ध्यान से उस जगह को देखा और फिर अपना त्रिशूल उठाकर पानी में घुमाया। अब पोसाईडन के सामने उस ग्लोब का एक बड़ा रुप दिखाई देने लगा, जिसमें नोफोआ के चिन्हित स्थान पर एक जलद्वार दिखाई दे रहा था।

पोसाईडन ने नोफोआ को पीछे आने का इशारा किया और स्वयं उस जल द्वार में प्रवेश कर गया। पोसाईडन के जाने के बाद नोफोआ भी उस जल द्वार में प्रवेश कर गया।

उस जल द्वार का दूसरा हिस्सा, ठीक उसी स्थान पर निकला, जहां नोफोआ ने उस अद्भुत वाद्य यंत्रों को देखा था।

अब नोफोआ और पोसाईडन ने उस स्थान का निरीक्षण करना शुरु कर दिया।

तभी पोसाईडन और नोफोआ को, समुद्र के अंदर किसी स्थान से, किसी वाद्य यंत्र की मधुर ध्वनि सुनाई दी।

उस मधुर ध्वनि को सुन दोनों ही चौंक गये। परंतु जैसे ही नोफोआ उस ध्वनि की दिशा में चलने को हुआ, पोसाईडन ने नोफोआ का हाथ पकड़कर उसे रोक लिया।

नोफोआ ने आश्चर्य से पोसाईडन की ओर देखा, परंतु पोसाईडन कुछ बोलने की जगह, अपने होंठो ही होंठो में कुछ बुदबुदाया। पोसाईडन के ऐसा करते ही पोसाईडन और नोफोआ दोनो ही पानी में अदृश्य हो गये।

नोफोआ समझ गया कि क्यों पोसाईडन ने उसे रोका था? अब दोनो ही उस ध्वनि की दिशा में चल दिये।

कुछ ही देर में दोनों को पानी में बहुत से विशाल वाद्य यंत्र तैरते हुए दिखाई दिये। वह सभी वाद्य यंत्र आकार और प्रकार में साधारण वाद्य यंत्रों

से कुछ अलग थे।

कोई बांसुरी, कोई शहनाई, कोई वायलिन, तो कोई पियानो जैसा प्रतीत हो रहा था। कुछ वाद्य यंत्र तो कई वाद्य यंत्रों का मिला जुला प्रतिरुप दिखाई दे रहे थे।

“यह तो बहुत ही विचित्र वाद्य यंत्र हैं .... ऐसे वाद्य यंत्र तो हमने कहीं भी नहीं देखे?” पोसाईडन ने उन वाद्य यंत्रों को पास से जाकर देखा।

तभी उन्हें सुनाई देने वाली ध्वनि थोड़ी और तेज हो गई। उसे सुन पोसाईडन और नोफोआ, फिर से उस ध्वनि की दिशा में आगे बढ़ने लगे।

कुछ आगे जाने के बाद, दोनों को एक मछली का झुण्ड दिखाई दिया। सभी मछलियां अलग-अलग रंग और आकार की थीं।

उन सभी ने इस प्रकार वहां भीड़ लगा रखी थी, मानों कि दर्शक ओलंपिक के खेलों का आनंद उठाने आये हों।

वह वाद्य यंत्र की मधुर ध्वनि उन मछलियों के झुण्ड के बीच से ही आ रही थी।

पोसाईडन और नोफोआ बिना किसी प्रकार की ध्वनि उत्पन्न किये धीरे-धीरे उस स्थान की ओर बढ़े।

पास पहुंचकर दोनों ने ही मछलियों के झुण्ड के बीच में झांककर देखा। बीच में देखते ही वह हैरान हो गये। मछलियों के झुण्ड के बीच, एक गिटार सरीखा वाद्य यंत्र स्वयं पानी में बज रहा था और उसकी मधुर ध्वनि पर एक जलपरी और एक जलपुरुष नृत्य कर रहे थे।

उस अद्भुत नृत्य को देख, एक पल के लिये तो पोसाईडन भी कल्पनाओं में सागर में खो गया।

वह दोनों मेघवर्ण और लावण्या थे, जो कि इन अंजान नजरों से बेखबर, अपनी ही दुनिया में खोए हुये थे।

कभी पानी में एक दूसरे का हाथ पकड़कर गोल-गोल नाचना, तो कभी अपनी पूंछ को जल में पटककर बड़े बुलबुले बनाना। बड़ा ही विचित्र था उनका नृत्य, पर जो भी हो, दोनों इस नृत्य और वाद्य यंत्र की मधुर ध्वनि से बहुत ही आनंदित हो रहे थे।

आखिरकार पोसाईडन और नोफोआ ने प्रकट होकर, इस अद्भुत नृत्य का पटाक्षेप किया।

पोसाईडन और नोफोआ को देख सबसे पहले सभी दर्शक वहां से भाग गये। वह एक पल में समझ गये कि अब वहां रुकना खतरे से खाली नहीं है।

अब मेघवर्ण और लावण्या की निगाह भी पोसाईडन और नोफोआ पर पड़ चुकी थी। दोनों ही पोसाईडन को नहीं पहचानते थे, इसलिये आश्चर्य से उन्हें देख रहे थे।

सभी वाद्य यंत्र अब हवा में गायब हो गये।

मेघवर्ण ने खतरा भांपते हुए लावण्या को अपने पीछे कर लिया।

“कौन हो तुम दोनों? क्या तुम्हें पता नहीं कि तुम इस समय किसके सामने खड़े हो?” नोफोआ ने आगे बढ़ते हुए कहा।

नोफोआ के शब्द सुन मेघवर्ण ने ‘ना’ में सिर हिला दिया।

नोफोआ और पोसाईडन दोनों के लिये ही ये आश्चर्य भरी बात थी, क्योंकि पानी में रहने वाला जीव और पोसाईडन को नहीं जानता। यह बात कहां दोनों के गले से उतरनी थी?

“तुम दोनों इस समय समुद्र के देवता, महाशक्तिशाली पोसाईडन के सामने खड़े हो। तुरंत झुककर इनका अभिवादन करो।” नोफोआ ने पोसाईडन के सम्मान में कसीदे पढ़ते हुए कहा।

पोसाईडन के शब्द सुन मेघवर्ण समझ गया कि खतरा बड़ा है। अतः उसने खतरे को भांपते हुए पानी में झुककर पोसाईडन का अभिवादन किया।

मेघवर्ण को ऐसा करते देख लावण्या ने भी ऐसा ही किया।

“मेरा नाम मेघवर्ण और इसका नाम लावण्या है। हमें क्षमा करें देवता, हम सच में आपके विषय में नहीं जानते थे, अन्यथा हम आपका अपमान नहीं करते।” मेघवर्ण ने विनम्रता से कहा।

अब जाकर पोसाईडन को थोड़ा बेहतर महसूस हुआ।

“तुम दोनों के पास कौन सी शक्तियां हैं? जिससे तुमने इन वाद्ययंत्रों का निर्माण किया था।” पोसाईडन ने मेघवर्ण को देखते हुए पूछा।

“मेरे पास कोई शक्ति नहीं है देवता और इसका जन्म अभी होने के कारण इसे भी अपनी शक्तियों के बारे में कुछ पता नहीं है?” मेघवर्ण ने कहा।

मेघवर्ण के शब्द सुन अब पोसाईडन का ध्यान पूरा का पूरा लावण्या पर आ गया। अब वह लावण्या को देखते हुए बोला- “तो तुम्हें भी नहीं पता कि तुम्हारे पास क्या शक्ति है? ... कोई बात नहीं, मैं स्वयं तुम्हारी शक्तियों का स्रोत जान लेता हूं।”

यह कहकर पोसाईडन ने अपने हाथ में पकड़े त्रिशूल को पानी में गोल-गोल घुमाया। ऐसा करते ही उस स्थान का पूरा पानी, किसी भंवर की भांति गोल-गोल नाचने लगा और उस पानी के मध्य रखा, वह चमत्कारी सीप, काला मोती सहित नजर आने लगा।

पानी का नाचना अब बंद हो गया, परंतु पोसाईडन और नोफोआ की निगाहें अब काला मोती पर थीं, जो कि पानी में अपनी अद्भुत छटा बिखेर रहा था।

अब नोफोआ, काला मोती की ओर बढ़ा, पर जैसे ही वह कुछ आगे गया, उसे बिजली का तेज झटका लगा। इस तेज झटके से नोफोआ कुछ दूर जा गिरा।

“देवता, इस काला मोती के चारो ओर एक अदृश्य दीवार है, जिसे मैं पार नहीं कर पा रहा।” नोफोआ ने उठते हुए कहा।

अब पोसाईडन ने गुस्से से अपना त्रिशूल, मेघवर्ण के गले पर रखते हुए, लावण्या से कहा- “अब तुम स्वयं हमें लाकर वह काला मोती दोगी। समझ गई? .... और अगर तुमने जरा सी भी चालाकी की तो मैं मेघवर्ण को मार दूंगा।”

मेघवर्ण के गले पर त्रिशूल देख, लावण्या की आँखें गुस्से से जल उठीं और इससे पहले कि कोई कुछ समझ पाता, हवा में एक विशाल दीवार उत्पन्न हुई और नोफोआ के ऊपर जा गिरी।

यह देख पोसाईडन ने गुस्से से अपने त्रिशूल की नोक, मेघवर्ण के गले में चुभा दी। मेघवर्ण के गले से एक तेज चीख निकली और खून की एक पतली लकीर, पानी में घुलने लगी।

“तुम काला मोती लाती हो कि मैं इसे मार दूं?” अब पोसाईडन ने अपना भयंकर क्रोध दिखाते हुए कहा।

लावण्या के चेहरे पर छाये क्रोध के भाव, मेघवर्ण का खून देखकर अब दर्द में परिवर्तित हो गये। लावण्या की आँखों से अब अश्रुधारा निकलकर समुद्र के पानी में मिलने लगी।

अद्भुत चमत्कार था, लावण्या के हर एक आँसू पानी में घुलते ही सफेद मोती में परिवर्तित हो जा रहे थे।

उधर नोफोआ भी किसी प्रकार से दीवार के नीचे से निकल आया था। नोफोआ को काफी चोट आई थी, फिर भी वह खड़ा हो गया।

लावण्या के चेहरे के आँसू देख, पोसाईडन ने एक बार फिर अपने त्रिशूल का दबाव मेघवर्ण के गले पर बढ़ाया।

मेघवर्ण की एक बार फिर चीख निकल गई। इस बार लावण्या पूरी तरह से घबरा गई। उसने पोसाईडन को रुकने का इशारा किया और आँसू बहाती हुई, काला मोती की ओर बढ़ गई।

लावण्या ने सीप के अंदर से फुटबाल के आकार का काला मोती उठा लिया। काला मोती के सीप से उठाते ही, वह अदृश्य सुरक्षा कवच स्वतः ही गायब हो गया।

सुरक्षा कवच को गायब होते देख, नोफोआ ने शीघ्रता दिखाते हुए लावण्या के हाथ से वह काला मोती ले लिया, पर जैसे ही काला मोती, पूरी तरह से नोफोआ के हाथ में गया, नोफोआ पत्थर का बन गया।

यह देख पोसाईडन चौंक गया।

“लगता है कि तुम ऐसे नहीं मानोगी .... मुझे मेघवर्ण को मारना ही पड़ेगा।” पोसाईडन ने लावण्या को घूरते हुए कहा।

“नहींऽऽऽऽऽऽऽऽ रुक जाओ।” लावण्या ने चीखकर कहा और कातर दृष्टि से, दर्द से कराह रहे मेघवर्ण को देखने लगी।

लावण्या ने काला मोती को नोफोआ के हाथों से ले लिया। काला मोती को लेते ही नोफोआ फिर से अपने असली शरीर में आ गया, पर इस बार वह लावण्या से थोड़ा डरा-डरा सा दिखाई देने लगा।

अब लावण्या ने रोते हुए अपने हाथ में पहनी अंगूठी को नोफोआ को दे दिया और उसे इस अंगूठी को अपने हाथ में पहनने का इशारा किया।

नोफोआ कुछ समझा तो नहीं, परंतु उसने उस सुनहरी अंगूठी को अपने हाथ में पहन लिया। जब नोफोआ ने अंगूठी को पहन लिया तो लावण्या ने फिर से काला मोती को नोफोआ के हाथ पर रख दिया, परंतु इस बार नोफोआ को कुछ नहीं हुआ?

यह देख पोसाईडन समझ गया कि इस चमत्कारी अंगूठी को पहनने वाला इंसान ही इस काला मोती को धारण कर सकता है।

अब पोसाईडन ने मेघवर्ण के गले से अपना त्रिशूल हटा लिया और उसे लावण्या की ओर धकेल दिया।

लावण्या ने झपटकर मेघवर्ण को संभाल लिया और उसके गले पर बने जख्मों पर अपना हाथ रख दिया।

लावण्या की आँखों से अभी भी आँसुओं की अविरल धारा बह रही थी। इस समय उसे काला मोती के जाने का दुख नहीं था, उसे तो बस अपने मेघवर्ण की जान बच जाने की खुशी थी।

अब लावण्या ने आखिरी बार पोसाईडन को देखा और फिर मेघवर्ण को लेकर पानी में तैरती हुई, उस स्थान से दूर अनन्त सागर की गहराइयों में चली गई।

उधर पोसाईडन ने एक बार फिर जल द्वार उत्पन्न किया और नोफोआ को लेकर वापस अपने महल की ओर चल दिया।

◆ ◆ ◆

पिछली पुस्तक का सारांश

हैलो दोस्तों,

यह पुस्तक 'रिंग ऑफ अटलांटिस' सीरीज की छठी पुस्तक है। क्या आपने इस पुस्तक को पढ़ने के पहले इसके पिछले पांच भागों को पढ़ा है? अगर नहीं .... तो इस पुस्तक का पूर्ण आनन्द उठाने के लिये कृपया इसके पिछले सभी निम्न भागों को अवश्य पढ़ लें-

1) सन राइजिंग - एक रहस्यमय जहाज
2) अटलांटिस - एक रहस्यमय द्वीप
3) मायावन - एक रहस्यमय जंगल
4) तिलिस्मा - अविश्वसनीय मायाजाल
5) देवशक्ति - अद्भुत दिव्यास्त्र

अगर आप किसी कारणवश पिछली पुस्तकों को नहीं पढ़ना चाहते तो आइये इन सभी पुस्तकों के सारांश को पढ़कर उन पुस्तकों की यादों को ताजा कर लें-

शैफाली एक 13 वर्षीय अंधी लड़की है, जो अपने माता-पिता के साथ सन राइजिंग नामक पानी के जहाज पर यात्रा कर रही है। बचपन से अंधी होने के बावजूद भी शैफाली को अजीब-अजीब से सपने आते हैं। सन राइजिंग पर और भी बहुत से लोग सफर कर रहे होते हैं।

क्रिस्टी का ऐलेक्स को इग्नोर करना, जेनिथ का तौफीक से अपने प्यार का इजहार करना और जैक व जॉनी का आपस में शर्त लगाना, कुछ ऐसी ही घटनाओं के साथ सन राइजिंग पर न्यू इयर की रात लॉरेन नामक एक डान्सर का कत्ल हो जाता है। अभी लॉरेन के कत्ल की गुत्थी सुलझ भी नहीं पाई थी कि तभी सन राइजिंग के चालक दल की गलती की वजह से, सन राइजिंग अपना रास्ता भटककर बारामूडा त्रिकोण के क्षेत्र में फंस जाता है। सन राइजिंग का सम्पर्क अब बाहरी दुनिया से पूर्णतया कट चुका था।

उड़नतश्तरी और विशाल भंवर से बचने के बाद, जहाज के असिस्टेंट कैप्टेन रोजर का हेलीकॉप्टर भी एक अंजाने द्वीप को देखते हुए दुर्घटनाग्रस्त हो जाता है। उधर सुयश के कपड़े एक ब्लू व्हेल मछली, पानी

उछालकर भिगो देती है, जिससे ब्रेंडन को सुयश की पीठ पर बना एक सुनहरे रंग का सूर्य का टैटू दिख जाता है।

उसी रात शैफाली के सोते समय, कोई उसके सिर के पास प्राचीन लुप्त शहर अटलांटिस का सोने का सिक्का रख जाता है। बाद में हरे रंग के विचित्र कीड़े को देखते हुए जहाज पर कुछ अजीब सी घटनाएं भी घटती हैं, जिसके बाद सन राइजिंग के स्टोर रुम में रखी लॉरेन की लाश कहीं गायब हो जाती है? उधर न्यूयार्क बंदरगाह पर राबर्ट और स्मिथ के पास एक व्यक्ति आकर स्वयं को सन राइजिंग का सेकेण्ड असिस्टेंट कैप्टेन असलम बताता है। वह कहता है कि कोई उसे बेहोश कर, उसकी जगह लेकर सन राइजिंग पर चला गया है। जिसके बाद इस केस को हल करने के लिये जेरार्ड, सी.आई.ए के काबिल एजेंट व्योम को इस मिशन पर भेज देता है।

उधर सुयश को बार-बार वही रहस्यमयी द्वीप दिखाई देता है और जब उस द्वीप का रहस्य जानने के लिये लारा उस द्वीप की ओर जाता है, तो वह भी रहस्यमय परिस्थितियों में अपनी जान गंवा बैठता है। दूसरी ओर व्योम सन राइजिंग को ढूंढते हुए उसी रहस्यमय द्वीप के पास पहुंच जाता है, पर उस द्वीप का रहस्य जानने में व्योम भी दुर्घटना का शिकार हो जाता है।

उधर रात में लोथार को सन राइजिंग पर मरी हुई लॉरेन दिखाई देती है, जिसे देखकर लोथार अजीब सी हरकतें करते हुए समुद्र में कूद जाता है। सभी की लाख कोशिशों के बाद लोथार भी मारा जाता है। तभी सभी को पानी पर दौड़ता हुआ एक सुनहरा मानव दिखाई देता है, जो कि एक दिशा की ओर इशारा करके गायब हो जाता है। अगले दिन ऐमू नामक एक रहस्यमय तोता फिर से जहाज को भटका देता है। उधर अंजान कातिल, लॉरेन की हत्या का रहस्य जान चुके लैब असिस्टेंट थॉमस को भी मार देता है।

अगले दिन सन राइजिंग एक भयानक तूफान के बीच फंस जाता है और सभी की लाख कोशिशों के बाद भी वह समुद्र में डूब जाता है। किसी प्रकार 12 लोग बचकर उस रहस्यमय द्वीप पर पहुंच जाते हैं।

उस रहस्यमय द्वीप पर एक भयानक जंगल होता है, जो अलग-अलग प्रकार के खतरे उत्पन्न करता रहता है। शैफाली को विचित्र पेड़ का फल देना, जेनिथ के ऊपर मगरमच्छ मानव का हमला करना, भविष्य के पत्थरों

का मिलना और फिर ड्रेजलर का अजगर के द्वारा मारा जाना, यह सभी घटनाएं उस जंगल को रहस्यमई और खतरनाक दोनों ही बना रहे थे।

वहीं दूसरी ओर वेगा पर एक रहस्यमय बाज हमला कर देता है, जिससे डर कर वेगा का भाई युगाका वेगा को एक जोडियाक वॉच देता है, जिसमें 12 राशियों की शक्तियां थीं, जो वेगा को मुसीबत के समय छिप कर उसे बचातीं।

दूसरी ओर अंटार्कटिका की धरती पर जेम्स और विल्मर को बर्फ की खुदाई के दौरान एक विचित्र दुनिया दिखाई देती है। कुछ अजीब से तिलिस्मी रास्तों को पार करने के बाद जेम्स और विल्मर वहां मौजूद देवी शलाका और उनके 7 भाईयों को जगा देते हैं, जो कि 5000 वर्ष से वहां शीतनिद्रा में सो रहे थे।

उधर जंगल में नयनतारा पेड़ के द्वारा जन्म से अंधी शैफाली की आँखें आ जाती हैं। जंगल में आगे बढ़ने पर सभी को शलाका मंदिर दिखाई देता है, जहां पर सुयश एक छोटे से तिलिस्म को पार कर, देवी शलाका की मूर्ति को छू लेता है। तभी सुयश के शरीर पर बने टैटू से सतरंगी किरणें आकर टकराती हैं और सुयश के टैटू में एक अंजानी शक्ति प्रवेश कर जाती है।

उधर जब रोजर का हेलीकॉप्टर धुंध में फंसकर अराका द्वीप पर गिरता है, तो रोजर को पायलेट की लाश, एक शेर ले जाता दिखाई देता है। शेर का पीछा करने पर रोजर एक लड़की आकृति से मिलता है। आकृति का चेहरा देवी शलाका से मिलता दिखाई देता है। आकृति रोजर को अराका के कई रहस्यों के बारे में बताती है।

उधर सुयश को एक आदमखोर पेड़ पकड़ लेता है, पर सुयश अपने टैटू में समाई विचित्र शक्ति से इस मुसीबत से बच जाता है। दूसरी ओर कुछ दिन पहले आकृति रोजर को सुनहरा मानव बनाकर सन राइजिंग को भटकाने के लिये भेजती है। रास्ते में रोजर पानी में बेहोश हुए व्योम को बचाकर अराका द्वीप के किनारे रख देता है। बाद में सुयश एक अंजान खंडहर में मिले सिंहासन की वजह से, समय के चक्र को तोड़ 5020 वर्ष पहले के काल में हिमालय पर पहुच जाता है। हिमालय पर उसे अपनी ही शक्ल का एक इंसान आर्यन दिखाई देता है जो शलाका और अन्य 11 लोगों के साथ एक रहस्यमयी विद्यालय 'वेदालय' में पढ़ रहा होता है। वहां सुयश को 15 अद्भुत लोक के बारे में पता चलता है।

वहीं दूसरी ओर लुफासा, मकोटा के आदेशानुसार अपनी इच्छाधारी शक्ति का प्रयोग कर हर रोज सन राइजिंग से एक लाश लाकर पिरामिड में रखता है, परंतु एक दिन जब वह पिरामिड में जाकर देखता है तो उसे पिरामिड के अंदर अंधेरे का देवता जैगन बेहोश पड़ा दिखाई देता है।

उधर ब्रूनो के गायब होने के बाद सुयश की टीम का सामना एक जंगली सुअर से होता है, जिसकी वजह से असलम एक दलदल में गिर कर मारा जाता है, परंतु मरने से पहले असलम अपना काला बैग सुयश को दे जाता है। असलम के काले बैग में एक लॉकेट होता है, जो स्वतः ही जेनिथ के गले में बंध जाता है।

उधर अगले दिन वेगा पर टुंड्रा हंस और बुल शार्क हमला करती हैं। लेकिन वेगा के हाथ में बंधी जोडियाक वॉच वेगा की रक्षा करती है। दूसरी ओर व्योम एक व्हेल का पीछा करता हुआ, उस द्वीप के एक ऐसे अंजान हिस्से में पहुंच जाता है, जहां एक कम्प्यूटर प्रोग्राम कैस्पर द्वारा एक तिलिस्म का निर्माण हो रहा होता है। व्योम उस कमरे में रखी एक ट्रांसमिट मशीन से ट्रांसमिट होकर सामरा राज्य के अंदर पहुंच जाता है।

उधर जंगल में युगाका ऐलेक्स को बेहोश करके ऐलेक्स बनकर सुयश की टीम में शामिल हो जाता है। पर शैफाली युगाका को पहचान जाती है और वह युगाका से कुछ क्षणों के लिये उसकी वृक्ष शक्ति छीन लेती है। दूसरी ओर देवी शलाका के कमरे में बंद जेम्स को दीवार में एक रहस्यमयी द्वार दिखाई देता है। जेम्स उस द्वार के माध्यम से हिमालय पहुंच जाता है, जहां हनुका नामक एक यति जेम्स को पकड़कर हिमलोक के कारागार में डाल देता है। उधर व्योम ट्रांसमिट होकर सामरा द्वीप में उपस्थित महावृक्ष के पास पहुंच जाता है। दूसरी ओर कलाट, युगाका को लेकर समुद्र के अंदर मौजूद अटलांटिस की धरती पर जाता है। जहां पर 'सागरिका' एक पहेली के माध्यम से कलाट को एक संदेश देती है। उस संदेश में विनाश की एक आहट छिपी हुई थी।

उधर जॉनी एक जलपरी की मूर्ति से निकलती शराब को पीकर बंदर में परिवर्तित हो जाता है और उछलकर जंगलों में भाग जाता है। रात में जंगल में बने एक पार्क में सोते समय, वहां उपस्थित मेडूसा की मूर्ति सजीव होकर, शैफाली को एक महाशक्ति मैग्ना के सपने दिखाती है, जिसमें मैग्ना एक ड्रैंगो पर सवार होकर, समुद्र की तली में मौजूद, एक स्वर्ण महल से,

तिलिस्म तोड़कर एक शक्तिशाली पंचशूल प्राप्त करती है। उसी रात जेनिथ को नक्षत्रा के द्वारा तौफीक की सच्चाई के बारे में पता चलता है। वह जान जाती है कि तौफीक ही सनराइजिंग पर घूमने वाला वह रहस्यमय कातिल है।

इधर शलाका जेम्स को ढूंढने के लिये हिमालय पर पहुंचती है, पर रुद्राक्ष और शिवन्या शलाका को एक दिन के लिये वहीं रोक लेते हैं। दूसरी ओर जंगल में एक भौंरा विशालकाय चक्रवात का रुप लेकर ब्रैंडन को अपने में लपेटकर हवा में गायब हो जाता है। उधर लुफासा, मकोटा के आदेशानुसार हिमालय पर मौजूद, एक शिव मंदिर से 'गुरुत्व शक्ति' लाने के लिये जाता है। लुफासा गरुण का रुप धरकर हिमालय से गुरुत्व शक्ति ले जाने में सफल हो जाता है। इस वजह से रुद्राक्ष और शिवन्या के परेशान होने पर, गुरु नीमा महाशक्तिशाली हनुका को लुफासा से गुरुत्व शक्ति छीनकर लाने को कहते हैं। महाबली हनुका व लुफासा के मध्य युद्ध होता है, परंतु उस युद्ध के फलस्वरुप गुरुत्व शक्ति की डिबिया आसमान से अराका द्वीप में गिर जाती है।

दूसरी ओर अलबर्ट की सूझबूझ से सभी घास के मैदान में लगी आग को पार करते हैं, पर आखिर में क्रिस्टी, जैक को उस आग में धक्का देकर मार देती है। सभी के पूछने पर क्रिस्टी बताती है कि जैक ने ही उसके पिता को मारा था। आगे बढ़ने पर सुयश की टीम पर एक स्पाइनासोरस आक्रमण कर देता है। यहां जेनिथ नक्षत्रा की शक्तियों का प्रयोग कर उस स्पाइनासोरस को मार देती है।

उधर व्योम को रिंजो-शिंजो के माध्यम से एक झील के अंदर रखा हुआ पंचशूल दिखाई देता है, जिसे छूने के बाद व्योम का पूरा शरीर जल जाता है। व्योम मरणासन्न हालत में झील के बाहर गिरता है। तभी आसमान से गुरुत्व शक्ति की आखिरी बूंद व्योम के मुंह में आकर गिर जाती है। गुरुत्व शक्ति के माध्यम से व्योम ठीक होकर उस पंचशूल को भी प्राप्त कर लेता है। पंचशूल को उठाने के बाद व्योम की कलाई पर एक सुनहरे रंग का सूर्य का टैटू बन जाता है।

उधर वेगा पर बारी-बारी से एक ईल मछली, काला नाग व खतरनाक सांड हमला करते हैं, परंतु इस हमले में धरा बेहोश हो जाती है। वेगा, मयूर और धरा को अपने घर ले जाता है। दूसरी ओर अलबर्ट को एक उड़ने वाला

टेरोसोर लेकर उड़ जाता है। उधर ऐलेक्स एक पेड़ के कोटर से होते हुए, 20 फुट गहरे कमरे में गिर जाता है। जहां पर उसे एक 3 सिर वाला सर्प विषाका बेवकूफ बनाकर अपनी मणि और सुनहरी बोतल लेकर भाग जाता है। दूसरी ओर क्रिस्टी अपनी फूर्ति और तेज दिमाग से नदी किनारे बने एक खतरनाक रेत मानव को खत्म कर देती है। उधर व्योम विचित्र परिस्थितयों में त्रिकाली को बचाते हुए मकोटा के सेवक गोंजालो को बुरी तरह से घायल कर देता है। जिससे त्रिकाली व्योम की शक्तियों पर मोहित हो, उससे रक्षासूत्र बंधवा कर शादी कर लेती है।

दूसरी ओर सुयश की टीम पहाड़ों के बीच बने 'मैग्नार्क द्वार' को पार करके रेड आंट के क्षेत्र में प्रवेश कर जाते हैं, जहां पर खून की बारिश होती है, पर जेनिथ की वजह से यह मुसीबत भी पार हो जाती है।

उधर रुपकुण्ड झील के रास्ते कलिका, यक्ष युवान के प्रश्नों का उत्तर देते हुए प्रकाश शक्ति को प्राप्त कर लेती है। दूसरी ओर त्रिशाल भी मानसरोवर झील के अंदर से होकर शक्तिलोक पहुंच जाता है, जहां एक-एक कर वह भगवान विष्णु के 5 अस्त्रों की सहायता से एक मायाजाल को पार करके ध्वनि शक्ति प्राप्त कर लेता है।

दूसरी ओर कैस्पर, मैग्ना को याद करते हुए कैस्पर क्लाउड में बने श्वेत महल आ जाता है। जहां पर उसकी मुलाकात विक्रम और वारुणी से होती है। कैस्पर, श्वेत महल का नियंत्रण वारुणि के हाथ में दे देता है। उधर सुयश सहित सभी बर्फ की घाटी में पहुंच जाते हैं, जहां एक छोटे से पेंग्विन की मदद से शैफाली को एक सीप के अंदर मैग्ना की ड्रेस मिल जाती है। आगे बढ़ने पर सुयश की टीम पर एक बर्फ का ड्रैगन हमला कर देता है। जेनिथ एक बार फिर से नक्षत्रा की शक्ति का उपयोग करके, उस बर्फ के ड्रैगन को हरा देती है।

वहीं दूसरी ओर वेगा, वीनस से अपने प्यार का इजहार करता है कि तभी कि तभी आसमान से एक विशाल उल्का पिंड आकर अटलांटिक महासागर में गिरता है। उल्का पिंड गिरने की वजह से, भूकंप का एक जोरदार झटका आता है। धरा और मयूर, वेगा और वीनस से विदा ले उल्का पिंड के पीछे चले जाते हैं।

उधर तौफीक को रात में एक पेड़ की कोटर में मौजूद 'वेदान्त रहस्यम' नामक एक पुस्तक मिलती है। जिसमें सुयश को, अष्टकोण में बंद एक नन्हा

बालक दिखाई देता है। बाद में शलाका बताती है कि वेदान्त रहस्यम आर्यन ने ही लिखी थी। आगे बढ़ने पर सभी एक ज्वालामुखी के जाल में फंस जाते हैं। जहां शैफाली को ज्वालामुखी के लावे के अंदर एक ड्रैगन का सोने का सिर मिलता है। शैफाली के आँसुओं से वह ड्रैगन का सिर पिघलकर, ज्वालामुखी के लावे में मिल जाता है।

उधर आकृति, लैडन नदी के किनारे जाकर एक सुनहरी हिरनी का अपहरण कर लेती है, जो कि देवी आर्टेमिस को सबसे प्रिय थी। वहां उसे लैडन नदी में सोया हुआ मैग्ना का ड्रैंगो भी दिखाई देता है। उधर दूसरी ओर त्रिशाल और कलिका दोनों मिलकर, राक्षस कालबाहु को पकड़ने राक्षसलोक जाते हैं, पर वहां उन्हें विद्युम्ना अपने मायाजाल भ्रमन्तिका में फंसा देती है, परंतु भ्रमन्तिका में फंसने के पहले त्रिशाल और कलिका वहां रावण की मूर्ति में मौजूद एक स्त्री के कंकाल को अपनी शक्तियों से मुक्ति दे देते हैं।

दूसरी ओर ऐलेक्स को स्थेनो बताती है कि शैफाली ही पिछले जन्म में मैग्ना थी। वह कहती है कि विषाका जो बोतल लेकर भागा था, वह मैग्ना की स्मृतियां थीं। स्थेनो, ऐलेक्स को माया का दिया हुआ वशीन्द्रिय शक्ति का घोल पिलाकर नागलोक में स्थित त्रिआयाम में भेज देती है। जहां ऐलेक्स नागफनी और राक्षस प्रमाली को हराकर त्रिआयाम से मैग्ना की स्मृतियां लाने में सफल हो जाता है।

उधर सुयश और उसकी टीम एक खोखले पहाड़ में फंस जाते हैं। उस खोखले पहाड़ में हेफेस्टस और हरमीस की मूर्तियां लगी होती हैं। यहां भी एक प्रकार का तिलिस्म होता है, जिसे सभी मिलकर अपने दिमाग से पार कर लेते हैं। आगे बढ़ने पर सुयश को एक नन्हे खरगोश के माध्यम से एक अंगूठी मिलती है, जो कि शैफाली के हाथ में बिल्कुल फिट हो जाती है।

उधर व्योम के सामने उसकी और त्रिकाली की शादी का राज खुल जाता है। वहां कलाट, व्योम और त्रिकाली को त्रिशाल व कलिका को छुड़ाने के लिये भ्रमन्तिका में जाने को कहता है। वहीं दूसरी ओर ऐलेक्स, सुयश की टीम के पास वापस पहुंचने में कामयाब हो जाता है। वह मैग्ना की स्मृतियां बोतल से निकाल शैफाली को दे देता है, जिससे शैफाली को पूर्वजन्म की सारी बातें याद आ जाती हैं। दूसरी ओर वारुणी कैस्पर को एक

विचित्र जीव को दिखाती है। कैस्पर उस विचित्र जीव को देखकर बताता है कि पृथ्वी पर कोई बड़ा संकट आने वाला है?

दूसरी ओर सुयश की टीम को रास्ते में एक नहर मिलती है, जिसे पार करना अत्यंत ही मुश्किल था, पर सभी के सम्मिलित प्रयास से वह नहर के जलकवच को पार कर लेते हैं। उधर शलाका, विल्मर को सुनहरी ढाल दे देती है, परंतु बदले में वह विल्मर की उस स्थान की स्मृति छीन लेती है। वहीं दूसरी ओर आकृति की कैद में बंद, रोजर को सनूरा छुड़ा देती है। रोजर भागते समय, मेलाइट व सुर्वया को भी अपने साथ लिए जाता है।

उधर सुयश अपनी टीम के साथ उड़ने वाली झोपड़ी के मायाजाल को तोड़ कर, सभी को लेकर तिलिस्मा में प्रवेश कर जाता है। जहां तिलिस्मा का निर्माता कैश्वर सभी को एक नीलकमल की पहली पंखुड़ी तोड़ने के लिये कहता है। सभी के सम्मिलित प्रयास से वह तिलिस्मा के पहले द्वार को पार कर जाते हैं।

दूसरी ओर फेरोना ग्रह का कमांडर प्रीटेक्स, राजा एलान्का को बताता है कि उसने युवराज ओरस को पृथ्वी पर देख लिया है और उसे प्राप्त करने के लिये, उसने एण्ड्रोवर्स पावर को भेज दिया है। वहीं दूसरी ओर तिलिस्मा में सुयश की टीम के सामने एक नेवला व ऑक्टोपस मायाजाल बुनकर उन्हें फंसाने की कोशिश करते हैं, पर सभी आसानी से उस द्वार को पार कर लेते हैं।

उधर एक ओर शलाका वेदान्त रहस्यम् नामक किताब को पढ़कर आर्यन के कुछ रहस्य को जान जाती है, जिसमें आर्यन अपने और आकृति के पुत्र को, एक काँच के अष्टकोण में बंदकर, जमीन में छिपा रहा होता है। शलाका उस बालक को ढूंढने का निश्चय कर लेती है।

उधर धरा और मयूर समुद्र में गिरे उल्का पिंड की जांच करने के लिये अटलांटिक महासागर में जाते हैं, जहां उन्हें पता चलता है कि वह उल्का पिंड असल में एक अंतरिक्ष यान है। वहां दोनों का सामना अंतरिक्ष के 2 शक्तिशाली जीव एलनिको और एनम से होता है। एलनिको अपनी चुम्बकीय शक्तियों का प्रयोग कर धरा और मयूर को बेहोश कर देता है और उन्हें उठाकर अपने साथ अपने अंतरिक्ष यान में लिये जाता है।

उधर वुल्फा को एक ऊर्जा द्वार में घायल पड़ा गोंजालो दिखाई देता है। वुल्फा घायल गोंजालो को लेकर पिरामिड के अंदर आ जाता है। वहीं दूसरी ओर सुयश सहित सभी एक जलदर्पण के मायाजाल में फंस जाते हैं, जहां वह एक विशाल कछुए की पीठ पर रखे एक पिंजरे में कैद होते हैं। यहां शैफाली और ऐलेक्स के प्रयासों से सभी बचकर इस द्वार को पार कर जाते हैं। इसके बाद सभी चींटियों के संसार में फंस जाते हैं, जहां शैफाली के दिमाग लगाने से सुयश सहित सभी चींटियों के उस संसार को भी पार करने में सफल हो जाते हैं।

उधर कैस्पर, वारुणि को कैश्वर और तिलिस्मा के बारे में बताता है। वह वारुणि को एक महायुद्ध का संकेत देता है और उसे उस महायुद्ध से निपटने के लिये कुछ तैयारियां करने को कहता है। उधर आकृति 'सन किंग' जहाज पर जाकर, विल्मर से सुनहरी ढाल छीन लेती है। तभी आकृति को विक्रम एक बर्फ के गोले में बंद, बेहोशी की हालत में उसी जहाज पर मिलता है। विक्रम के होश में आने पर पता चलता है कि उसकी स्मृतियां जा चुकी हैं। आकृति, विक्रम के सामने वारुणी होने का नाटक कर, उसे अपने साथ लेकर न्यूयॉर्क चली जाती है।

वहीं दूसरी ओर सुयश सहित सभी एक-एक कर स्टेचू आफ लिबर्टी एवं सपनों के संसार को पार करते हैं। इसके बाद सभी 4 ऋतुओं के जाल में फंस जाते हैं, जहां शरद ऋतु से सभी को ऐलेक्स की समझदारी और तौफीक का निशाना बचाती है। वहीं ग्रीष्म ऋतु में एक स्थान पर जेनिथ एक जहरीली गैस में फंसकर गिर जाती है। जेनिथ उस स्थान पर बस मरने ही वाली थी कि तभी एक खूबसूरत योद्धा प्रकट होकर जेनिथ को बचाकर गायब हो जाता है। इसके बाद सभी शीत ऋतु में बंद एक अश्वमानव और समुद्री घोड़े को हराकर उस मायाजाल को भी पार कर लेते हैं।

उधर मकोटा, लुफासा को अपने विश्वास में लेने के लिये, उसे पिरामिड दिखाने ले जाता है, जहां लुफासा को पता चलता है कि उसके माता-पिता का कत्ल कलाट ने किया था। उधर वाशिंगटन में वीनस के कमरे में बहुत से डरे हुए पंछी प्रवेश कर जाते हैं। जब वीनस खिड़की से देखती है, तो उसे पूरे शहर में मरे हुए पक्षी सड़क पर पड़े हुए दिखाई देते हैं। तभी समुद्र के कुछ जीव भी विकृत आकार लेकर शहर पर हमला कर देते हैं। वीनस और वेगा अपनी शक्तियों का प्रयोग करके उन जीवों को मार देते हैं।

उधर रोजर को अपनी नाभि से एक तेज सुनहरी रोशनी निकलती दिखाई देती है, पर वह रोशनी मेलाइट के स्पर्श करते ही गायब हो जाती है। वहीं दूसरी ओर हिमालय पर हनुका छिपते हुए रुद्रलोक पहुंच जाता है और नीलाभ को माया के बारे में बता देता है। नीलाभ हनुका को रक्त भैरवी की डिबिया देता है, जिसका प्रयोग वह हनुका से समय आने पर करने को कहता है। उधर शलाका जेम्स को अपने अंतरिक्ष यान आर्केडिया को चलाने की ट्रेनिंग देने लगती है।

दूसरी ओर महावृक्ष व्योम से परीक्षा लेने के लिये उसे एक नकली विद्युम्ना के जाल में फंसा देता है, पर व्योम सभी मुसीबतों को पार कर विद्युम्ना को हरा देता है। जिससे महावृक्ष व्योम को असली विद्युम्ना के पास जाने की अनुमति दे देता है। वहीं एक ओर अलबर्ट टेरोसोर से बचकर एक अंधेरे कुएं में गिर जाता है। उस कुएं में अलबर्ट को एक बिल्ली जैसी शक्ल वाली देवी की प्रतिमा दिखाई देती है, जिसके हाथों में पकड़े पात्र में विचित्र जल था। अलबर्ट उस जल को पी जाता है।

उधर सुयश सहित सभी वसंत ऋतु के जाल में फंस जाते हैं, जहां 4 अलग-अलग रंगों की परियां 4 जगहों पर पिंजरे में कैद थीं। सभी अपनी-अपनी क्षमताओं का इस्तेमाल कर उन परियों को छुड़ा लेते हैं और उनकी मदद से प्रकृति के रंगों को भरकर तिलिस्मा के उस भाग को पार कर लेते हैं। दूसरी ओर नीलाभ महादेव को प्रसन्न कर ब्रह्मांड में स्थित उनके पंचमुखी रुप के दर्शन करता है, वहां महादेव, नीलाभ से उनके 5 अवतारों से आशीर्वाद लेने के लिये कहते हैं।

उधर डेल्फानो ग्रह पर बचपन में जब ओरस, अपने पिता गिरोट के साथ ब्लैकून में समयचक्र को देखने के लिये जाता है, तो फेरोना ग्रह के हमले के कारण ओरस ब्लैकून में ही फंस जाता है। गिरोट मरने से पहले ब्लैकून को छोटा कर देता है और ज़ेनिक्स से ओरस को लेकर पृथ्वी पर जाने को कहता है। वहीं दूसरी ओर अंतरिक्ष के कुछ जीव अराका द्वीप पर हमला कर देते हैं। इस हमले में रोजर मारा जाता है, परंतु सुर्वया अपनी शक्तियों से उन अंतरिक्ष जीवों को पराजित कर रोजर को पुनः जीवित कर देती है।

वहीं दूसरी ओर सुयश की टीम एक-एक कर सभी इन्द्रियों को पराजित करती जाती है। आँख और नाक का तिलिस्म तो बिना किसी अवरोध के

पार हो जाता है, पर कान के तिलिस्म में, कुछ विचित्र परिस्थितियों में ऐलेक्स व तौफीक की मृत्यु हो जाती है। परंतु तिलिस्म के इस द्वार में क्रिस्टी अपने पास रखी सुनहरी रेत से भरी पेंसिल को तोड़कर एक यक्ष इंद्राक्ष को खोल देती है। इंद्राक्ष, सुयश को आर्यन की स्मृतियां वापस कर देता है और शैफाली के द्वारा कैस्पर के लिये, दिया एक संदेश लेकर वहां से चला जाता है।

उधर एक दिन जब शलाका अपने यान आर्केडिया में सो रही होती है, तभी एक रहस्यमय साया उसके सिरहाने पर एक कागज रखकर चला जाता है। जब शलाका सो कर उठती है तो उस कागज के टुकड़े पर बने 'S' के निशान को देख कर चौंक जाती है। इसके बाद शलाका, आर्यन के पुत्र को ढूंढने के लिए, जेम्स को लेकर भारत के उज्जैन शहर में पहुंच जाती है। जहां पर शारदा नाम की एक औरत से उसे एक व्यक्ति महेन्द्र शर्मा के बारे में पता चलता है, जिनके पास एक अद्भुत बालक था। बालक का नाम देवोम था और वह इस समय महेंद्र शर्मा के साथ अमेरिका में रह रहा था।

उधर कैस्पर, वारुणि को अपनी माँ माया से मिलाता है। जहां माया वारुणि को 'देवयुद्ध' नामक एक पुस्तक देती है, जिसमें पृथ्वी पर रहने वाली सभी महाशक्तियों और दुष्टशक्तिधारकों के नाम और उनकी शक्तियों की जानकारियां थीं। माया, वारुणी से देवयुद्ध की कुछ तैयारियों के तहत, पृथ्वी पर रहने वाले सभी दिव्यशक्ति धारकों को एकजुट करने के लिए कहती है।

उधर व्योम और त्रिकाली, राक्षसताल में प्रवेश कर विद्युम्ना की जलशक्ति से टकराते हैं, जिसमें विद्युम्ना अपनी सभी जलशक्तियों का प्रयोग करने के बाद भी व्योम को हरा नहीं पाती। यहां व्योम का मुकाबला इंद्र और शेषनाग जैसी देव शक्तियों से होता है।

दूसरी ओर हनुका माया को ढूंढता हुआ अराका द्वीप पर जा पहुंचता है, जहां उसका युद्ध वुल्फा के साथ होता है। हनुका आसानी से वुल्फा को मार देता है। वुल्फा को मारने के बाद हनुका सीनोर महल जा पहुंचता है, परंतु सुर्वया के मनाने पर वह लुफासा से युद्ध नहीं करता। सुर्वया, हनुका को माया का पता बता देती है और हनुका को ओलंपस पर्वत की ओर भेज देती है।

उधर माया, कैस्पर और वारुणि के साथ ओलंपस पर्वत पर जाकर, ग्रीक देवता जीयूष के सामने इस देवयुद्ध में शामिल ना होने की शर्त रखती है। एक छोटी सी झड़प के बाद जीयूष माया की बात मानने के लिये तैयार हो जाता है। वहीं दूसरी ओर सनूरा अपने बचपन की कहानी रोजर, मेलाइट और सुर्वया से सुनाती है, जिसमें लुफासा के पिता मुफासा ने उसे एक योद्धा बनाया था।

उधर अलबर्ट सूखे कुंए से निकलने में कामयाब हो जाता है। तभी उसे रास्ते में एक-एक कर ऐमू और ब्रूनो मिलते हैं। अलबर्ट ब्रूनो और ऐमू की सहायता से तिलिस्मा के अंदर प्रवेश कर जाता है। दूसरी ओर सुयश सभी लोगों के साथ स्वादइंद्रिय तक पहुंच जाता है और सभी की सम्मिलित शक्ति के कारण वह इस इंद्रिय को भी पार कर जाता है। उधर कैश्वर अपने लिये एक शरीर का निर्माण करता है, जिसमें ज़ेनिक्स छिपे तौर पर उसकी मदद करती है।

दूसरी ओर नीलाभ, नीलिमा की सहायता से वीरभद्र के पास पहुंच जाता है, जहां भद्रकाली उसकी परीक्षा लेने के लिये उसका हाथ मांग लेती हैं। हाथ कटने के बाद भी नीलाभ अपनी इच्छा शक्ति से किसी प्रकार वीरभद्र को प्रसन्न करने में सफल हो जाता है।

उधर वेगा और वीनस पिछले युद्ध से सबक लेकर अपने लिये एक ड्रेस तैयार करते हैं। पर जब वह एक पार्क में घूमने के लिए जाते हैं, तो उन पर अंतरिक्ष जीव एलनिको, एनम व रुफो हमला कर देते हैं। जब वेगा और वीनस उन अंतरिक्ष मानवों से हार जाते हैं, उसी समय वहां पर कलाट और युगाका पहुंच जाते हैं। युगाका अपनी शक्तियों से एलनिको को मार देता है और वेगा व वीनस को लेकर वहां से चला जाता है।

उधर सुयश सहित सभी त्वचा की इंद्रिय वाले तिलिस्म में प्रवेश करते हैं। जहां एक द्वार में कैस्पर छिपकर शैफाली से मिलता है और उसे अपनी भविष्य की योजनाओं के बारे में बताता है। शैफाली यह बात किसी से नहीं बताती? और सभी के साथ मिलकर उस द्वार को पार कर लेती है।

उधर ओरस, ज़ेनिक्स की मदद से 25 वर्ष आगे भविष्य के समय में जाता है, जहां उसे जेनिथ दिखाई देती है, परंतु आश्चर्यजनक तरीके से जेनिथ ओरस को नहीं पहचानती। ओरस को जेनिथ के ऑफिस में अपने पिता गिरोट भी दिखाई देते हैं। यह देख ओरस पूरी तरह से उलझ जाता है।

दूसरी ओर शलाका, जेम्स को लेकर महेन्द्र शर्मा से मिलने न्यूयार्क पहुंच जाती है। वहां महेन्द्र शर्मा बताता है कि देवोम पिछले कुछ दिनों से कहीं गायब है? न्यूयार्क में शलाका को अमृत की शीशी ढूंढते समय, एक और छोटा सा बालक सूर्यांश मिलता है। शलाका को पता चल जाता है कि सूर्यांश ही वह बालक है, जिसने उसके कमरे में वह कागज रखा था। सूर्यांश शलाका को बताता है कि उसने अमृत की शीशी में रखा अमृत पी लिया है। शलाका, सूर्यांश को छोड़ वहां से चली जाती है। बाद में आर्ची अपने कंप्यूटर से ढूंढ कर शलाका को बताती है कि देवोम का ही नाम व्योम है और उसने अमेरिकन सीक्रेट सर्विस ज्वाइन कर लिया है। आखिरी बार व्योम सन राइजिंग को ढूंढने के मिशन पर गया था।

अब आगे पढ़िये ....

◆ ◆ ◆

चैपटर-2

कर्क-चक्र

तिलिस्मा 6.11

अब कुछ भी कहने और बोलने का कोई मतलब नहीं है, सीधे-सीधे बताओ कि तुम्हें इस हथौड़े और निहाई के बदले में क्या चाहिये?" क्रिस्टी ने गुस्साते हुए कहा।

"तुम इसकी कीमत दे पाओगी?" लोहार ने क्रिस्टी की ओर देखते हुए कहा- "सोच लो इसकी कीमत बहुत बड़ी है।"

"सोच लिया ... हमारा यहां से निकलना सबसे ज्यादा जरुरी है।" क्रिस्टी ने अपने दाँत भींचते हुए कहा- "तुम सिर्फ इसकी कीमत बताओ और ये बताओ कि हम उसे कैसे चुका सकते हैं? बाकी सब हम पर छोड़ दो।"

"मुझे इस हथौड़े और निहाई के बदले डॉलर से भरा बैग चाहिये।" लोहार ने अजीब से अंदाज में ऐलेक्स और क्रिस्टी को देखते हुए कहा।

"क्याऽऽऽऽ?" ऐलेक्स और क्रिस्टी के चेहरे पर अब और आश्चर्य के भाव आ गये।

"पर हम इस जगह पर डॉलर का बैग कहां से लायेंगे?" क्रिस्टी ने उलझे-उलझे स्वर में कहा।

"वो सामने तुम्हारे ही डैड 'डेरिक जोंस' हैं ना, जो इस समय डॉलर से भरा बैग लेकर बैंक में जा रहे हैं?" लोहार ने क्रिस्टी को एक ओर इशारा करते हुए कहा।

लोहार के शब्द सुन क्रिस्टी डरते-डरते पीछे घूमी। पीछे सच में उसके डैड थे, जो सड़क के दूसरी ओर स्थित बैंक में डॉलर से भरा बैग लेकर जा रहे थे।

ऐलेक्स, क्रिस्टी के डैड को पहचानता नहीं था, पर बैंक में प्रवेश कर रहे व्यक्ति पर नजर पड़ते ही उसकी आँखों के सामने कुछ पुराने दृश्य उभरने लगे।

तभी ऐलेक्स को अपने पीछे किसी खटके की आवाज सुनाई दी।

ऐलेक्स ने पीछे पलटकर देखा। वह आवाज जैक कर रहा था, जो कि नकाब पहने बैंक के कैश काउंटर पर खड़ा था।

यह देख ऐलेक्स ने चौंक कर अपने चारो ओर देखा। इस समय वह बैंक के अंदर खड़ा था। ऐलेक्स के हाथों में एक गन थी और उस गन से उसने, बैंक में खड़े कुछ लोगों को कवर कर रखा था।

यह बिल्कुल वही दृश्य था, जैसा कि बैंक डकैती के समय पर ऐलेक्स ने देखा था।

ऐलेक्स समझ गया कि यह भी कैश्वर का फैलाया कोई मायाजाल ही है? जिसमें वह उसके दिमाग के साथ खेल रहा है।

तभी ऐलेक्स की नजर बैंक के दरवाजे की ओर गई, जहां से अभी-अभी क्रिस्टी ने प्रवेश किया था। क्रिस्टी के अंदर प्रवेश करते ही जॉनी ने उसे गन की नोक पर कवर कर लिया।

ऐलेक्स ने आगे बढ़कर जॉनी को रोकने की कोशिश की, परंतु वह ऐसा कर नहीं पाया।

पता नहीं कैसा मायाजाल था, ऐलेक्स सब कुछ देख व सुन रहा था, पर वह अपने हिसाब से अपने शरीर से रिएक्ट नहीं कर पा रहा था। वह क्रिस्टी को बहुत सारी बातें बताना चाह रहा था, परंतु बता नहीं पा रहा था। ऐलेक्स इस समय स्वयं को बहुत असहाय महसूस कर रहा था।

तभी जॉनी, क्रिस्टी को धक्का देते हुए अंदर की ओर ले आया और क्रिस्टी को भी सभी के साथ भीड़ में खड़ा कर दिया।

क्रिस्टी अब भीड़ में खड़े अपने डैड को देख रही थी। क्रिस्टी ने अपने डैड से कुछ बातें कीं, जिसे ऐलेक्स सुन नहीं पाया, पर वह क्रिस्टी की आँखों से बह रहे आँसू को साफ देख पा रहा था।

क्रिस्टी इस समय बहुत ज्यादा भावुक दिख रही थी।

ऐलेक्स से क्रिस्टी का इस प्रकार रोना अच्छा नहीं लगा, इसलिये वह क्रिस्टी की ओर बढ़ा।

पास पहुंचकर ऐलेक्स ने क्रिस्टी को चुप कराने के लिये अपना मुंह खोला, परंतु आशाओं के विपरीत ऐलेक्स के मुंह से अलग ही शब्द निकले- “ऐ लड़की, ये रोने का नाटक बंद करो।”

यह कहते हुए, ऐलेक्स ने अपनी गन को क्रिस्टी की ओर कर दिया।

अब ऐलेक्स अपने इस व्यवहार से बहुत ज्यादा परेशान हो गया।

ऐलेक्स की आवाज सुन क्रिस्टी एक झटके से मुड़ गई। अब उसकी नजरें ऐलेक्स के चेहरे की ओर थीं। पर उसकी आँखों में गुस्से के नहीं बल्कि प्यार के और खुशी के भाव थे।

ऐसा लग रहा था कि जैसे वह ऐलेक्स को चीख-चीखकर बताना चाह रही हो कि उसे उसके डैड मिल गये। परंतु ऐलेक्स ने क्रिस्टी के चेहरे के भावों को आसानी से पढ़ लिया।

क्रिस्टी को अपनी ओर घूरता देख, ऐलेक्स डर गया। उसे लगा कि कहीं फिर से उसकी आशा के विपरीत ही वह ना काम करने लगे? इसलिये उसने एक, दूसरे व्यक्ति को पीछे धकेलते हुए कहा- “पीछे हटो, तुम्हें पता नहीं कि हम कितना खतरनाक हैं?”

“तुम्हारी गन में गोली भी है?” क्रिस्टी ने अब नार्मल होते हुए ऐलेक्स से पूछा।

“चलाकर दिखाऊं क्या?” ऐलेक्स ने गुर्राकर कहा, पर वह यह बात जान गया कि क्रिस्टी को पता है कि उसकी गन में कोई गोली नहीं है।

तभी ऐलेक्स की बात सुन डेरिक आगे आ गये- “नहीं-नहीं मेरी बेटी को कुछ मत कहना ... ये ... ये अब कुछ नहीं बोलेगी।”

यह कहकर डेरिक ने क्रिस्टी को पीछे खींच लिया, तभी तेज आवाज सुन जैक भी उधर आ गया। उसके हाथ में भी गन थी।

“क्या हुआ कोई परेशान कर रहा है क्या?” जैक ने ऐलेक्स की ओर देखते हुए कहा।

ऐलेक्स ने क्रिस्टी की ओर देखा और फिर जैक को जवाब दिया- “नहीं।”

“तो फिर ये बूढ़ा तेज आवाज में क्यों बोल रहा था?” जैक ने गुर्राते हुए कहा।

उधर जॉनी ने कैश काउंटर पर अब जैक की जगह ले ली थी।

तभी जैक की निगाह डेरिक के हाथ में थमे, बैग पर गई।

“इस बैग में क्या है?” जैक ने तेज आवाज में पूछा।

“क ...क .... कुछ नहीं, ऑफिस के पेपर हैं।” डेरिक ने डरते-डरते जवाब दिया, पर अब वो उस बैग को छिपाने का भरसक प्रयास कर रहा था।

उन्हें बैग को छिपाता देख, जैक ने डेरिक के हाथ से बैग को छीनने की कोशिश की, पर डेरिक ने अपने बैग को इस प्रकार पकड़ रखा था, कि जैक को एक हाथ से बैग छीनने में परेशानी हो रही थी।

अब जैक और डेरिक के बीच खींचा-तानी शुरु हो गई।

ऐलेक्स स्वयं अपने शरीर को नियंत्रित नहीं कर पा रहा था, इसलिये स्थिति की गंभीरता को देखते हुए, अब वह बहुत परेशान सा दिखने लगा।

तभी जैक ने बैग को ना पाते देख, गुस्साकर डेरिक पर गन तान दी। यह देख क्रिस्टी, जोर से हवा में उछली और उसने जैक के हाथ में पकड़ी गन पर लात मार दी।

जैक की गन हवा में उछलकर दूर जा गिरी।

उधर जॉनी ने कैश काउंटर से डॉलर से भरा बैग ले लिया।

“सब निकलो यहां से। हमारा काम हो चुका है।” जॉनी ने कहा और बैंक के बाहर की ओर भागा।

तभी जैक ने जॉनी के हाथ से उसकी गन छीनी और डेरिक की ओर करके गोली चला दी।

“धांयऽऽऽऽ” एक तेज आवाज वातावरण में गूंजी और गोली सीधा डेरिक के सीने में लगी। डेरिक उछलकर वहीं गिर गया।

यह देख क्रिस्टी ने गुस्साकर जैक की गिरी हुई गन को उठाया और पलटकर जैक पर गोली चला दी- “बास्टर्डऽऽऽऽऽऽ”

पर इससे पहले कि ऐलेक्स कुछ समझ और कर पाता, जैक ने ऐलेक्स को हल्का सा धक्का दिया, जिससे गोली और जैक के बीच ऐलेक्स आ गया।

गोली सीधा ऐलेक्स की पीठ पर लगी और वह लहराकर वहीं जमीन पर गिर गया।

पता नहीं कैश्वर ने किस प्रकार का मायाजाल तैयार किया था? कि ऐलेक्स को इस समय गोली लगने का पूरा दर्द अनुभव करना पड़ रहा था।

गोली ऐलेक्स के बैक बोन के पास लगी थी, जिससे ऐलेक्स को अपना पूरा शरीर अकड़ता हुआ सा महसूस हो रहा था। ऐसी स्थिति में वह हिल भी नहीं पा रहा था।

अब वह दर्द भरी निगाहों से क्रिस्टी को देख रहा था, उसे लगा कि क्रिस्टी अभी दौड़कर उसके पास आयेगी ..... पर .... पर ऐलेक्स का ऐसा सोचना गलत साबित हुआ। क्रिस्टी धीरे से उठी और ऐलेक्स को देखते हुए, अपने डैड की ओर बढ़ गई।

ऐलेक्स समझ गया कि अभी भी क्रिस्टी इस घटना को कैश्वर का फैलाया मायाजाल ही समझ रही है। पर .... पर यह मायाजाल नहीं था, ऐलेक्स सच में मर रहा था ..... धीरे-धीरे उसकी शक्ति क्षीण होती जा रही थी।

कुछ ही देर में ऐलेक्स को अपना शरीर किसी अनंत गहराई में गिरता हुआ महसूस हुआ। चारो ओर नीम अंधेरा था, कुछ भी नजर नहीं आ रहा था।

कुछ देर ऐसे ही अनवरत गिरते रहने के बाद, ऐलेक्स को एक स्थान पर हवा में घूमती हुई, सुनहरी रेत दिखाई दी। अब वह सुनहरी रेत ऐलेक्स के चेहरे के पास आकर घूमने लगी।

चारो ओर अंधेरा होने की वजह से ऐलेक्स को वह रेत बहुत चमकीली दिखाई दे रही थी। अचानक ऐलेक्स को वह चमकीली रेत अपने मस्तिष्क में प्रवेश करती हुई महसूस हुई।

अब ऐलेक्स की आँखों के सामने उजाला बढ़ता ही जा रहा था। कुछ ही देर ऐलेक्स को अपने सामने इतना ज्यादा उजाला महसूस हुआ कि उसने अपनी आँखें बंद कर लीं।

धीरे-धीरे वह उजाला कम होना शुरु हो गया। ऐलेक्स समझ नहीं पा रहा था कि उसके साथ क्या हो रहा है?

आखिरकार ऐलेक्स को अपना शरीर किसी जमीन पर धीमे से गिरता हुआ महसूस हुआ।

अब ऐलेक्स ने अपनी आँखें खोल दीं। इस समय ऐलेक्स का शरीर एक विशाल दीवार के सामने था।

आसमान छूती उस दीवार में 6 विशाल द्वार बने थे। हर एक द्वार पर 2 राशियां बनी थीं।

यह देख ऐलेक्स समझ गया कि वह अभी जिंदा है। यह चमत्कार कैसे हुआ? वह जान नहीं पाया, परंतु अपनी जीवित होने का अहसास, इस समय उसे बहुत भला लग रहा था।

क्रिस्टी से एक बार फिर मिलने की आशाएं जाग्रत हो गई थीं।

अब ऐलेक्स ध्यान से उन दरवाजों को देखने लगा।

“लगता है कि यह तिलिस्मा का अगला द्वार है? और यहां से कैश्वर हम सभी को अब अलग-अलग करने वाला है, तभी यहां पर हम 6 लोगों के लिये अलग-अलग द्वार हैं। यानि कि मुझे अब इसमें से एक द्वार का चुनाव करना पड़ेगा?”

यह सोच ऐलेक्स ध्यान से उन सभी दरवाजों को देखने लगा। सभी दरवाजों के चारो ओर एक हरे रंग का घेरा बना हुआ था।

कुछ सोचने के बाद ऐलेक्स पहले द्वार में प्रवेश कर गया, जिस पर मकर और कर्क राशि बनी थी।

ऐलेक्स के उस द्वार में प्रवेश करते ही वह द्वार अदृश्य हो गया।

ऐलेक्स जिस स्थान पर निकला, वह एक विशाल गोल मैदान था, जिसके बीचोबीच एक गोल सरोवर बना हुआ था। उस सरोवर का पानी बिल्कुल साफ था। सरोवर के चारो ओर नारियल के ऊंचे-ऊचे पेड़ लगे थे।

सरोवर के पानी के बीच में एक गोलाकार चबूतरा बना था, उस चबूतरे के बीच में एक कमर तक बनी बकरे की मूर्ति लगी थी। उस मूर्ति का आकार लगभग 40 फुट के आसपास था। उस बकरे के दाहिने हाथ में एक हथौड़ा और बांये हाथ में एक धातु की छड़ी थी।

बकरे के आगे एक विशाल नगाड़ा रखा था, जिसे देखकर यह महसूस हो रहा था कि बकरा उस नगाड़े को बजाने वाला हो।

उस चबूतरे के किनारे गोलाकार आकृति में पचासों केकड़े बैठे थे। जो हर सेकेण्ड अपने भयानक हाथों को फैलाकर आगे करके खोल रहे थे और फिर एक चक्र की भांति थोड़ा सा घूम जाते थे।

चबूतरे के चारो ओर बने सरोवर में 3 विशाल मगरमच्छ अपना मुंह खोले हुए घूम रहे थे। मगरमच्छों के तैरने की गति काफी तेज थी।

अभी ऐलेक्स ध्यान से इस पूरे मायाजाल को समझ ही रहा था कि तभी बकरा एक सेकेण्ड के लिये सजीव हुआ और उसने अपने हाथ में पकड़ी छड़ी से, सामने रखे नगाड़े को तेजी से एक बार बजा दिया।

नगाड़े के बजने से एक तेज ध्वनि, पूरे वातावरण में गूंज गई।

“यह बहुत ही विचित्र प्रकार का मायाजाल दिख रहा है। यहां से निकलने का कोई भी द्वार नहीं दिख रहा? इसका मतलब पहले मुझे इस मायाजाल को पार करना होगा, उसके बाद ही कोई द्वार नजर आयेगा? पर समझ नहीं आ रहा कि इस मायाजाल को पार करना कैसे है? ..... यहां पर सबसे सुरक्षित वह बकरा ही दिख रहा है, केकड़े और मगरमच्छ भी उसी की सुरक्षा कर रहे हैं, यानि की पहले मुझे उस बकरे तक पहुंचना होगा।”

तभी बकरे ने एक बार फिर उस नगाड़े को बजाया। इस बार नगाड़े के बजने पर ऐलेक्स को उस नगाड़े से कुछ रोशनी भी निकलती दिखाई दी।

तभी ऐलेक्स के दिमाग को एक झटका लगा- "अरे, यह तो एक विशाल घड़ी है, जिसमें तीन मगरमच्छ घड़ी की तीनों सुइयों का काम कर रहे हैं और .... और वह केकड़े भी शायद संख्या में 60 हैं। इसका मतलब वह 60 सेकेण्ड के बिंदुओं के प्रतीक के रुप में हैं। .... अब अगर मैं मकर और कर्क राशियों पर ध्यान दूं, तो केकड़े, कर्क राशि का प्रतीक हैं और वह बकरा मकर राशि का प्रतीक है। .... पर मकर राशि में तो उसका प्रतीक एक समुद्री बकरा था, जिसका निचला हिस्सा किसी जलीय जीव की तरह था। .... एक मिनट ... चबूतरे पर खड़ा बकरा सिर्फ कमर तक ही तो है, इसका मतलब कि चबूतरे के नीचे उसका बाकी का आधा जलीय जंतु वाला शरीर हो सकता है? परंतु बकरे के बाकी आधे शरीर को देखने के लिये मुझे उसके पास जाना होगा। लेकिन कैसे? .... इन मगरमच्छों और केकड़ो से बचना थोड़ा मुश्किल लग रहा है।"

अब ऐलेक्स ध्यान से मगरमच्छों की गति को देखने लगा। तीनों मगरमच्छ अलग-अलग तैर रहे थे, उन मगरमच्छों की गति भी बहुत ज्यादा महसूस नहीं हो रही थी, पर असली समस्या केकड़ों की थी, क्योंकि उन्होंने चबूतरे को चारो ओर से घेर रखा था, किसी भी स्थान पर एक इंच बराबर जगह भी नहीं थी।

कुछ देर सोचने के बाद ऐलेक्स ने, अपने पास पड़ा हुआ एक बड़ा सा पत्थर उठाया और उसे सरोवर में एक खाली स्थान पर फेंक दिया।

जैसे ही पत्थर ने सरोवर के पानी को छुआ, तीनों मगरमच्छ बिजली की तेजी से, उस पत्थर पर टूट पड़े। कुछ ही देर में उन मगरमच्छों ने उस पत्थर को भी अपने तेज दाँतों से चबा डाला।

यह देख ऐलेक्स सिहर उठा। अगर वह धीमे घूम रहे उन मगरमच्छों को देख पानी में उतर जाता, तो उसका हाल भी कुछ ऐसा ही हो जाना था?

अब ऐलेक्स फिर अपने चारो ओर देखने लगा, पर ऐलेक्स को वहां कोई ऐसी चीज दिखाई नहीं दी? जिससे होकर उस चबूतरे पर जाया जा सके।

ऐलेक्स को ऐसे ही खड़े काफी समय बीत गया, तभी ऐलेक्स की निगाह उन नारियल के ऊंचे-ऊंचे पेड़ों की ओर गई। उन पेड़ों की ऊंचाइयां

देखकर ऐलेक्स के चेहरे पर मुस्कान आ गई।

"कैश्वर ने मेरी क्षमताओं के हिसाब से ही यह द्वार बनाया है। .... मुझे इन नारियल के पेड़ों के माध्यम से उस गोल चबूतरे पर पहुंचना होगा .... और मेरे अलावा कोई भी इन सीधे और ऊंचे पेड़ों पर नहीं चढ़ सकता था?"

यह सोच ऐलेक्स ने फटाफट अपने जूते उतारकर किनारे रखे और एक सबसे ऊंचे नारियल के पेड़ पर चढ़ने लगा।

कुछ ही देर में ऐलेक्स ने, नारियल के पेड़ को आधे से ज्यादा पार कर लिया। ऐलेक्स का पेड़ पर चढ़ना अभी रुका नहीं था, पर अब वह पेड़ ऐलेक्स के चढ़ने की वजह से सरोवर की ओर झुकना शुरु हो गया।

ऐलेक्स एक क्षण को रुका, उसने नीचे सरोवर की ओर देखा और फिर अपने शरीर को हल्का सा हिलाकर इस प्रकार एडजेस्ट किया, कि अब उस पेड़ का ऊपरी हिस्सा, चबूतरे की ओर हो गया।

एक बार फिर ऐलेक्स ने पेड़ के ऊपर की ओर चढ़ना शुरु कर दिया।

अब पेड़ लगातार चबूतरे की ओर झुक रहा था और सरोवर में तैर रहे मगरमच्छ, मुंह उठाकर, ऐलेक्स को देख रहे थे।

कुछ ही देर में ऐलेक्स का शरीर, मगरमच्छों और केकड़ों को पार कर चबूतरे के ऊपर पहुंच गया।

अब ऐलेक्स ने धीरे से अपने पैर को नीचे की ओर झुकाया और उस चबूतरे पर कूद गया।

पर जैसे ही ऐलेक्स के पैर चबूतरे से टकराये, पानी में घूम रहे तीनों मगरमच्छ गायब हो गये और इसी के साथ सभी केकड़े चारो ओर बिखर गये।

ऐलेक्स उन केकड़ों को बिखरते देख चौंक गया, क्योंकि अगले ही पल सभी 60 केकड़ों ने ऐलेक्स को चारो ओर से घेरना शुरु कर दिया।

केकड़े चारो ओर से अपने पंजों को खटखटाते हुए, ऐलेक्स की ओर बढ़ने लगे।

अब ऐलेक्स के पास बचने के लिये कोई उपाय नहीं था? वह पूरी तरह से केकड़ों के बीच फंस गया था।

◆ ◆ ◆

रिश्ते की डोर

25.01.2002, शुक्रवार, दि ग्रेट ब्लू होल, बेलिज शहर, कैरेबियन सागर

आसमान से अचानक टेनिस की बॉल के आकार के ओले जमीन पर गिरने लगे।

विक्रम ने यह देख मेनहोल के एक ढक्कन को उठाकर अपने सिर पर रख लिया। बर्फ के ओले तेजी से विक्रम के सिर पर रखे मेनहोल के ढक्कन से टकराने लगे।

ओले के गिरने की तेज आवाज पूरे वातावरण में गूंज रही थी।

इस समय विक्रम के आसपास मौजूद सभी कार के शीशे, उन भारी-भरकम ओलों की वजह से चकनाचूर हो गये थे।

कुछ लोग शायद विक्रम की तरह खुशकिस्मत नहीं थे, इसलिये जिन्हें छिपने के लिये ओट नहीं मिली थी, आसमान से गिरते खतरनाक ओलों ने उन्हें लहूलुहान कर दिया था।

बहुत से लोग घायल अवस्था में जमीन पर गिरे पड़े थे।

तभी विक्रम की नजर सड़क के किनारे खड़े एक छोटे से बच्चे पर पड़ी, उस बच्चे की उम्र लगभग 2 वर्ष के आसपास की थी। उस बच्चे की माँ बच्चे को बचाने के चक्कर में मारी जा चुकी थी, पर वह नादान बच्चा अब अपनी सिर की ओट छोड़कर रोता हुआ सड़क की ओर बढ़ रहा था।

एक सेकेण्ड की देरी बच्चे को नुकसान पहुंचा सकती थी, इसलिये विक्रम ने वहीं सड़क से ही अपना हाथ हवा में लहराया।

विक्रम के हाथ लहराते ही उसके हाथ से हवा का एक छोटा सा झोंका चला और उस नन्हें बच्चे से जाकर टकराया।

हवा के झोंके के प्रभाव से वह नन्हा बच्चा अपने कूल्हे के बल जमीन पर गिर गया और पीछे खिसकता हुआ एक दुकान के खुले दरवाजे में प्रवेश कर गया।

दुकान में उपस्थित कुछ लोगों ने बच्चे को पकड़ कर, दुकान का दरवाजा अंदर से बंद कर लिया।

यह देख विक्रम ने राहत की साँस ली, पर मुसीबत अभी टली नहीं थी, आसमान से ओलों का गिरना लगातार जारी था।

यह देख विक्रम से अब रहा ना गया, उसने धीरे से अपना सिर ढक्कन से बाहर निकालकर आसमान की ओर देखा।

विक्रम को आसमान में एक बड़ी सी मशीन उड़ती हुई दिखाई दी, जिससे वह बर्फ के गोले गिर रहे थे।

अब विक्रम अपने स्थान से उछला और सिर पर मेनहोल का ढक्कन उठाए हुए ही, उस मशीन की ओर उड़ने लगा।

कुछ ही देर में विक्रम उस मशीन के ऊपर पहुंच गया। वह मशीन देखने में एक वर्गाकार ड्रोन की तरह दिख रही थी। उस मशीन के ऊपर 4 कोनों पर मोटे पाइप लगे थे, जिससे वह हवा में उड़ रहे बादलों को अपने अंदर खींच रही थी।

शायद वह मशीन उस बादल से ही बर्फ के ओले बना रही थी।

विक्रम ने अब अपने हाथों से वायु का एक तेज भंवर उत्पन्न किया और उस मशीन पर लगे चारो पाइप को नष्ट कर दिया।

अब उस मशीन ने ओले बनाना बंद कर दिया। तभी उस मशीन से 4 एलियन की तरह के विचित्र जीव निकले। वह जीव देखने में किसी मगरमच्छ के जैसे प्रतीत हो रहे थे।

उन सभी जीवों की पीठ पर रॉकेट जैसे बूस्टर लगे थे, शायद उसी की वजह से वह आसमान में उड़ रहे थे।

इससे पहले कि विक्रम कुछ कर पाता, उन चारो जीवों ने विक्रम को पकड़ लिया। उन्होंने विक्रम को इस प्रकार से पकड़ रखा था कि विक्रम अपनी वायु शक्ति का प्रयोग नहीं कर पा रहा था।

अब विक्रम उनकी पकड़ से छूटने का प्रयत्न करने लगा कि तभी उस मशीन के बीच से एक दरवाजा खुला और उस दरवाजे के अंदर से

एक सुनहरी धातु की पोशाक पहने एक जीव योद्धा निकला, जो देखने में उनके राजा की तरह से लग रहा था।

उस योद्धा के हाथ में एक दोधारी तलवार जैसा कोई अस्त्र था। अब वह विक्रम को खूनी नजरों से घूरता हुआ उसकी ओर आगे बढ़ने लगा।

विक्रम की नजर भी अब उस योद्धा पर पड़ गई थी और वह उस योद्धा के मंसूबे भी भली भांति समझ रहा था। इसलिये वह पूरी ताकत लगाकर अपने को छुड़ाने की चेष्टा कर रहा था, पर उन मगरमच्छ जैसे जीवों की पकड़ बहुत तेज थी, इसलिये वह लाख कोशिशों के बाद भी स्वयं को छुड़ा नहीं पा रहा था।

तभी उस योद्धा ने आगे बढ़कर विक्रम के पेट में वह भयानक तलवार घुसा दी। विक्रम के पेट से खून की धारा बह निकली।

“विक्रमऽऽऽऽऽऽऽऽ।” इसी के साथ वारुणि तेज आवाज करती हुई अपने बिस्तर से उठ बैठी।

इस समय वारुणि के चेहरे पर पसीने की अथाह बूंदें दिखाई दे रहीं थीं।

परंतु बिस्तर से उठते ही वारुणि को समझ में आ गया कि वह एक भयानक सपना देख रही थी। अब वारुणि ने अपने माथे पर छलक आये पसीने को पोंछा और अपने बिस्तर से उठकर खड़ी हो गई।

इस समय वारुणि समुद्र के अंदर, माया के द्वारा बनाए हुए महल के एक कमरे में थी।

माया ने जब ओलंपस पर्वत जाकर जीयूष से बात की थी, उसके बाद वारुणि, कैस्पर व हनुका माया के साथ उसके महल में आ गये थे।

माया के द्वारा बनाया गया महल बेलिज शहर से 70 किलोमीटर दूर ‘दी ग्रेट ब्लू होल’ के अंदर बना था। समुद्र के अंदर होने के बावजूद उस महल में पानी की एक भी बूंद नहीं थी।

ओलंपस पर्वत से लौटे हुए आज 4 दिन बीत गये थे। इन 4 दिनों में वारुणि सिर्फ और सिर्फ माया की दी हुई पुस्तक ‘देवयुद्ध’ ही पढ़ रही थी।

देवयुद्ध पुस्तक माया ने वारुणि और कैस्पर के लिये ही लिखी थी। इस पुस्तक में पृथ्वी पर उपस्थित उन सभी अच्छी और बुरी शक्तियों की जानकारी थी, जो कि भविष्य में आने वाले इस देवयुद्ध में भाग लेने वाले थे।

वारुणि जानती थी कि इस देवयुद्ध में उसकी भूमिका बहुत ही निर्णायक होने वाली है, इसलिये वह इस देवयुद्ध के पहले, सभी अच्छी शक्तियों को एकजुट कर बुरी शक्तियों के विपरीत खड़ा करना चाहती थी।

आज भी वारुणि इसी पुस्तक को पढ़ते-पढ़ते सो गई थी, इसलिये उसे विक्रम के बुरे सपने आ रहे थे। ना जाने क्यों इस समय वारुणि को विक्रम की बहुत चिंता सता रही थी?

वारुणि ने अब अपने बिस्तर पर पड़ी उस 'देवयुद्ध' पुस्तक को देखा, जो कि अभी भी आधी खुली हुई थी।

वारुणि ने आगे बढ़कर उस पुस्तक को बंद किया और शांत भाव से कमरे में पड़ी एक कुर्सी पर जाकर बैठ गई।

तभी वारुणि को कमरे के दरवाजे पर एक खटके की आवाज सुनाई दी। वारुणि ने दरवाजे की ओर देखा। वहां कैस्पर खड़ा था, जो कि इशारे से कमरे में आने की अनुमति मांग रहा था।

कैस्पर को देख वारुणि एक पल के लिये अपने बुरे सपने को भूल गई।

वारुणि ने अपना सिर हिलाकर कैस्पर को अंदर आने को कहा।

"क्या बात है कैस्पर? आज अपनी माता के घर में हो, तो कमरे में आने की आज्ञा मांग रहे हो। नक्षत्रलोक में तो ऐसे ही घुस आते थे मेरे कमरे में।" वारुणि ने हल्के से मुस्कुराने की कोशिश करते हुए कहा।

"वो क्या है ना कि अभी-अभी मैं अपनी मैग्ना से मिलकर आया हूं।" कैस्पर ने खुशी से वारुणि की ओर देखते हुए कहा।

"अरे वाह! तो अपनी पत्नि से मिलते ही तुम्हारे अंदर का संस्कारी पुरुष बाहर आ गया।" इस बार वारुणि भी खुल कर मुस्कुराई- "पर ये

बताओ कि तुम तिलिस्मा में प्रवेश कैसे किये? तुमने तो कहा था कि तुम्हारे द्वारा बनाया वह गुप्त द्वार कैश्वर ने बंद कर दिया था।”

“मेरे लिये तो तिलिस्मा के सभी मार्ग बंद ही हो गए थे, पर मैग्ना की पहेली के माध्यम से मैं तिलिस्मा में प्रवेश करने में सफल हो गया। .... वो क्या है ना कि मेरी पत्नि बहुत तेज मस्तिष्क की स्वामिनी है।” कैस्पर ने मैग्ना की तारीफ में कसीदे पढ़ते हुए कहा।

“अच्छा जी ... इसका मतलब अब मुझे तुम्हारे सपने देखने बंद करके फिर से विक्रम को ढूंढना ही पड़ेगा।” वारुणि ने कैस्पर के सामने नाटक करते हुए कहा- “कितना प्यारा दोस्त मिला था, पर हाय री मेरी फूटी किस्मत .... अब वह भी किसी और के साथ बंट जायेगा। .... हाय विक्रम, अब तेरा ही सहारा है ... वापस आ जा रेऽऽऽऽऽऽऽ”

यह कहकर वारुणि ने अपने दाहिने हाथ की कलाई को अपने माथे से छुआया और रुठने के अंदाज में कैस्पर की ओर से मुंह फेर लिया।

वारुणि को ऐसा नाटक करते देख कैस्पर के चेहरे पर मुस्कान आ गई- “अब ये बेकार का सस्ता अभिनय बंद करो और मुझे ये बताओ कि क्या तुमने पूरी देवयुद्ध पढ़ ली? क्योंकि मैं अब कुछ दिनों के लिये कहीं और जा रहा हूं? तब तक तुम्हें ही इस पूरे युद्ध की तैयारी करनी है।”

कैस्पर की बात सुन वारुणि ने सच में नाटक करना बंद कर दिया और कैस्पर की ओर पलटते हुए बोली- “क्या तुम सच में कहीं जा रहे हो कैस्पर?”

“हां वारुणि, मुझे देवयुद्ध से पहले ‘अंडरवर्ल्ड’ जाकर हेडिस की कैद में बंद अपने माता-पिता को छुड़ाना होगा।” कैस्पर ने अचानक से सीरीयस होते हुए कहा- “परंतु तुम बिल्कुल भी चिंता मत करो, मेरी माँ और महाबली हनुका तुम्हारे हर कार्य में तुम्हारी सहायता करेंगे। ... और मैं तुम्हें विश्वास दिलाता हूं कि मैं देवयुद्ध से पहले ही तुम्हारे पास वापस लौट आऊंगा। .... अब रही बात विक्रम को ढूंढने की ... तो मैंने उसके लिये माँ से बात कर लिया है। वह तुम्हें बता देंगी कि विक्रम इस समय कहां है? और महाबली हनुका विक्रम को लाने में तुम्हारी मदद भी अवश्य करेंगे।”

कैस्पर के शब्द सुन वारुणि का चेहरा एकदम से उतर गया।

“क्या तुम विक्रम के मिलने तक मेरे पास नहीं रह सकते कैस्पर?” वारुणि ने रोने वाले अंदाज में कहा- “अगर तुम भी चले गये तो मेरा ध्यान कौन रखेगा? ... और ... और मैं इतने बड़े युद्ध की रणनीति अकेले किस प्रकार बना पाऊंगी?”

“तुम समझने की कोशिश करो वारुणि।” कैस्पर ने वारुणि के दोनों कंधों पर, अपने दोनों हाथ रखते हुए, उसे समझाते हुए कहा- “मेरे माता-पिता हजारों वर्षों से हेडिस की कैद में हैं। पहले मुझे उनके बारे में कुछ भी नहीं पता था, पर अब जब मुझे सबकुछ पता चल चुका है, तो मैं उन्हें कैद में कैसे रहने दे सकता हूं? .... मुझे पता है कि तुम मानसिक तौर पर बहुत शक्तिशाली हो। तुम कुछ ही दिनों में विक्रम को ढूंढकर देवयुद्ध की तैयारी भी कर लोगी .... पर मुझे रोकने की कोशिश मत करो वारुणि। ... इस समय मैं किसी भी हाल में रुक नहीं पाऊंगा।”

कैस्पर के शब्दों को सुन वारुणि समझ गई कि अब कैस्पर को सच में कोई नहीं रोक सकता? इसलिये उसने अनमने मन से कैस्पर को जाने की आज्ञा दे दी।

“ठीक है, तुम जा सकते हो कैस्पर, पर अपना ध्यान रखना और ये भी याद रखना कि तुम्हारा सबसे प्यारा दोस्त तुम्हारे वापस आने की प्रतीक्षा कर रहा है।” यह कहते हुए वारुणि की आँखें डबडबा आईं।

लेकिन इससे पहले कि कैस्पर अपने हाथों से वारुणि के आँसू पोंछ पाता, कि तभी कमरे में माया और हनुका ने प्रवेश किया।

उन दोनों को कमरे में प्रवेश करते देख वारुणि ने धीरे से स्वयं ही अपने आँसू पोंछ लिये और दोनों के समक्ष अपने हाथ जोड़ते हुए बोली- “गुरुमाता माया और महाबली हनुका को वारुणि का प्रणाम।”

“कल्याण हो!” माया और हनुका दोनों ने ही समवेत स्वर में कहा।

“क्या तुमने देवयुद्ध को पूर्ण रुप से पढ़ लिया वारुणि?” माया की आवाज कमरे में गूंजी।

“हां गुरुमाता ... मैंने एक नहीं अपितु अनेकों बार इस पुस्तक को पढ़ लिया है।” वारुणि ने कहा- “एक प्रकार से मुझे, अब यह पूरी पुस्तक याद भी हो गई है।”

“ठीक है ... फिर अब इस पुस्तक की कोई आवश्यकता नहीं है।” यह कहते हुए माया ने देवयुद्ध पुस्तक की ओर घूरकर देखा।

माया के ऐसा करते ही देवयुद्ध पुस्तक हवा में कहीं विलीन हो गई?

“मैं नहीं चाहती कि तुम्हारे सिवा कोई और इस पुस्तक को पढ़े? इस लिये मैंने उसे अदृश्य कर दिया है, परंतु जब भी कभी तुम्हें इस पुस्तक की आवश्यकता होगी, तो तुम्हारे याद करते ही यह पुस्तक तुम्हारे सामने प्रकट हो जायेगी।” माया ने वारुणि की ओर देखते हुए कहा।

माया के शब्दों को सुन वारुणि ने अपना सिर हिला दिया।

“अब तुम्हें यहां से प्रस्थान करना चाहिये कैस्पर।” माया ने कैस्पर की ओर मुड़ते हुए कहा- “क्योंकि इस शुभ कार्य पर निकलने के लिये ये सबसे उचित समय है।”

माया का आदेश मान कैस्पर ने एक बार फिर से वारुणि की ओर देखा और आँखों ही आँखों में उसे स्ट्रांग बने रहने का इशारा किया।

इसके पश्चात् कैस्पर ने अपनी आँखें बंद कर जीको को याद किया। कैस्पर के याद करते ही महल के बाहर जीको एक समुद्री घोड़े के रुप में प्रकट हो गया और पानी में जोर से हिनहिनाकर कैस्पर को अपनी उपस्थिति का अहसास करवा दिया।

कैस्पर ने अब माया और हनुका के चरण स्पर्श कर उनसे आशीर्वाद लिया और महल के बाहर की ओर निकल गया।

कैस्पर के जाने के बाद माया फिर से वारुणि की ओर मुड़ी। माया ने वारुणि के सिर पर हाथ रख, उसे दिलासा देते हुए कहा- “घबराओ मत वारुणि, कैस्पर को कुछ नहीं होगा और विश्वास करो कि तुम जल्द से जल्द विक्रम से मिलने वाली हो ... बस ये ध्यान रखना कि कैसी भी परिस्थिति हो, तुम्हें हिम्मत नहीं हारनी है?”

माया की बात सुन वारुणि को पता नहीं क्या हुआ कि वह कसकर माया से लिपट गई?

वारुणि की यह हरकत देख माया भी प्यार से वारुणी के सिर पर हाथ फेरने लगी।

कुछ देर बाद वारुणि माया से अलग हो गई। अब माया, हनुका की ओर घूमी जो आशा भरी नजरों से माया को देख रहा था।

हनुका को देख माया को उसके बचपन की बातें याद आ गईं, इसलिये माया ने आगे बढ़कर हनुका के भी हाथों को प्यार से सहलाया। यह देख हनुका भी एक पल के लिये भावविभोर हो गया।

“अब तुम्हारा सिर बहुत ऊंचा हो गया है हनुका, इसलिये तुम्हारे हाथों पर तुम्हें प्यार दे रही हूं।” माया ने हनुका को देखते हुए प्यार से कहा।

माया की बात सुन विशाल हनुका, माया के समक्ष वहीं जमीन पर लेट गया- “अब ठीक है माँ। अब तो आपके हाथ मेरे सिर तक पहुंच जाएंगे ना?”

हनुका के शब्दों और उसके भोलेपन से माया क्या वारुणि के भी चेहरे पर मुस्कान आ गई।

इस स्थिति को देखकर एक ही बात याद आ रही थी कि कोई भी जीव चाहे कितना भी बड़ा क्यों ना हो जाए? अपनी माँ के समक्ष छोटा ही रहता है।

अब माया, भी वहीं जमीन पर बैठ गई और प्यार से हनुका के सिर को सहलाने लगी।

माया तब तक ऐसे ही करती रही, जब तक वातावरण में हनुका के जोर के खर्राटे गूंजने नहीं लगे।

एक विशाल जीव, एक महाबलशाली योद्धा सारी दुनिया की चिंताओं को भूलकर अपनी माँ के गोद में असीम शंति का अनुभव करते हुए सो गया था।

इस ममतामई दृश्य को देख वारुणि ने किसी को परेशान करना उचित नहीं समझा? और उस कमरे से निकलकर बाहर के कक्ष में आ गई।

इस कक्ष में एक खिड़की भी थी, जिसके बाहर समुद्र की रंग-बिरंगी मछलियां नजर आ रही थीं। पर आश्चर्यजनक तरीके से उस खिड़की से समुद्र का पानी अंदर नहीं आ रहा था।

वारुणि उस खिड़की पर खड़े होकर मछली की अठखेलियां, समुद्र की लहरों का मचलना व प्रकृति के रंगों को अपनी आँखों में भर रही थी कि तभी उसकी मस्तिष्क में किसी की आवाज सुनाई दी?

“अरे यह तो शलाका की आवाज है, जो कि मुझसे संपर्क करने की कोशिश कर रही है।” यह सोच वारुणि ने भी अपनी मानसिक तरंगों के द्वार को खोल दिया और शलाका से सम्पर्क स्थापित करने लगी।

◆ ◆ ◆

रहस्य

25.01.2002, शुक्रवार, मैनहट्टन, न्यूयार्क, अमेरिका

शलाका इस समय मैनहट्टन के 'फोर्ट ट्रायन पार्क' में जेम्स के साथ खड़ी हुई थी।

इस समय शलाका के मस्तिष्क में धमाके से हो रहे थे। कई सारी ऐसी गुत्थियां थीं, जो कि उसके मस्तिष्क को उलझाये चली जा रहीं थीं।

"हे मेरे ईश्वर, पिछले कुछ दिनों से यह सब क्या हो रहा है मेरे साथ?" शलाका पार्क में एक स्थान पर खड़ी, लगातार बीते समय में घटी घटनाओं के बारे में सोच रही थी- "पहले वेदांत रहस्यम के द्वारा आर्यन व आकृति के पुत्र के बारे में पता चलना, जो कि भारत के उज्जैन शहर में जमीन के अंदर एक अष्टकोण में बंद था। फिर उसे ढूंढते हुए देवोम का पता चलना, जो कि व्योम के नाम से सन राइजिंग को ढूंढने के मिशन पर निकला था। फिर देवोम को ढूंढते हुए एक विलक्षण बालक सूर्यांश का मिलना, जो पता नहीं कैसे अंटार्कटिका की बर्फ में दबे मेरे यान में पहुंचकर मेरे सिर के पास एक कागज का टुकड़ा रख गया था? और जब मैं देवोम की खोज में न्यूयार्क आ गई, तो उसी सूर्यांश के द्वारा म्यूजियम से अमृत की शीशी चुराकर अमृत को पी लेना। कौन है यह सूर्यांश? और इस समय व्योम कहां है? क्या व्योम का सन राइजिंग की खोज में जाना एक संयोग है? या फिर व्योम को किसी प्रकार यह ज्ञात हो गया है कि सुयश ही पिछले जन्म में उसका पिता था? .... हे मेरे ईश्वर ... अब मैं कैसे इन रहस्यों को सुलझाऊं?"

"आप ज्यादा परेशान मत हों शलाका।" तभी जेम्स ने शलाका का ध्यान भंग करते हुए कहा- "मुझे विश्वास है कि आप शांत दिमाग के साथ इन सभी गुत्थियों को अवश्य ही सुलझा लेंगी।"

"जेम्स सही कह रहा है शलाका। आप को इस समय शांत रहने की आवश्यकता है।" आर्ची ने भी जेम्स की बातों का समर्थन करते हुए कहा।

जेम्स और आर्ची की बात सुनकर शलाका ने अपने दिमाग को एक झटका दिया और नार्मल होने की कोशिश करने लगी।

तभी अचानक शलाका को विक्रम की याद आई, जो कि उसे मामासूशी रेस्टोरेंट के कैश काउंटर पर मिला था।

“अब ये विक्रम क्यों मुझे वारुणी कह रहा था?” शलाका एक बार फिर से सोचने लगी- “और ... और उसकी हरकतें भी बहुत अजीब सी थीं। .... पता नहीं वह यहां न्यूयार्क में क्या कर रहा है? ... अरे याद आया मैं तो उसे वहीं रुकने को बोल कर आई थी। मुझे विक्रम से मिलने के लिये वापस मामासूशी रेस्टोरेंट की ओर जाना होगा।”

यह सोचकर शलाका, जेम्स को अपने साथ लेकर मामासूशी रेस्टोरेंट की ओर बढ़ गई।

कुछ ही देर में शलाका रेस्टोरेंट के कैश काऊंटर के पास खड़ी थी, पर विक्रम इस समय उसे कहीं नजर नहीं आ रहा था?

शलाका कुछ देर तक विक्रम को ढूंढती रही, पर विक्रम उसे कहीं भी नजर नहीं आया? यह देख शलाका ने विक्रम से मानसिक तरंगों के द्वारा संपर्क करने की कोशिश की, पर वह इस कार्य में भी सफल नहीं हुई।

“यह विक्रम मानसिक तरंगों से गायब कैसे दिख रहा है? मुझे लगता है कि यहां भी कुछ गड़बड़ है?” शलाका ने एक गहरी साँस भरी और फिर से एक बार आर्ची को याद किया।

“आर्ची, अभी कुछ देर पहले मैंने विक्रम को यहां पर देखा था, तुम मेरे मस्तिष्क से उसकी तस्वीर लेकर जरा आसपास के कैमरे में देखो और मुझे बताओ कि विक्रम इस समय कहां है?”

जेम्स अभी भी शलाका और आर्ची की बातें अपने मस्तिष्क में सुन रहा था। वह तो बस आर्ची की वैज्ञानिक शक्तियां देखकर हैरान था।

तभी जेम्स को अपने मस्तिष्क में आर्ची की आवाज सुनाई दी- “इस समय मुझे विक्रम कहीं दिखाई नहीं दे रहा है? शायद वह इस समय किसी भी कैमरे की पहुंच में नहीं है?”

“तो फिर तुम इस रेस्टोरेंट में लगे कैमरे की मैमोरी में जाकर चेक करो, कि जिस समय वह मुझसे बात कर रहा था, उसके बाद वह किस दिशा में गया? या फिर उसके साथ उस समय कौन था?” शलाका ने आर्ची को समझाते हुए कहा।

कुछ देर के बाद पुनः आर्ची की आवाज उभरी- “शलाका, मुझे समझ नहीं आ रहा कि मैं आपको कैसे बताऊं? पर आपके यहां से जाने के कुछ देर के बाद, आप ही विक्रम को यहां से लेकर गई थीं .... जबकि उस समय आप सूर्यांश के साथ पार्क में थी। .... मेरा मतलब है कि कोई और भी लड़की यहां पर थी?, जिसने कि आपका रुप धारण किया हुआ था और वही विक्रम को लेकर इस रेस्टोरेंट से बाहर चली गई। रेस्टोरेंट के बाहर अगले ट्रैफिक सिग्नल तक मैं उसे ट्रैक कर पाई, इसके बाद उसका या फिर विक्रम का कोई पता नहीं है?”

“मैं??” शलाका के शब्द आश्चर्य से भर उठे- “कहीं वह आकृति तो नहीं .... नहीं-नहीं आकृति विक्रम के साथ कैसे हो सकती है? वह तो अराका द्वीप पर कहीं छिपी है? फिर मेरे जैसी शक्ल वाला और कौन हो सकता है? और ... और विक्रम मुझे वारुणि क्यों समझ रहा था? ... लगता है मुझे वारुणि से सम्पर्क करना पड़ेगा।”

यह सोच शलाका, जेम्स को लेकर रेस्टोरेंट से बाहर आ गई और फुटपाथ पर एक किनारे खड़ी होकर, मानसिक तरंगों के द्वारा वारुणि से सम्पर्क स्थापित करने लगी।

कुछ ही देर में शलाका का सम्पर्क वारुणि से हो गया।

“अरे वाह! आज इतने वर्षों के बाद मेरी याद कैसे आ गई?” दूसरी ओर से वारुणि की आवाज सुनाई दी- “वैसे मुझे रुद्राक्ष और शिवन्या ने तुम्हारे बारे में बता दिया था।”

“वह सब बातें बाद में करेंगे वारुणि।” शलाका ने वारुणि की बात को बीच में ही काटते हुए कहा- “पहले यह बताओ कि इस समय विक्रम कहां है?”

शलाका को इस प्रकार विषय बदलते देख वारुणि हैरान हो गई, पर कुछ देर बाद वह बोली- “पिछले कुछ दिनों से विक्रम कहीं गायब हो गया है? मैं स्वयं भी उसे ढूंढने की कोशिश कर रही हूं, पर उसका कुछ भी पता नहीं चल रहा? यहां तक कि मैं उससे मानसिक तरंगों के द्वारा भी सम्पर्क नहीं कर पा रही हूं। .... पर .... पर एकाएक तुम विक्रम की बात क्यों करने लगी?”

“क्योंकि मुझे अभी कुछ देर पहले विक्रम न्यूयार्क में दिखाई दिया था और वह पता नहीं क्यों मुझे वारुणि कहकर सम्बोधित कर रहा था? पर इससे पहले कि मैं उससे कुछ और पूछ पाती, वह कहीं चला गया? बाद में मुझे पता चला,

कि वह मेरी शक्ल वाली किसी लड़की के साथ न्यूयार्क में था। मैं स्वयं भी उसके इस व्यवहार से हैरान हो गई, इसीलिये मैंने तुमसे सम्पर्क किया।"

"क्याऽऽऽऽऽ?" वारुणि, शलाका की बात सुनकर चौंक गई- "वह ... वह भला न्यूयार्क में क्या कर रहा है? और उसने अपनी मानसिक तरंगों को क्यों बंद कर रखा है? और ... तुम्हारे जैसे चेहरे वाली लड़की? .... वह कौन हो सकती है? और भला वह तुम्हें वारुणि क्यों कह रहा था? सबसे बड़ी बात यह है कि यह सब बातें उसने मुझसे क्यों नहीं बताईं? .... शलाका ... जाने क्यों मुझे तुम्हारी बातें सुनकर बहुत ज्यादा घबराहट हो रही है? मुझे समझ में नहीं आ रहा कि ऐसी स्थिति में मैं क्या करुं?"

"घबराओ नहीं वारुणि। मैं फिर से विक्रम को ढूंढने की कोशिश करती हूं। अगर वह मुझे मिल गया, तो मैं तुम्हें अवश्य बता दूंगी। .... तब तक के लिये विदा।" शलाका ने कहा।

शलाका की बात सुनकर वारुणि ने ज्यादा कुछ नहीं कहा, बस हुंकारी भरकर अपनी सहमति दे दी।

यह सुन शलाका ने वारुणि से सम्बन्ध विच्छेद कर लिया।

अब शलाका की निगाह जेम्स की ओर गई, जो प्रश्नवाचक नजरों से शलाका को ही देख रहा था।

"अब क्या करें शलाका?" जेम्स ने शलाका को अपनी ओर देखते पाकर पूछ लिया- "अब तो आर्ची भी विक्रम, सूर्यांश और व्योम को ढूंढने में असमर्थ हो गई है। ऐसी स्थिति में हमें क्या करना चाहिये?"

"अग्निका!" शलाका ने मुस्कुराते हुए कहा- "अब अग्निका ही हमें इन सभी के बारे में बता सकती है।"

"यह अग्निका क्या है शलाका?" जेम्स के शब्दों में रोमांच जैसे भाव थे। उसे लग रहा था कि अब कुछ नया रहस्य उसके सामने खुलने वाला है?

"ईश्वर ने ब्रह्मांड का निर्माण करते समय सभी सप्तशक्तियों की शक्ति से 7 अद्भुत पुस्तकों का निर्माण किया था। इन पुस्तकों में अनोखी शक्तियां समाई हुईं थीं। अग्निका भी उन्हीं पुस्तकों में से एक है। जहां आर्ची की शक्तियां समाप्त होती हैं, वहां से अग्निका की शक्तियां शुरु होती हैं। इसलिये लगता है कि अब

हमें अग्निका के पास चलकर उसे खोलना होगा, अब वही हमें विक्रम, सूर्यांश और व्योम के रहस्य को बता सकती है।” शलाका ने रहस्य भरे शब्दों में कहा।

“अग्निका, पृथ्वी के किस भाग में है?” जेम्स ने अपनी उत्सुकता को शांत करते हुए कहा- “मेरा मतलब है कि अब हमें कहां पर चलना है?”

“भारत में पुराने समय में शिवराष्ट्र नामक एक स्थान था, जहां पर पर्वतों को काटकर जमीन के अंदर एक शहर बसाया गया, जिसे हम पाताललोक कहते हैं। उस स्थान पर जमीन के नीचे बहुत से प्राचीन मंदिर भी हैं। उन्हीं में से एक मंदिर का नाम कैलाश मंदिर है। उसी मंदिर से अग्निका तक जाने का रास्ता बना है।” शलाका ने जेम्स को समझाते हुए कहा- “आर्ची, जरा देखना तो इस समयकाल में शिवराष्ट्र नामक स्थान को क्या कहते हैं?”

“प्राचीनकाल का शिवराष्ट्र आज के समय में औरंगाबाद के नाम से जाना जाता है।” आर्ची ने कहा- “और कैलाश मंदिर के स्थान पर आज से 1500 वर्ष पहले कुछ भारतीय राजाओं ने अनेकों नई गुफाओं का भी निर्माण किया है, जिसे अजन्ता और एलोरा की गुफाओं के नाम से जाना जाता है। पर आज भी कोई पाताललोक तक नहीं पहुंच पाया है। इसलिये इंटरनेट पर वहां की और कोई जानकारी उपलब्ध नहीं है?”

“इसका मतलब हमें एक बार फिर से भारत की यात्रा करनी होगी?” जेम्स ने कहा।

“अवश्य।” शलाका ने कहा और जेम्स के साथ हडसन नदी की ओर बढ़ गई, जिधर आर्ची ने आर्केडिया को पार्क कर रखा था।

◆ ◆ ◆

चैपटर-3

समुद्री बकरा

तिलिस्मा 6.12

केकड़े चारो ओर से अपने पंजों को खटखटाते हुए, ऐलेक्स की ओर बढ़ने लगे। अब ऐलेक्स के पास बचने के लिये कोई उपाय नहीं था, वह पूरी तरह से केकड़ों के बीच फंस गया था।

केकड़े और ऐलेक्स के बीच का दायरा लगातार कम होता जा रहा था।

ऐलेक्स धीरे-धीरे पिछड़ते हुए नगाड़े से जाकर टकराया। तभी ऐलेक्स को उस विशाल नगाड़े से लटकी एक डोरी दिखाई दी, जो नगाड़े के ऊपरी हिस्से से बंधी थी।

ऐलेक्स को इस समय यह डोरी किसी देवदूत की भांति महसूस हुई। उसने फटाफट डोरी को पकड़ा और नगाड़े के ऊपर की ओर चढ़ने लगा।

कुछ ही पलों में ऐलेक्स नगाड़े के ऊपर था। नगाड़ा काफी विशाल था इस वजह से ऐलेक्स को उस पर खड़े होने में किसी प्रकार की कोई परेशानी नहीं हो रही थी।

नीचे से केकड़ों ने अपने शिकार को भागते हुए देखा, तो वह भी नगाड़े के ऊपर चढ़ने की कोशिश करने लगे।

परंतु उनकी इस हरकत से ऐलेक्स को कोई परेशानी नहीं हुई। उसे केकड़ों की आदत अच्छी तरह से पता थी। उसे पता था कि अगर कुछ केकड़ों को किसी बाल्टी में भी डाल दिया जाये, तो वह उससे भी बाहर नहीं निकल पाते, क्योंकि जैसे ही एक केकड़ा थोड़ा ऊपर चढ़ता है, पीछे से दूसरा केकड़ा उसकी टांग पकड़ कर खींच लेता है।

ऐलेक्स का केकड़ों के बारे में सोचना बिल्कुल सही था, काफी देर के बाद भी, एक भी केकड़ा ऊपर नहीं चढ़ पाया।

अब ऐलेक्स का ध्यान केकड़े को छोड़, उस बकरे की मूर्ति की ओर था, तभी बकरे का दाहिना हाथ हवा में लहराया और बकरे के हाथ में पकड़ा हथौड़ा, तेजी से नगाड़े से टकराया।

ऐलेक्स इस वार से बाल-बाल बचा था। हथौड़ा उसके बगल से होता, नगाड़े से टकराया।

इसी के साथ नगाड़े के ऊपर लगा चमड़ा फट गया और ऐलेक्स उस फटे हिस्से से होता हुआ नगाड़े के अंदर जा गिरा।

बकरे की मूर्ति नगाड़े पर प्रहार करके एक बार फिर से निर्जीव हो गई थी। पर ऐलेक्स की निगाहें इस समय नगाड़े के अंदर मौजूद चीजों को देख रहीं थीं।

नगाड़े में पारदर्शी ऊर्जा से बना, एक आयताकार डिब्बा रखा था, जिसके ऊपर 2 सींघें बनी थीं। एक सींघ लाल और दूसरी सींघ हरे रंग से चमक रही थी।

उस आयताकार डिब्बे के अंदर एक चमचमाता हुआ बड़ा सा हीरा रखा था।

“यह चीज क्या हो सकती है?” ऐलेक्स ने उस ऊर्जा के डिब्बे को ध्यान से देखते हुए सोचा।

कुछ देर तक उस डिब्बे को देखते रहने के बाद ऐलेक्स खुशी से उछल पड़ा- “अरे यह ऊर्जा का डिब्बा तो एक बैटरी है, जिसकी दोनों सींघें 2 टर्मिनल का काम कर रहीं हैं और इसमें मौजूद वह हीरा इस ऊर्जा का स्रोत है .... इसका मतलब कि यह विशाल घड़ी इसी बैटरी के माध्यम से चल रही थी। .... तो फिर हो ना हो इस बैटरी को बंद करते ही तिलिस्मा का यह द्वार पार हो जाना चाहिये? ... पर कैसे? ... इस बैटरी की ऊर्जा को कैसे बंद किया जा सकता है? .... अरे हां ... अगर मैं इस बैटरी के दोनों टर्मिनल को आपस में टच कराके शार्ट करा दूं, तो इस बैटरी की ऊर्जा बंद हो जायेगी। पर ... इसके दोनों टर्मिनल को शार्ट करने के लिये तो मुझे किसी तार या धातु की छड़ की आवश्यकता होगी। ... पर इस नगाड़े के

अंदर तो ऐसी कोई भी चीज नहीं है? जिससे कि मैं इस बैटरी को शार्ट कर सकूं?"

तभी ऐलेक्स की नजर फटे हुए नगाड़े से ऊपर की ओर गई। जहां से उस बकरे की मूर्ति साफ दिखाई दे रही थी और इसी के साथ दिखाई दे रही थी, उसके बांये हाथ में पकड़ी धातु की छड़।

अब समस्या वापस ऊपर चढ़ने की थी क्योंकि नगाड़े की ऊंचाई कम से कम 15 फुट की थी।

तभी ऐलेक्स को नगाड़े का फटा हुआ चमड़ा हवा में झूलता हुआ दिखाई दिया, जिसका एक सिरा अभी भी नगाड़े के ऊपरी हिस्से से जुड़ा हुआ था।

यह देख ऐलेक्स ने उस चमड़े को थोड़ा खींचकर देखा। चमड़े का वह भाग काफी मजबूत दिखाई दे रहा था।

ऐलेक्स अब एक छलांग लगाकर उस चमड़े पर लटक गया और उसके किनारे को पकड़कर ऊपर की ओर चढ़ने लगा।

कुछ ही देर में ऐलेक्स ऊपर पहुंच गया। अब ऐलेक्स ने बकरे के हाथ से उस 8 फुट लंबे, भाला नुमा छड़ को खींचा।

खींचते ही वह धातु की छड़ ऐलेक्स के हाथ में आ गई। ऐलेक्स उसे लेकर वापस नगाड़े में उतर गया।

"धातु की छड़ तो मेरे हाथ में आ गई, पर अगर मैंने इसे अपने हाथों में पकड़कर शार्ट कराया, तो इससे मुझे बिजली का झटका भी लग सकता है?"

अब ऐलेक्स की नजरें एक बार फिर उस लटक रहे नगाड़े के चमड़े की ओर गई। ऐलेक्स ने उस चमड़े का कुछ भाग, कड़ी मशक्कत के बाद फाड़कर अलग कर लिया।

ऐलेक्स ने अब उस चमड़े के भाग को अपने हाथों में कस कर लपेट लिया और और फिर उस धातु की छड़ को बैटरी की दोनों सींघों से टच करा दिया।

छड़ के टच होते ही, दोनों टर्मिनल के बीच ऊर्जा की एक तेज लहर दौड़ी और एक तेज गड़गड़ाहट के साथ वह पूरा का पूरा चबूतरा, सरोवर में समाने लगा।

ऐलेक्स को लगा कि शायद वह द्वार पार हो गया, पर कुछ ही देर में उसका भ्रम टूट गया।

अब ऐलेक्स सरोवर के पानी में गिरा हुआ था और वह विशाल बकरा, जीवित होकर अपना हथौड़ा लिये ऐलेक्स के सिर के ऊपर था।

भला यही था कि अब सारे केकड़े उस स्थान से गायब हो गये थे, नहीं तो ऐलेक्स को एक साथ कई मुसीबतों से जूझना पड़ जाता।

तभी उस बकरे ने ऐलेक्स के सिर पर अपने हथौड़े से वार कर दिया। अपनी ओर विशाल हथौड़ा आता देख, ऐलेक्स ने पानी में एक तेज डुबकी लगाई।

बकरे के वार से सरोवर का पानी चारो ओर उछल गया, परंतु ऐलेक्स उस वार से बच गया था। अब ऐलेक्स ने पानी के अंदर से ही उस बकरे को देखा, जो कि फिर से बाहर खड़ा ऐलेक्स के पानी से निकलने का इंतजार कर रहा था।

तभी ऐलेक्स की नजर बकरे के शरीर के निचले भाग पर पड़ी, जो कि एक बड़ी मछली की पूंछ के जैसी थी।

अब ऐलेक्स के लिये बड़ी मुश्किल हो गई थी, अगर वह पानी के अंदर रहता तो उसका दम घुट जाना था और अगर वह पानी के बाहर निकलता, तो उस जलीय बकरे ने उस पर आक्रमण कर देना था।

पर बेहतर यही था कि वशीन्द्रिय शक्ति थोड़ी बहुत काम करने की वजह से 5 मिनट के बाद भी, अभी पानी के अंदर ऐलेक्स का दम नहीं घुट रहा था।

अब ऐलेक्स तेजी से बकरे को मारने का कोई उपाय ढूंढने लगा।

तभी ऐलेक्स को बैटरी की ही तरह से बकरे की सींघें भी एक लाल और एक हरी चमकती हुई दिखाई दी।

अब ऐलेक्स का ध्यान फिर से अपने हाथ में पकड़ी उस धातु की छड़ की ओर गया।

“इसका मतलब बकरा भी बैटरी की ही भांति किसी प्रकार की ऊर्जा से चल रहा है और इसकी सींघों को शार्ट करने पर यह भी मारा जायेगा। .... पर इसकी ऊंचाई तो बहुत ज्यादा है। मैं इसकी सींघों तक पहुंचुगा कैसे?”

कुछ देर सोचने के बाद ऐलेक्स ने रिस्क लेते हुए, एक बार फिर अपना सिर पानी से बाहर निकाला।

ऐलेक्स के पानी से सिर निकालते ही, बकरे ने अपने हथौड़े को अपने सिर के ऊपर तक उठाया और वापस ऐलेक्स के ऊपर मार दिया।

ऐलेक्स पहले से ही ऐसी किसी भी स्थिति के लिये सावधान था, उसने एक बार फिर पानी में गोता लगाकर स्वयं को बचाया, परंतु इस बार जब बकरे ने अपना हथौड़ा ऊपर उठाया, तो ऐलेक्स ने उसे अपने दाहिने हाथ से पकड़ लिया।

इस बार ऐलेक्स भी बकरे के हथौड़े के साथ हवा में उठ गया। ऐलेक्स ने अभी भी धातु की छड़ को अपने बांये से नहीं छोड़ा था।

जैसे ही बकरे ने ऐलेक्स को अपने हथौड़े से लटका देखा, उसने हथौड़े को झटकने के लिये अपने सिर तक उठाया, बस इतना मौका काफी था ऐलेक्स के लिये।

ऐलेक्स तेजी से बकरे के कंधे पर कूद गया और इससे पहले कि बकरा और कुछ कर पाता, ऐलेक्स ने अपने हाथ में पकड़ी धातु की छड़ को बकरे के दोनों सींघों से छुआ दिया।

पर इस बार ऐलेक्स के हाथों में चमड़े जैसा कुछ नहीं था, इसलिये ऐलेक्स को बिजली का तेज झटका लगा और वह उछलकर सरोवर में जा गिरा।

परंतु यह बिजली का झटका इतना तेज नहीं था कि ऐलेक्स को उससे कुछ ज्यादा नुकसान होता? पानी में गिरने से भी ऐलेक्स को चोट नहीं आई थी।

जो भी हो ऐलेक्स खुश था कि उसने बकरे को मार दिया।

ऐलेक्स अभी भी पूरा का पूरा पानी के अंदर था, तभी एक बार फिर ऐलेक्स की खुशी काफ़ूर हो गई, क्योंकि बकरा अभी भी जिंदा था और नीचे झुककर पानी के अंदर ऐलेक्स को ढूंढने की कोशिश कर रहा था।

अब ऐलेक्स को गुस्सा आ गया, उसने पानी में झांक रहे बकरे की एक आँख में उस धातु की छड़ को घुसा दिया।

बकरा दर्द से चीख उठा। उसकी एक आँख फूट गई थी और उसकी आँखों से खून निकलकर सरोवर के पानी में मिलने लगा।

अब वह पागलों के समान अपना हथौड़ा इधर-उधर चला रहा था। यह देख ऐलेक्स ने पानी के अंदर ही रहने में अपनी भलाई समझी।

तभी ऐलेक्स की नजर, बकरे के शरीर के निचले भाग की ओर गई, जो कि पानी के अंदर था।

“अरे यह क्या? इस समय तो बकरे के पैर दिखाई दे रहे हैं, इसका मछली वाला भाग कब गायब हुआ? ..... शायद उसकी सींघों पर प्रहार करने का यही असर हुआ था बकरे पर।”

अभी ऐलेक्स ये सोच ही रहा था कि तभी उसे अपने पीछे किसी आहट का अहसास हुआ, जैसे ही ऐलेक्स ने पलटकर पीछे की ओर देखा, उसकी साँसें, उसके गले में फंस गई क्योंकि उसके ठीक पीछे पानी के अंदर एक शार्क खड़ी थी, जो कि अपनी पूंछ हिलाते हुए, ऐलेक्स को ही घूर रही थी।

ऐलेक्स एक पल में समझ गया कि बकरे की पूंछ वाला भाग ही शार्क का था, जो कि अब उससे अलग हो गया था।

यानि की अब 1 नहीं बल्कि 2 मुसीबतें ऐलेक्स के सिर पर थीं। एक पानी के अंदर और एक पानी के बाहर।

ऐलेक्स के लिये यह बहुत मुश्किल घड़ी थी।

तभी शार्क तेजी से ऐलेक्स की ओर झपटी। ऐलेक्स ने पानी में नीचे की ओर गोता लगाया और उसे शार्क के पहले वार से बचते हुए, धातु की छड़ को शार्क के शरीर से छुआ दिया।

चूंकि धातु की छड़ आगे से नुकीली थी और शार्क की गति बहुत ज्यादा थी, इसलिये उस धातु की छड़ ने शार्क के निचले हिस्से को पूरा काट दिया।

अब शार्क का खून भी पानी में मिलने लगा।

ऐलेक्स को पता था कि शार्क के दूसरे वार से बचना मुश्किल हो जाता, इसलिये वह तेजी से सरोवर की गहराई की ओर चल दिया।

सरोवर की गहराई में ऐलेक्स को एक बड़ी सी चट्टान दिखाई दी। ऐलेक्स अब उस चट्टान के आगे जाकर खड़ा हो गया और शार्क के आने का इंतजार करने लगा।

ऐलेक्स को ज्यादा देर तक इंतजार नहीं करना पड़ा, आखिरकार उसे शार्क अपने ओर मुंह फाड़े आती दिखाई दी।

शार्क तेजी से ऐलेक्स के पास आई और उसने मुंह खोलकर ऐलेक्स को अपने मुंह में भरने की कोशिश की, ठीक उसी समय ऐलेक्स ने अपने हाथों में मौजूद 8 फुट लंबी छड़ को शार्क के मुंह में खड़ा कर दिया।

शार्क ने जैसे ही अपना मुंह थोड़ा सा बंद किया, धातु की छड़ ने शार्क के पूरे मुंह को बींध दिया। तेज दर्द की वजह से शार्क ने अपना पूरा मुंह नहीं बंद किया। बस यही मौका था, ऐलेक्स तुरंत इस मौके का फायदा उठाकर शार्क के मुंह से बाहर आ गया।

शार्क अब तेजी से छटपटा कर अपने मुंह से धातु की छड़ को निकालने की कोशिश करने लगी, पर धातु की छड़ शार्क के मुंह के दोनों ओर से आर-पार हो गई थी, इसलिये शार्क अपने प्रयासों में सफल नहीं हो पा रही थी।

उधर ऐलेक्स को सरोवर की तली में चमकता हुआ वही हीरा दिखाई दिया, जो कि नगाड़े के अंदर से निकला था।

“कैश्वर की बनाई हर वस्तु अपना काम खत्म करके गायब हो जाती है, तो फिर यह हीरा क्यों नहीं गायब हुआ? और इसका चमकना अभी भी जारी है। .... कुछ ना कुछ रहस्य तो है इसमें?”

यह सोच ऐलेक्स ने सरोवर की तली से वह हीरा निकाल लिया और उसे लेकर सरोवर की सतह की ओर चल दिया।

ऐलेक्स ने सरोवर की सतह से पहले ही पानी के अंदर से झांक कर देखा, बकरा अभी भी अपनी फूटी आँख से इधर-उधर हथौड़ा चला रहा था।

कुछ देर सोचने के बाद, ऐलेक्स ने अपने हाथ में पकड़ा हीरा, सरोवर की सतह के ऊपर हवा में उछाल दिया।

हीरा जैसे ही सरोवर की सतह से निकला, बकरे ने पूरे ताकत से हथौड़ा, हीरे के ऊपर मार दिया। हथौड़े के तेज प्रहार से हीरा टूटकर चारो ओर बिखर गया।

हीरे के टूटते ही एक तेज रोशनी के साथ बहुत सारी ऊर्जा, हीरे से निकलकर वातावरण में फैल गई। ऐसा लगा कि जैसे पृथ्वी पर कहीं दूसरा सूर्य उग गया हो?

ऐलेक्स की आँखें इस तेज रोशनी से बंद हो गईं।

तभी ऐलेक्स को अपना शरीर हवा में गिरता हुआ सा महसूस हुआ। यह महसूस कर ऐलेक्स ने घबराकर अपनी आँखें खोलीं।

ऐलेक्स को इस समय अपना शरीर एक मोटे से पाइप से होकर कहीं गिरता दिखाई दिया? पूरा पाइप नीले रंग की रोशनी से चमचमा रहा था।

ऐलेक्स समझ ही नहीं पा रहा था कि उसने तिलिस्मा का वह द्वार पार कर लिया? या अभी और मुसीबत आनी बाकी है।

लगभग 5 मिनट के बाद ऐलेक्स का शरीर किसी कमरे में रखे, एक बड़े से ड्रम में गिरा, जिसमें कोई चिपचिपा सा पदार्थ भरा हुआ था। ऐलेक्स पूरा का पूरा उस चिपचिपे पदार्थ से भीग गया।

ऐलेक्स किसी प्रकार उस ड्रम से निकला और कमरे को देखने लगा। पूरा कमरा सफेद पाउडर जैसे पदार्थ से भरा हुआ था।

हर ओर बस वही सफेद पाउडर दिख रहा था।

तभी ऐलेक्स को सामने की ओर एक दरवाजा दिखाई दिया, जिसमें से 'टन्-टन्' की आवाजें आ रहीं थीं। ऐसा लग रहा था कि दरवाजे के दूसरी ओर कुछ मूर्तिकार मूर्तियां बना रहे हों?

ऐलेक्स धीरे-धीरे उस दरवाजे की ओर बढ़ने लगा, पर अभी ऐलेक्स मुश्किल से 2 कदम ही चला था कि तभी ऐलेक्स का पैर, किसी चिकनी सी द्रव जैसी चीज पर पड़ने की वजह से फिसल गया?

अब ऐलेक्स जमीन पर गुलाटियां मारता हुआ, पूरी तरह से उस पाउडर के ढेर में खो गया।

पाउडर के ढेर में गिरने की वजह से ऐलेक्स को चोट तो नहीं आई, परंतु उसके पूरे शरीर पर सफेद पाउडर की एक पर्त चिपक गई।

ऐलेक्स किसी प्रकार खड़ा हुआ और फिर से दरवाजे की ओर बढ़ने लगा, तभी ऐलेक्स को अपना शरीर जमता हुआ सा महसूस होने लगा। एकाएक ही उसे अपने पैर बहुत ज्यादा भारी लगने लगे।

अब ऐलेक्स से एक कदम भी आगे नहीं बढ़ाया जा रहा था। धीरे-धीरे उसका पूरा शरीर उस पाउडर से जमकर एक मूर्ति के समान लगने लगा।

अब वह एक जिंदा मूर्ति था, जो ना तो हिल सकता था और ना ही उस मुसीबत से बचने के लिये कुछ कर सकता था।

◆ ◆ ◆

कालभैरव

25.01.2002, शुक्रवार, वाराणसी, उत्तर प्रदेश, भारत

रात का समय था। चारो ओर अंधेरे का वातावरण था। अंधेरी रात होने की वजह से हाथ को हाथ सुझाई नहीं दे रहा था।

जनवरी के माह ने अपनी ठंडक की चादर भी फैला रखी थी, जिसकी वजह से हाड़ कंपा देने वाली ठंड भी पड़ रही थी।

चारो ओर फैला कोहरा भी अलग से अपनी उपस्थिति दर्ज करवा रहा था।

ऐसी ही काली रात में वाराणसी रेलवे श्टेशन से कुछ दूरी पर हवा में चिंगारी उठती हुई दिखाई दी, परंतु अत्याधिक रात होने की वजह से किसी का भी ध्यान उस ओर नहीं था?

कुछ ही देर में उस चिंगारी ने एक गोले का रुप ले लिया और उस गोले से निकलकर एक मानवाकृति जमीन पर कूदी।

उस मानव आकृति के जमीन पर कूदते ही वहां सो रहे एक बड़े से कुत्ते के कान खड़े हो गए और वह जोर-जोर से उस मनुष्य को देखकर भौंकने लगा।

उस मनुष्य ने नीले रंग के पौराणिक वस्त्र पहन रखे थे।

उस मनुष्य ने अपनी नीली आँखों से घूरकर उस कुत्ते को देखा। उसके घूरते ही उस कुत्ते का भौंकना बंद हो गया।

अब वह मनुष्य अंधेरे से निकलकर सड़क किनारे खंभे पर लगी लाइट के नीचे आ गया।

वह मनुष्य और कोई नहीं बल्कि नीलाभ था, जो महादेव के अगले अवतार भैरव की खोज में वाराणसी आ गया था।

नीलाभ ने अपनी नजर चारो ओर घुमाई, पर चारो ओर उसे कोई नजर नहीं आया।

इस समय रात का 11 बजा था। रात ठंडी होने के कारण शायद सभी लोग अपने बिस्तर में घुसे रहे होंगे।

“काशी में महादेव के द्वादस ज्योतिर्लिंग में से एक उपस्थित है। पौराणिक काल में महादेव ने अपने अवतार कालभैरव को इस नगरी का कोतवाल बनाया था, इसलिये वह मुझे यहीं पर मिलेंगे।” नीलाभ ने मन ही मन सोचा- “अतः मुझे उन्हें ढूंढकर उनसे आशीर्वाद प्राप्त करना होगा।”

यह सोचकर नीलाभ ने अपने रक्त की एक बूंद को जमीन पर छिड़ककर फिर से नीलिमा का आहवान किया।

नीले रंग की नन्हीं चिड़िया एक बार फिर नीलाभ के सामने थी।

“मुझे कालभैरव के पास तक ले चलो नीलिमा। परंतु यह ध्यान रहे कि इस समय हम मनुष्यों के एक नगर में हैं इसलिये तुम्हें बिना किसी प्रकार का शोर किये आगे बढ़ना होगा?” नीलाभ ने नीलिमा को चुप रहने का इशारा करते हुए कहा।

नीलिमा मानो नीलाभ की पूरी बात समझ गई। अतः वह बिना आवाज किये उड़ती हुई एक दिशा की ओर चल दी।

नीलाभ ने अब ना जाने कौन सा मंत्र पढ़ा कि देखते ही देखते, उसके शरीर का रंग और हुलिया किसी सामान्य मनुष्य की तरह नजर आने लगा।

अब वह नीलिमा के पीछे-पीछे चल दिया।

कुछ आगे चलने पर रेलवे श्टेशन की भीड़ उन्हें दिखाई देने लगी। रेलवे श्टेशन के आसपास बहुत से लोग मोटे-मोटे कपड़े पहने आ-जा रहे थे।

रेलवे श्टेशन के बाहर कुछ चाय की दुकानें भी खुली थीं, जहां पर खड़े होकर कुछ लोग चाय पी रहे थे।

उस स्थान को देख कर ऐसा महसूस ही नहीं हो रहा था कि यह रात का समय है। वहां पर इस समय भी काफी भीड़ दिखाई दे रही थी।

नीलाभ चलता हुआ जैसे ही श्टेशन से बाहर वाली रोड के पास पहुंचा, उसे कई ऑटो वालों ने घेर लिया।

“कहीं चलना है बाबू साहब।” एक ऑटो वाले ने नीलाभ को रोकते हुए पूछा- “आप कहें तो मैं आपको किसी अच्छे से होटल में छोड़ दूंगा।”

नीलाभ उस ऑटो वाले को देखकर एक पल को ठिठका, पर तुरंत ‘ना’ में सिर हिलाकर आगे बढ़ गया।

अब कई ऑटो वाले नीलाभ के पीछे लग गये, परंतु नीलाभ ने किसी पर ध्यान नहीं दिया, वह बस बिना किसी से कुछ बोले आगे बढ़ता गया।

चूंकि नीलिमा थोड़ी ऊंचाई पर उड़ रही थी, इसलिये किसी का भी ध्यान नीलिमा की ओर नहीं गया?

कुछ ही देर में नीलाभ रेलवे श्टेशन की भीड़ को पार करता हुआ आगे की ओर बढ़ गया।

वाराणसी एक भीड़ वाला शहर था, इसलिये नीलाभ यहां पर किसी प्रकार की शक्ति का प्रयोग नहीं करना चाहता था? अतः वह पैदल ही नीलिमा को देखते हुए आगे बढ़ रहा था।

जैसे ही शोर वाला स्थान थोड़ा कम हुआ, नीलाभ ने अपने चलने की गति थोड़ी और बढ़ा दी।

कुछ आगे जाने पर नीलाभ को अपने पीछे से किसी आहट का अहसास हुआ। आहट को सुन नीलाभ पलटकर पीछे की ओर देखने लगा।

नीलाभ को कुछ दूरी पर अपने पीछे आता हुआ एक कुत्ता दिखाई दिया, पर यह कुत्ता रेलवे श्टेशन वाले कुत्ते से अलग था और देखने में मरियल सा लग रहा था।

उस मरियल से कुत्ते को देख नीलाभ की आँखें जोर से चमकीं, जिसे देख वह कुत्ता भी वहीं रुक गया।

अब नीलाभ पलटा और फिर से आगे की ओर बढ़ने लगा।

लगभग आधे घंटे तक ऐसे ही सड़क पर चलने के बाद नीलाभ वाराणसी में स्थित कालभैरव के मंदिर पहुंच गया।

नीलिमा अब मंदिर की ध्वजा के पास हवा में चक्कर लगाने लगी।

रात का समय होने के कारण मंदिर के पट् अभी बंद थे। यह देख नीलाभ मंदिर के पास ही खड़ा हो गया।

तभी नीलाभ की निगाह मंदिर के बाहर सो रहे एक साधु की ओर गई, जो कि लेटे हुए इस समय उसी की ओर देख रहा था।

नीलाभ ने उसे अपनी ओर देखते पाकर अपना चेहरा दूसरी ओर घुमा लिया।

तभी उस साधु को ना जाने क्या सूझा? कि वह उठकर नीलाभ के पास आ पहुंचा।

"क्या तुम्हें किसी प्रकार की आवश्यकता है बालक?" साधु ने नीलाभ से पूछा।

साधु को स्वयं से बात करते हुए देखकर नीलाभ ने ध्यान से उस साधु की ओर देखा। उस साधु ने अपने शरीर पर मैले से वस्त्र पहन रखे थे। उसके बालों में पड़ी जटाएं देखकर ऐसा लग रहा था कि मानों जन्म के बाद से ही उस साधु ने अपने बालों को नहीं खोला हो। माथे पर राख से लगाया हुआ टीका और हाथ में एक पुरानी सी मुड़ी-तुड़ी सी छड़ी लिये उस साधु का व्यक्तित्व बहुत ही विचित्र सा था।

"नहीं-नहीं मुझे किसी चीज की आवश्यकता नहीं है।" नीलाभ ने अपना चेहरा साधु की ओर से मंदिर की ओर करते हुए कहा।

"मुझसे झूठ बोलकर क्या लाभ बालक? ... मुझे तो सबकुछ पता है।" साधु ने कहा।

साधु की बात सुनकर नीलाभ थोड़ा गड़बड़ा सा गया- "क्या ... क्या पता है आपको? बताइये मैं यहां किसलिये आया हूं?"

"तुम्हें भी हम सभी की ही तरह 'उनके' दर्शन की आशा है। .... क्यों मैंने सही कहा ना?" इस बार साधु ने नीलाभ के थोड़ा और समीप आते हुए कहा।

और समीप आने पर नीलाभ को उस साधु के मुख से एक तीव्र गंध आती हुई महसूस हुई। शायद उस साधु ने शराब पी रखी थी।

साधु की बात सुन नीलाभ चौंक गया क्योंकि वह साधु कह तो सही रहा था, इसलिये नीलाभ ना समझने वाले भाव से उस साधु की ओर देखने लगा।

नीलाभ को अपनी ओर देखता पाकर साधु के चेहरे पर एक विचित्र सी मुस्कान आ गई- “घबराओ मत बालक ... मेरा नाम तंत्रालु है। मैं तुम्हें कोई हानि नहीं पहुंचाऊंगा। .... पर इतना अवश्य जान लो कि सिर्फ मैं ही तुम्हें ‘उनके’ दर्शन करा सकता हूं ... इसलिये बिना संकोच किये तुम्हें मेरे साथ चलना होगा। ... तो क्या तुम मेरे साथ चलने के लिये तैयार हो?”

यह कहकर तंत्रालु, नीलाभ की ओर आशा भरी नजरों से देखने लगा।

“परंतु मैंने तो सुना था कि उनका निवास स्थान यही है और वो मुझे यहीं पर मिलेंगे। तो फिर आप मुझे कहां ले चलना चाहते हो?” नीलाभ ने शंकित स्वर में कहा।

“यह उनका निवास स्थान है, पर कालभैरव तंत्र के देवता हैं और आज रात तंत्र का विशेष दिन है, इसलिये आज रात वह यहां से कुछ दूरी पर स्थित श्मशान में रहते हैं .... तुम्हें उनसे मिलने के लिये मेरे साथ वहीं पर चलना होगा।” तंत्रालु ने कहा।

“श्मशान में!” तंत्रालु की बात सुन नीलाभ के चेहरे पर असमंजस के भाव उभरे, इसलिये उसने अपना सिर उठाकर ऊपर आसमान की ओर देखा। शायद नीलाभ, नीलिमा से कुछ पूछना चाह रहा था, परंतु इस समय नीलाभ को नीलिमा कहीं दिखाई नहीं दी?

इसलिये जाने क्या सोच कर नीलाभ ने तंत्रालु को देखकर, सहमति में अपना सिर हिला दिया।

नीलाभ को तैयार देख तंत्रालु खुश हो गया और नीलाभ को अपने पीछे आने का इशारा कर धीमे कदमों से एक ओर चल दिया।

परंतु नीलाभ जैसे ही आगे बढ़ने चला, नीलाभ को अपने सामने एक कुत्ता दिखाई दिया, जो उसे ही घूर रहा था।

नीलाभ ने कुत्ते की ओर ध्यान नहीं दिया और तंत्रालु के पीछे-पीछे चल दिया।

कुत्ता नीलाभ को तब तक घूरता रहा, जब तक वह उसकी नजरों से ओझल नहीं हो गया, फिर वह तेजी से एक दिशा की ओर भाग गया।

उधर नीलाभ अंधेरे में तंत्रालु के पीछे-पीछे चलता जा रहा था। वैसे नीलाभ को तंत्रालु पर भरोसा नहीं हुआ था, पर वह जानता था कि एक अदना मनुष्य भला उसका क्या बिगाड़ लेगा?

कुछ देर बाद तंत्रालु एक श्मशान में प्रवेश कर गया।

उस श्मशान में जगह-जगह पर मोमबत्ती जल रही थीं, जिसके हल्के प्रकाश से पूरा श्मशान रोशन था, पर उस श्मशान में एक अजीब सा सन्नाटा पसरा हुआ था।

तंत्रालु चलता हुआ एक घने से पेड़ के पास पहुंच गया।

उस पेड़ के नीचे तंत्र-मंत्र की कुछ चीजें रखी हुई थीं और एक बड़ा सा झोला भी रखा था। उस झोले में क्या था? यह नीलाभ की समझ में नहीं आया।

पेड़ के पास जमीन पर आमने-सामने 2 साफ कपड़े बिछे हुए थे। उस पूरी व्यवस्था को देख ऐसा लग रहा था कि तंत्रालु ने पहले से ही वहां पर सारी तैयारियां कर रखी थीं।

तंत्रालु उनमें से एक कपड़े पर बैठ गया और सामने वाले कपड़े पर नीलाभ को बैठनेका इशारा किया।

तंत्रालु का इशारा पाकर नीलाभ, तंत्रालु के सामने वाले कपड़े पर बैठ गया और तंत्रालु की अगली गतिविधि की प्रतीक्षा करने लगा।

नीलाभ को सामने बैठते देख तंत्रालु ने अपने पास रखे झोले से कुछ चीजें निकालीं और अपने सामने तंत्र-मंत्र की कुछ आकृतियां बनाने लगा?

नीलाभ को कुछ समझ नहीं आ रहा था, पर फिर भी वह चुपचाप बैठा तंत्रालु की तंत्र क्रियाएं देख रहा था।

कुछ ही देर के बाद तंत्रालु अपनी तंत्र क्रियाओं के माध्यम से एक हवन करने लगा।

तंत्रालु जोर-जोर से किसी मंत्र का उच्चारण कर रहा था। साथ ही साथ वह अपने झोले से कुछ चीजें निकाल कर सामने जल रहे हवन कुंड में डाल रहा था।

अब हवन कुंड से तेज धुंआ निकलने लगा। कुछ ही देर में हवन का वह सारा धुंआ पूरे श्मशान में फैल गया।

तभी उस धुंए ने एक आकृति का रुप लेना शुरु कर दिया। धुंए से बनी वह आकृति अब कुछ-कुछ भगवान शिव के समान लगने लगी।

तभी उस धुंए से एक जोर की आवाज आई- “बताओ तंत्रालु, भैरव को कैसे याद किया? क्या इच्छा है तुम्हारी?”

“मेरी कोई इच्छा नहीं है भैरव बाबा। परंतु मेरे सामने बैठे इस बालक को आपसे कुछ कार्य है? कृपा कर इस बालक की इच्छा पूर्ण करें।” तंत्रालु ने उस धुंए की आकृति के सामने अपने हाथ जोड़ते हुए कहा।

अब नीलाभ ने भी उस आकृति के सामने अपने हाथ जोड़ दिये, परंतु नीलाभ तंत्रालु के सामने अपने उद्देश्य को बताना नहीं चाहता था, इसलिये वह बोला- “हे कालभैरव मुझे अपना आशीर्वाद दीजिये कि मैं अपने उद्देश्य में पूरा हो सकूं।”

“मैं तुम्हें आशीर्वाद देता हूं, परंतु मेरा आशीर्वाद तभी फलीभूत होगा, जब तुम मेरे जाने के बाद तंत्रालु को उसके तंत्र कार्य में सहयोग करोगे। ध्यान रखना तुम यहां से तंत्र क्रियाओं को पूर्ण किए बिना नहीं जा सकते।” यह कहकर धुंए की वह आकृति हवा में विलीन हो गई।

नीलाभ को धुंए की आकृति के शब्द कुछ खास समझ नहीं आए, परंतु फिर भी वह वहीं बैठकर तंत्रालु की तंत्र क्रियाओं को देखता रहा।

उस आकृति के विलीन होते ही तंत्रालु ने अपने झोले से एक काँच की बोतल को निकाल कर अपने हाथ में ले लिया और उस बोतल के ऊपर लगे कार्क को अपने हाथों से खोलने की कोशिश करने लगा।

परंतु जब कुछ देर तक तंत्रालु उस बोतल का ढक्कन अपने हाथों से नहीं खोल पाया, तो उसने उस बोतल को नीलाभ को पकड़ा दिया और उसे बोतल का ढक्कन खोलने का इशारा किया।

नीलाभ ने उस खाली बोतल को देखा और एक झटके से उस बोतल का ढक्कन हटा दिया, परंतु जैसे ही नीलाभ ने बोतल का ढक्कन हटाया, ठीक उसी समय तंत्रालु ने अपने हाथ में पकड़े अभिमंत्रित चावल के कुछ दानों को मंत्र पढ़ते हुए नीलाभ पर फेंक दिया।

तंत्रालु के ऐसा करते ही नीलाभ का शरीर एक धुंए में परिवर्तित हो गया और वह पूरा धुंआ उस काँच की बोतल में समा गया।

नीलाभ को काँच की बोतल में जाते देख, तंत्रालु ने झट से बोतल को कार्क से बंद कर दिया और जोर-जोर से हंसने लगा।

“हाऽऽऽ हाऽऽऽऽ हाऽऽऽ तुम कितने मूर्ख हो बालक, जो मेरे जाल में इतनी आसानी से फंस गये।” तंत्रालु ने बोतल में बंद नीलाभ की ओर देखते हुए कहा- “अरे मेरी नजर कुत्तों के माध्यम से तुम पर तबसे ही थी, जब तुम इस वाराणसी नगर में प्रवेश किये थे। ... मुझे उसी समय पता चल गया था कि तुममें बहुत सी शक्तियां हैं, इसलिये मैंने तुम्हारी चिड़िया पर अपने उल्लू से हमला करवा कर उसे भी अपनी पकड़ में ले लिया था। ... हाऽऽऽ हाऽऽऽ मैं तो यहां ‘त्रिपुरसुंदरी’ से तंत्रशक्ति सीखने आया था, मुझे क्या पता था कि मुझे यहां तुम मिल जाओगे? मेरी किस्मत कितनी अच्छी है ... अब मैं तुम्हें धूम्रपिशाच की तरह अपना सेवक बना लूंगा। धूम्रपिशाच से तो तुम मिल ही चुके हो। अरे धूम्रपिशाच वही तो था, जो कि तुम्हें भैरव के रुप में मिला था। ... तो अब बताओ बालक कि तुम्हारा नाम क्या है? और तुम कौन हो?”

तंत्रालु के शब्द सुन नीलाभ को जोर का गुस्सा आया, परंतु वह अपनी सभी कोशिशों के बाद भी उस बोतल के अंदर अपनी किसी शक्ति का प्रयोग नहीं कर पा रहा था?

नीलाभ को बोतल के अंदर छटपटाता हुआ देख तंत्रालु और भी खुश हो गया- “बेकार की कोशिश मत करो बालक। तुममें चाहे कितनी भी शक्तियां क्यों ना हो? परंतु तुम ‘भैरवी’ की दी हुई इस बोतल से नहीं निकल सकते। अब मैं ‘त्रिपुरसुंदरी’ का आहवान कर तुम्हें सदा-सदा के लिये अपना सेवक बना लूंगा।”

यह कहकर तंत्रालु, त्रिपरसुंदरी को बुलाने के लिये फिर से तंत्रविद्या का प्रयोग करने लगा।

बोतल में बंद नीलाभ कभी तंत्रालु को तो कभी पेड़ पर लटके धूम्रपिशाच को देख रहा था।

लगभग 10 मिनट की तंत्रविद्या के बाद अचानक तंत्रालु को उस शांत श्मशान से किसी पायल की आवाज आती हुई सुनाई दी।

“छन्-छन्”

पायल की आवाज सुन तंत्रालु ने तंत्र विद्या को रोक दिया और आवाज की दिशा में खुशी भरे भाव से निहारने लगा।

तभी श्मशान के एक ओर से एक अति सुंदर स्त्री प्रकट हुई। उस स्त्री ने किसी देवी की भांति सफेद और लाल रंग की साड़ी पहन रखी थी। उस स्त्री के हाथों में भी लाल रंग किसी मेंहदी के समान लगा हुआ था। उस स्त्री के चेहरे पर अपार तेज स्पष्ट दिखाई दे रहा था।

उसी स्त्री की पायल की खनक पूरे श्मशान में गूंज रही थी। तंत्रालु मंत्रमुग्ध सा उस स्त्री को निहार रहा था।

धीरे-धीरे पायल छनकाती हुई वह स्त्री तंत्रालु के पास आ खड़ी हुई और तेज आवाज में बोली- “बता तंत्रालु, त्रिपुरसुंदरी को किसलिये याद किया?”

अब तंत्रालु, त्रिपुरसुंदरी के मोहिनी रुप से बाहर आया और अपने हाथ जोड़कर बोला- “हे देवी, मुझे इस बोतल में बंद बालक को अपने वश में करना है, इसलिये मुझे आपकी सहायता की आवश्यकता है।”

तंत्रालु के शब्द सुन त्रिपुरसुंदरी की निगाह बोतल में बंद नीलाभ पर जाकर पड़ी- “यह क्या मूर्ख तंत्रालु? क्या तुम इस महाबली नीलाभ को अपने वश में करना चाहते हो? क्या तुम्हें पता भी है कि इस नीलाभ के पास कितनी शक्तियां हैं? और यह कौन है?”

“नहीं देवी, मुझे नहीं पता कि यह कौन है? परंतु मैं इतना जानता हूं कि इसके पास देवताओं के समान चमत्कारी शक्तियां हैं और मैं इसे वश में करके इसकी सभी शक्तियों को अपना बनाना चाहता हूं।” तंत्रालु के शब्दों में भरा लालच साफ नजर आ रहा था।

“विनाश काले-विपरीत बुद्धि।” त्रिपुरसुंदरी ने धीमी आवाज में कहा, जिसे कि तंत्रालु सुन नहीं पाया।

अब त्रिपुरसुंदरी ने झुककर बोतल को उठा लिया।

त्रिपुरसुंदरी अपनी आँख बंदकर कोई मंत्र पढ़ने लगीं। नीलाभ बोतल के अंदर से त्रिपुरसुंदरी को निहार रहा था। तंत्रालु की भी निगाहें लगातार बोतल में बंद नीलाभ पर थीं।

तभी त्रिपुरसुंदरी ने ना जाने क्या किया? कि बोतल में बंद नीलाभ अपने स्थान पर बेहोश हो गया।

त्रिपुरसुंदरी फिर से थोड़ी देर तक मंत्र पढ़तीं रहीं और फिर उन्होंने अपने मुंह से बोतल पर एक फूंक मारी।

त्रिपुरसुंदरी के ऐसा करते ही नीलाभ अपने होश में आ गया, पर जैसे ही नीलाभ की नजर तंत्रालु पर पड़ी, वह हाथ जोड़कर बोला- “नीलाभ का प्रणाम स्वीकार करें स्वामी तंत्रालु ... और कृपा कर मुझे किसी कार्य को करने की आज्ञा दीजिये।”

नीलाभ के वचनों को सुन तंत्रालु खुशी के मारे झूम उठा।

उधर अब त्रिपुरसुंदरी ने बोतल के ढक्कन को खोल दिया। ढक्कन के खुलते ही नीलाभ धुंआ बनकर वापस बाहर आ गया।

“समुद्र मंथन के हलाहल विष से उत्पन्न हुआ हूं मैं, नीलाभ नाम है मेरा। मेरे लिये क्या आदेश है स्वामी?” नीलाभ ने तंत्रालु के सामने हाथ जोड़े हुए पूछा।

नीलाभ का परिचय सुनकर तंत्रालु के होश उड़ गये- “क .... क .... क्या तुम्हारा जन्म समुद्र मंथन के समय हुआ था? इसका मतलब तुम्हारे पास देवताओं के समान दिव्य शक्तियां होंगी? .... तो क्या तुम इस त्रिपुरसुंदरी को भी अपने वश में कर सकते हो?”

“जी हां स्वामी।” यह कहकर नीलाभ ने त्रिपुरसुंदरी की ओर देखा और मुस्कुराते हुए जोर की आवाज लगाई- “निकुम्भ ... प्रकट हो और ... और इस धूम्रपिशाच को अपने वश में कर लो।”

नीलाभ के इतना बोलते ही नीलाभ के दोनों कानों से नीले रंग के धुंए की लकीर निकली और इससे पहले कि धूम्रपिशाच कुछ कर पाता, उस नीले धुंए ने धूम्रपिशाच को चारो ओर से घेर लिया।

यह देख तंत्रालु एकाएक घबरा गया और नीलाभ की ओर देखने लगा। नीलाभ खूनी नजरों से उसे ही देख रहा था।

यह देख तंत्रालु ने त्रिपुरसुंदरी की ओर देखा। पर इस समय त्रिपुरसुंदरी के चेहरे पर भी मुस्कान थी।

तभी त्रिपुरसुंदरी के हाथों में एक मरा हुआ उल्लू दिखाई दिया, जिसे उन्होंने तंत्रालु की ओर फेंक दिया- "इस उल्लू की सहायता से तुम मुझे अपने वश में करना चाह रहे थे ना?"

अब तंत्रालु को समझते देर नहीं लगी कि यह त्रिपुरसुंदरी नहीं अपितु नीलिमा ही है, जिसने त्रिपुरसुंदरी का वेश धारण कर रखा है।

तभी त्रिपुरसुंदरी, नीलिमा में परिवर्तित हो गई और उड़कर नीलाभ के कंधों पर बैठ गई।

अब पाशा पूरी तरह से पलट गया था। अतः तंत्रालु वहां से भागने चला। तभी कहीं से एक विशाल काला कुत्ता वहां आ गया, जिसने छलांग लगाकर तंत्रालु को गिरा दिया।

उस काले कुत्ते को देख नीलाभ भी चकित हो गया क्योंकि यह काला कुत्ता उसके साथ नहीं था।

काला कुत्ता अब तंत्रालु के शरीर को अपने पैरों के नीचे दबाए गुर्रा रहा था।

तभी वातावरण में एक दिव्य प्रकाश उत्पन्न हुआ। उस दिव्य प्रकाश के अंदर से एक मानव आकृति प्रकट हुई।

उस मानव आकृति ने पूरे शरीर पर काले रंग का चोगे के समान कपड़ा पहन रखा था। यह और कोई नहीं अपितु असली कालभैरव थे।

कालभैरव ने अपने चारो हाथों में त्रिशूल, डमरु, रुद्राक्ष की माला और लोहे का एक दंड पकड़ रखा था। माथे पर भस्म, गले में नाग और चेहरे पर असीम तेज उनके व्यक्तित्व को अलग ही दर्शा रहे थे।

उन्हें देखते ही वह काला कुत्ता तंत्रालु को खींचता हुआ उनके पास ले गया।

तंत्रालु ने कालभैरव को देख अपने हाथ जोड़ लिये।

“देव कालभैरव को नीलाभ का प्रणाम।” नीलाभ ने भी कालभैरव के समक्ष अपने हाथ जोड़ते हुए कहा।

“कल्याण हो नीलाभ।” कालभैरव ने कहा- “मुझे पता है कि तुम मुझसे आशीर्वाद लेने यहां काशी में आए हो। पर आते ही तुमने एक दुष्ट को उसके कर्मों का फल दिया है। इस दुष्ट ने बहुत से मासूम लोगों को मारा था। अतः मैं तुम्हारे कार्य से बहुत प्रसन्न हुआ, इसलिये मेरा आशीर्वाद सदैव तुम्हारे साथ रहेगा। जाओ नीलाभ, इस सृष्टि को बचाने के लिये महादेव की शक्तियों का वरण करो।”

इतना कहकर कालभैरव ने उस काले कुत्ते की ओर देखा और फिर वहां से अदृश्य हो गये। कालभैरव के अदृश्य होते ही कालभैरव के वाहन उस काले कुत्ते ने तंत्रालु के शरीर को नोचना शुरु कर दिया और तब तक उसे नोचता रहा, जब तक कि वह काल के गाल में नहीं समा गया।

तंत्रालु को मारने के बाद उस काले कुत्ते ने नीलाभ को देखकर अपनी पूंछ हिलाया और श्मशान ने बाहर की ओर निकल गया।

उधर निकुम्भ ने धूम्रपिशाच को नीलाभ के सामने सदृश्य रुप में ला पटका।

“इसे छोड़ दो निकुम्भ।” नीलाभ ने धूम्रपिशाच को देखते हुए कहा- “मुझे नहीं लगता कि कालभैरव के दर्शन करने के बाद यह पिशाच अब किसी का कभी भी बुरा करेगा? .... अब यह स्वतंत्र है।”

नीलाभ का आदेश मान निकुंभ नाम की नीली शक्ति ने धूम्रपिशाच को छोड़ दिया और स्वयं वापस नीलाभ के कानों में समा गया।

“आप अत्यंत दयालु हो नीलाभ।” धूम्रपिशाच ने नीलाभ के आगे हाथ जोड़ते हुए कहा- “मैं आपका यह ऋण कभी नहीं भूलूंगा। वैसे भी आज के बाद मेरा समस्त जीवन महादेव के भक्तों को सही राह दिखलाना होगा। ... अब मुझे जाने की आज्ञा दीजिये।”

नीलाभ ने अपना हाथ उठाकर धूम्रपिशाच को जाने की आज्ञा दे दी और स्वयं वापस महादेव के अगले अवतार हनुमान की खोज में हिमालय के गंधमादन पर्वत की ओर चल दिया।

◆ ◆ ◆

नीली अंगूठी

25.01.2002, शुक्रवार, होटल ग्रैण्ड होम, न्यूयार्क, अमेरिका

आकृति इस समय न्यूयार्क के होटल ग्रैण्ड होम के सुइट रुम में विक्रम के साथ रुकी थी। विक्रम इस समय दूसरे कमरे में आराम कर रहा था और आकृति ड्राइंगरुम में सोफे पर लेटी हुई अपनी पिछली जिंदगी के बारे में सोच रही थी।

आकृति को वेदालय के समय से सिर्फ और सिर्फ आर्यन से ही प्यार था, पर शलाका के उसकी जिंदगी में आने के बाद से आर्यन का आकृति के प्रति झुकाव कम होता गया। अतः वेदालय की पढ़ाई समाप्त होने के बाद आर्यन ने आकृति के स्थान पर शलाका को अपने लिये चुना।

कुछ दिन बाद पता आकृति को पता चला कि आर्यन ने शलाका से विवाह कर लिया है और वह उसके लिये ब्रह्मलोक से अमृत लाने गया है। आकृति के लिये यह सुनहरा मौका था आर्यन की लिखी पुस्तक वेदांत रहस्यम को चुराने का।

आकृति जानती थी कि अगर उसके हाथ वेदांत रहस्यम लग गई तो वह आर्यन को कैसे भी उससे विवाह करने के लिये मना लेगी? यही सोच आकृति ने सुर्वया से कहकर अपने चेहरे पर एक दिन के लिये शलाका का रुप चढ़वा लिया। अब आकृति, शलाका की अनुपस्थिति में उसके घर पहुंच गई, पर वह अभी वेदांत रहस्यम् को ढूंढ ही रही थी कि तभी वहां आर्यन अमृत लेकर आ गया।

आर्यन ने आकृति को शलाका समझकर प्यार किया। उस रात आकृति, आर्यन को धोका देना नहीं चाह रही थी ... वह बताना चाह रही थी कि वह शलाका नहीं बल्कि आकृति है, परंतु आर्यन के प्यार के अहसास तले वह बहती चली गई।

अगली सुबह आकृति ने अमृत को पी लिया, परंतु अमृत पीते ही आर्यन को आकृति की सच्चाई पता चल गई और वह क्रोधित हो गया, परंतु आकृति वहां से मौका पाकर भाग निकली।

आर्यन के पास से लौटकर जब आकृति दोबारा सुर्वया से अपना रुप प्राप्त करने वापस पहुंची, तो उसे पता चला कि अब वह कभी भी आकृति के रुप में नहीं आ सकती, क्योंकि उसने शलाका के रुप में अमृतपान कर लिया था।

इसकी वजह से गुस्सा होकर आकृति ने सुर्वया को अपने जादुई दर्पण में कैद कर लिया।

इस घटना के नौ माह के बाद आकृति ने एक सूर्य के समान तेजस्वी बालक को जन्म दिया, पर एक रात आर्यन गुस्से में आकृति के पास आया और उसके पुत्र को लेकर कहीं चला गया?

उस घटना के 5000 वर्ष बीत जाने के बाद भी, आकृति को कभी आर्यन, शलाका या उसका पुत्र दिखाई नहीं दिया। आकृति ने यह समझ लिया कि आर्यन और शलाका उसके पुत्र को किसी को देकर मर चुके हैं? इसके बाद आकृति ने अपने पुत्र को ढूंढने की अनेकों कोशिशें की लेकिन वह सफल न हो सकी।

अब अमरत्व को प्राप्त कर चुकी आकृति पूरी पृथ्वी पर अपने अमरत्व का अभिशाप लिये हजारों वर्षों तक भटकती रही। इन हजारों वर्षों में आकृति ने बहुत सी छोटी-छोटी शक्तियों को प्राप्त किया।

हजारों वर्षों के बाद एक दिन मकोटा ने आकृति को देख लिया। चूंकि आकृति का चेहरा शलाका से मिल रहा था, इसलिये मकोटा आकृति को लेकर अराका द्वीप पर आ गया। अराका पर आने के बाद आकृति को पता चला कि शलाका अराका द्वीप की देवी थी।

आकृति, शलाका को मरा समझ मकोटा के बताए निर्देशों पर चलने लगी, परंतु उसने कभी भी मकोटा को अपने सत्य के बारे में नहीं बताया।

आकृति ने सुर्वया को अभी तक अपने साथ रखा था। एक दिन सुर्वया के माध्यम से आकृति को सुयश के बारे में पता चल गया। सुयश की शक्ल हूबहू आर्यन से मिलती थी, यह देख आकृति हैरान हो गई, परंतु वह अब मकोटा के दिये नीलदंड और सुर्वया की दिव्यदृष्टि के माध्यम से लगातार सुयश पर नजर रखने लगी।

फिर एक दिन आकृति को रोजर का हेलीकॉप्टर अराका द्वीप के ऊपर उड़ता दिखाई दिया। हेलीकॉप्टर के क्रैश होने के पहले ही आकृति ने अपनी शक्तियों से रोजर को बचा लिया। बाद में उसने रोजर को सुनहरे मानव का रुप देकर सन राइजिंग को भटकाने की कोशिश की।

कुछ दिन बाद जब सन राइजिंग भी तबाह हो गया तो सुयश कुछ अन्य लोगों के साथ अराका द्वीप पर आ गया। तभी एक दिन सुयश पर नजर रखते हुए आकृति को हनुका का सिंहासन दिखाई दिया। यहां से आकृति को एक नई कहानी का पता चला कि सुयश ही पूर्वजन्म का आर्यन है। आकृति को पता था कि शलाका अब मर चुकी है, इसलिये वह एक बार फिर अपना आकृति वाला रुप पाने के लिये बेचैन हो उठी।

तभी एक रात तौफीक ने एक पेड़ की कोटर में छिपी वेदांत रहस्यम् को ढूंढ लिया और उसके आखिरी पेज पर बनी आकृति की आँखें छूकर वह आकृति के पास पहुंच गया। उस दिन आकृति को यह भी पता चल गया कि आर्यन ने उसके पुत्र को मारा नहीं था, अपितु एक काँच के अष्टकोण में छिपाकर जमीन के नीचे छिपा दिया था और इसका रहस्य अब सिर्फ वेदांत रहस्यम् में ही था।

यह देख आकृति वेदांत रहस्यम् पाने के लिये तौफीक को लेकर सुयश के पास पहुंच गई और जब सबकुछ सही होने वाला था कि तभी एक बार फिर शलाका ने आकृति की जिंदगी में आकर उसका सारा खेल बिगाड़ दिया।

अब आकृति जान गई थी कि शलाका अभी तक जीवित है और उसके रहते वह कभी भी सुयश के साथ विवाह नहीं कर सकती। इसलिये आकृति सही मौके का इंतजार करने को सोच वहां से वापस आ गई।

अब सुर्वया के माध्यम से उसे पता चला कि अगर वह सुनहरी हिरनी से उसकी कस्तूरी छीन कर, उसे पीसने के बाद अपने चेहरे पर मले, तो उसका आकृति वाला रुप फिर से वापस आ सकता है। यह जानने के बाद आकृति, सुनहरी हिरनी बनी मेलाइट को पकड़कर अराका ले आई और उसे भी रोजर व सुर्वया की भांति एक कमरे में बंद कर दिया।

इसके बाद आकृति को एक रहस्य की बात पता चली कि यदि वह देवराज इंद्र को खुश कर दे, तो उनके आशीर्वाद स्वरुप वह इस जन्म में

सुयश को अपने साथ विवाह के लिये तैयार कर सकती है। इसलिये आकृति ने देवराज इंद्र की हजारों वर्षों पहले खोई दिव्य तलवार व सुनहरी ढाल को उन्हें सौंपने का प्लान बनाया। यह वही दिव्य तलवार व ढाल थी, जिसे इंद्र ने दैत्यराज वृत्रा को हराकर उससे छीनी थी। दैत्यराज वृत्रा उस समय का एकमात्र ड्रैगन सर्प था, जिसने उस युद्ध में देवराज इंद्र का जबड़ा भी तोड़ दिया था। देवराज इंद्र ने वह तलवार अपने अद्भुत शौर्य के प्रदर्शन के रुप में अपने पास रखी थी।

वरदान के बारे में सोच आकृति ने इंद्र की दिव्य तलवार को ढूंढकर अपने कमरे में टांग दिया और इंद्र की सुनहरी ढाल विल्मर से छीनने के लिये सनकिंग जहाज पर जा पहुंची। आकृति ने जहाज पर पहुंचकर जहाज पर मौजूद एक लड़की क्राउली का रुप धारण कर लिया। उसके बाद उसने विल्मर से सुनहरी ढाल तो छीन ली, पर जैसे ही वह वापस अराका द्वीप पर आने चली कि तभी मकोटा ने अपना नीलदंड वापस उससे छीन लिया।

तभी आकृति को बर्फ के गोले में बंद विक्रम मिला, जो अपनी स्मृतियां खो चुका था। आकृति ने स्वयं को वारुणि बताया और विक्रम को एक नीली अंगूठी पहना दी, जिससे वारुणि अपनी मानसिक तरंगों से विक्रम को ढूंढ ना सके। फिर वह विक्रम को लेकर न्यूयार्क आ पहुंची। पर एक दिन जब वह मामासूशी रेस्टोरेंट में विक्रम के साथ बैठी थी, कि तभी उसे फिर से शलाका दिखाई दी। शलाका को देखकर आकृति रेस्टोरेंट में ही एक स्थान पर छिप गई।

पर विक्रम ने शलाका को देख लिया और उसे आकृति समझ वारुणि कहकर संबोधित करने लगा। पर शलाका उस समय पता नहीं क्यों कुछ जल्दी में थी? वह एक अंजान व्यक्ति के साथ जैसे ही वहां से हटी, आकृति, विक्रम को लेकर वापस एक सुनसान से पार्क में पहुंच गई। जहां पर कोई कैमरा नहीं लगा था।

फिर शाम को वह विक्रम को लेकर वापस होटल में आ गई, पर आकृति अब ज्यादा देर नहीं करना चाहती थी, वह तो जल्दी से जल्दी वापस अराका पहुंचकर तलवार व ढाल को देवराज इंद्र के हवाले कर उनसे आशीर्वाद प्राप्त करना चाहती थी।

अब आकृति अपनी सोचों से बाहर आ गई।

पर आकृति के पास इस समय विक्रम के अलावा कोई और ऐसा साधन नहीं था, जिसके माध्यम से वह अराका द्वीप पर वापस जा सके? इसलिये जल्दी-जल्दी उसने एक नई कहानी गढ़ना शुरु कर दिया।

कुछ ही देर में आकृति ने एक नई कहानी को रच लिया था।

कहानी बनाने के बाद वह सोफे से उठी और विक्रम के कमरे में प्रवेश कर गई। विक्रम इस समय अपने बिस्तर पर बैठा, अपने हाथ की नीली अंगूठी को उतारकर उसे देख रहा था।

विक्रम के हाथ की अंगूठी को निकला देख एक पल के लिये आकृति सिहर उठी।

"अरे-अरे! यह क्या कर दिया?" आकृति ने घबराते हुए कहा- "मैंने तुम्हें कहा था कि ये अभिमंत्रित अंगूठी है और तुम्हें इसे 10 दिनों तक अपने हाथ में ही पहन कर रखना होगा।"

यह कहकर आकृति ने बेड पर बैठते हुए विक्रम को वापस अंगूठी पहना दी।

"लगता है तुम्हें याद नहीं है वारुणि, पर मुझे इस अंगूठी को पहने आज 10 दिन हो गये।" विक्रम ने आकृति को देखते हुए कहा- "और मुझे नहीं लगता कि मुझे अब इस अंगूठी की कोई आवश्यकता है .... मैं इस समय बिल्कुल स्वस्थ महसूस कर रहा हूं।"

यह कहकर विक्रम ने दोबारा से अंगूठी उतारी और उसे आकृति के हाथों में पकड़ा दिया।

"लगता है कि अब विक्रम नहीं मानने वाला ... पर इससे पहले कि वारुणि इससे सम्पर्क करने की कोशिश करे, मुझे विक्रम को लेकर किसी भी हाल में अराका जाना ही होगा।" वारुणि ने मन ही मन सोचा और विक्रम को नई कहानी सुनाने की तैयारी करने लगी।

पता नहीं कि अब आगे क्या होना था? पर नियति ने शायद विक्रम का अराका पर जाना तय कर दिया था।

◆ ◆ ◆

चैपटर-4

सेन्टौर योद्धा

तिलिस्मा 6.2

जेनिथ ने स्नेल को अपने हाथ में उठाया और वापसी के लिये पलटी। पर पलटते ही उसकी साँस अटक गई। इन 10 सेकेण्ड में सभी पिरान्हा मछलियों ने सुअर को खत्म कर दिया था और अब वह सभी उसके पीछे खड़ी खूनी नजरों से जेनिथ को निहार रही थीं।

तौफीक ने भी इस दृश्य को ऊपर से देखा और बिना कुछ सोचे समझे फिशटैंक के अंदर कूद गया।

अंदर कूदते ही तौफीक ने अपनी जेब से चाकू निकालकर अपने हाथों में ले लिया।

इससे पहले की कोई और कुछ समझ पाता, तौफीक ने चाकू से अपना हाथ एक जगह से काट लिया।

हाथ के कटते ही फिशटैंक में तौफीक का खून फैलने लगा और इसी के साथ खून की गंध पाकर सभी पिरान्हा मछलियां जेनिथ को छोड़ तौफीक पर टूट पड़ीं।

यह देख जेनिथ सकते की सी हालत में आ गई। एक पल के लिये उसे समझ में नहीं आया कि अब उसे ऐसी स्थिति में क्या करना चाहिये?

तभी तौफीक ने आखिरी बार हाथ हिलाकर जेनिथ को फिशटैंक से बाहर जाने को कहा।

पर जेनिथ जैसे मूर्ति बन गई थी। वह बस तौफीक को ही निहारे जा रही थी।

इससे पहले कि कोई और दुर्घटना घटती, जेनिथ का शरीर अपने आप हवा में उछला और पानी के ढक्कन से होता हुआ बाहर आकर गिरा।

बाहर आते ही जेनिथ ने पलटकर अपने पीछे की ओर देखा, पर उसे कोई नजर नहीं आया?

अब जेनिथ की निगाह तौफीक की ओर गई, पर ....पर अब उस स्थान पर तौफीक का कंकाल नजर आ रहा था।

खूनी मछलियों ने तौफीक के माँस का एक-एक टुकड़ा खा लिया था।

जेनिथ लगातार अब पानी में तैर रही तौफीक की हड्डियों को देख रही थी।

कुछ देर तक ऐसे ही देखते रहने के बाद, जेनिथ धीरे से उठी और उस फिशटैंक से दूर चली गई।

तौफीक का कंकाल अभी भी पानी में तैर रहा था।

तभी फिशटैंक के ऊपर हवा में घूमते कुछ सुनहरी रेत के कण दिखाई दिये, जो कि देखते ही देखते उस फिशटैंक में प्रवेश कर गये।

ना जाने ऐसा क्या था? उन सुनहरे कणों में कि सभी पिरान्हा मछलियां उन सुनहरे कणों से दूर चली गईं।

अब वह सुनहरे कण तौफीक के कंकाल के चारो ओर नाचने लगे। धीरे-धीरे उन कणों की गति बढ़ती जा रही थी और इसी के साथ फिशटैंक के अंदर मौजूद पानी का दबाव भी बढ़ता जा रहा था।

कुछ ही देर में एक तेज धमाके के साथ फिशटैंक के टुकड़े चारो ओर बिखर गये।

फिशटैंक का सारा पानी, सभी पिरान्हा के साथ दूर-दूर तक चला गया।

अब तौफीक का कंकाल पूरी तरह से भीगा हुआ जमीन पर पड़ा था। तभी सुनहरे कणों ने जमीन को छुआ। जमीन को छूते ही, जमीन पर मौजूद रेत के कण, आश्चर्यजनक तरीके से उड़-उड़ कर तौफीक के कंकाल से जाकर चिपक गये।

अब उन रेत के कणों ने तौफीक के शरीर का दोबारा से निर्माण शुरु कर दिया।

कुछ ही देर में रेत के कणों के कारण तौफीक के शरीर पर एक बार फिर मांस की पर्त नजर आने लगी।

अब सुनहरे कण एक बार फिर तौफीक के शरीर के चारो ओर घूमे, जिससे तौफीक के शरीर पर एक नई पोशाक नजर आने लगी। इसी के साथ सुनहरे कण हवा में घूमते हुए गायब हो गये।

कुछ ही देर में तौफीक ने कराह कर अपनी आँखें खोल दीं। उसने एक बार जमीन पर गिरे अपने शरीर को देखा और फिर धीरे से उठकर खड़ा हो गया।

अब तौफीक को फिशटैंक वाली घटना याद आ गई, जिसकी वजह से पिरान्हा ने उसके पूरे शरीर को नोच डाला था। तौफीक ने ध्यान से अपने शरीर को देखा, पर उस पर किसी भी प्रकार का चोट का कोई निशान नहीं था?

तौफीक को समझ नहीं आ रहा था कि वह जिंदा कैसे बच गया? फिर उसने धीरे से ईश्वर को अपनी नई जिंदगी के लिये धन्यवाद दिया और उठकर फिशवर्ल्ड से बाहर आ गया, पर उसे इस समय फिशवर्ल्ड के बाहर का नजार बिल्कुल बदला-बदला सा दिखाई दिया।

इस समय तौफीक को अपने सामने एक विशाल दीवार दिखाई दी।

आसमान छूती उस दीवार में 5 विशाल द्वार बने थे। हर एक द्वार पर 2 राशियां बनी थीं।

तौफीक ध्यान से उन दरवाजों को देखने लगा।

“इन पांचो द्वार पर तो अलग-अलग राशियां बनी हैं। लगता है कि मैं इस समय तिलिस्मा के अगले द्वार पर हूं? और यहां से मुझे अपनी यात्रा अकेले ही शुरु करनी पड़ेगी। ..... परंतु यहां पर तो सिर्फ 10 राशियां ही दिखाई दे रही हैं, इसका मतलब हममें से एक कोई यहां पर आकर किसी एक द्वार में प्रवेश कर चुका है? यानि कि मुझे भी इसमें से एक द्वार का चुनाव करना पड़ेगा?”

यह सोच तौफीक ध्यान से उन सभी दरवाजों को देखने लगा।

कुछ सोचने के बाद तौफीक को धनु राशि वाला द्वार पसंद आया क्योंकि धनु राशि के चिन्ह में एक धनुर्धारी अश्वमानव बना था और धनुष का मतलब निशाना लगाने से था।

इसलिये तौफीक धनु और तुला राशि वाले द्वार में प्रवेश कर गया।

तौफीक के उस द्वार में प्रवेश करते ही वह द्वार भी अदृश्य हो गया।

तौफीक द्वार के दूसरी ओर से बाहर निकला।

द्वार के दूसरी ओर एक विशाल गोलाकार मैदान था, जिसके चारो ओर गोलाकार आकृति में लगभग 50 फुट ऊंची पत्थर की दीवार बनी थी।

इस मैदान में चारो ओर कई मूर्तियां दिखाई दे रहीं थीं।

तौफीक ने हर बार की तरह पहले सभी चीजों को देखना शुरु कर दिया।

सबसे पहले तौफीक की नजर 2 ग्रीक योद्धाओं की मूर्तियों पर पड़ी। वह मूर्तियां 12 फुट ऊंची थीं। दोनों ही मूर्तियों के हाथ हवा में थे, परंतु खाली थे।

उन दोनों मूर्तियों के हाथों को देखकर ऐसा लग रहा था कि जैसे वह दोनो योद्धा आपस में युद्ध कर रहे थे और किसी ने उन दोनों के हाथों से हथियार ले लिये थे, क्योंकि दोनों ही योद्धा आक्रमण की मुद्रा में थे।

उनमें से एक योद्धा के हाथ की मुद्रा धनुष पकड़ने के जैसी थी और दूसरे योद्धा की मुठ्ठी इस प्रकार बंधी थी कि जैसे उसने अपने हाथ में तलवार पकड़ रखी हो।

धनुष वाले योद्धा के सिर पर, एक सुनहरे रंग की मुकुट के समान पट्टी बंधी थी, जिसके बीच एक लाल रंग का रत्न लगा था।

जब तौफीक ने उन दोनों योद्धाओं की मूर्ति का निरीक्षण कर लिया, तो वह आगे की ओर बढ़ गया।

उन दोनों योद्धाओं से कुछ दूरी पर, एक बलिष्ठ घोड़े की मूर्ति खड़ी थी। इस मूर्ति का आकार भी 12 फुट के आसपास था। यह बलिष्ठ घोड़ा अपने 2 पैरों पर खड़ा था। यह घोड़ा भी युद्ध की स्थिति में दिख रहा था।

तौफीक अब और आगे बढ़ गया। कुछ आगे जाने पर उसे एक विशाल घना पेड़ दिखाई दिया, जिस पर हजारों सुनहरे रंग के कनेर के समान फूल लगे दिखाई दिये। उस पेड़ पर एक सुर्ख लाल रंग का सेब भी लटका था, जो कि उन सुनहरे फूलों के मध्य, अलग ही अपनी उपस्थिति प्रदर्शित कर रहा था।

उस विशाल पेड़ से कुछ दूरी पर एक बड़ा सा तराजू रखा दिखाई दे रहा था। तराजू काफी भारी भरकम सुनहरी धातु का बना था, जिसके दोनों पलड़े गोल व भारी भरकम महसूस हो रहे थे। तराजू के पलड़े एक लोहे की जंजीर से बंधे थे।

तराजू के एक पलड़े पर एक सुनहरी धातु की बनी दोधारी चमचमाती तलवार रखी थी। देखने से ही प्रतीत हो रहा था कि वह तलवार भी काफी भारी है। तलवार के भार से तराजू का वह पलड़ा जमीन की ओर झुका था।

तराजू से कुछ दूरी पर एक बड़े से हाथी की मूर्ति भी बनी थी। हाथी ने अपनी सूंढ़ में एक काले रंग का बोर्ड पकड़ रखा था, जिस पर सफेद रंग से 'काइरोन दि सेन्टौर' लिखा था।

बस इतना कुछ ही था वहां पर। सभी चीजों को ध्यान से देखने के बाद तौफीक ने सोचना शुरु कर दिया।

"सबसे पहले इस द्वार के अंदर 2 राशियां होनी चाहिये थीं एक धनु और दूसरा तुला। तुला राशि का प्रतीक एक तराजू होता है, जो कि यहां पर उपस्थित है। परंतु धनु राशि के प्रतीक के रुप में कोई धनुर्धारी या फिर धनुष यहां पर मौजूद नहीं है। इसका मतलब धनु राशि यहां पर कहीं छिपी हुई है? तो सबसे पहले मुझे धनु राशि को ही ढूंढना चाहिये, उसके बाद ही मैं पूरी तरह से यह समझ पाऊंगा कि इस द्वार में मुझे करना क्या है? अब अगर मैं यहां पर पहले लिखी हुई चीज को समझने की कोशिश करुं, तो हाथी के बोर्ड के सिवा यहां पर कुछ भी नहीं है ... और हाथी के बोर्ड पर 'काइरोन दि सेन्टौर' लिखा है। .... सेन्टौर का मतलब तो अश्वमानव योद्धा होता है और जहां तक मुझे याद है कि ग्रीक माइथोलोजी में काइरोन नाम का एक अश्वमानव योद्धा था और वही अश्वमानव धनु राशि का भी प्रतीक

है, तो इसका साफ मतलब है कि मुझे पहले इस स्थान पर किसी अश्वमानव को ढूंढना होगा?”

यह सोचने के बाद तौफीक की निगाह वहां उपस्थित घोड़े की मूर्ति की ओर चली गई।

“यह तो पूर्ण घोड़ा है, यह कोई अश्वमानव तो नहीं है? ... लगता है कि मुझे एक बार फिर घोड़े की मूर्ति को ध्यान से देखना होगा।”

अब तौफीक अपनी सूक्ष्म निगाहों से, चारो ओर घूमकर घोड़े की मूर्ति को देखने लगा।

थोड़ी ही देर में तौफीक को घोड़े के शरीर के, कमर के आधे भाग पर, एक बारीक सी लाल रंग की रेखा बनी नजर आई।

उस लाल रंग की रेखा को देख, तौफीक की आँखें चमक उठीं। अब वह भागकर उन 2 योद्धाओं की मूर्तियों के पास पहुंच गया। कुछ ही देर में तौफीक को धनुष वाले योद्धा के शरीर के आधे भाग पर भी, वैसी ही बारीक लाल रंग की रेखा दिखाई दी।

“इसका मतलब घोड़े और धनुष वाले योद्धा की मूर्ति को उस लाल रंग की रेखा के पास से काटकर, आपस में जोड़ने पर अश्वमानव की मूर्ति बनेगी।”

अब तौफीक को तराजू पर रखी तलवार का ध्यान आया और वह भागकर तराजू के पास पहुंच गया। तौफीक ने तराजू के एक पलड़े पर रखी चमचमाती तलवार को उठा लिया।

तलवार बहुत मजबूत और भारी थी। तौफीक ने तलवार को दोनों हाथों से पकड़कर, उसे घोड़े वाली मूर्ति पर दिख रहे लाल रंग के निशान पर जोर से मार दिया।

तलवार के मारने से एक तेज ध्वनि उत्पन्न हुई, पर वह मूर्ति कटना तो दूर, उस पर एक खरोंच का निशान भी नहीं आया, उल्टा तौफीक का ही हाथ झनझना उठा।

“इन मूर्तियों को काटना मेरे बस की बात नहीं है, अवश्य ही कैश्वर ने इसके लिये कुछ विशेष प्रबंध कर रखा है?”

अब तौफीक की निगाहें फिर से वहां मौजूद सभी चीजों पर घूमने लगी। वहां मौजूद सभी चीजों को देखने के बाद तौफीक की निगाह, अब दूसरे योद्धा की मूर्ति की ओर गई, जिसके हाथ तलवार पकड़ने की मुद्रा में थे।

“अवश्य ही यही योद्धा इन दोनों मूर्तियों को काटने का काम करेगा। मुझे इसके हाथ में एक बार तलवार पकड़ा कर देखना चाहिये।”

यह सोच तौफीक ने अपने हाथ में पकड़ी तलवार उस योद्धा के हाथ में पकड़ा दी। एक तेज ‘खटाक’ की आवाज के साथ तलवार योद्धा के हाथ में फिट हो गई, परंतु वह योद्धा अब भी निष्क्रिय था।

तौफीक समझ गया कि उस योद्धा को ऑन करने का बटन कहीं और है? उसकी नजर एक बार फिर से चारो ओर घूमने लगी, पर उसे उस लाल रंग के सेब के सिवा कोई भी चीज वहां पर अनोखी नहीं लगी? इसलिये तौफीक चलता हुआ, उस पेड़ के पास पहुंच गया।

वह सेब ज्यादा ऊंचाई पर नहीं लगा था, इसलिये तौफीक ने आगे बढ़कर उस सेब को, पेड़ से तोड़ने की कोशिश की, परंतु सेब को छूते ही तौफीक को बिजली का एक तेज झटका लगा।

तौफीक समझ गया कि यह सेब उस योद्धा को ऑन करने का बटन नहीं है। उसकी नजरें फिर चारो ओर दौड़ीं। अब तौफीक की नजरें तराजू की ओर थीं।

वह धीरे-धीरे चलता हुआ, तराजू के पास पहुंच गया। कुछ देर तक तराजू को देखते रहने के बाद तौफीक ने अपने पैरों से तराजू के उस पलड़े को नीचे कर दिया, जिस पर से उसने कुछ देर पहले तलवार उठाई थी।

तौफीक के पैर रखने की वजह से वह पलड़ा जमीन से आकर टकराया। पलड़े के जमीन से टकराते ही वातावरण में एक ‘खटाक’ की आवाज गूंजी और इसी के साथ तलवार वाला योद्धा सजीव हो गया।

सजीव होते ही तलवार वाले योद्धा ने अपने चारो ओर देखा। अब उसकी नजरें तराजू के पास खड़े तौफीक की ओर गईं।

तलवार वाला योद्धा अब हिंसक भाव से तौफीक की ओर आने लगा। उस योद्धा के चेहरे के भाव देखकर ही तौफीक खतरे को भांप गया।

अब तौफीक सावधान नजर आने लगा था। तलवार वाला योद्धा चलता हुआ तौफीक के पास जा पहुंचा। उसने एक नजर तौफीक पर डाली और फिर अपनी तलवार का तेज प्रहार तौफीक के ऊपर कर दिया।

चूंकि तौफीक पहले से ही सावधान था, अतः उसने झुककर तलवार से स्वयं को बचाया।

तलवार के तेज वार से तराजू का एक पलड़ा कट कर जमीन पर गिर गया। उस योद्धा की निगाह अभी भी तौफीक की ओर थी, यह देख तौफीक ने अपने बचाव के लिये तराजू के उस पलड़े को उठा लिया।

तराजू का वह पलड़ा किसी गोल ढाल की तरह दिख रहा था, तभी उस ढाल के एक ओर एक हैण्डिल उभर आया। अब वह तराजू का पलड़ा पूर्ण रुप से ढाल में परिवर्तित हो गया।

तभी योद्धा ने दोबारा से एक तेज वार तौफीक पर किया, पर तौफीक ने उस योद्धा का वार अपनी ढाल पर रोका।

वातावरण में 'टनाक' की एक तेज आवाज उभरी। इसी आवाज के साथ तौफीक के दिमाग का बल्ब भी जल उठा। अब वह तुरंत भागकर घोड़े की मूर्ति के नीचे जाकर खड़ा हो गया।

तलवार वाला योद्धा भी तौफीक का पीछा करते हुए, घोड़े की मूर्ति के पास पहुंच गया। इस बार तौफीक इस प्रकार खड़ा था कि जैसे ही योद्धा ने तलवार का वार तौफीक पर किया, घोड़े की मूर्ति आधी कटकर जमीन पर गिर गई।

घोड़े की मूर्ति ठीक उसी जगह से कटी थी, जहां पर उस पर लाल निशान बना था।

तौफीक का प्लान पूरी तरह से कामयाब रहा था। अब वह भागकर धनुष वाले योद्धा की मूर्ति के पास जाकर खड़ा हो गया।

योद्धा ने फिर अपनी तलवार का वार तौफीक पर किया। इसी के साथ धनुष वाले योद्धा के शरीर का आधा भाग भी कट कर जमीन पर गिर गया।

इसी के साथ तलवार वाला योद्धा पुनः अपनी जगह पर जाकर खड़ा हो गया। अपनी जगह पर पहुंचते ही तलवार वाला योद्धा फिर से निष्क्रिय हो गया।

यह देखकर तौफीक ने एक राहत की साँस ली।

अब तौफीक ने अश्वमानव का मानव वाला शरीर उठाने की कोशिश की, परंतु वह हिस्सा इतना ज्यादा भारी था कि वह तौफीक से हिला तक नहीं।

अब तौफीक की निगाह पुनः हाथी पर जाकर टिक गई क्योंकि उस हाथी के सिवा वहां ऐसा कुछ भी नहीं था, जिसकी सहायता से तौफीक उस अश्वमानव के मानव वाले भाग को उठा पाता।

तौफीक अब हाथी की मूर्ति के पास आकर खड़ा हो गया।

“यह हाथी तो निष्क्रिय है, इसका मतलब इसे भी ऑन करने का यहां कोई बटन अवश्य होगा?” तौफीक ने हाथी का भी ध्यान से निरीक्षण करना शुरु कर दिया।

निरीक्षण करते हुए तौफीक की निगाह हाथी की एक आँख पर जाकर रुक गई। हाथी की एक आँख नहीं थी, उसकी जगह पर वहां एक गड्ढा दिखाई दे रहा था।

“यह हाथी की मूर्ति तो अपूर्ण है, हो सकता है कि इसे ही पूर्ण करने के बाद हाथी जीवित हो जाये, परंतु यहां पर मुझे कहीं हाथी की आँख तो दिखाई नहीं दी। ... कहां हो सकती है इस हाथी की आँख?”

तौफीक काफी देर तक चारो ओर हाथी की आँख ढूंढता रहा, पर उसे उस स्थान पर कहीं भी हाथी की आँख दिखाई नहीं दी?

आखिरकार थककर तौफीक एक स्थान पर बैठ गया। तौफीक काफी देर तक बैठा इधर-उधर देखता रहा, तभी उसे एक स्थान पर जमीन पर गिरा, एक चाक का टुकड़ा दिखाई दिया।

तौफीक ने आगे बढ़कर उस चाक के टुकड़े को उठा लिया- “इस चाक के टुकड़े का यहां क्या काम? .... इसे कैश्वर ने यहां क्यों रखा? ...

कहीं ऐसा तो नहीं कि इस चाक के टुकड़े से कहीं पर कुछ लिखना है? ... पर कहां?”

अब तौफीक की निगाह हाथी के सूंढ़ में पकड़े उस बोर्ड पर गई, जो कि काला ही था और उस पर लिखा ‘काइरोन दि सेन्टौर’ चाक से ही लिखा दिख रहा था।

कुछ सोच तौफीक ने वह बोर्ड हाथी की सूंढ़ से निकाल लिया और उस पर लिखा ‘काइरोन दि सेन्टौर’ शब्द को अपने हाथों से मिटा दिया। अब तौफीक ने उस बोर्ड पर, चाक से हाथी की आँख लिख दिया।

तौफीक के यह शब्द लिखते ही एक चमत्कार हो गया। उस बोर्ड से एक बड़ी सी नकली आँख निकलकर बाहर गिर गई।

तौफीक आँख को देखकर मुस्कुराया और उसने उस आँख को हाथी के आँख वाले स्थान पर लगा दिया। तौफीक के ऐसा करते ही हाथी जीवित हो गया।

हाथी ने जीवित होते ही ‘चियाऊं’ की आवाज अपने मुंह से निकाली और आगे बढ़कर धनुष वाले योद्धा के शरीर के ऊपरी हिस्से को जमीन से उठा लिया।

हाथी अब चलता हुआ घोड़े के शरीर के निचले भाग के पास आया और धनुष वाले योद्धा का शरीर, उसके ऊपर रख दिया।

हाथी के ऐसा करते ही ‘खटाक’ की आवाज के साथ अश्वमानव का शरीर पूरा हो गया। अब वह देखने में एक अश्वमानव योद्धा की भांति लगने लगा था।

पर ये सब करने के बाद भी हाथी शांत नहीं हुआ, वह चलता हुआ उस विशाल पेड़ के पास पहुंचा और उसके मोटे तने को अपनी सूंढ़ से पकड़कर तेज-तेज हिलाने लगा।

तौफीक समझ गया कि हाथी का कार्य अभी पूरा नहीं हुआ है, इसलिये वह ऐसा कर रहा है। अतः तौफीक उत्सुकता से हाथी के कार्यों को देखने लगा।

हाथी के जोर-जोर से पेड़ को हिलाने की वजह से पेड़ पर लगे सुनहरे फूल टूटकर जमीन पर गिरने लगे।

कुछ देर तक ऐसे ही सिलसिला चलता रहा, तभी तौफीक की निगाहें उस गोलाकार मैदान के चारो ओर पत्थरों से बनी दीवार पर गई।

हाथी जितने फूल जमीन पर गिरा रहा था, वह पत्थर की दीवार उतने फुट अंदर की ओर आगे बढ़ रही थी।

“अरे बाप रे! यह हाथी तो मेरी सहायता करने की जगह इस मैदान को ही छोटा करने में लगा है, अगर ऐसे ही चलता रहा, तो यह कुछ ही देर में इस पूरे मैदान को छोटा करते हुए समाप्त कर देगा। .... मुझे इस हाथी को फूल गिराने से रोकना होगा। ... पर कैसे? .... इतने बड़े हाथी को मैं कैसे नियंत्रित कर सकता हूं? हाथी को नियंत्रित करने के लिये तो अंकुश की आवश्यकता होती है, पर अंकुश यहां कहां से मिलेगा?”

तभी तौफीक की नजर तराजू के बीच में लगे काँटे पर गई, वह काँटा बिल्कुल अंकुश की भांति ही प्रतीत हो रहा था। यह देख तौफीक दौड़कर तराजू के पास पहुंचा।

कुछ ही देर की मशक्कत के बाद तौफीक ने तराजू से उस काँटे को निकाल लिया।

अब तौफीक वह अंकुश लेकर हाथी की ओर भागा। तब तक हाथी पेड़ के लगभग 80 प्रतिशत फूलों को जमीन पर गिरा चुका था।

तौफीक ने आगे बढ़कर उस अंकुश को हाथी के एक पैर में तेजी से चुभा दिया। अब हाथी की गुस्सैल निगाहें तौफीक पर थीं।

हाथी ने अब पेड़ को हिलाना बंद कर दिया और गुस्से से वह तौफीक की ओर लपका।

हाथी को अपनी ओर देखते पाकर, तौफीक तेजी से अश्वमानव योद्धा की ओर भागा। हाथी भी तौफीक के पीछे-पीछे चल पड़ा।

हाथी को पास आता देख तौफीक तेजी से अश्वमानव की मूर्ति के ऊपर चढ़ गया और जैसे ही हाथी उस मूर्ति के पास आया, तौफीक उस हाथी के माथे पर कूद गया।

इससे पहले कि हाथी अपने बचाव में कुछ कर पाता, तौफीक ने अपने हाथ में पकड़ा अंकुश जोर से हाथी के माथे में चुभा दिया।

हाथी ने अपने मुंह से एक जोर की आवाज निकाली और अपने स्थान पर ही निष्क्रिय हो गया।

तौफीक ने अब अपने चेहरे पर ढुलक आये पसीने को साफ किया और हाथी से उतरकर नीचे आ गया। पर तिलिस्मा का वह द्वार अभी समाप्त नहीं हुआ था, अभी भी अश्वमानव के हाथ में धनुष नहीं था।

तौफीक समझ गया कि अवश्य ही धनुष भी यहीं कहीं होगा? इसलिये अब तौफीक धनुष को तलाशने लगा।

धनुष को तलाशते हुए फिर एक बार तौफीक की नजर तराजू पर जाकर टिक गई। तराजू का वह भाग, जिससे पलड़े बंधे थे, वह बिल्कुल धनुष के समान लग रहा था। तौफीक ने तराजू के उस भाग को भी अलग कर लिया और उसे अश्वमानव को पकड़ा दिया।

धनुष का वह भाग अश्वमानव के हाथ में बिल्कुल फिट आ गया था। अब तौफीक को धनुष की डोरी की तलाश थी।

पर काफी ढूंढने के बाद भी तौफीक को उस स्थान पर कहीं भी धनुष की डोरी नहीं दिखाई दी। अब तौफीक की नजर फिर से उस बोर्ड और चाक की ओर गई, जिससे उसने हाथी की आँख निकाली थी।

कुछ सोचने के बाद तौफीक ने उस बोर्ड पर लिखे पिछले शब्द को मिटाया और इस बार 'धनुष की डोरी' उस पर लिख दिया। ऐसा करते ही बोर्ड से धनुष की डोरी निकलकर तौफीक के हाथ में आ गई।

तौफीक ने इस डोरी को अश्वमानव के हाथ में पकड़े धनुष पर चढ़ दिया।

तौफीक के ऐसा करते ही अश्वमानव की वह मूर्ति अपनी धुरी पर गोल-गोल चक्कर लगाने लगी और अब उसके धनुष पर एक तीर भी नजर आने लगा था।

तौफीक अब यह तो समझ चुका था कि अश्वमानव के धनुष से उसे पेड़ पर लगे सुर्ख सेब को गिराना है, पर वह इस अश्वमानव को रोके कैसे?

उसे समझ ही नहीं आ रहा था।

अब तौफीक अश्वमानव की मूर्ति पर चढ़ कर उसकी पीठ पर बैठ गया और तेजी से नाच रही उस मूर्ति को देखने लगा, पर तौफीक को तीर को छोड़ने का कोई भी तरीका समझ नहीं आ रहा था।

तौफीक ने अश्वमानव के सिर को भी इधर-उधर घुमाने की कोशिश की, पर वह भी नहीं घूमा। तभी तौफीक का हाथ अश्वमानव के माथे पर लगे मुकुट पर गया, जिसके बीच एक लाल रंग का रत्न लगा था।

तौफीक ने धीरे से उस रत्न को अंदर की ओर दबाया। वह रत्न किसी बटन की भांति अंदर की ओर दब गया और बटन के दबते ही अश्वमानव ने तीर को हवा में छोड़ दिया।

वह तीर पेड़ पर लगे कुछ फूलों को तोड़ता हुआ दूर जा गिरा। पर अश्वमानव तीर छोड़ने के बाद भी अभी रुका नहीं था। उसका घूमना निरंतर जारी था।

अब तौफीक समझ गया कि वह रत्न ही उस तीर को छोड़ने का बटन है, तभी अश्वमानव के धनुष पर एक तीर और दिखाई देने लगा।

अब बस तौफीक को उस अश्वमानव की घूमने की गति पर ध्यान देने की जरुरत थी।

तौफीक ने अब अपना एक हाथ अश्वमानव की गर्दन में फंसाकर अपने शरीर को नियंत्रित किया और दूसरा हाथ अश्वमानव के मुकुट पर लगे रत्न पर रख दिया।

अब तौफीक लगातार उस अश्वमानव की गति को देख रहा था।

5 से 6 चक्करों के बाद तौफीक को उस अश्वमानव की गति का पूर्ण अहसास हो गया। इस बार जैसे ही अश्वमानव का मुंह घूमकर सेब की दिशा में आया, तौफीक ने तुरंत रत्न को दबा दिया।

धनुष से तीर छूटा और सेब की ओर बढ़ा। हर बार की तरह फिर से एक बार तौफीक का निशाना बिल्कुल सही लगा था।

सेब टूटकर जमीन पर आ गिरा। सेब के जमीन पर गिरते ही वह पूरा वृक्ष भी जड़ से उखड़कर जमीन पर आ गिरा।

पेड़ के जमीन पर गिरते ही उस गोलाकार मैदान की दीवारे, तेजी से आपस में मिलने को मचल उठीं।

दीवारें तेजी से तौफीक की ओर बढ़ रहीं थीं और तौफीक के पास उन दीवारों से बचने का कोई उपाय नहीं था?

कुछ ही देर में दीवारें तौफीक के बिल्कुल पास आ गईं। तौफीक ने डरकर अपनी आँखें बंद कर लीं।

जब दीवारों की धड़धड़ाहट कम हुई तो तौफीक ने डरकर अपनी आँखें खोलीं।

अब तौफीक के सामने एक द्वार दिख रहा था, जिस पर लिखा था- “तिलिस्मा 7.1”

तौफीक ने उस द्वार के अंदर प्रवेश करने की कोशिश की, पर वह उसमें प्रवेश नहीं कर पाया। उस द्वार को किसी अदृश्य दीवार ने घेर रखा था।

तौफीक समझ गया कि जब तक कि सभी राशियों के द्वार पार नहीं हो जाते, तब तक वह उस द्वार में प्रवेश नहीं कर पायेगा।

अब तौफीक एक स्थान पर बैठकर बाकी लोगों के आने का इंतजार करने लगा।

◆ ◆ ◆

भविष्य दर्शन

25 वर्ष आगे ....
25.01.2027, मंगलवार, पेरिस शहर, फ्रांस

ओरस इस समय बहुत ज्यादा उलझन में था। वह ज़ेनिक्स के द्वारा अपने समय से 25 वर्ष आगे तो आ गया था, पर इस समय वह स्वयं को बहुत ही उलझन में महसूस कर रहा था।

क्योंकि इस समय जो जेनिथ उसे मिली थी, वह तो पता नहीं क्यों उसे पहचान भी नहीं पा रही थी? यहां तक कि वह सन राइजिंग के बारे में भी कुछ नहीं जानती थी?

ओरस को इस भविष्य में अपने पिता गिरोट भी दिखाई दिये, परंतु वह भी ओरस के बारे में कुछ भी नहीं जानते थे? और जब ओरस ने अपनी सत्यता को प्रमाणित करने के लिये ज़ेनिक्स को पुकारा, तो ज़ेनिक्स ने भी उसकी आवाज नहीं सुनी।

अब ओरस थके कदमों से फीनीक्स इंटरनेशनल कंपनी से निकलकर बाहर की ओर आ गया।

वह भविष्य में अपनी उलझनों का हल ढूंढने आया था, पर अपनी उलझनों में कुछ और बढ़ोतरी कर वहां से जा रहा था।

यही तो समय का चक्र था, जो पूरे ब्रह्मांड को अपने अंदर उलझाये था।

ओरस अब फुटपाथ पर चलता हुआ एक अंजानी दिशा की ओर चल दिया, पर उसके मस्तिष्क में अनेकों प्रश्न किसी भंवर की भांति घूम रहे थे।

“यह सब क्या हो रहा है? मेरी तो कुछ भी समझ में नहीं आ रहा है? ऐसा क्या हुआ था जेनिथ के साथ? कि वह किसी को पहचान ही नहीं पा रही है? कहीं तिलिस्मा में कैश्वर ने उसकी स्मृतियां तो नहीं छीन ली थीं ?... नहीं .... नहीं ... अगर कैश्वर तिलिस्मा की स्मृतियां छीनता तो कम से कम जेनिथ को सन राइजिंग या तौफीक तो याद होता, पर उसे तो कैप्टेन सुयश भी याद नहीं है। कुछ ना कुछ तो गड़बड़ है? कहीं ... कहीं जेनिथ

किसी कारण से जानबूझकर मुझसे झूठ तो नहीं बोल रही है? या फिर तिलिस्मा से निकलने के बाद कुछ ऐसा हुआ हो? जिसकी मुझे जानकारी ही ना हो। ... पर .... पर ये मेरे पिता गिरोट यहां भविष्य में क्या कर रहे हैं? और वह तो यहां पहले से भी ज्यादा जवान दिखाई दे रहे थे। .... क्या मेरे पिता भी पृथ्वी के ही निवासी हैं? तो फिर वह पृथ्वी से इतनी दूर डेल्फानो पर कैसे पहुंच गये? और अब जब मैं इतना उलझ गया हूं, तो पता नहीं ये ज़ेनिक्स ऐसे समय में कहां चली गई? यह मेरे आवाज देने पर भी आ क्यों नहीं रही है? कहीं ज़ेनिक्स के साथ भी तो कोई परेशानी नहीं हो गई? नहीं-नहीं .... मुझे उसके बारे में ऐसा नहीं सोचना चाहिये ... क्योंकि अगर उसे कुछ हो गया तो मैं यहां से अपने समय में जाऊंगा कैसे? हे देवता कुवान .... ऐसे समय में मेरी रक्षा करना।" ओरस का दिमाग हजारों तरह के अटपटे सवालों में घिरा था- "पर जब तक ज़ेनिक्स से संपर्क नहीं हो जाता, क्यों ना तब तक मैं ही इस भविष्य में कुछ रहस्यों को ढूंढने की कोशिश करुं? ... हां ... हां यही ठीक रहेगा।"

यह सोचकर अब ओरस चारो ओर देखता हुआ आगे की ओर बढ़ने लगा।

तभी ओरस की नजर सामने लगे एक बोर्ड पर पड़ी, जिस पर 'साइबर वर्ल्ड' लिखा हुआ था। कुछ सोचने के बाद ओरस उस साइबर वर्ल्ड नाम की दुकान में घुस गया, जो कि एक साइबर कैफे था।

इस समय ओरस ने पृथ्वी के हिसाब से ही कपड़े धारण कर रखे थे, इसलिये किसी को भी ओरस अजीब नहीं लगा।

"मुझे कुछ देर के लिये एक कंप्यूटर चाहिये?" ओरस ने साइबर कैफे के रिसेप्शन पर बैठे एक व्यक्ति को संबोधित करते हुए कहा।

रिसेप्शन पर बैठे व्यक्ति ने ओरस को एक कम्प्यूटर के पास ले जाकर छोड़ दिया और स्वयं वहां से वापस आकर अपनी ड्यूटी करने लगा।

वैसे तो ओरस के लिये ये कम्प्यूटर बिल्कुल साधारण था, पर ओरस को अभी मात्र कुछ जानकारी ही चाहिये थी, इसलिये ओरस चुपचाप कम्पयूटर से अपने काम की जानकारी निकालने में जुट गया।

ओरस की उंगलियां अब कम्प्यूटर के की-बोर्ड पर खेलने लगीं। कुछ ही देर में कम्प्यूटर की स्क्रीन पर ओरस को जेनिथ के घर का पता लिखा दिखाई देने लगा।

ओरस ने जल्दी-जल्दी वह पता अपने दिमाग में सुरक्षित किया और अपनी कुर्सी से उठकर खड़ा हो गया। पर अब ओरस के लिए एक नई मुसीबत खड़ी हो गई थी, क्योंकि उसके पास साइबर कैफे में देने के लिए पैसे नहीं थे।

ओरस चलता हुआ साइबर कैफे के रिसेप्शन पर जा पहुंचा। इस समय साइबर कैफे का रिसेप्शनिस्ट काफी लोगों से घिरा हुआ था, इस मौके का फायदा उठाकर ओरस चुपके से साइबर कैफे से निकलकर बाहर आ गया।

चूंकि जेनिथ का घर वहां से ज्यादा दूरी पर नहीं था, इसलिये ओरस पैदल ही जेनिथ के घर की ओर चल दिया। कुछ ही देर में ओरस जेनिथ के घर के बाहर खड़ा था।

जेनिथ का घर छोटा परंतु बहुत ही शानदार लग रहा था। जेनिथ की घर की दीवारें हल्के गुलाबी रंग से रंगी हुई थीं, जिसके दरवाजे पर बड़ी-बड़ी मूंछों वाला एक गार्ड पहरा दे रहा था।

अभी ओरस जेनिथ के घर को देख ही रहा था, कि तभी उसे जेनिथ का घर कुछ धुंधला दिखाई देने लगा। यह देख ओरस ने अपनी आँखों को अपने दोनों हाथों से धीरे से रगड़ा।

ओरस ने अपनी आँखें रगड़कर फिर से जेनिथ के घर की ओर देखा। पर इसी के साथ ओरस चौंक गया क्योंकि अब जेनिथ के घर की दीवारें उसे हल्के नीले रंग की दिखाई दीं।

“यह ... यह जेनिथ के घर का रंग कैसे बदल गया?” ओरस की आँखों में आश्चर्य ही आश्चर्य नजर आ रहा था- “अरे .... अब तो जेनिथ के घर का गार्ड भी बदला हुआ लग रहा है। इस गार्ड की तो मूंछे ही नहीं है, जबकि अभी कुछ देर पहले वाले गार्ड की तो मूंछे थीं।”

ओरस ने एक बार फिर से अपनी आँखों को रगड़कर जेनिथ के घर की ओर देखा, पर वहां के दृश्य में कोई परिवर्तन नहीं आया?

इस बार ओरस ने अपने सिर को हल्का सा झटका दिया और पिछले दृश्य को अपनी आँखों का भ्रम समझकर, जेनिथ के घर के पीछे की ओर चल दिया।

जेनिथ के घर के पीछे कोई गार्ड नहीं था, इसलिये ओरस धीरे से हवा में उछला और हवा में ही तैरता हुआ, जेनिथ के घर की चारदीवारी को पार कर उसके घर के गार्डन में पहुंच गया।

जेनिथ के गार्डन में नर्म हरी घास लगी हुई थी।

ओरस ने पहले चारो ओर का जायजा लिया और फिर हवा में उड़ता हुआ, जेनिथ के घर की छत पर उतर गया।

छत पर नीचे की ओर जाने वाला दरवाजा अंदर से बंद था, पर ओरस के हल्के से धक्के से ही उस दरवाजे की चिटकनी टूट गई और दरवाजा खुल गया।

ओरस दबे पाँव सीढ़ियां उतरने लगा। वैसे तो वह अभी कुछ देर पहले ही जेनिथ से उसके ऑफिस में मिल कर आया था, इसलिये उसे पता था कि घर में इस समय कोई भी नहीं होगा? फिर भी सावधानीवश वह धीरे-धीरे चल रहा था।

ओरस सीढ़ियां उतरकर अब घर के ड्रांइगरुम में पहुंच गया।

ड्रांइगरुम घर के अपेक्षाकृत काफी बड़ा और सुंदर था। घर का पूरा सामान करीने की तरह सजा हुआ था।

तभी ओरस की नजर सामने टेबल पर रखे एक 'टेबल कैलेण्डर' की ओर गई। पर उस लिखी तारीख को देखकर ओरस चौंक गया।

"अरे! यह कैलेण्डर में 25 जनवरी 2028 क्यों लिखा है? जबकि आज तो 25 जनवरी 2027 है। फिर यह जेनिथ ने अपने घर में एक साल आगे का कैलेण्डर क्यों लगा रखा है?"

तभी ओरस को सामने खुला हुआ एक लैपटॉप दिखाई दिया। उसे देखकर ऐसा लग रहा था कि जैसे अभी कुछ देर पहले तक उस पर कोई बैठकर काम कर रहा था?

जाने क्या सोचकर ओरस उस लैपटॉप की ओर बढ़ गया?

लैपटॉप के पास पहुंचकर ओरस ने उस पर लिखी हुई तारीख को देखा। लैपटॉप पर भी एक वर्ष आगे की तारीख पड़ी हुई थी।

अभी ओरस लैपटॉप को देख ही रहा था कि तभी एक कमरे से उसे किसी के आने की आवाज सुनाई दी?

एक पल में ही ओरस वहां रखे एक सोफे के पीछे छिप गया। पैरों की पदचाप अब ओरस के पास आकर रुक गई।

फिर ओरस को ऐसा महसूस हुआ कि कोई उस लैपटॉप को बंद कर रहा है। लैपटॉप बंद करने के बाद वह पदचाप दूर जाती हुई महसूस हुई।

अब ओरस ने अपने सिर को धीरे से सोफे के पीछे से निकाला और दूर जा रही उस आकृति को देखा। उस आकृति को देखते ही ओरस चौंक गया क्योंकि यह आकृति और कोई नहीं बल्कि जेनिथ थी, जो कि सामने लगा दरवाजा खोलकर बाहर की ओर निकल गई।

जेनिथ के हाथ में एक छोटा सा काले रंग का बैग था। शायद जेनिथ ने वह लैपटॉप उसी बैग में रख लिया था।

“यह जेनिथ यहां कैसे आ गई?” ओरस ने मन ही मन सोचा- “यह तो कुछ देर पहले ऑफिस में थी?”

अब ओरस का दिल पूरी तरह से शंका से भर गया।

ओरस ने अब अंदर वाले उस कमरे की ओर देखा, जिधर से निकलकर जेनिथ कुछ देर पहले बाहर आई थी।

कुछ सोच ओरस उस कमरे की ओर बढ़ गया।

ओरस ने उस कमरे का दरवाजा खोला और अंदर प्रवेश कर गया। ओरस के अंदर प्रवेश करते ही स्वतः ही उस कमरे की लाइट ऑन हो गई। शायद उस कमरे में ऑटोमेटिक लाइट लगी थी।

पर ओरस की नजर जैसे ही कमरे के दृश्य पर पड़ी, वह बुरी तरह से चौंक गया। कमरे में चारो ओर बड़ी-बड़ी तस्वीरें लगीं थीं, जिन पर क्रमशः लॉरेन, क्रिस्टी, ऐलेक्स, तौफीक, शैफाली, सुयश व अलबर्ट बने थे।

कमरे में एक स्थान पर सन राइजिंग की भी फोटो लगी थी।

परंतु सुयश व शैफाली की तस्वीर को छोड़ प्रत्येक तस्वीर पर लाल रंग के मार्कर से क्रास का निशान बना था।

“यह ... यह सब तस्वीरें तो साफ बता रहीं हैं कि जेनिथ को सबकुछ याद है। फिर ... फिर जेनिथ ने मुझसे झूठ क्यों बोला कि वह इनमें से किसी से मिली तक नहीं है? और ... और इसने सुयश व शैफाली को छोड़कर सभी की तस्वीरों पर क्रास का निशान क्यों बना रखा है? .... अब जरुर कुछ ऐसा हुआ है? जिसकी वजह से जेनिथ मुझसे सबकुछ छिपा रही है। .... पर मैं भी अब यह रहस्य जानकर रहूंगा।”

यह सोच ओरस उस कमरे से बाहर निकला और जिस रास्ते से आया था, उसी रास्ते से होता हुआ बाहर की ओर निकल गया।

बाहर निकलकर ओरस घूमकर जेनिथ के घर के आगे की ओर आ गया।

ओरस को अभी भी वही गार्ड खड़ा दिखाई दिया, जो कि कुछ देर पहले था। ओरस आगे बढ़कर गार्ड के पास जा पहुंचा।

“मुझे मिस जेनिथ मानेट से मिलना है।” ओरस ने गार्ड को संबोधित करते हुए कहा- “आप उनसे जाकर कहिये कि ओरस उनसे मिलना चाहता है।”

“पर जेनिथ मैम तो इस समय घर पर नहीं हैं। वह अभी कुछ देर पहले ही ऑफिस के लिये निकली हैं। आप उनसे वहीं जाकर मिल लीजिये।” गार्ड ने कहा- “पर मुझे लगता नहीं है कि वह आपसे आज मिलेंगी।”

“क्यों?” ओरस ने घूरकर गार्ड को देखते हुए पूछा- “वो मुझसे आज क्यों नहीं मिल सकतीं?”

“क्योंकि आज उनकी जिंदगी का सबसे बड़ा दिन है।” गार्ड ने ओरस को समझाते हुए कहा- “आज वह अपने ऑफिस में अपने सबसे बड़े प्रयोग को करने जा रही हैं।”

गार्ड की बात सुन ओरस हैरान होते हुए बोला- “ऐसा कौन सा प्रयोग करने जा रही है जेनिथ?”

“वह आज पूरी दुनिया के सामने समयचक्र का प्रयोग करने जा रही हैं।” गार्ड ने अपना सीना फुलाते हुए कहा- “अगर उनका प्रयोग सफल हो गया, तो हम समय के आर-पार जा सकेगें।”

इतना कहकर गार्ड चुप हो गया। शायद उसे इससे ज्यादा कुछ नहीं पता था, पर उसके ही एक शब्द ने ओरस के दिमाग में हलचल सी मचा दी।

“समयचक्र का प्रयोग! .... पर अभी कुछ देर पहले ही तो जेनिथ ने कहा था कि समयचक्र अभी पूरा नहीं हुआ है, फिर वह उसका प्रयोग कैसे करने जा रही है? मुझे जेनिथ को रोकना होगा।”

यह सोचकर ओरस गार्ड से बिना कुछ बताए तेजी से फीनीक्स इंटरनेशनल के ऑफिस की ओर चल दिया।

चूंकि दिन का समय था और काफी लोग आसपास से जा रहे थे, इसलिये ओरस ने अपनी उड़ने की शक्ति का प्रयोग नहीं किया।

कुछ ही देर में ओरस फीनीक्स इंटरनेशनल के ऑफिस के बाहर था, पर जैसे ही वह ऑफिस में घुसने चला, अचानक से फिर ओरस की आँखों के आगे धुंधलापन छा गया।

यह देख ओरस ने एक बार फिर अपनी आँखों को रगड़कर सही किया और फीनीक्स इंटरनेशनल के ऑफिस में प्रवेश कर गया।

पर ऑफिस में घुसते ही ओरस बुरी तरह से चौंक गया क्योंकि उसे हर जगह पर ‘फ्रांस पुलिस’ दिखाई दे रही थी, जो कि अलग-अलग लोगों से बातें कर रहे थे।

इस समय फीनीक्स इंटरनेशनल का ऑफिस भी, अंदर से कुछ जगह से टूटा हुआ दिखाई दे रहा था।

यह देख ओरस का दिल किसी अंजानी आशंका से धड़क उठा। वह धीरे-धीरे चलता हुआ ऑफिस के रिसेप्शन पर जा पहुंचा।

इस समय ऑफिस के रिसेप्शन पर कोई और लड़की नजर आ रही थी।

"क्या मैं मिस जेनिथ मानेट से मिल सकता हूं?" ओरस ने डरते-डरते रिसेप्शनिस्ट से पूछा।

ओरस के शब्द सुन रिसेप्शनिस्ट ने ऊपर से नीचे तक ओरस को देख और फिर दुखी भाव से कहा- "शायद आपको पता नहीं है कि मिस जेनिथ मानेट अब इस दुनिया में नहीं हैं।"

यह सुनते ही ओरस के सिर पर बिजली सी गिर गई।

"कैसे? .... ऐसा कैसे हुआ?" ओरस ने रोने वाले भाव से पूछा।

"आज से 2 दिन पहले जब वह अपने नये प्रयोग समयचक्र की टेस्टिंग कर रहीं थीं, तो उसमें एक जोर का धमाका हुआ। मिस जेनिथ भी उस धमाके की चपेट में आ गईं और ... और वह मारी गईं।"

रिसेप्शनिस्ट ने आखिरी के शब्द बहुत धीरे से कहे थे, शायद इस दुर्घटना ने उस पर भी भयानक असर डाला था।

"ऐसा कैसे हो सकता है? मैं अभी कुछ देर पहले ही तो जेनिथ से मिला था।" ओरस ने तेज आवाज में कहा।

"लगता है आपको कुछ भ्रम हुआ है ... मिस जेनिथ तो 2 दिन पहले ही दुर्घटना का शिकार हो चुकी हैं।" इस बार वहां खड़े एक पुलिसकर्मी ने ओरस को देखते हुए कहा।

अब ओरस को पूरे तौर पर कुछ गड़बड़ नजर आ रही थी क्योंकि जेनिथ अभी कुछ देर पहले ही तो उसके सामने से होती हुई ऑफिस आई थी।

तभी ओरस को कुछ ध्यान आया, जिसकी वजह से वह फिर से रिसेप्शनिस्ट की ओर पलटकर बोला- "और मिस्टर गिरोट ... वह कहां है? क्या आप उनसे मेरी बात करवा सकती हैं?"

"जी नहीं। .... मिस्टर गिरोट भी उस प्रयोग के समय मिस जेनिथ के साथ ही थे, पर उस प्रयोग के बाद से ही वह कहीं गायब हैं? पुलिस को प्रयोगशाला से उनकी बॉडी भी नहीं मिली। हम सभी स्वयं भी उन्हें तलाश कर रहे हैं।"

यह सुन ओरस का चेहरा उतर गया और वह लड़खड़ाते कदमों से फीनीक्स इंटरनेशनल के बाहर की ओर चल दिया।

कुछ आगे चलने के बाद ओरस के कानों में एक आवाज सुनाई दी- “न्यूजपेपर ले लो।”

ओरस ने अपना सिर उठाकर न्यूजपेपर वाले को देखा और उसके हाथ से एक न्यूजपेपर ले लिया।

न्यूजपेपर वाला अब पैसे के इंतजार में ओरस के पास खड़ा था, पर ओरस की निगाह न्यूजपेपर पर थी, जिसके फ्रंट पेज पर मृत जेनिथ की फोटो बनी थी।

तभी ओरस की निगाह न्यूजपेपर की तारीख पर गई, जिस पर लिखा था- “27 जनवरी 2028, दिन- गुरुवार।”

यह देख ओरस के दिमाग में धमाके से होने लगे क्योंकि वह तो 25 जनवरी 2027 को फ्रांस आया था, फिर वह कुछ ही घंटों में 1 वर्ष 2 दिन आगे कैसे आ गया?

तभी रोशनी का एक झमाका हुआ और ओरस अपने स्थान से गायब हो गया।

न्यूजपेपर वाला आश्चर्य से उस स्थान को देख रहा था, जहां कि कुछ देर पहले ओरस खड़ा था। क्योंकि ओरस गायब होते हुए उसका न्यूजपेपर भी ले गया था।

◆ ◆ ◆

चैपटर-5

नृत्यांगना

तिलिस्मा 6.3

सुयश, जेनिथ, शैफाली और क्रिस्टी, धनवंतरी के मायाजाल को पार कर, अगले द्वार में प्रवेश कर गये। जहां पर अब ये सभी निकले, वहां पर एक बड़ी सी दीवार में 4 दरवाजे दिखाई दे रहे थे। प्रत्येक द्वार पर 2 राशियां बनी थीं।

“अरे यहां पर तो मात्र 8 राशियां ही बनी हैं।” शैफाली ने सभी द्वार को देखते हुए कहा- “बाकी की 4 राशियां कहां गईं?”

शैफाली की बात सुन सभी ध्यान से उन चारो दरवाजों को देखने लगे।

“ये सभी दरवाजे दीवार के दाहिनी ओर हैं, जबकि बांयी ओर का क्षेत्र बिल्कुल खाली है और उस खाली क्षेत्र को देखकर साफ लग रहा है कि यहां पर जरुर 2 दरवाजे और थे, पर अभी नहीं है।” सुयश ने पूरी दीवार को ध्यान से देखते हुए कहा- “इसका मतलब अवश्य ही यहां पर हमसे पहले कोई आया है? जो उन दोनों दरवाजों के अंदर गया है?”

“परंतु यहां पर हमसे पहले कौन आ सकता है?” जेनिथ ने धड़धड़ाते हुए दिल से क्रिस्टी की ओर देखते हुए कहा।

जेनिथ कि बात सुनकर क्रिस्टी के चेहरे पर खुशी की झलक उभरी क्योंकि इंद्राक्ष से यही वरदान तो मांगा था उसने .... ऐलेक्स और तौफीक के दोबारा लौट आने का। वह जान चुकी थी कि हो ना हो बाकी दोनों दीवार से ऐलेक्स और तौफीक ही तिलिस्मा में गये होंगे? पर इंद्राक्ष के कहे अनुसार वह अभी किसी से अपना वरदान बता नहीं सकती थी, इसलिये जेनिथ से नजरें चुराते हुए दूसरी ओर देखने लगी।

पर जेनिथ ने क्रिस्टी के चेहरे पर मौजूद खुशी के भाव को महसूस कर लिया। अब जेनिथ के चेहरे पर भी खुशी दिखने लगी, परंतु उसने भी किसी से कुछ कहा नहीं?

“कैप्टेन अंकल, लगता है कैश्वर अब इस स्थान से हम सभी को अलग-अलग करना चाहता है, तभी उसने हम चारो के लिये 4 अलग-अलग द्वार दिये हैं।” शैफाली ने सुयश की ओर देखते हुए कहा- “तो फिर मेरे हिसाब से देर ना करते हुए हमें इन द्वार के अंदर प्रवेश करना चाहिये।”

शैफाली की बात सभी को सही लगी, इसलिये सभी अपने द्वार का चुनाव करने लगे।

कुछ ही देर में सभी ने अपने द्वार को चुन लिया, जिसके फलस्वरुप जेनिथ ने सभी की सफलता की कामना की और स्वयं वृष एवं कुंभ वाले द्वार में प्रवेश कर गई।

जेनिथ के उस द्वार में प्रवेश करते ही वह द्वार भी कहीं अदृश्य हो गया।

जेनिथ जिस जगह पर बाहर निकली, वह एक गोल मैदान था। कुछ ही देर में जेनिथ को समझ आ गया कि वह स्पेन के एक बुल फाइटिंग का मैदान था।

“अरे बाप रे! यह तो बुल फाइटिंग का मैदान है, अगर यहां मुझे सच की बुल फाइटिंग करनी पड़ी, तो मेरे लिये तो बहुत मुसीबत हो जायेगी?”

यह कहकर जेनिथ, मैदान में चारो ओर देखने लगी। मैदान बहुत ही विशाल था।

चारो ओर ऊंची-ऊंची दीवारों के ऊपर लोगों के बैठने का स्थान बना था।

मैदान में एक किनारे, एक बड़े से बैल की मूर्ति भी लगी थी। बैल के गले में एक चमड़े का पट्टा बंधा था, जिसमें बहुत सारे घुंघरु बंधे थे और उस पट्टे के बीच में एक घंटी लटक रही थी।

उस बैल से कुछ दूरी पर एक मेटाडोर की मूर्ति लगी थी, जिसने स्पेन की पारंपरिक ड्रेस पहन रखी थी। मेटाडोर ने अपने सिर पर एक ऊंचा सा

हैट पहन रखा था, जिस पर अंग्रेजी भाषा में 'MAGIC' लिखा था। हैट पर बुल की एक फोटो भी बनी थी।

(मेटाडोरः स्पेन में बुल फाइटिंग के समय पर, बुल से लड़ने वाले व्यक्ति को मेटाडोर कहा जाता है)

मेटाडोर की मूर्ति के हाथ इस प्रकार हवा में थे, जैसे कि उसने कोई कपड़ा पकड़ रखा हो, पर उसके हाथ में कुछ भी नहीं था।

मैदान के बीचोबीच में 2 गोल रिंग बने थे। पहला रिंग काफी विशाल था और दूसरा रिंग उसी के सामने बना था, परंतु वह आकार में काफी छोटा था।

बड़े रिंग के बीच में एक नृत्यांगना की मूर्ति बनी थी, जिसने भारतीय वेशभूषा के कपड़े पहन रखे थे। नृत्यांगना का एक पैर हवा में था और दूसरा पैर एक बड़ी सी कील पर टिका था। कील नीचे जमीन में धंसी हुई थी। कील पर पेंच की तरह से चूड़ियां बनीं थीं।

नृत्यांगना के सिर पर एक विशाल मटका रखा था। उस मटके का आकार इतना बड़ा था कि उसे देखकर ऐसा महसूस हो रहा था, जैसे नृत्यांगना ने कोई पहाड़ उठा रखा हो?

मैदान के दूसरे किनारे पर एक तीसरा रिंग बना था, जिसके बीच एक कुम्हार बैठा था। कुम्हार के सिर पर एक लाल रंग की पगड़ी बंधी थी। कुम्हार के सामने एक मिट्टी के बर्तन बनाने वाला चाक भी मौजूद था, पर वह इस समय रुका हुआ था।

कुम्हार से कुछ दूरी पर एक ओर, नटराज की 6 फुट ऊंची मूर्ति भी लगी थी। इसके अलावा मैदान में कुछ नहीं था?

जेनिथ ने पहले मैदान में घूम-घूम कर सारी चीजों को ध्यान से देख लिया और फिर सोचना शुरु कर दिया- "इस मैदान में तो काफी चीजें मौजूद हैं और सभी चीजें एक-दूसरे से बिल्कुल भिन्न हैं। जैसे बुल फाइटिंग स्पेन का है, पर नृत्यांगना भारतीय लग रही है। कुम्हार का नृत्यांगना और मेटाडोर दोनों से ही कोई भी मैच नहीं है। बस नृत्यांगना और नटराज का आपस में लिंक दिख रहा है। ... ऊपर से यह नृत्यांगना के सिर पर रखा बड़ा सा मटका .... पता नहीं उस मटके में क्या है? .... पर वह मटका

इतनी ऊंचाई पर है कि उस तक पहुंचना भी मुश्किल है। अब अगर राशियों की बात करें तो, मटका कुंभ राशि का और बैल, वृष राशि का प्रतीक है ... इन दोनों में भी कोई समानता नहीं है ... तो फिर मैं इस द्वार को शुरु कहां से करुं? .... चलो पहले चलकर नृत्यांगना को ही देखती हूं क्योंकि नृत्य ही मेरी विशेषता भी है।"

यह सोच जेनिथ, उस नृत्यांगना के पास जाकर खड़ी हो गई और उसे ध्यान से देखने लगी। अब जेनिथ की नजर नृत्यांगना के पैरों की ओर गई।

"अरे, इस नृत्यांगना के पैरों में घुंघरु तो है ही नहीं? और बिना घुंघरु के भारतीय नृत्यांगना कभी भी नृत्य नहीं करती है? इसका मतलब कि इसके पैरों में घुंघरु आवश्यक है। परंतु यहां पर घुंघरु कहां से मिल सकते हैं?"

तभी जेनिथ की नजर बैल के गले में बंधे पट्टे पर गई, जिसमें असंख्य घुंघरु बंधे थे।

जेनिथ ने आगे बढ़कर बैल के गले से पट्टा खोल लिया और उसमें लगी घंटी को निकालकर वहीं रख दिया। अब जेनिथ ने उस पट्टे से दोनों पैरों के लिये अलग-अलग घुंघरु तैयार कर लिये।

यह करने के बाद जेनिथ ने उन दोनों घुंघरुओं को नृत्यांगना के पैरों में बांध दिया।

जैसे ही नृत्यांगना के पैरों में घुंघरु बंधे, जमीन के अंदर से कहीं से तेज 'कट्-कट्' की आवाज सुनाई दी, ऐसा लगा जैसे जमीन के अंदर मौजूद कोई मशीन शुरु हो गई हो?

जेनिथ यह विचित्र आवाज सुन नृत्यांगना से थोड़ा दूर हो गई, परंतु नृत्यांगना के हाव-भाव में कोई परिवर्तन नहीं आया?

कुछ सोचने के बाद जेनिथ ने नृत्यांगना को हिला-डुला कर भी देखा, परंतु वह नृत्यांगना पूरी तरह से स्थिर थी।

जेनिथ की निगाहें फिर से अपने आसपास घूमीं, अब उसकी नजरें नृत्यांगना के सामने बने उस दूसरे रिंग की ओर गई, जो कि आकार में इस बड़े रिंग से काफी छोटा था।

अब जेनिथ ने उस बड़े रिंग को देखा, जिसका आकार नृत्यांगना के सिर पर रखे मटके के बराबर था।

जेनिथ अब जाकर उस छोटे से रिंग में खड़ी हो गई। जेनिथ का चेहरा अब नृत्यांगना के ठीक सामने था।

जेनिथ ने कुछ सोचकर अपने शरीर के हाव-भाव को नृत्यांगना के समान कर लिया। जैसे ही जेनिथ के भाव बिल्कुल नृत्यांगना के समान हुए, जेनिथ के गोले से एक लाल रंग की किरण निकलकर, नृत्यांगना के ऊपर जाकर गिरी।

इसी के साथ नृत्यांगना सजीव हो गई। अब वह ध्यान से जेनिथ को देख रही थी, परंतु उसकी आँखों में कोई भाव नहीं थे?

जेनिथ ने घबराकर अपना हवा में उठा पैर नीचे कर लिया। जेनिथ के ऐसा करते ही नृत्यांगना ने भी अपना पैर नीचे कर लिया।

“यह क्या? ये नृत्यांगना तो अब मेरी तरह से अपने शरीर को घुमा रही है। लगता है मेरे गोले से निकली लाल रंग की किरणों ने इस नृत्यांगना के शरीर को मेरे शरीर से जोड़ दिया है। अब जो मैं करुंगी, वही यह भी करेगी।”

जेनिथ ने अपने सोच की पुष्टि करने के लिये, इस बार अपने दाहिने हाथ को हवा में लहराया। जेनिथ के ऐसा करते ही, नृत्यांगना ने भी जेनिथ की पूर्णतया नकल करते हुए, ठीक वैसा ही किया जैसा कि जेनिथ कर रही थी।

अब जेनिथ ने एक गहरी साँस भरी और ध्यान से फिर से नृत्यांगना को देखने लगी।

कुछ ही देर में जेनिथ की नजर, उस चूड़ीदार कील की ओर गई, जो कि किसी पेंच की भांति जमीन में आधा घुसा था। अचानक नृत्यांगना जेनिथ को किसी लट्टू की भांति महसूस हुई, जो कि अपनी कील पर खड़ी थी।

यह अहसास जेनिथ के चेहरे पर एक मुस्कुराहट ले आया। वह समझ गई कि यह तिलिस्म का द्वार पूर्ण रुप से उसकी क्षमताओं के हिसाब से ही बनाया गया है।

अब जेनिथ ने अपने दाहिने पैर को जमीन पर रखा और अपने बांये पैर को नटराज की मूर्ति की भांति हवा में उठा लिया।

अब जेनिथ अपनी प्रतिभा के हिसाब से एक पैर पर क्लाकवाइज तेजी से नाचने लगी। यह एक डांस का प्रकार था, जिसे 'फुएट' के नाम से जाना जाता है। इस डांस में एक पैर पर लट्टू की भांति नाचा जाता है।

नृत्यांगना ने भी अब जेनिथ की ही भांति गोल-गोल नाचना शुरु कर दिया। परंतु हर एक गोले के पूर्ण होने के बाद नृत्यांगना जमीन के अंदर समाती जा रही थी।

जेनिथ की तरकीब काम कर रही थी।

कुछ ही देर में नृत्यांगना का पूरा शरीर जमीन में समा गया और उसके सिर पर रखा, वह विशाल मटका जमीन पर आ गया।

मटके ने बड़े रिंग को पूरी तरह से कवर कर लिया। ऐसा लग रहा था कि बड़े रिंग का आकार, मटकी के हिसाब से ही बनाया गया था।

मटका अब जेनिथ से सिर्फ 1 फुट की ही दूरी पर था। यह देख जेनिथ ने मटके को हाथों से छूकर के देखा। लेकिन उस मटके में कुछ भी अलग नहीं था।

मटका इतना बड़ा और चिकना था कि अभी भी मटके के ऊपर चढ़ पाना असंभव था।

"अवश्य ही इस मटके में कुछ ना कुछ ऐसा है? जिसका इस द्वार से सम्बन्ध है, इतना विशाल मटका कैश्वर ने यूं ही तो यहां नहीं रखा होगा? ... पर इस मटके पर चढ़ूं कैसे? ... और बिना चढ़े इसमें झांक पाना संभव नहीं है।"

अब जेनिथ की निगाहें बैल पर जाकर टिक गईं।

"अगर यह बैल सजीव होता, तो इससे मटका फुड़वाया जा सकता था। .... कहीं ऐसा तो नहीं कि किसी प्रकार से वह बैल भी सजीव हो सकता हो?"

अब जेनिथ की निगाह उस मेटाडोर पर थी।

"यह मेटाडोर तो यहां पर है, पर इसके हाथ में रहने वाला पारंपरिक लाल कपड़ा इसके हाथ में नहीं है। उसी लाल कपड़े को दिखाकर, तो यह बैल को थकाता है। इसका मतलब वह कपड़ा भी यहीं कहीं होना चाहिये?"

तभी जेनिथ की निगाह कुम्हार के सिर पर बंधी पगड़ी की ओर गई, जो कि लाल रंग की ही थी। यह देख जेनिथ कुम्हार के पास पहुंच गई और उसने कुम्हार की पगड़ी को उसके सिर से उतार लिया।

जेनिथ ने पगड़ी को खोला। अब वह एक बड़ा सा लाल रंग का कपड़ा दिखने लगा था। जेनिथ ने यह कपड़ा मेटाडोर के हाथ में पकड़ा दिया।

मेटाडोर के हाथ में कपड़े के आते ही, मेटाडोर सजीव हो गया। सजीव होते ही मेटाडोर ने अपने हाथ में पकड़े लाल कपड़े को हवा में लहराया।

अब बैल भी सजीव हो गया। बैल की नजर जैसे ही मेटाडोर पर पड़ी, वह गुस्से से फुंफकारता हुआ मेटाडोर की ओर दौड़ पड़ा।

मेटाडोर ने बैल के पास आते ही पारंपरिक अंदाज में कपड़े को हवा में लहराया। जैसे ही बैल कपड़े के पास आया, मेटाडोर ने कपड़े को बैल के आगे से हटा लिया।

बैल अपनी ही झोंक में आगे निकल गया।

अब मेटाडोर लगातार उस मैदान में बैल से खेल रहा था। जेनिथ इस ताक में थी, कि शायद कुछ देर में वह बैल उस पर भी ध्यान देगा।

पर जब 10 मिनट के बाद भी बैल ने जेनिथ की ओर नहीं देखा तो जेनिथ सोच में पड़ गई कि कैसे उस बैल से यह मटका फुड़वाए?

अब जेनिथ की नजर उस छोटे से रिंग पर गई, जिसके अंदर खड़े होकर उसने नृत्यांगना से मटका नीचे उतरवाया था। वह रिंग अभी भी लाल रंग से चमक रहा था।

कुछ देर सोचने के बाद जेनिथ, उस छोटे से रिंग में जाकर खड़ी हो गई।

जेनिथ जैसे ही रिंग के अंदर पहुंची, बैल मेटाडोर को छोड़ अब उसे घूरने लगा। अब बैल ने एक तेज फुंफकार मारी और जेनिथ की ओर दौड़ पड़ा।

जेनिथ अब पूरी तरह से सावधान हो गई। जैसे ही बैल जेनिथ से 2 फुट की दूरी पर पहुंचा, जेनिथ ने अपने बांई ओर तेजी से छलांग लगा दी।

'धड़ाक' की एक तेज आवाज के साथ बैल ने मटके पर टक्कर मारी। टक्कर इतनी तेज थी कि मटका तेज आवाज के साथ चूर-चूर हो गया।

इस तेज टक्कर से एक पल के लिये जेनिथ की आँख बंद हो गई। जब जेनिथ की आँख खुली, तो वहां पर ना तो कोई बैल था और ना ही कोई मटका?

जेनिथ को लगा कि दोनों राशियां खत्म हो गईं, यह सोच उसने कोई दरवाजा ढूंढने के लिये अपने चारो ओर नजरें दौड़ाई, पर उसे कहीं भी कोई द्वार नहीं दिखाई दिया?

तभी जेनिथ की नजर मेटाडोर की ओर गई, मेटाडोर पुनः से मूर्ति बन गया था।

यह देख जेनिथ को समझ में आ गया कि यह द्वार अभी खत्म नहीं हुआ है। अब जेनिथ समझ गई थी कि इस मैदान में रखी हर छोटी से छोटी चीज बेकार में ही नहीं रखी गई है, उसका कुछ ना कुछ मतलब तो है?

तभी जेनिथ की नजर फूटे हुए मटके वाले स्थान पर पड़ी। जेनिथ को उस स्थान पर एक 2 फुट की लकड़ी पड़ी हुई दिखाई दी।

"अरे! इतने बड़े मटके में सिर्फ इतनी छोटी सी लकड़ी थी।" जेनिथ उस लकड़ी को देख मुस्कुरा दी, पर फिर भी उसने उस लकड़ी को उठा लिया- "क्या पता इसका भी कहीं कोई काम हो इस द्वार में?"

अब जेनिथ की नजर वहां बाकी बची चीजों पर गई।

"पहले नृत्यांगना, फिर मेटाडोर और फिर बैल की मूर्तियां जीवित हुई थीं। इसका मतलब है कि अब कुम्हार और नटराज की मूर्तियां भी जीवित

हो सकती हैं।”

यह सोच जेनिथ अब कुम्हार की मूर्ति के पास जाकर खड़ी हो गई और कुम्हार की मूर्ति को ध्यान से देखने लगी।

“कुम्हार के हाथ इस समय उसके सामने मौजूद चाक पर हैं, पर चाक घूम क्यों नहीं रहा? क्योंकि बिना चाक के घूमे, कुम्हार मिट्टी के बर्तन तो बना ही नहीं पायेगा .... हां याद आया, कुम्हार चाक को घुमाने के लिये एक लकड़ी का प्रयोग करता है ... कहीं मटके से निकली ये लकड़ी कुम्हार की ही तो नहीं?”

यह सोच जेनिथ ने अपने हाथ में पकड़ी लकड़ी को कुम्हार के हाथ में पकड़ा दिया। कुम्हार को लकड़ी पकड़ाते, फिर से जमीन के अंदर कहीं ‘खटाक’ की आवाज हुई? पर कुम्हार सजीव नही हुआ।

“लगता है कि अभी भी कुम्हार में कोई कमी है? जिसकी वजह से वह सजीव नहीं हुआ है। ... पर क्या?”

अब जेनिथ की नजर नटराज की मूर्ति की ओर गई। एक वह मूर्ति ही थी जिसका प्रयोग अभी नहीं हुआ था, इसलिये जेनिथ ने नटराज की मूर्ति को हर ओर हिला कर देख लिया, पर कहीं से कुछ नहीं हुआ?

आखिरकार जेनिथ थक-हार कर एक जगह बैठ गई और फिर से पूरी घटनाओं के बारे में शुरु से सोचने लगी। सोचते-सोचते जेनिथ की नजर कुम्हार के सिर पर पड़ी। तभी उसे कुम्हार की सिर पर रखी पगड़ी का ध्यान आया।

अब जेनिथ भागकर मेटाडोर के पास पहुंची और उसके हाथ से वह लाल कपड़ा ले लिया। पर जैसे ही जेनिथ ने मेटाडोर के हाथ से लाल कपड़ा लिया, ‘खट्-खट्’ की आवाज करते, उसके और कुम्हार के बीच, जमीन पर 1 इंच ऊंचे, लोहे के काँटे निकल आये।

यानि की अब कुम्हार के पास चलकर जाना बहुत ही मुश्किल था क्योंकि वह काँटे काफी धारदार दिख रहे थे।

2 काँटों के बीच मात्र 3 इंच की जगह थी, जिसके बीच से होकर कुम्हार तक नहीं जाया जा सकता था।

अब ये नई मुसीबत थी। जेनिथ कुछ देर तक सोचती रही, फिर उसने अपने हाथ में पकड़े लाल कपड़े को अपने गले में लपेट लिया और उछलकर अपने पंजों पर खड़ी हो गई।

और किसी के लिये शायद ये करना बहुत ही मुश्किल होता, पर जेनिथ को फ्रांस का मशहूर 'बैले' डांस आता था, जिसमें इसी प्रकार अपने अंगूठे पर खड़े होकर डांसर डांस करती थीं।

जेनिथ इस डांस के प्रकार को अच्छी तरह से जानती थी, इसलिये उसे अब कुम्हार के पास पहुंचने में कोई मुश्किल नहीं आनी थी।

जेनिथ इसी प्रकार पंजों के बल आगे बढ़ते हुए, कुछ ही देर में कुम्हार के पास पहुंच गई। उसने अपने गले में फंसा लाल कपड़ा निकाला और उसकी पगड़ी बनाकर, कुम्हार के सिर पर पहना दिया।

इसी के साथ खटाक की आवाज के साथ कुम्हार जीवित हो गया और चाक को लकड़ी से घुमाकर कुछ बनाने लगा।

जेनिथ की निगाहें अब पूरी तरह से कुम्हार के चाक पर थी।

कुम्हार ने पहले एक दिया बनाया और फिर एक छोटी सी मटकी बनाई। दोनों चीजें बनाकर उसने अपने बगल में रखा और इसी के साथ, वह कुम्हार अपने चाक सहित कहीं गायब हो गया? कुम्हार के साथ ही जमीन पर निकले काँटे भी गायब हो गये। पर कुम्हार की लकड़ी अभी भी वहीं पड़ी थी।

अब जेनिथ की निगाह, कुम्हार के द्वारा बनाये गये मटके और दिये पर थी। आश्चर्य की बात यह थी कि दोनों ही चीजें कुम्हार ने कच्ची मिट्टी से बनाई थी, पर अब वह दोनों चीजें अपने आप ही पककर लाल हो गई थीं।

जेनिथ ने डरते-डरते दोनों ही चीजों को उठा लिया। दिया तो खाली था, पर मटकी पूरी तरह से साफ पानी से भरी थी।

अब जेनिथ के सामने नटराज की मूर्ति, एक दिया, एक पानी से भरी मटकी, बैल की घंटी बची थी, जो यह समझाने के लिये काफी थी, कि आखिरी कार्य अब नटराज की पूजा करना ही बचा है।

पर सवाल अभी भी था, दिया जलाने के लिये रुई की बत्ती, देशी घी और माचिस कहां से आयेगी?

जेनिथ ने एक बार फिर पूरे तिलिस्म पर नजर मारी, उसकी नजरें अब मेटाडोर पर थीं।

"हर वस्तु अपना काम करके गायब हो रही है, परंतु मेटाडोर अभी भी क्यों खड़ा है? इसका मतलब मेटाडोर का काम अभी खत्म नहीं हुआ है। हो ना हो मेटाडोर के वस्त्रों में ही कहीं ना कहीं पूजा की बाकी चीजें छिपी हुई होंगी?"

यह सोच जेनिथ मेटाडोर के पास पहुंच गई। कुछ ही देर में जेनिथ ने मेटाडोर के पूरे वस्त्रों को तलाश मारा, परंतु उसके पास से कुछ भी नहीं मिला?

अब जेनिथ मायूस होकर, एक स्थान पर बैठ गई।

"मैंने यहां सब जगह पर देख लिया, परंतु पूजा का सामग्री यहां पर कहीं नहीं है? अब तो कोई जादू ही मुझे इस जगह से निकाल सकता है? ...... जादू!"

'जादू' जेनिथ के दिमाग में यह शब्द दोबारा से गूंजा। अब उसकी निगाहें मेटाडोर के सिर पर रखे हैट पर थीं, जिस पर 'MAGIC' लिखा था और वह टोपी भी किसी जादूगर के हैट की ही तरह थी।

अब जेनिथ ने मेटाडोर के सिर से उस हैट को उतार लिया। हैट को उतारते ही मेटाडोर की मूर्ति भी गायब हो गई।

जेनिथ ने अब उत्साहित होकर हैट में हाथ डाला, पर उसमें भी कुछ भी नहीं था? अब जेनिथ परेशान हो गई।

तभी जेनिथ को अपने बचपन का एक जादूगर का स्टेज शो याद आ गया, जिसे वह अपने पापा के साथ देखने गई थी। उस शो में एक जादूगर ने जेनिथ के सामने, अपने हैट पर लकड़ी घुमाते हुए 'गिली गिली छू' कहा था। उसके ऐसा करते ही उसकी टोपी से एक खरगोश निकला था।

यह सोच जेनिथ भागकर कुम्हार की लकड़ी को उठा लाई। वैसे तो उसे विश्वास नहीं था कि लकड़ी घुमाने पर कुछ होगा, परंतु फिर भी जेनिथ

ने 'गिली गिली छू' बोलते हुए लकड़ी को हैट के ऊपर घुमा दिया और हैट से लाइटर मांगा।

तुरंत हैट से एक लाइटर निकलकर जेनिथ के हाथ में आ गया। अब जेनिथ की खुशी का ठिकाना नहीं रहा। उसने एक-एक कर पूजा का सभी समान उस हैट से मांग लिया।

जैसे ही जेनिथ ने आखिरी चीज मांगी, हैट और छड़ी गायब हो गये।

चूंकि जेनिथ ने भारतीय नृत्य भी सीख रखा था, इसलिये उसे नटराज की पूजा करना आता था।

अब पहले जेनिथ ने मटकी के पानी से नटराज की मूर्ति को जल चढ़ाया और फिर घंटी बजाते हुए, दीपक को जलाकर उनके चरणों के पास रख दिया।

इसी प्रकार जेनिथ अलग-अलग विधियों से नटराज की पूजा करने लगी।

जेनिथ के पूजा पूर्ण करते ही नटराज की मूर्ति के हाथों से एक तेज रोशनी निकली और जेनिथ पर आकर गिरी। उस तेज रोशनी की वजह से जेनिथ की आंखें एक पल के लिए बंद हो गईं।

जेनिथ ने जब अपनी आँखें खोली, तो उसे अपने सामने एक द्वार दिखाई दिया, जिस पर लिखा थाा- "तिलिस्मा 7.1"

तभी जेनिथ की निगाह, सामने बैठे तौफीक पर गई। तौफीक को वहां बैठे देख वह स्वयं को नियंत्रित नहीं कर पाई और भागकर उसके गले से लग गई।

"भगवान का शुक्र है कि तुम अभी जिंदा हो।" जेनिथ ने खुश होते हुए कहा- "जब से मैंने तुम्हें मरते देखा था, मैं स्वयं को ही तुम्हारी मौत का दोषी मान रही थी।"

तौफीक स्वयं भी जेनिथ को देखकर बहुत खुश हुआ, पर हर बार की तरह उसने इस बार भी खुलकर अपनी भावनाएं व्यक्त नहीं कीं।

कुछ देर बाद जब जेनिथ, तौफीक से अलग हुई, तो तौफीक ने उसे पिछली बीती हुई पूरी घटना के बारे में बता दिया।

“हो ना हो, तुम्हारी जान क्रिस्टी ने ही बचाई है? उसी ने इंद्राक्ष से तुम्हारी नई जिंदगी के लिए वरदान मांगा होगा।” यह कहकर जेनिथ ने भी अपनी बीती घटनाओं को तौफीक को सुना दिया।

चाहे जो हो पर दोनों एक दूसरे से मिलकर काफी खुश लग रहे थे।

अब दोनों वहां बैठकर, बाकी लोगों के आने का इंतजार करने लगा।

◆ ◆ ◆

4 अप्सराएं

26.01.2002, शनिवार, सीनोर महल, अराका

रोजर इस समय सीनोर महल के एक कमरे में बैठा था। रोजर को सीनोर महल मे रहते हुए आज 11 दिन बीत गये थे।

रोजर को समझ में नहीं आ रहा था कि वह क्या करे? कभी-कभी उसे अपनी जिंदगी बहुत उबाऊ लगती थी, क्योंकि सुर्वया, मेलाइट व सनूरा किसी पक्की सहेलियों की तरह से आपस में ही हंसती रहती थीं। वह रोजर को ज्यादातर अपने पास नहीं बैठाती थीं।

पर जो भी हो रोजर सीनोर राज्य में काफी खुश दिख रहा था।

रोजर का बाहर की दुनिया में वैसे भी कोई नहीं था? इसलिये वह अब इस अराका द्वीप से जाना भी नहीं चाहता था। वह जब भी मेलाइट को अपने सामने देखता उसकी सारी थकान एक मिनट में ही समाप्त हो जाती थी। उसे ऐसा महसूस होता कि जैसे उसे सबकुछ मिल गया हो।

मेलाइट, रोजर को बहुत अच्छी लगती थी। अब रोजर को मेलाइट का उसे छेड़ना भी बहुत भाने लगा था।

वह जान गया था कि मेलाइट भी उसे पसंद करती है, पर वह मेलाइट के सामने आते ही स्वयं को व्यक्त नहीं कर पाता था।

रोजर को मेलाइट के बारे में सोचते हुए ना जाने कितना समय बीत गया? कि तभी एक बार फिर रोजर की नाभि से निकलने वाले प्रकाश ने रोजर का ध्यान भंग किया।

“यह मेरी नाभि से प्रकाश क्यों निकलता है?” रोजर ने मन ही मन सोचा- “हो ना हो मेरे इस प्रकाश के पीछे कहीं ना कहीं मेलाइट का कोई हाथ अवश्य है? ... क्योंकि मैंने ध्यान दिया है कि मैं जैसे ही मेलाइट को स्पर्श करता हूं, मेरी नाभि से निकलने वाला यह प्रकाश स्वतः ही बंद हो जाता है। .... और युद्ध के समय में भी जब मैंने सभी से अपने लिये कोई हथियार मांगा था तो मेलाइट ने मेरी शर्ट फाड़कर कहा था कि यही है मेरा हथियार .... तो क्या मेरी नाभि में किसी प्रकार की शक्ति समा गई है? जो

कि एक हथियार है? हां ... याद आया .... युद्ध के बीच में जब नीडो ने एक कृत्रिम सूर्य का निर्माण कर वातावरण में गर्मी फैला दी थी, तो फिर सभी को तो तेज गर्मी का अहसास हो रहा था, पर जाने क्यों मुझे गर्मी प्रतीत नहीं हो रही थी? ... और जब मैं उस कृत्रिम सूर्य के पास पहुंचा, तो वह कृत्रिम सूर्य मेरी नाभि में समाकर कहीं गायब हो गया? इतनी तीव्र गर्मी उत्पन्न करने वाला वह कृत्रिम सूर्य मुझे हानि क्यों नहीं पहुंचा रहा था? .... कुछ ना कुछ रहस्य तो अवश्य ही है इसमें .... मुझे इसका पता लगाना होगा .... जिससे कि अगले किसी युद्ध के समय मैं भी अपनी शक्तियों का सही से प्रयोग कर सकूं। ... पर कैसे? ... कैसे मैं इस रहस्य के बारे में पता लगा सकता हूं?"

यह सोचकर रोजर ने अपने चारो ओर देखा, इस समय उसके कमरे के आसपास कोई नहीं था, यह बात और थी कि उसे अपने बगल वाले कमरे से सुर्वया, मेलाइट और सनूरा के जोर-जोर से हंसने की आवाजें आ रहीं थीं।

कुछ सोचकर रोजर ने आगे बढ़कर अपने कमरे के दरवाजे को अंदर से बंद कर लिया और स्वयं अपनी शर्ट उतारकर कमरे में उपस्थित एक आदमकद शीशे के पास जाकर खड़ा हो गया।

रोजर की नाभि से अभी भी सुनहरी रोशनी निकल रही थी। रोजर उस सुनहरी रोशनी को छूकर देखा, पर उसे सुनहरी रोशनी का रहस्य समझ में नहीं आया।

"लगता है मुझे इस सुनहरी रोशनी का रहस्य मेलाइट से ही पूछना पड़ेगा। ... पर कहीं मेलाइट मेरी बात से गुस्सा हो गई तो? आखिर है तो वह सीरीनिया के जंगलों की एक हिरनी ही .... और और उसने मेरी शिकायत देवी आर्टेमिस से कर दी तो? पर देवी आर्टेमिस तो इस समय अपने घर में होंगी ... वह यहां अराका में मेरा क्या कर पाएंगी?"

रोजर अपने विचारों में खोया हुआ, अपनी नाभि से निकलती रोशनी को बार-बार स्पर्श कर रहा था, तभी रोजर की नाभि से निकली सुनहरी रोशनी ने हवा में एक सुनहरे रंग का द्वार बना दिया।

सुनहरे द्वार के बनते ही रोजर की नाभि से सुनहरी रोशनी निकलना बंद हो गई।

अब रोजर आश्चर्य से अपने सामने बने उस सुनहरे द्वार की ओर देखने लगा।

“अब यह क्या बला है?” रोजर ने उस द्वार से थोड़ा दूर होते हुए कहा- “यह द्वार तो मेरी नाभि से निकली सुनहरी रोशनी से ही बना है .... कहीं इस द्वार में किसी प्रकार का कोई खतरा तो नहीं छिपा है? ... मुझे इससे दूर रहना चाहिये ... पर ... पर इससे दूर रहते हुए मैं इसके बारे में जान कैसे पाऊंगा?”

अब रोजर ने चारो ओर अपनी नजरें घुमाईं। तभी रोजर की निगाह उस तलवार पर जाकर पड़ी, जो वह आकृति के कमरे से लेकर आया था।

वह तलवार रोजर के बेड के पास वाली दीवार पर टंगी हुई थी।

कुछ देर सोचने के बाद रोजर ने उस साधारण सी दिख रही तलवार को उठाकर अपने हाथ में ले लिया और धीरे-धीरे हवा में बने उस सुनहरे द्वार की ओर बढ़ने लगा।

रोजर ने पहले डरते-डरते अपना एक पैर उस सुनहरे द्वार में डाला और फिर पूरा का पूरा उस द्वार में प्रवेश कर गया।

रोजर के उस द्वार में प्रवेश करते ही वह द्वार स्वतः ही बंद हो गया।

रोजर उस द्वार के पार पहुंच गया। अब रोजर ने स्वयं को एक घने जंगल में पाया।

“यह मैं जंगल में कैसे पहुंच गया? ... लगता है कि वह सुनहरा द्वार मुझे अराका के जंगलों में ले आया। .... पर ... पर अब मैं यहां से वापस कैसे जाऊंगा? ... कोई बात नहीं, कुछ देर तक ऐसे ही घूमता हूं। उधर मेलाइट और सुर्वया जैसे मुझे कमरे में नहीं पाएंगी, सुर्वया मुझे अपनी दिव्यदृष्टि से ढूंढ ही लेगी। इसलिये मुझे चिंता करना छोड़ जंगल का पूर्ण आनंद उठाना चाहिये।”

यह सोच रोजर ने अपने हाथ में पकड़ी तलवार को एक बार देखा और फिर आगे बढ़ने लगा, पर अपने शरीर पर नजर पड़ते ही रोजर ठिठककर अपनी जगह पर ही रुक गया।

“धत् तेरे की .... जल्दी-जल्दी में मैं अपनी शर्ट तो पहनना भूल ही गया। ... चलो कोई बात नहीं, वैसे भी मुझे इस जंगल में कौन देख ही रहा है?”

यह सोच रोजर जंगल में आगे की ओर बढ़ गया।

चारो ओर हवा में लहराते हुए पेड़ उस जंगल की भयावहता को और भी बढ़ा रहे थे। बीच-बीच में आती जंगली जानवरों की आवाज भी वातावरण में गूंज रही थी।

रोजर लगातार आगे बढ़ रहा था

तभी रोजर को समीप से ही किसी शेर की भयानक दहाड़ की आवाज आती हुई सुनाई दी।

शेर की दहाड़ से ही महसूस हो रहा था कि कोई शेर कहीं आसपास ही है?

शेर की दहाड़ सुनते ही रोजर तेजी से अपने चारो ओर देखने लगा।

“अरे बाप रे! यह तो किसी भयानक शेर की दहाड़ प्रतीत हो रही है। अब तो लगता है कि सुर्वया के ढूंढने के पहले ही कहीं मैं इस जंगल में मारा ना जाऊं? ... मुझे जल्दी से किसी पेड़ के ऊपर चढ़ना होगा।”

यह सोच रोजर ने तेजी से पास लगे एक ऊंचे से पेड़ की ओर दौड़ लगा दी।

उस पेड़ की शाख थोड़ी नीची थीं, इसीलिये रोजर ने उस पेड़ का चुनाव किया था।

पेड़ के पास पहुंचते ही रोजर ने अपने हाथ में पकड़ी तलवार को अपनी बेल्ट में फंसाया और अपने पैर में पहने जूते को वहीं पेड़ के नीचे उतारकर तेजी से पेड़ के ऊपर चढ़ने लगा।

कुछ ही देर में रोजर उस पेड़ की एक मोटी सी परंतु ऊंची सी शाख के पीछे छिप गया और उस दिशा में देखने लगा, जिधर से उसे उस शेर की दहाड़ की आवाज सुनाई दी थी।

कुछ ही देर में रोजर को उस दिशा से आता हुआ एक भयानक शेर दिखाई दिया, जो कि धीरे-धीरे शाहाना अंदाज में अपने चारो ओर देखता हुआ चल रहा था।

रोजर को उस शेर की चाल बहुत ही रहस्यमई प्रतीत हुई।

“कहीं यह लुफासा तो नहीं? जो कि पिछली बार की तरह शेर बनकर सीनोर के जंगलों में घूम रहा है।” रोजर के दिमाग में शेर को देखकर अनेकों विचार आने लगे।

तभी रोजर की आँखें आश्चर्य से चौड़ी हो गईं क्योंकि उसे उस भयानक शेर के पीछे आती हुई 4 खूबसूरत लड़कियां भी दिखाई दीं।

उन सभी लड़कियों की आयु 22 से 24 वर्ष के मध्य की लग रही थी। सभी लड़कियों ने एक समान सुनहरे रंग का लंबा सा गाउन पहन रखा था।

किसी सखियों की भांति वह सभी आपस में बात करती हुई आ रहीं थीं। वैसे तो रोजर को उनकी बातें सुनाई नहीं दे रहीं थीं, पर बीच-बीच में उनके हंसने की जोर की आवाजें वातावरण को खुशनुमा बना रहीं थीं।

उन्हें देख कर यह साफ महसूस हो रहा था कि वह भयानक शेर उन सभी लड़कियों का पालतू है, जिन्हें वह अपनी सुरक्षा के लिये साथ लेकर निकलीं हैं।

“अरे! इस भयानक जंगल में यह खूबसूरत लड़कियां कहां से आईं? सनूरा तो कह रही थी कि उसके राज्य के सभी लोग महल के पीछे जमीन के अंदर रहते हैं ... फिर यह लड़कियां? ... कहीं ऐसा तो नहीं कि लुफासा और सनूरा भी हमसे कुछ छिपा रहे हैं? ... मुझे अब छिपे रहकर इस रहस्य का पता लगाना ही होगा।” रोजर ने मन ही मन सोचा और शाख के पीछे थोड़ा और छिप गया, जिससे किसी की भी नजर उस पर ना पड़े?

वह सभी लड़कियां उसी पेड़ के नीचे से निकलीं, जिस पर रोजर छिपा हुआ था।

तभी एक लड़की ने अपनी नाक पर जोर डालते हुए कहा- “अरे! इस पेड़ से तो कस्तूरी की खुशबू आ रही है। लगता है कि कोई हिरन यहां कहीं आसपास छिपा हुआ है?”

उस लड़की की आवाज सुन बाकी की लड़कियों ने भी अपने नाक पर जोर डालना शुरु कर दिया।

उन लड़कियों को रुकता देख अब वह शेर भी उनके पास आ पहुंचा और वह भी अपनी नाक पर जोर देता हुआ उस पेड़ के ऊपर की ओर देखने लगा।

शेर को ऊपर देखते हुए पाकर रोजर की तो मानो जान ही सूख गई।

तभी उनमें से एक लड़की की निगाह पेड़ के नीचे रोजर के उतारे हुए जूतों पर पड़ी।

"अमारा, वो देखो इस पेड़ के नीचे किसी के जूते पड़े हुए हैं। लगता है कि वह कोई हिरन नहीं बल्कि कोई इंसान है, जो इस पेड़ के ऊपर कहीं छिपा हुआ है?" डेमी ने कहा।

"डेमी सही कह रही है ... यह तो किसी इंसान के जूते हैं और इन्हें देखकर लग रहा है कि वह कोई लड़का है, जिसकी ऊंचाई कम से कम 6 फुट के आसपास है। उसने शायद हिरन की कस्तूरी के जैसा कोई परफ्यूम लगा रखा है?" एरियाना ने कहा।

चूंकि सभी लड़कियां पेड़ के बिल्कुल नीचे खड़ी थीं, इसलिये अब रोजर को उनकी बातें बिल्कुल साफ सुनाई दे रहीं थीं।

वह सभी लड़कियां आपस में बात करने के लिये अंग्रेजी भाषा का प्रयोग कर रहीं थीं, इसलिये रोजर को उनकी सभी बातें अच्छी तरह से समझ में आ रहीं थीं।

उन लड़कियों को अंग्रेजी भाषा का प्रयोग करते देख रोजर स्वयं को थोड़ा बेहतर महसूस करने लगा।

तभी उन लड़कियों के पास खड़े शेर को, पेड़ पर छिप रहे रोजर की थोड़ी सी झलक मिल गई।

यह देख शेर ने अपना मुंह ऊपर की ओर करके एक जोरदार दहाड़ मारी। यह दहाड़ पहले वाली दहाड़ से भी तेज और भयानक थी।

शायद रोजर को शेर से ऐसी कोई आशा नहीं थी, इसलिये वह इतनी तेज दहाड़ को सुनकर डर गया और अपने शरीर का संतुलन खोकर पेड़

के नीचे आ गिरा।

चूंकि पेड़ के नीचे की मिट्टी कठोर नहीं थी इसलिये गिरने की वजह से रोजर को चोट नहीं आई, परंतु नीचे गिरते ही रोजर तुरंत उठकर खड़ा हो गया।

नीचे गिरते ही रोजर की नाभि से फिर से तेज प्रकाश निकलने लगा। उस तीव्र सुनहरे प्रकाश को देखकर वह सभी लड़कियां हैरानी से रोजर की ओर देखने लगीं।

“हे भगवान, इस से अच्छा तो मैं सामरा महल के अपने कमरे में था।” रोजर ने अभी यह सोचा ही था कि तभी रोजर की नाभि से फिर वही सुनहरी किरणे निकली और हवा में एक सुनहरा द्वार बन गया।

ठीक उसी समय उस शेर ने रोजर के ऊपर छलांग लगा दी, मगर शेर रोजर के सामने अचानक से बन आए उस सुनहरे द्वार से अंजान था, जो कि ठीक शेर और रोजर के बीच बना था।

शेर को उछलते देख रोजर की साँस उसके हलक में आ गई, पर तभी शेर उस बीच में बने सुनहरे द्वार के अंदर समा गया।

शेर के सुनहरे द्वार में समाते ही वह सुनहरा द्वार स्वतः ही बंद गया।

अब सभी लड़कियों के साथ रोजर भी आश्चर्य से इधर-उधर देख रहा था।

“हमारे शेर को तुमने कहां भेज दिया?” सीन्थिया ने रोजर को देखते हुए कहा।

“म ... म... मुझे भी नहीं पता कि आपका शेर कहां गया?” रोजर ने सफाई देते हुए कहा।

“पर वह गया तो तुम्हारे ही बनाए द्वार से है, फिर तुम्हें इसके पता क्यों नहीं?” अमारा ने अपनी बड़ी-बड़ी आँखों से रोजर को देखते हुए कहा।

उन लड़कियों के एकाएक प्रश्न पूछने से रोजर थोड़ा घबरा सा गया।

“म ... म ... मुझे भी कुछ समझ नहीं आ रहा? ... पर क्या आप लोग बता सकती हैं कि आप लोग कौन हो? और यहां सीनोर राज्य के जंगल में उस शेर के साथ क्या कर रहीं थीं?” रोजर ने उन लड़कियों से ही सवाल पूछ लिया।

रोजर की बात सुन उन सभी ने पहले रोजर को ध्यान से देखा और फिर एक दूसरे को देख मुस्कुराने लगीं।

उनके इस प्रकार के रहस्यमई व्यवहार से रोजर फिर बोल उठा- “क्या आप लुफासा, सनूरा, सुर्वया और मेलाइट को जानती हैं?”

रोजर की बात सुन अमारा ने अपनी आँखों ही आँखों से सभी लड़कियों को कोई इशारा किया और फिर रोजर की ओर घूम कर बोली- “मेरा नाम अमारा है और यह तीनों मेरी बहनें एरियाना, सिंथिया और डेमी हैं। .... हां, हम मेलाइट को जानते हैं .... क्योंकि हम चारो स्वच्छ पानी में रहने वाली अप्सराएं हैं और .... और हम चारो मेलाइट की सगी बहनें हैं। मेलाइट हम सबमें सबसे छोटी है।”

“क्याऽऽऽऽऽ?” रोजर के लिये यह शब्द किसी बम के धमाके से कम नहीं थे- “पर ... पर तुम चारो सीनोर राज्य के जंगल में क्या कर रही हो?”

“यह सीनोर राज्य का जंगल नहीं बल्कि सीरीनिया के जंगल हैं। ... हम तो हमेशा से यहीं रहते आये हैं ... परंतु तुम यहां पर कैसे पहुंचे, यह हमें नहीं पता?” इस बार एरियाना ने कहा।

“सीरीनिया के जंगल?” रोजर आश्चर्य से चारो ओर देखते हुए सोचने लगा- “पर मैं तो समुद्र के बीच में मौजूद अराका द्वीप पर था। मैं यहां कैसे आ गया? ..... एक मिनट .... मैं तो उस सुनहरे द्वार से होकर यहां पर आया था, पर वह सुनहरा द्वार तो मेरी नाभि से निकली रोशनी से बना था। .... इसका मतलब मेरी नाभि से निकली रोशनी उस सुनहरे द्वार के द्वारा मुझे एक स्थान से दूसरे स्थान के बीच ले जाती है। .... पर ... पर उसे कैसे पता चला कि मुझे यहां पर आना है? ... एक मिनट ... उस द्वार के उत्पन्न होने के ठीक पहले मैं सीरीनिया के जंगलों के बारे में ही सोच रहा था और ठीक उसी समय मैंने अपनी नाभि को स्पर्श किया था ... तो इसका मतलब मैं जिस जगह के बारे में सोचते हुए अपनी नाभि को स्पर्श करुंगा, वह सुनहरा द्वार उस जगह पर जाकर खुलेगा।”

“आप क्या सोचने लगे?” एरियाना ने भोलेपन से रोजर से पूछा- “मेरी बहन मेलाइट ठीक तो है ना? और आप क्या यहां पर हमसे मिलने आए हैं?”

“मैं यहां पर मेलाइट की दी हुई इस शक्ति के बारे में जानने आया हूं।” अब रोजर को कुछ-कुछ समझ में आने लगा था, इसलिये उसने अपनी घबराहट छोड़ते हुए एरियाना से कहा।

“वो सब तो ठीक है, पर मुझे ये नहीं समझ आ रहा कि उसने तुम्हें क्यों चुना? ऐसी क्या खास बात है तुममें?” डेमी के शब्दों में मेलाइट के लिये थोड़ी सी जलन साफ महसूस हो रही थी।

डेमी की बात सुन अमारा रोजर को चारो ओर से घूमकर देखने लगी।

चूंकि इस समय रोजर बिना शर्ट का था, इसलिये वह इन लड़कियों से थोड़ा शर्माया हुआ नजर आ रहा था।

“ठीक ही तो है ... क्या बुराई है इसमें?” अमारा ने अपनी आँखें मटकाते हुए कहा।

“ये आप लोग कैसी बातें कर रहीं हैं? मुझे कुछ समझ में नहीं आ रहा?” रोजर ने शंकित निगाहों से उन चारो को देखते हुए पूछा।

“अब मेलाइट ने तुम्हें कस्तूरी शक्ति यूं ही तो नहीं दी है। कुछ तो जरुर पसंद आया होगा उसे तुममें? .... तभी तो वह तुमसे शादी करने के लिये तैयार हुई होगी।” सीन्थिया ने कहा।

“शादी!” एक बार फिर रोजर मन ही मन चौंक गया, पर उसने अपने भावों को उन सभी पर व्यक्त नहीं किया।

“हां शादी करने के लिये ही तो उसने हमारे समान ‘कौमार्य व्रत’ का प्रण नहीं लिया था। तभी देवी आर्टेमिस ने उसे अपने महल से दूर सीरीनिया के जंगल में एक सुंदर महल ‘निम्फिया’ बनाकर दिया था और उसकी रक्षा में ‘लियो’ नामक उस शेर को रखा था, जिसे तुमने अपने द्वार से कहीं भेज दिया?” अमारा ने रोजर की आँखों में झांकते हुए कहा।

“क्या आप लोग मुझे मेलाइट के महल निम्फिया तक ले चल सकती हो?” रोजर ने बारी-बारी से उन चारो को देखते हुए कहा।

रोजर की बात सुन चारो ने फिर से एक-दूसरे को देखा और फिर अमारा बोल उठी- "अगर हम समय पर देवी आर्टेमिस के पास नहीं पहुंचे तो वह परेशान होने लगेंगी, इसलिये हमें वापस महल में जाना ही होगा, परंतु मैं तुम्हें वहां तक पहुंचने का रास्ता बता सकती हूं। आगे का सफर तुम्हें अकेले ही तय करना होगा।"

अमारा की बात सुन रोजर को अपनी कस्तूरी शक्ति याद आ गई।

"कोई बात नहीं मैं वहां अकेले ही चला जाऊंगा ... और हां आप लोगों को मुझे रास्ता बताने की जरूरत नहीं है, मैं स्वयं ही वहां चला जाऊंगा। पर आप लोगों से मिलकर बहुत अच्छा लगा। आशा करता हूं कि भविष्य में फिर कभी अवश्य मिलेंगें?" यह कहकर रोजर जैसे ही पलटा, अमारा ने उसे पीछे से टोक दिया- "एक मिनट रुकिये .... मुझे आपका नाम जानना है।"

अमारा के शब्द सुन रोजर पीछे पलटते हुए बोला- "मेरा नाम रोजर है और मैं मेलाइट को बहुत ज्यादा प्यार करता हूं ... मैं मेलाइट का अपने मरते दम तक ध्यान रखूंगा, ऐसा मेरा वादा है आप लोगों से।"

रोजर के शब्द सुन अमारा थोड़ी भावुक नजर आने लगी। अब वह धीरे-धीरे चलती हुई रोजर के पास आई और उसने अपने बालों में लगा एक सुनहरे रंग का हेयर क्लिप निकालकर रोजर के हाथों में रख दिया।

वह हेयर क्लिप सोने से निर्मित था और उस पर छोटी-छोटी 5 हिरनियों के सिर बने थे। जिनकी सीघें उस हेयर क्लिप से बाहर निकली हुई नजर आ रहीं थीं।

"यह हेयर क्लिप मुझे मेरे पिता ने दिया था, यह हेयर क्लिप हम पांचों बहनों की निशानी के प्रतीक के रुप में था। यह हेयर क्लिप मेलाइट को बहुत पसंद था। इसे उसे दे देना और कहना कि अमारा उसे बहुत याद करती है ..... वह हमेशा खुश रहे। हम सभी बहनें उसके लिये ये ही दुआ करती रहेंगी।"

इतना कहकर अमारा पलटी और अपनी बाकी की बहनों को लेकर वहां से एक दिशा में चल दी।

रोजर ने उस हेयर क्लिप को अपनी पैंट की जेब में रखा और मेलाइट के महल निम्फिया को याद कर अपनी नाभि को छू दिया।

रोजर के ऐसा करते ही उसकी नाभि से वही चिर-परिचित सुनहरी रोशनी निकली और उसने हवा में एक सुनहरा द्वार बना दिया।

इस बार रोजर बिना झिझके उस द्वार में प्रवेश कर गया और मेलाइट के बाकी रहस्यों को जानने के लिये निम्फिया महल की ओर चल दिया।

◆ ◆ ◆

चैपटर-6

वृश्चिक राशि

तिलिस्मा 6.41

क्रिस्टी ने जिस द्वार को चुना, उसमें मिथुन और वृश्चिक राशियां छिपी हुई थीं। क्रिस्टी जब द्वार से बाहर निकली तो उसने देखा कि वह रोम के प्रसिद्ध और प्राचीन शहर ट्रॉय में खड़ी है।

ट्रॉय अपनी भव्यता के लिये हमेशा इतिहास के पन्नों में अंकित रहा है।

क्रिस्टी ने देखा कि पूरे ट्रॉय शहर में चारो ओर मूर्तियां ही मूर्तियां फैली हैं। हर मूर्ति लगभग 20 फुट की दिख रही थी।

सबसे पहली मूर्ति रोम के प्रसिद्ध महाकवि 'होमर' की थी, जिन्होंने अपने हाथों में अपनी सबसे चर्चित पुस्तक 'इलियड' को पकड़ रखा था।

इलियड का पेज खुला हुआ था और होमर अपने महाकाव्य की ओर देख रहे थे।

जिस पत्थर पर होमर बैठे थे, उस पर एक चाँदी की नेम प्लेट लगी थी। उस नेम प्लेट पर अग्रेजी के स्वर्ण अक्षरों से 'HOMER' लिखा था। होमर के आसपास हल्के बैंगनी रंग के बहुत से 'लैवेण्डर' फूल लगे थे, जिनकी भीनी-भीनी खुशबू होमर के आसपास फैली हुई थी।

होमर के बगल में 2 योद्धाओं की मूर्तियां थीं, जो कि घोड़े पर सवार थे। दोनों घोड़ों के पैर हवा में थे। दोनों योद्धाओं की मूर्ति के नीचे भी नेम प्लेट लगी थी। एक योद्धा का नाम 'केस्टर' और दूसरे का नाम 'पोलक्स' था।

केस्टर ने अपने हाथ में तलवार और पोलक्स ने अपने हाथ में भाला पकड़ रखा था।

चूंकि क्रिस्टी इटली से थी, इसलिये वह इन दोनों योद्धाओं को पहचानती थी। केस्टर और पोलक्स रोमन साम्राज्य के 2 जुड़वा पौराणिक योद्धा थे। इटली में इनका मंदिर भी था।

केस्टर और पोलक्स ही मिथुन राशि का प्रतिनिधित्व भी करते थे।

फिर इस लाइन के अंत में ‘हेलेन’ की मूर्ति थी। जी हां यह वही हेलेन थी, जिसके पीछे ट्रॉय का पौराणिक युद्ध लड़ा गया था और जिस युद्ध की गाथा, होमर ने अपने महाकाव्य इलियड में लिखी थी।

हेलेन के हाथ में एक सुनहरे रंग की डोरी भी मौजूद थी।

ट्रॉय शहर के बीच में एक विशाल लकड़ी का घोड़ा भी खड़ा था।

“यह तो पौराणिक शहर ट्रॉय है और यहां के दृश्यों को देख कर साफ समझ में आ रहा है कि यह ‘ट्रोजन वार’ के समय की घटना है और अगर ऐसा है तो उस लकड़ी के घोड़े में अवश्य ही ग्रीस की सेना होगी, जो कहानी के अनुसार छिपकर ट्रॉय के अंदर घुसी थी।

उस लकड़ी के घोड़े के पास, जमीन पर एक काँच की बोतल भी रखी थी, जिस पर एक रबर का ढक्कन लगा था। बोतल के अंदर एक कागज का टुकड़ा नजर आ रहा था।

क्रिस्टी ने उस बोतल के रबर को हटाकर उस कागज के टुकड़े को बोतल से निकाल लिया। उस कागज के टुकड़े पर ‘विड्सटोक्स’ लिखा था। क्रिस्टी को यह शब्द कुछ सुना-सुना सा लगा? पर उसे याद नहीं आया कि यह शब्द उसने कहां पर सुना था?

लकड़ी के घोड़े से कुछ दूरी पर राजकुमार पेरिस की मूर्ति भी लगी थी। पौराणिक कहानी में राजकुमार पेरिस ही ग्रीस की रानी हेलेन को अपने साथ ले आया था, इसीलिये ग्रीस की सेना ने ट्रॉय पर हमला किया था। पूरे शहर में एकमात्र पेरिस की ही मूर्ति 8 फुट की थी।

पेरिस एक ग्रीक देवी एफ्रोडाइट के सामने हाथ जोड़कर बैठा था। देवी एफ्रोडाइट ने अपने दोनों हाथों में एक विशाल मटका पकड़ रखा था। देवी एफ्रोडाइट के बगल एक प्राचीन मगर बहुत ही खूबसूरत सा दर्पण रखा हुआ था। दर्पण के किनारे सुनहरी धातु से निर्मित थे। क्रिस्टी ने अभी दर्पण को हाथ लगाना उचित नहीं समझा।

अब क्रिस्टी की नजर ट्रॉय शहर के अंदर की ओर गई।

अंदर हर स्थान पर सैनिकों की मूर्तियां ही मूर्तियां दिखाई दे रही थीं, जो कोई सामारोह मना रहे थे। उसे देख कर ऐसा महसूस हो रहा था कि मानों पूरे शहर को किसी ने अपने श्राप से मूर्तियों में बदल दिया हो?

क्रिस्टी ने शहर के अंदर जाने की कोशिश की, पर जा नहीं सकी। किसी अदृश्य दीवार ने क्रिस्टी को शहर के अंदर जाने से रोक दिया?

क्रिस्टी समझ गई कि यह तिलिस्म यहीं तक है। अब उसने फिर एक बार राजकुमार पेरिस की मूर्ति को देखा।

पेरिस की मूर्ति के नीचे भी नेम प्लेट लगी थी। जिस पर लिखा था-

“PARIS – THE _ _ _ _ ANDROS”

आगे की जगह के 4 अक्षर अपनी जगह से गायब थे। उन 4 खाली स्थान की जगह पर 4 छोटे गोले बने थे।

क्रिस्टी को यह देखकर कुछ ऐसा लगा, जैसे इन 4 गोलों में 4 अक्षर लगाने हों। अब क्रिस्टी राजकुमार पेरिस का पूरा नाम याद करने की कोशिश करने लगी।

थोड़ा याद करने पर क्रिस्टी को राजकुमार पेरिस का दूसरा नाम याद आ गया। दूसरा नाम था- ALEXANDROS जिसका ग्रीक भाषा में मतलब होता था- रक्षक।

यानि की बचे हुए 4 अक्षर ALEX थे, जो कि उसे पेरिस की मूर्ति के नीचे लगाने थे।

ऐलेक्स का नाम सुनकर क्रिस्टी को अचानक ऐलेक्स की याद आने लगी। कुछ देर के लिये वह भूल गई, कि इस समय वह तिलिस्मा में खड़ी है।

कुछ देर के बाद क्रिस्टी ने अपने सिर को एक हल्का सा झटका दिया और बाकी चीजों की ओर ध्यान से देखने लगी।

अब क्रिस्टी की निगाह उस दर्पण पर जाकर रुक गई, जो देवी एफ्रोडाइट के पास रखा था। देखकर ऐसा लग रहा था कि वह दर्पण देवी

एफ्रोडाइट का ही हो।

क्रिस्टी ने उस दर्पण को उठाकर, उसमें अपना चेहरा देखा, पर दर्पण कुछ जगह से गंदा होने के कारण क्रिस्टी को अपना चेहरा साफ दिखाई नहीं दिया।

क्रिस्टी ने अपने हाथों से दर्पण पर पड़ी धूल को साफ करने की कोशिश की, परंतु वह धूल साफ नहीं हुई। तभी क्रिस्टी को अपने चेहरे पर कुछ जलन सी होती हुई महसूस हुई।

क्रिस्टी ने दोबारा अपना चेहरा दर्पण में देखने की कोशिश की, पर उसे समझ नहीं आया कि उसके चेहरे पर जलन क्यों हो रही है?

धीरे-धीरे अब उसके चेहरे पर जलन बढ़ती जा रही थी। अब क्रिस्टी घबरा गई।

“यह मेरे चेहरे पर एकाएक जलन कैसे होने लगी? .... हो ना हो यह जलन इस दर्पण के कारण ही उत्पन्न हुई है? शायद यह कोई जादुई दर्पण है? पर अगर दर्पण यहां पर है, तो इससे उत्पन्न जलन का उपाय भी यहां पर कहीं अवश्य होगा? .... इससे पहले कि मेरे चेहरे की जलन असहनीय हो जाये, मुझे इसका इलाज ढूंढना ही होगा।”

अब क्रिस्टी भागकर सभी चीजों को दोबारा से देखने लगी। तभी क्रिस्टी की नजर केस्टर की मूर्ति पर जाकर रुक गई।

केस्टर की मूर्ति के नीचे लगा नेम प्लेट का ‘A’ अक्षर लाल रंग से चमक रहा था। क्रिस्टी भागकर केस्टर की मूर्ति के पास पहुंच गई। उसने जैसे ही ‘A’ अक्षर को हाथ लगाया, वह निकलकर क्रिस्टी के हाथ में आ गया।

अब क्रिस्टी को समझ में आ गया कि उसे इस अक्षर का क्या करना है? क्रिस्टी ने भागकर उस अक्षर को पेरिस की मूर्ति के नेमप्लेट के पहले खाली स्थान पर लगा दिया।

वह अक्षर तुरंत ‘खट्’ की आवाज करता वहां पर चिपक गया।

तभी क्रिस्टी को ‘फिस्स्ऽऽऽ’ की एक आवाज पीछे से आती हुई प्रतीत हुई। क्रिस्टी ने पीछे पलटकर देखा। यह आवाज केस्टर की मूर्ति से

आ रही थी।

केस्टर की मूर्ति धीरे-धीरे ऊपर की ओर से धुंए में परिवर्तित हो रही थी।

इधर क्रिस्टी का चेहरा अब बुरी तरह से जलने लगा था, पर उसकी निगाहें केस्टर पर ही थीं। कुछ ही देर में केस्टर की पूरी मूर्ति धुंए में परिवर्तित होकर गायब हो गई।

अब क्रिस्टी, केस्टर की मूर्ति वाले स्थान पर आ गई। मूर्ति के स्थान पर उसे जमीन पर पड़े कुछ बीज दिखाई दिये।

क्रिस्टी उस बीज के दानों को पहचानती थी, वह castor के बीज थे, जिसका तेल सौंदर्य प्रसाधन में प्रयोग करते थे। यह दानें भारत और अफ्रीका के जंगलों में पाये जाते हैं।

अब क्रिस्टी को अपने कॉलेज की बात याद आ गई, जहां उसकी टीचर ने एक बार कैस्टर के बीज को दिखाकर, उसका एक और नाम बताया था और वह नाम था- ‘पाम ऑफ क्रिस्टी या पाल्मा क्रिस्टी’

क्रिस्टी को यह बात इसलिये अभी तक याद थी, क्योंकि इसमें उसका नाम प्रयोग हो रहा था।

क्रिस्टी को याद आया कि केस्टर ऑयल का प्रयोग चेहरे पर सुंदरता लाने के लिये किया जाता है और यह किसी भी प्रकार का त्वचा का इंफेक्शन भी दूर करता है।

“इन बीजों को देखकर साफ समझ आ रहा है कि इसके माध्यम से ही मेरे चेहरे की जलन कम होगी, परंतु इस बीज से तेल कैसे निकालें? यहां तो ऐसी कोई भी चीज नहीं है, जिसके द्वारा इस बीज से तेल को निकाला जा सके? .... एक मिनट ... इसका एक और नाम पाम ऑफ क्रिस्टी भी है, तो कहीं ऐसा तो नहीं कि मेरी हथेली से इससे तेल निकले?”

यह सोचकर क्रिस्टी ने उन बीजों को अपनी हथेली में रख, अपनी मुठ्ठी को जोर से बंद कर लिया। अब उसे अपनी हथेली अंदर से गर्म होती हुई महसूस हुई।

कुछ देर बाद क्रिस्टी ने अपनी हथेली को खोल दिया। उसकी हथेली से अब बीज गायब हो चुके थे और बीज के स्थान पर कुछ तेल की बूंदें दिखाई दे रहीं थीं।

क्रिस्टी ने उस तेल को अपने दोनों हाथों से रगड़ा और अपने पूरे चेहरे पर लगा लिया।

आश्चर्यजनक तरीके से क्रिस्टी के चेहरे की जलन गायब हो गई।

अब क्रिस्टी का ध्यान फिर से इधर-उधर दौड़ने लगा। तभी उसे हेलेन की मूर्ति के नीचे लगी नेम प्लेट पर लगा ‘L’ अक्षर चमकता दिखाई दिया।

क्रिस्टी ने इस अक्षर को भी निकालकर पेरिस की मूर्ति की नेम प्लेट पर फिट कर दिया।

‘L’ अक्षर के लगाते ही, देवी एफ्रोडाइट के हाथ में पकड़े विशाल मटके से काले रंग के बिच्छू निकलकर वहां फैलने शुरु हो गये।

यह देख क्रिस्टी घबरा गई। वह तुरंत उन बिच्छुओं से बचने के लिये उनसे दूर भागने लगी।

तभी क्रिस्टी की नजर होमर के नीचे लगे लैवेण्डर फूलों पर गई। उसे याद आया कि एक बार जब वह अपनी फ्रेंड के घर गई थी, तो उसके घर में हर खिड़की के पास लैवेण्डर के फूल रखे थे। उसके पूछने पर उसकी फ्रेंड ने बताया था कि उसके घर के आसपास बहुत से बिच्छू रहते हैं, जो अक्सर खिड़की के रास्ते से घर के अंदर आ जाया करते थे। ... बिच्छू लैवेण्डर फूलों की खुशबू से घबराते हैं, इसलिये ही उसने हर खिड़की पर लैवेण्डर के फूल लगा रखे हैं। उसने यह भी बताया था कि लैवेण्डर का प्रयोग बिच्छू भगाने वाली दवा में भी किया जाता है।

उधर बिच्छू लगातार क्रिस्टी को चारो ओर से घेरते जा रहे थे।

लैवेण्डर के फूल अभी भी क्रिस्टी से काफी दूरी पर थे, पर बिच्छुओं ने अब क्रिस्टी को चारो ओर से घेर लिया था।

तभी क्रिस्टी का ध्यान दूसरी ओर देख, एक बिच्छू ने हवा में उछलकर, क्रिस्टी के दाहिने पैर पर आकर चिपक गया और इससे पहले

कि क्रिस्टी उस बिच्छू को हटा पाती, उस बिच्छू ने तेजी से क्रिस्टी के पैर में अपना डंक चुभा दिया।

एक असहनीय दर्द क्रिस्टी के पैर मे उभरा। इसी के साथ क्रिस्टी ने अपने पैर को जोर से झटक कर बिच्छू को जमीन पर गिरा दिया। इसके बाद क्रिस्टी स्वयं भी अपनी जगह पर गिर गई।

किसी और परिस्थिति में शायद वह उठ भी ना पाती, पर अभी तो जान का सवाल था, इसलिये क्रिस्टी तुरंत उठकर खड़ी हो गई।

एक ही बिच्छू के डंक से क्रिस्टी भली-भांति समझ गई कि अगर उसे 2-3 और बिच्छुओं ने अपना डंक चुभा दिया, तो उसका बचना मुश्किल हो जायेगा।

उधर बिच्छू हजारों की संख्या में थे और अभी भी तेजी से क्रिस्टी की ओर बढ़ रहे थे।

क्रिस्टी ने अपने दाँतों को भींचकर अपना दर्द पी लिया। अब क्रिस्टी की नजरें फिर से लैवेण्डर फूल की ओर थी क्योंकि अब वही उसकी आखिरी उम्मीद थी।

तभी क्रिस्टी ने देखा कि उसके और लैवेण्डर फूलों के बीच कुछ जगह अभी भी खाली है, पर वह खाली स्थान क्रिस्टी से कुछ दूरी पर थे।

अगर कोई साधारण व्यक्ति होता? तो उसके लिये इतनी लंबी छलांग लगा पाना बहुत मुश्किल होता, परंतु यह क्रिस्टी थी .... जिमनास्टिक चैंपियन क्रिस्टी।

क्रिस्टी के पैर का दर्द बढ़ता ही जा रहा था, परंतु क्रिस्टी ने हिम्मत दिखाते हुए, उस खाली स्थान की ओर छलांग लगा दी।

शानदार प्रयास .... क्रिस्टी उस खाली स्थान तक पहुंच ही गई।

क्रिस्टी इस समय अपना पूरा संतुलन एक पैर पर ही बनाए थी। क्रिस्टी ने एक बार फिर अगले खाली स्थान की ओर देखा और दोबारा से आगे दिख रहे खाली स्थान की ओर छलांग लगा दी।

ऐसे ही 3-4 प्रयासों के बाद आखिरकार क्रिस्टी लैवेण्डर के फूलों तक पहुंच ही गई।

क्रिस्टी ने बिना एक पल गंवाए, उन लैवेण्डर के फूलों को तोड़ना शुरु कर दिया।

कुछ ही क्षणों में सारे फूल क्रिस्टी के हाथों में थे।

क्रिस्टी ने तुरंत फूलों का गुच्छा अपनी ओर बढ़ रहे बिच्छुओं की ओर कर दिया।

बिच्छू लैवेण्डर की खुशबू पाकर वापस पलटे और देवी एफ्रोडाइट के मटके में वापस समाने लगे।

यह देख क्रिस्टी ने एक राहत की साँस ली, परंतु तभी उसका ध्यान अपने पैर के दर्द की ओर गया।

क्रिस्टी समझ गई कि उभी उसे अपने दर्द का इलाज ढूंढना है। क्रिस्टी का पैर दर्द की अधिकता से धीरे-धीरे सुन्न होता जा रहा था।

क्रिस्टी तेजी से सोचती हुई अपने चारो ओर देख रही थी। तभी उसकी नजर वापस जा रहे सभी बिच्छुओं पर पड़ी।

सारे काले बिच्छुओं के बीच एक नीले रंग का बिच्छू भी था।

सभी काले बिच्छू, उस नीले बिच्छू से कुछ दूरी बनाकर चल रहे थे। यह देख क्रिस्टी को कुछ अजीब सा महसूस हुआ।

तभी क्रिस्टी को अपने अंकल की एक घटना याद आ गई। जब क्रिस्टी अपने अंकल से मिलने गई थी, उसने उनके घर में काँच की एक बोतल में बंद नीला बिच्छू देखा था। उसके पूछने पर उनके अंकल ने बताया था कि इस बिच्छू के जहर से ‘विड्सटोक्स’ नामक दवाई बनाई जाती है, जिससे कैंसर का इलाज होता है और उस नीले बिच्छू के जहर के 1 लीटर की कीमत उन्होंने 20 लाख डॉलर बताई थी।

यह याद आते ही तुरंत क्रिस्टी को बोतल में बंद, कागज पर लिखा ‘विड्सटोक्स’ शब्द भी याद आ गया।

अब क्रिस्टी अपना सारा दर्द भूलकर उस नीले बिच्छू की ओर लपकी। आसपास के सभी काले बिच्छुओं को भगाने के बाद, क्रिस्टी ने डरते-डरते उस नीले बिच्छू को उठाया और उसे अपने दाहिने पैर के उसी स्थान पर रख लिया, जहां पर काले बिच्छू ने क्रिस्टी को काटा था।

उस नीले बिच्छू ने क्रिस्टी के पैर के उस स्थान को सूंघा, जहां काले बिच्छू ने काटा था और फिर अपना डंक भी उसी स्थान पर गड़ा दिया।

एक पल के लिये क्रिस्टी की चीख निकल गई, परंतु तुरंत उसे महसूस हुआ कि उसका पैर बिल्कुल ठीक हो गया है।

तब तक वह नीला बिच्छू क्रिस्टी के पैर से कूदकर, वापस सभी काले बिच्छुओं के झुण्ड में शामिल हो गया।

क्रिस्टी के देखते ही देखते सारे बिच्छू वापस देवी एफ्रोडाइट के मटके में समा गये। लैवेण्डर के फूल भी अब गायब हो गये थे।

क्रिस्टी पुनः उठकर खड़ी हो गई। वह अब स्वयं को पहले से ज्यादा स्वस्थ महसूस कर रही थी।

अब उसे इस द्वार का खेल समझ आ गया था। अब क्रिस्टी की निगाहें 'E' अक्षर के लिये इधर-उघर घूमीं। थोड़ी ही देर में क्रिस्टी की निगाहें होमर की नेम प्लेट पर जाकर टिक गईं, होमर के नाम का 'E' अक्षर अब चमक रहा था।

अब क्रिस्टी होमर के पास पहुंच गई और उसने 'E' अक्षर को वहां से निकालने की कोशिश की, पर वह अक्षर उस स्थान से नहीं निकला।

"लगता है यहां पर कोई और परेशानी है? बिना उस परेशानी को खत्म किये, 'E' अक्षर यहां से नहीं निकलेगा?"

अब क्रिस्टी का ध्यान 'इलियड' की ओर गया। क्रिस्टी अब छलांग लगाकर उस पत्थर पर चढ़ गई, जिस पर होमर बैठे थे।

क्रिस्टी ने अब इलियड पुस्तक के खुले पेजों की ओर देखा। उस पुस्तक के बांये पृष्ठ पर एक कविता लिखी थी, जिसका हिन्दी में अनुवाद था-

"फैलेगा जब रात का अंधेरा,
ट्रोजन हार्स ने ट्रॉय को घेरा।"

"इस कविता से ये साफ समझ आ रहा है कि रात के अंधेरे में ट्रोजन हार्स से ग्रीस के सैनिक निकलकर ट्रॉय को घेर लेंगे और ऐसा ही तो

पौराणिक कहानी में भी था। इसका मतलब मुझे रुक कर रात होने का इंतजार करना होगा? शायद रात के समय ही यह ‘E’ अक्षर इस जगह से निकाला जा सकेगा?”

तभी क्रिस्टी की नजर इलियड के दूसरे पन्ने की ओर गई, जिस पर 2 योद्धा तलवार लिये आमने-सामने खड़े थे। उस पेज पर, उन दोनों योद्धाओं के ऊपर एक सूर्य आसमान चमक रहा था।

अब क्रिस्टी होमर के पत्थर से उतर गई। उसने एक नजर आसमान में चमक रहे सूर्य को देखा और चुपचाप उसी पत्थर पर बैठकर रात होने का इंतजार करने लगी।

◆ ◆ ◆

अग्निका

26.01.2002, शनिवार, कैलाश मंदिर, औरंगाबाद, भारत

शलाका, जेम्स को साथ लेकर भारत के औरंगाबाद जिले में स्थित कैलाश मंदिर के पास आ गई थी।

कैलाश मंदिर के पास दूर-दूर तक कोई भी नदी या झील नहीं थी, इसलिये आर्ची ने आर्केडिया को कैलाश मंदिर से कुछ दूरी पर स्थित एक ऊंचे से पहाड़ पर उतार लिया।

आर्केडिया अभी अदृश्य अवस्था में था।

जब आर्ची ने स्कैनर के द्वारा यह चेक कर लिया, कि आर्केडिया के पास दूर-दूर तक कोई मानव नहीं है, तो उसने आर्केडिया का दरवाजा खोलकर शलाका और जेम्स को बाहर निकलने को कहा।

शलाका और जेम्स वहां की पथरीली चट्टान पर उतर गए। उस स्थान पर दूर-दूर तक पहाड़ी चट्टानों के सिवा कुछ भी नजर नहीं आ रहा था?

वहां से जेम्स और शलाका पैदल ही कैलाश मंदिर की ओर चल दिये।

कुछ ही आगे जाने पर, उन्हें मंदिर की ओर जाने वाली सड़क दिखाई दे गई। सड़क पर कुछ आगे से ही लोगों की भीड़ सी दिखाई देने लगी। कुछ देर के बाद जेम्स और शलाका, अजन्ता व एलोरा गुफाओं के पास स्थित कैलाश मंदिर के प्रांगण मे पहुंच गये।

कैलाश मंदिर की ऊंचाई 100 फिट के आसपास लग रही थी। पूरा मंदिर एक बड़े से पहाड़ को काटकर बनाया गया था।

“इतना विशाल मंदिर किसी एक पहाड़ को काटकर कैसे बनाया जा सकता है?” जेम्स ने शलाका से पूछा- “इसको बनाने में तो काफी समय लगा होगा?”

“प्राचीनकाल में बौमास्त्र नाम की एक मशीन हुआ करती थी, जो बड़े से बड़े पत्थरों को पल भर में काट कर खोखला बना देती थी।”

शलाका ने कहा- “हो सकता है कि देवी माया ने उसी का प्रयोग करके इस मंदिर का निर्माण किया हो?”

मंदिर काफी प्राचीन दिख रहा था।

आज भारत में गणतंत्र दिवस की खुशियां मनाई जा रहीं थीं, जिसकी वजह से मंदिर के आसपास दर्शकों की काफी भीड़ दिखाई दे रही थी।

जेम्स और शलाका ने पिछली बार की तरह से भारतीय वेष-भूषा धारण कर रखी थी। पर किसी विदेशी को भारतीय वेष-भूषा में देख चलते-फिरते लोग उन्हें ही निहार रहे थे।

इस समय जेम्स ने हल्के नीले रंग की शर्ट और काली पैंट पहन रखी थी और शलाका ने सुर्ख लाल रंग की साड़ी पहन रखी थी। लाल रंग की साड़ी में शलाका का सौंदर्य और बढ़ा हुआ प्रतीत हो रहा था।

सभी दर्शकों की तरह वह दोनों भी मंदिर की भव्यता को निहारते हुए धीरे-धीरे आगे बढ़ रहे थे।

“ये पाताललोक में जाने का रास्ता कहां से है?” जेम्स ने शलाका के पास आकर फुसफुसाते हुए पूछा।

जेम्स के शब्द सुन शलाका ने उसे चुप रहने को कहा और अपने पीछे आने का इशारा किया।

जेम्स, शलाका के पीछे-पीछे चलता हुआ मंदिर के एक ऐसे भाग में जा पहुंचा, जहां पर महादेव की सवारी नंदी की एक टूटी-फूटी मूर्ति लगी थी।

देखने से ही प्रतीत हो रहा था कि वह मूर्ति सैकड़ों वर्ष पुरानी है।

वह स्थान भी धूल से भरा था, ऐसा लग रहा था कि उस स्थान पर ज्यादा दर्शक आते नहीं हैं।

शलाका ने अब धीरे से अपने आस-पास देखा। इस समय उनके आस-पास कोई नहीं था। यह देख शलाका ने धीरे से अपने हाथों से नंदी की मूर्ति को एक ओर घुमा दिया।

शलाका के ऐसा करते ही उस कमरे में एक घर्र-घर्र की आवाज सुनाई दी, पर जेम्स को वहां कुछ भी अनोखा होता हुआ नजर नहीं आया?

तभी शलाका ने जेम्स का हाथ पकड़ लिया। शलाका के ऐसा करते ही दोनों अदृश्य हो गये। अब शलाका जेम्स को लेकर बांई ओर की दीवार की ओर चल दी।

दीवार के समीप आने पर भी शलाका रुकी नहीं, वह अनवरत चलती रही, पर जैसे ही दीवार नजदीक आई, शलाका जेम्स के साथ उस दीवार को ऐसे पार कर गई, जैसे वहां कोई दीवार हो ही ना?

जेम्स यह देख आश्चर्य से भर उठा। दीवार के पार पहुंचकर शलाका ने जेम्स का हाथ छोड़ दिया। अब दोनों सदृश्य हो गए।

जेम्स की नजर अब उस कमरे में थी, जहां पर वह अभी पहुंचे थे।

इस समय वह दोनों एक ऐसे कमरे में थे, जिसमें चारो ओर दीवार ही नजर आ रही थी। उस कमरे में कोई दरवाजा या खिड़की नहीं थी। वह कमरा बिल्कुल गोलाकार था।

तभी शलाका की नजर कमरे की बांई दीवार पर लगी एक खूंटी की ओर गई, जिस पर एक उल्लू की मूर्ति लगी थी। वह उल्लू की मूर्ति लगभग 1 फुट ऊंची थी। उस उल्लू की आँखें सजीव नजर आ रहीं थीं।

शलाका ने आगे बढ़कर उस उल्लू की आँखों को अंदर की ओर दबा दिया। शलाका के ऐसा करते ही उस उल्लू की मूर्ति से एक तेज ध्वनि निकली और इसी के साथ वह पूरा कमरा किसी लिफ्ट की भांति तेजी से नीचे की ओर जाने लगा।

जेम्स के लिये यह सभी कुछ नया था, पर अब उसने इतना कुछ देख लिया था कि उसे इन घटनाओं पर आश्चर्य नहीं हो रहा था।

कमरे का नीचे की ओर जाना अनवरत जारी था। कुछ देर के बाद कमरा एक झटके के साथ रुक गया।

अब कमरे में मौजूद उल्लू की आँखें अपने यथास्थान आ गईं। कमरे को रुकता देखकर शलाका ने आगे बढ़कर उल्लू की गर्दन पीछे की ओर घुमा दी। शलाका के ऐसा करते ही उल्लू की मूर्ति जीवित हो गई।

जिंदा होते ही उल्लू ने पहले अपनी गर्दन को सीधा किया और फिर तेज आवाज करता हुआ, उड़कर कमरे की छत पर लगे, एक छोटे से हुक को नीचे की ओर खींच दिया।

उल्लू के ऐसा करते ही एक गड़गड़ाहट की आवाज के साथ कमरे की दांई ओर की दीवार में एक दरवाजा नजर आने लगा।

उल्लू अब वापस आकर अपने स्थान पर बैठ गया। इसी के साथ उल्लू फिर से निर्जीव हो गया।

शलाका जेम्स को लेकर उस दरवाजे में प्रवेश कर गई।

वह दरवाजा आगे जाकर एक सुरंग में खत्म हो रहा था। वह सुरंग काफी लंबी नजर आ रही थी।

सुरंग में दोनों ओर की दीवारों पर कुछ बड़े से जुगनू के जैसे उड़ने वाले कीड़े बैठे थे, पर इन कीड़ों का आकार जुगनू से काफी बड़ा था। इन्हीं जुगनुओं की वजह से वह सुरंग पूरी तरह से प्रकाशित दिख रही थी।

जेम्स और शलाका बिना रुके उस सुरंग में चलते जा रहे थे। काफी आगे जाने के बाद आखिरकार वह सुरंग समाप्त हो गई।

जहां पर वह सुरंग समाप्त हो रही थी, वह एक बहुत खुला हुआ स्थान था। वह खुला स्थान पता नहीं कैसे स्वयं से प्रकाशमान था?

वह स्थान चारो ओर से पहाड़ों से घिरा हुआ, एक घाटी के समान प्रतीत हो रहा था।

जेम्स समझ नहीं पा रहा था कि जमीन के इतना नीचे यह प्रकाशित घाटी कहां से आ गई?

उस घाटी की पहाड़ियों में हर ओर गुफाएं नजर आ रहीं थीं। जाने इतनी सारी गुफाएं किस जगह जाकर खुलती थीं? उन पहाड़ियों के मध्य एक बड़ी सी मोर के चेहरे वाली भी पहाड़ी थी।

उस मोर के मुख से नीले रंग का पानी निकलकर पहाड़ से नीचे की ओर गिर रहा था।

शलाका जेम्स को लेकर उस झरने की ओर चल दी। जेम्स को समझ नहीं आया कि शलाका उसे उस झरने की ओर क्यों ले जा रही है?

कुछ ही देर में शलाका, जेम्स को लेकर झरने के पानी के नीचे पहुंच गई। झरने के पानी के कारण शलाका और जेम्स दोनों के ही शरीर पूरी तरह से भीग गए।

अब शलाका के हाथ में उसका चिरपरिचित त्रिशूल नजर आने लगा।

लाल रंग की साड़ी में, हाथ में त्रिशूल पकड़े शलाका किसी भारतीय देवी की भांति लग रही थी। तभी शलाका ने अपने हाथ में पकड़े त्रिशूल को झरने के नीचे की जमीन पर धीरे से ठकठकाया।

शलाका के ऐसा करते ही झरने का पानी ऊपर से नीचे आने की जगह, नीचे से ऊपर की ओर जाने लगा। इसी के साथ शलाका और जेम्स का शरीर भी पानी के साथ ऊपर की ओर खिंचने लगा।

कुछ ही देर में दोनों का शरीर मोर के मुख वाली पहाड़ी के अंदर प्रविष्ठ हो गया। जेम्स के लिये यह सब कुछ सपने सरीखा था।

मोर के मुख में पहुंचते ही शलाका और जेम्स के कपड़े स्वतः ही सूख गये।

शलाका, मोर के मुख में भरे पानी के उद्गम स्थल की ओर चल दी। थोड़ा आगे बढ़ते ही जेम्स को एक विशाल अग्निकुंड दिखाई दिया।

सारा नीला पानी उसी विशाल अग्निकुंड से निकलकर, पतली नालियों के द्वारा मोर के मुख की ओर आ रहा था, पर आश्चर्य की बात यह थी कि अग्निकुंड के दूसरी ओर से, गोल नालियों के द्वारा उसमें पिघला हुआ लावा समा रहा था।

यानि कि अग्निकुंड स्वयं जलकर उस लावे को नीले शुद्ध पानी में परिवर्तित कर रहा था। अग्निकुंड की अग्नि पहाड़ की छत को छू रही थी, जिसके कारण पहाड़ की छत सुर्ख लाल रंग की हो गई थी।

इस सुर्ख लाल छत पर एक उभरी हुई विशाल पक्षी की आकृति बनी थी। वह विशाल पक्षी अग्नि के लावे से बना हुआ दिखाई दे रहा था, जिसने पंख फैलाए थे।

यह देखकर जेम्स से रहा ना गया और वह शलाका से पूछ बैठा- “यह किस प्रकार का अग्निकुंड है, जो धधकते हुए लावे को शुद्ध नीले जल में परिवर्तित कर रहा है? और इसकी छत पर बनी यह ‘अग्निपक्षी’ की आकृति क्यों बनी है?”

“यह पाताललोक की ‘सुवर्ण ज्वाला’ है, जो पिघलते लावे को पवित्र ‘नीलजल’ में परिवर्तित करती है। यही नीलजल पाताललोक में रहने वाले लोगों की प्यास बुझाने का कार्य करता है।” शलाका ने जेम्स को समझाते हुए कहा- “जब तक पृथ्वी की कोर में लावे की एक भी बूंद रहेगी, यह सुवर्ण ज्वाला कभी नहीं बुझेगी और इसी सुवर्ण ज्वाला की वजह से पाताललोक में कभी अंधेरा नहीं होता। इस पवित्र ज्वाला का निर्माण देवताओं ने किया था और यह अग्निपक्षी इसी सुवर्ण ज्चाला के रखवाले के रुप में यहां हमेशा विराजमान रहता है।”

“तो क्या अग्निका यहीं पर है?” जेम्स ने गहरी साँस भरते हुए शलाका से पूछा।

“नहीं! हम जिस रास्ते से इस स्थान पर आए हैं, यह पाताललोक में प्रवेश करने का गुप्त मार्ग है, इस रास्ते को बस कुछ लोग ही जानते हैं।” शलाका ने जेम्स की ओर देखते हुए कहा- “और ऐसा मैंने इसलिये किया, क्योंकि मैं अभी किसी भी पातालवासी की नजर में नहीं आना चाहती थी।”

“पातालवासी!” जेम्स के चेहरे पर आश्चर्य के भाव उभरे- “क्या पाताल में कोई निवास भी करता है?”

“हाँ जेम्स, जब देवी माया ने पाताललोक का निर्माण किया तो उन्होंने हर लोक की तरह इस लोक में भी कुछ लोगों को बसाया, जो पातालवासी कहलाये। इस पाताल के अंदर एक छोटा सा शहर भी है, जिसे पाताललोक कहते हैं, पर उसका रास्ता अजंता और एलोरा की गुफाओं के अंदर से होकर जाता है। किसी कारणवश मैं अभी उन लोगों की नजरों में नहीं आना चाहती थी, इसलिये मैंने तुम्हारे साथ, गुप्त द्वार का प्रयोग किया। .... और अग्निका यहां से कुछ दूरी पर स्थित है। अब हम वहीं चल रहे हैं।”

यह कहकर शलाका फिर से एक दिशा की ओर चल दी। जेम्स भी शलाका का अनुसरण करते हुए उसके पीछे-पीछे चल दिया।

शलाका अब उस सुवर्ण ज्वाला के बांई ओर चल दी। कुछ आगे जाने पर जेम्स को सामने फिर एक दीवार दिखाई दी।

शलाका ने एक बार फिर अपने त्रिशूल का प्रयोग करते हुए उस दीवार पर एक धीमी चोट की। त्रिशूल की चोट पड़ते ही वह पूरी दीवार मोर पंख से बनी हुई दिखाई देने लगी।

हजारों-लाखों मोर पंख हवा में धीरे-धीरे लहरा रहे थे। शलाका अब जैसे ही आगे बढ़ी, उन मोर पंखों ने स्वतः ही शलाका को रास्ता दे दिया।

अब जेम्स को उन मोरपंखों के बीच एक दरवाजा दिखाई देने लगा।

शलाका को उस मोर पंख के बने दरवाजे में प्रवेश करते देख जेम्स भी उस दरवाजे में समा गया।

अंदर का दृश्य बहुत अद्भुत था। वह एक बहुत ही खूबसूरत सा कमरा था, जिसकी दीवारें और छत पर अग्नि से नक्काशी की हुई थी। वह अग्नि की लपटें बिल्कुल सजीव प्रतीत हो रही थी।

वैसे तो उस कमरे के बाहर चारो ओर लावा भरा था फिर भी जेम्स को वहां बिल्कुल भी गर्मी महसूस नहीं हो रही थी।

उस कमरे के बीचोबीच हवा में एक किताब तैर रही थी, जिसका आकार भी 6 फुट के आसपास का दिख रहा था। वह किताब हवा में बने एक मोरपंख के गोले में थी।

शलाका ने उस किताब को एक बार देखकर प्रणाम किया और जेम्स को धीरे से दूर रहने का इशारा किया।

शलाका का इशारा देख जेम्स, शलाका से थोड़ा सा दूर हो गया।

शलाका ने अब अपने हाथ में पकड़े त्रिशूल को हवा में गायब कर दिया और धीरे-धीरे चलती हुई अग्निका के पास पहुंच गई।

अब शलाका ने आगे बढ़कर अग्निका को छू लिया। अग्निका को छूते ही, अग्निका अग्नि के समान धधकने लगी। अब जेम्स को अग्निका से

निकलती लपटें साफ दिखाई दे रहीं थीं।

तभी अग्निका का प्रथम पृष्ठ खुल गया और उससे तीव्र अग्नि की किरणों ने निकलकर शलाका के शरीर को घेर लिया।

अब वह अग्नि किरणें शलाका के इर्द-गिर्द हवा में छल्ले बनाकर नाचने लगीं।

यह देख जेम्स 2 कदम और पीछे हो गया। उधर शलाका के शरीर के चारो ओर नाच रहे अग्नि छल्ले अब अपनी नाचने की गति बढ़ाते जा रहे थे। धीरे-धीरे अब शलाका, जेम्स को दिखाई देना बंद हो गई।

पर शलाका अभी भी उन अग्नि छल्लों के बीच बिल्कुल निश्चिंत खड़ी थी।

“हे अग्निका, सबसे पहले मैं उस नन्हें बालक सूर्यांश के बारे में जानना चाहती हूं कि वह असल में कौन है? कहां से आया है? और इस समय वह कहां है? कृपया मेरा मार्गदर्शन कीजिये।” शलाका ने अब अग्निका को स्पर्श करते हुए तेज आवाज में कहा।

शलाका के इतना कहते ही अग्निका से एक अग्नि की लौ निकलकर हवा में गोल घेरा बनाने लगी। धीरे-धीरे उस घेरे में एक दृश्य दिखाई देने लगा। उस दृश्य में सूर्यांश एक बड़ी सी झील के अंदर तैर रहा था।

उसकी तैरने की गति काफी तेज थी। इस प्रकार अनुभवी तरीके से एक नन्हें बालक को तैरते देख, शलाका उसे अपलक निहार रही थी। सूर्यांश के तैरने की गति देखकर शलाका हैरान हो गई।

कुछ देर तैरने के बाद सूर्यांश उस झील से निकला और जमीन पर चलता हुआ एक दिशा की ओर बढ़ चला। इस समय भी सूर्यांश ने वही कपड़े पहन रखे थे, जिसे पहनकर वह शलाका से पार्क में मिला था।

कुछ आगे जाने के बाद सूर्यांश ने अपने चारो ओर रहस्य भरी नजरों से देखा और एक झटके से ऊपर आसमान की ओर उड़ गया। यह देख शलाका की आँखें आश्चर्य से फैल गईं।

“अब तो यह साफ हो गया है कि यह कोई दिव्य बालक है या फिर यह कोई मायावी शक्ति है, जो कि जानबूझकर मेरे आसपास घूम रही है?”

शलाका ने उड़ते हुए सूर्यांश को देखते हुए अपने मन ही मन में सोचा।

कुछ देर ऐसे ही उड़ते रहने के बाद सूर्यांश एक जगह पर जमीन पर उतर गया और पैदल ही एक दिशा की ओर चल दिया।

तभी चलते हुए सूर्यांश के शरीर को एक झटका लगा और अब वह इस प्रकार ऊपर की ओर देखने लगा, जैसे वह जान गया हो कि शलाका कहीं से उसे देख रही है? सूर्यांश ने शलाका को देखकर 'बाय' के अंदाज में अपना हाथ हिलाया और मुस्कुराते हुए एक दिशा की ओर चल दिया।

यह देख शलाका के चेहरे पर सोचने वाले भाव उभर आए- "क्या सूर्यांश जान गया है कि मैं उसे कहीं से देख रही हूं? .... यह कैसे हो सकता है? अग्निका की शक्तियों का अहसास तो मेरे सिवा किसी को नहीं हो सकता? .... फिर ... फिर भला यह नन्हा बालक कैसे अग्निका की शक्तियों को महसूस कर रहा है?" शलाका अपने मन ही मन बड़बड़ा उठी, पर अभी भी शलाका ने सूर्याश से अपनी नजरें हटाईं नहीं थीं।

अब सूर्यांश चलता हुआ एक पार्क में प्रवेश कर गया। शलाका तेजी से इधर-उधर स्थित किसी बोर्ड को पढ़ने की कोशिश कर रही थी?

तभी सूर्यांश एक स्थान पर रुक गया और एक बोर्ड की ओर इशारा करने लगा। उसे देख कर ऐसा लग रहा था कि मानो वो जानबूझ कर शलाका को वह बोर्ड दिखाना चाह रहा हो।

शलाका को उस बोर्ड पर अंग्रेजी भाषा में 'चेस्टनट रिज पार्क' लिखा हुआ दिखाई दिया। शलाका ने तुरंत उस नाम को याद कर लिया।

चूंकि आर्ची इस समय शलाका के पाताल में होने के कारण उसे नहीं देख पा रही थी, नहीं तो वह तुरंत ही शलाका को उस स्थान के बारे में बता देती।

सूर्यांश ने एक बार फिर ऊपर की ओर देखा और अपनी नन्हें हाथों की उंगलियों से शलाका को आगे आने का इशारा किया।

अब सूर्यांश पुनः एक ओर बढ़ने लगा। कुछ ही देर में सूर्यांश एक छोटे से झरने के पास पहुंच गया। वह छोटा सा झरना कुछ पत्थरों के ऊपर से होकर नीचे की ओर गिर रहा था।

झरने के गिरने की गति ज्यादा तेज नहीं थी और उस झरने के आसपास कुछ लोग भी घूम रहे थे।

उन्हें देखकर शलाका समझ गई कि यह कोई टूरिस्ट प्लेस है। आसपास घूम रहे लोग अमेरिकन जैसे ही लग रहे थे।

अब सूर्यांश धीरे-धीरे चलता हुआ उस छोटे से झरने के नीचे की ओर चला गया। उस झरने के नीचे के हिस्से में एक आग की लपट दिखाई दे रही थी, जो कि जमीन के अंदर से निकल रही थी।

झरने के नीचे आग की लपटें देख शलाका हैरान हो गई। उस स्थान पर इस समय कई लोग खड़े थे। तभी सूर्यांश उन आग की लपटों के पास पहुंच गया।

एक नन्हें बालक को ऐसा करते देख वहां खड़े लोग सूर्यांश को तेज आवाज में चिल्लाकर अलर्ट कर रहे थे, पर सूर्यांश नहीं रुका।

देखते ही देखते वह उस आग की लपटों के पास पहुंच गया। अब सूर्यांश ने पलटकर एक बार फिर शलाका को देखा और मुस्कुराकर उस आग की लपटों के अंदर समा गया।

यह देख वहां खड़े लोगों के मुंह से चीख निकल गई, पर अब सूर्यांश उन आग की लपटों में कहीं नजर नहीं आ रहा था।

तभी अग्निका ने उन दृश्यों को दिखाना बंद कर दिया।

यह दृश्य देख अब शलाका पूर्ण रुप से विचलित हो गई थी।

“यह तो कोई दिव्य बालक लग रहा है, फिर उस दिन आर्ची इस बालक की दिव्यता को पहचान क्यों नहीं सकी? और यह बालक उस दिन मेरे कमरे तक कैसे पहुंच गया था? कौन है यह बालक, जो अमृत के रहस्य को भी जानता है? लगता है इन प्रश्नों का उत्तर पाने के लिये मुझे इस विचित्र स्थान पर जाकर इस अग्नि की लौ को जांचना ही होगा? अब उसी स्थान से मुझे मेरे प्रश्नों का उत्तर मिल सकता है।”

यह सोच अब शलाका ने अपना ध्यान सूर्यांश से हटाकर व्योम की ओर कर लिया।

“हे अग्निका, अब मैं व्योम के बारे में जानना चाहती हूं।” शलाका ने एक बार फिर से अग्निका को सम्बोधित करते हुए कहा- “वह इस समय कौन से स्थान पर है? और किस अवस्था में है?”

शलाका के इतना कहते ही एक बार फिर अग्निका से एक अग्नि की लौ निकलकर हवा में गोल घेरा बनाने लगी। धीरे-धीरे उस घेरे में अब एक नया दृश्य दिखाई देने लगा।

उस नये दृश्य में व्योम, त्रिकाली के साथ राक्षसताल की एक भूल-भुलैया में घूम रहा था।

इस समय व्योम ने त्रिकाली का हाथ अपने हाथ में पकड़ रखा था। व्योम के चेहरे पर एक अपार तेज दिखाई दे रहा था। व्योम को देखते ही अचानक शलाका का मातृत्व प्रेम जागृत हो गया।

अब शलाका लगातार व्योम को देखते हुए आर्यन की कल्पना कर रही थी।

“वही नैन नक्श, वैसा ही गठीला शरीर, चेहरे का तेज भी सूर्य के समान ही प्रतीत हो रहा है। पर ... पर यह व्योम इस समय राक्षसताल में क्या कर रहा है?”

शलाका ने राक्षसताल को तुरंत ही पहचान लिया, पहचानती भी क्यों ना? आखिर वेदालय के समय में वह एक बार ‘वैभव यंत्र’ लेने के लिये वहां पर गई जो थी।

“पर व्योम तो ‘सन राइजिंग’ ढूंढने के लिये निकला था, फिर यह राक्षसताल में क्या कर रहा है? और इसके साथ जो लड़की है, वह कौन है? और इनकी बातों से लग रहा है कि यह राक्षसलोक में जाने का रास्ता ढूंढ रहे हैं। पर इन्हें राक्षसलोक के बारे में कैसे पता चला? क्या व्योम को पौराणिक लोकों का ज्ञान है? यह कैसे हो सकता है? महेन्द्र शर्मा ने तो कहा था कि उन्होंने देवोम को अमेरिका में पाला है और उसे अष्टकवच की जानकारी भी नही दी है, तो फिर व्योम को इस रहस्य भरी दुनिया की जानकारी कैसे मिली? .... मुझे यह रहस्य पता करने के लिये व्योम से भी एक बार मिलना पड़ेगा और इसके लिये मुझे एक बार फिर से हिमालय पर जाना होगा। .... चलो अब जरा विक्रम के बारे में भी पता कर लेती हूं।”

यह सोचकर शलाका ने अग्निका से विक्रम के बारे में भी जानकारी मांगी। शलाका की बात सुन अग्निका ने दृश्यों को एक बार पुनः बदल दिया।

अब शलाका के सामने विक्रम का चेहरा नजर आने लगा, जो कि दूसरी शलाका के साथ हवा में उड़ता हुआ समुद्री रास्ते से किसी दिशा में जा रहा था? शलाका ने नकली शलाका को पहचान लिया, जो कि एक ढाल के ऊपर खड़ी हवा में उड़ रही थी।

“यह अवश्य ही आकृति है, जिसने अभी तक मेरा रुप धर रखा है, पर इसके पास यह मेरी ढाल कैसे पहुंच गई? यह ढाल तो मैंने विल्मर को दे दी थी।” शलाका ने आश्चर्य से अपनी ढाल को देखते हुए कहा- “अवश्य ही आकृति ने किसी प्रकार से विक्रम के मस्तिष्क को भ्रमित कर सुनहरी ढाल प्राप्त कर ली है। पर यह दोनों इस समय जा कहां रहे हैं? ... एक मिनट ... ये तो अराका द्वीप की ओर जा रहे हैं। पर क्यों? ..... कहीं आकृति को व्योम के बारे में तो नहीं पता चल गया? इसलिये ही वह अराका की ओर जा रही है। .... यह गुत्थी तो और उलझती जा रही है, पर लगता है कि अब मुझे इन सारी गुत्थियों को सुलझाना ही पड़ेगा।”

तभी अग्निका ने इस दृश्य को दिखाना बंद कर दिया। अब शलाका ने अग्निका को छूकर पुनः प्रणाम किया।

शलाका के ऐसा करते ही अग्निका से निकली अग्नि की लपटें वापस अग्निका में समा गईं और अग्निका पहले के समान हो गई।

अब शलाका जेम्स के पास आकर खड़ी हो गई।

चूंकि जेम्स को कुछ भी दिखाई नहीं दिया था? इसलिये जेम्स के चेहरे पर अब भी उलझन के भाव थे।

शलाका ने जेम्स को अपने पीछे आने को कहा और बाहर निकलने वाले गुप्त रास्ते की ओर चल दी।

शलाका गुप्त रास्ते से होते हुए कैलाश मंदिर से बाहर आ गई, पर आर्केडिया तक पहुंचते-पहुंचते शलाका ने जेम्स को सबकुछ बता दिया।

“तो क्या आकृति ने विल्मर को मार दिया?” जेम्स ने उदास होते हुए शलाका से पूछा।

“कुछ कह नहीं सकती, पर आकृति से कुछ भी संभावना व्यक्त की जा सकती है?” शलाका ने कैलाश मंदिर से बाहर की ओर निकलते हुए कहा।

“तो फिर अब हमें सबसे पहले किसके पास चलना है? ... विक्रम, सूर्यांश या फिर व्योम के पास?” जेम्स के चेहरे पर अब भी उलझन के भाव थे।

“विक्रम और व्योम की जानकारी तो मुझे है कि वह कहां पर हैं? पर सूर्यांश के लिये मुझे एक बार फिर से आर्ची की सहायता लेनी होगी।” शलाका ने सोचने वाले अंदाज में कहा।

“इस बार आर्ची की क्या जरुरत है? इस बार तो मैं ही बता दूंगा कि सूर्यांश ने जिस झरने के नीचे जल रही लौ में प्रवेश किया था, वह ‘वेस्टर्न न्यूयार्क’ में है और उसे ‘एटर्नल फ्लेम फॉल्स’ के नाम से बुलाया जाता है। चूंकि मैं न्यूयार्क से ही हूं, इसलिये मैं वहां बहुत बार जा चुका हूं। वह फ्लेम पूरे वर्ष भर जलती रहती है, पर मुझे नहीं पता था कि उस झरने के नीचे जलने वाली लौ में कोई रहस्य छिपा है? रसायनविद् तो उसे धरती के नीचे से निकलने वाली एक नेचुरल गैस समझते हैं बस।”

जेम्स की जानकारी की वजह से शलाका को सच में इस बार आर्ची की जरुरत ही नहीं पड़ी।

“तो फिर सबसे पहले हम व्योम के पास चल रहे हैं।” शलाका ने अपना फैसला सुनाते हुए कहा- “क्योंकि मुझे लग रहा है कि इस समय उसको ही हमारी सबसे ज्यादा जरुरत है।”

इतना कहकर शलाका, जेम्स के साथ पहाड़ पर मौजूद अदृश्य आर्केडिया में प्रवेश कर गई, पर व्योम के पास पहुंचने के लिये उसे आर्केडिया को हिमालय पर ले जाने की जरुरत नहीं थी, क्योंकि व्योम के पास तो उसे अपने कमरे में मौजूद स्टीकर वाला द्वार ही ले जा सकता था, जिसके द्वारा एक बार जेम्स भटककर हिमालय पहुंच गया था।

कुछ देर बाद शलाका, जेम्स को साथ ले स्टीकर वाले द्वार से होते हुए हिमालय की पवित्र बर्फीली धरती पर जा पहुंची।

◆ ◆ ◆

चैपटर-7

ट्रोजन हार्स

तिलिस्मा 6.42

क्रिस्टी महाकवि होमर के पत्थर पर बैठी रात होने का इंतजार कर रही थी। बीच-बीच में वह अपना सिर उठाकर, आसमान में चमक रहे सूर्य को देख ले रही थी।

धीरे-धीरे क्रिस्टी को उस अवस्था में बैठे 3 से 4 घंटे बीत गये, पर सूर्य अभी भी अपनी जगह पर ही था।

“यह सूर्य तो अपनी जगह से हिल ही नहीं रहा है, ऐसे में भला रात कैसे होगी? .... मुझे लगता है कि यहां का दिन और यह सूर्य प्राकृतिक नहीं है, इसलिये कहीं ऐसा तो नहीं कि रात होने के लिये मुझे ही कुछ करना है?”

यह सोच क्रिस्टी उस पत्थर से खड़ी हो गई और इधर-उधर घूमकर कुछ तलाशने लगी।

परंतु जब काफी देर तक उसे कुछ समझ में नहीं आया? तो वह फिर से होमर के पत्थर पर खड़ी होकर इलियड पुस्तक के खुले पन्नों में झांकने लगी।

इलियड में झांकते हुए, क्रिस्टी ने उस पन्ने की ओर ध्यान से देखा, जहां 2 योद्धा आपस में युद्ध कर रहे थे। अब क्रिस्टी को ऐसा महसूस हुआ कि दोनों योद्धाओं की आकृति तो पेंट से बनी है, परंतु उस पन्ने में बना सूर्य, पेंसिल से बना दिखाई दे रहा था।

यह महसूस होते ही क्रिस्टी के दिमाग में एक बिजली सी कौंधी। अब क्रिस्टी ने अपने आसपास कहीं से इरेजर ढूंढना शुरु कर दिया, जिससे उस पन्ने पर दिख रहे सूर्य को मिटाया जा सके।

तभी क्रिस्टी की नजर ट्रोजन हार्स के पास रखी, काँच की बोतल पर गई, जिस पर एक रबर का ढक्कन लगा था।

अब क्रिस्टी भागकर कांच की बोतल के पास पहुंच गई। क्रिस्टी ने उस काँच की बोतल से वह रबर का ढक्कन निकाल लिया।

क्रिस्टी अब एक बार फिर इलियड तक पहुंच गई। क्रिस्टी ने एक बार पन्ने पर चमक रहे सूर्य को देखा और फिर उसे रबर के ढक्कन से मिटाना शुरु कर दिया।

जैसे-जैसे वह सूर्य को मिटा रही थी, ट्रॉय शहर के ऊपर चमक रहा सूर्य भी अपनी जगह से गायब होता जा रहा था।

कुछ ही देर में क्रिस्टी ने इलियड के पन्नों से सूर्य को मिटा दिया। सूर्य को मिटाते ही पन्नों में स्वतः ही एक चंद्रमा की आकृति बन गई।

इसी के साथ ट्रॉय शहर के ऊपर भी चंद्रमा उग गया और अपनी चाँदी सी चमक चारो ओर बिखेरने लगा।

क्रिस्टी अब पत्थर से उतर गई और उसने एक बार फिर से होमर की ने प्लेट से 'E' अक्षर को निकालने की कोशिश की।

पहली ही कोशिश में 'E' अक्षर क्रिस्टी के हाथ में आ गया। क्रिस्टी ने यह अक्षर भी राजकुमार पेरिस की नेम प्लेट पर लगा दिया।

'E' अक्षर के लगते ही अचानक ट्रोजन हार्स का दरवाजा खुला और उसमें से ग्रीस के सैनिक बाहर निकलने लगे।

ट्रोजन हार्स से निकलते ही सारे सैनिक तलवार लेकर ट्रॉय शहर के अंदर प्रवेश कर गये। शहर के अंदर से अब युद्ध की तेज आवाजें आने लगीं थीं।

अब क्रिस्टी की निगाहें अपने चारो ओर 'X' अक्षर के लिये घूमने लगीं। 'X' अक्षर पोलक्स की नेम प्लेट पर चमक रहा था।

क्रिस्टी ने भागकर वह अक्षर भी निकाल लिया। इस अक्षर को निकालने में क्रिस्टी को किसी भी प्रकार की परेशानी नहीं हुई?

चूंकि ‘X’ आखिरी अक्षर था, इसलिये जैसे ही क्रिस्टी ने उसे पेरिस की नेम प्लेट पर लगाया, वातावरण में एक ‘खटाक’ की आवाज उभरी।

तभी क्रिस्टी ने देखा कि पेरिस की नेम प्लेट के नीचे की ओर एक सुराख उत्पन्न हो गया है। ध्यान से देखने पर पता चला कि वह किसी चाबी के लगने वाला स्थान है?

अब क्रिस्टी की नजरें अपने आसपास किसी चाबी को ढूंढने लगीं।

चारो ओर देखने के बाद क्रिस्टी की नजर देवी एफ्रोडाइट की मूर्ति पर जाकर टिक गईं। मूर्ति के गले में एक हार दिखाई दे रहा था, जिसके अंत में पेंडेंट की जगह एक चाबी लटक रही थी।

अब सवाल यह था कि एफ्रोडाइट की मूर्ति की ऊंचाई 20 फुट थी और मूर्ति पर चढ़ने के लिये क्रिस्टी को अपने आसपास कुछ नजर नहीं आ रहा था?

मूर्ति के हाथ में पकड़े मटके की भी ऊंचाई 15 फुट थी। बिना किसी चीज की मदद के इतना ऊंचा भी उछल पाना संभव नहीं था?

“चाबी तक पहुंचने के लिये मुझे कैसे भी मटके तक पहुंचना होगा? अगर मैं मटके तक पहुंच गई, तो उस पर खड़े होकर मैं चाबी को आराम से पा लूंगी। .... पर कैसे? मुझे इस 15 फुट ऊंचे मटके तक पहुंचने के लिये भी किसी रस्सी या फिर 10 फुट ऊंचे पोल का सहारा चाहिये होगा?”

क्रिस्टी ने अब अपने चारो ओर देखा। अब क्रिस्टी की नजर पोलक्स के हाथ में पकड़े भाले की ओर गई। वह भाला किसी पोल की ही तरह प्रतीत हो रहा था।

क्रिस्टी अब पोलक्स के पास पहुंच गई और उसने पोलक्स के हाथ से वह भाला निकाल लिया। भाला निकालते ही क्रिस्टी को वह भाला किसी पोल वाल्ट की तरह लचीला प्रतीत हुआ।

यह देख क्रिस्टी बहुत खुश हो गई और उसने भाले का आगे वाला नुकीला भाग, निकालकर फेंक दिया और उस भाले को लेकर एफ्रोडाइट की मूर्ति के पास आ गई।

अब वह भाला एक 10 फुट के पोल के समान बन गया था। क्रिस्टी ने भाले के लचीलेपन को एक बार जांच लिया और फिर उसे लेकर एफ्रोडाइट की मूर्ति से कुछ दूरी पर आ गई।

क्रिस्टी अब छलांग लगाने के लिये पूरी तरह से तैयार थी, पर क्रिस्टी यह भी ध्यान रख रही थी कि मटके पर कूदते समय कहीं उसका बैलेंस ना बिगड़ जाये, क्योंकि उस पात्र का मुंह काफी बड़ा था और उसमें हजारों बिच्छू भरे थे।

आखिरकार क्रिस्टी ने रास्ते और पोल की लंबाई को नापा और फिर पोल को आगे कर एफ्रोडाइट की मूर्ति की ओर दौड़ पड़ी।

जब मूर्ति से क्रिस्टी की दूरी 12 फुट की बची, तो क्रिस्टी ने पोल का अगला किनारा जमीन में फंसाया और पोल को ऊपर की ओर सीधा करते हुए अपना शरीर हवा में छोड़ दिया।

अब क्रिस्टी का शरीर किसी कुशल जिमनास्टिक चैंपियन की तरह, हवा में उड़ता हुआ, मटके के ऊपर पहुंच गया।

पर मटके का किनारा ज्यादा मोटा नहीं था, जिसके कारण ऊपर पहुंचते ही क्रिस्टी का पैर फिसला। क्रिस्टी को लगा कि अब वह अपना बैलेंस नहीं बनाकर रख पायेगी। यह सोच दिमाग में आते ही क्रिस्टी ने तुरंत चाबी की ओर छलांग लगा दी।

क्रिस्टी का पूरा शरीर हवा में था। जैसे ही क्रिस्टी के हाथ एफ्रोडाइट के गले में लटक रही चाबी को छुए, क्रिस्टी ने चाबी को अपनी ओर खींच लिया।

चाबी एफ्रोडाइट के गले से निकलकर क्रिस्टी के हाथों में आ गई, पर अब क्रिस्टी अपना बैलेंस नहीं संभाल पाई और वह मूर्ति के नीचे की ओर गिरने लगी।

इसी घबराहट में चाबी क्रिस्टी के हाथ से निकलकर, उस मटके में जा गिरी, पर चूंकि अब चाबी क्रिस्टी के हाथ से निकल गई थी, जिसकी वजह से क्रिस्टी के दोनों हाथ खाली हो गये थे इसलिये क्रिस्टी अब अपने दोनों हाथों से, एफ्रोडाइट की दाहिनी बांह पकड़कर लटक गई।

इस तरह से क्रिस्टी ने अब स्वयं को चोट लगने से तो बचा लिया, पर चाबी के पात्र में गिरने की वजह से वह अब स्वयं पर गुस्सा हो रही थी।

क्रिस्टी अब छलांग लगाकर मूर्ति से नीचे उतर आई। अब उसके सामने बहुत ही विकराल समस्या थी, कि वह मटके में कैसे घुसकर उसमें से चाबी निकाले?

इस बार क्रिस्टी थोड़ा सा हताश हो गई क्योंकि उसने मटके में मौजूद बिच्छुओं के डंक का असर अनुभव कर लिया था।

“अब यह कार्य बिल्कुल असंभव है, मटके में प्रवेश करना तो किसी भी प्रकार से संभव नहीं है? ..... क्या करुं? .... हे भगवान ... अब तुम ही रास्ता दिखाओ। .... पर .... पर मैं ऐसे हार कैसे सकती हूं? .... क्योंकि अगर मैं हार गई तो मेरे यहां से निकलने की उम्मीद बिल्कुल समाप्त हो जायेगी .... नहीं ..... नहीं क्रिस्टी ... तुम्हें कुछ करना होगा? ... और मटके से चाबी निकालने के लिये, उसमें प्रवेश करना जरुरी तो नहीं है? ..... तो क्या कोई ऐसा रास्ता भी हो सकता है, जिससे मैं बिना उस मटके में प्रवेश किए ही चाबी को बाहर निकाल सकूं?” क्रिस्टी लगातार स्वयं से बातें करते खुद को उत्साहित करने की कोशिश कर रही थी।

तभी क्रिस्टी की नजर हेलेन के हाथ में थमी डोरी की ओर गई। क्रिस्टी ने उठकर डोरी को हेलेन के हाथ से निकाल लिया। अब उसे एक हुक और एक टार्च की जरुरत थी। अब ऐसी पौराणिक जगह पर टार्च मिलने की संभावना तो बिल्कुल भी नहीं थी, पर कैश्वर के होते हुए कुछ भी संभव हो सकता था?

काफी देर तक ढूंढने के बाद भी क्रिस्टी को ना तो हुक मिला और ना ही टार्च।

“क्या छिपाया है कैश्वर ने यहां पर? जो मुझे मिल ही नहीं पा रहा। ... एक बार शुरु से सोचती हूं ... केस्टर के नाम से कैस्टर ऑयल का मिलना .... पाल्मा क्रिस्टी से मेरा नाम मिलना और पोलक्स के नाम से पोल का मिलना .... कहीं पोलक्स के नाम में और कोई अर्थ तो नहीं छिपा? .... पोल? .... हां पोल से और क्या चीज हो सकती है? ... पोल ... पोल ... अरे हां ... साउथ पोल और नार्थ पोल .... पर यह तो चुम्बक में पाये जाते हैं .... अरे हां वह चाबी भी तो लोहे की थी .... तो ... तो अगर मुझे कहीं

से चुम्बक मिल जाये? तो बिना मटके में देखे ही आसानी से चाबी को बाहर निकाला जा सकता है। पर ... पर ... यहां चुम्बक कहां से मिलेगा?”

तभी क्रिस्टी की नजर पोलक्स के घोड़े की ओर गई, जिसके पैर हवा में उठे थे, और उसके खुर के स्थान पर कोई चीज चमक रही थी। यह देख क्रिस्टी के चेहरे पर मुस्कान आ गई। अब भला हार्स शू से अच्छा चुम्बक और कहां मिलता?

यह सोच क्रिस्टी तेजी से पोलक्स के घोड़े के पैरों की नाल के पास पहुंच गई।

कुछ ही मेहनत के बाद क्रिस्टी ने उस ‘U’ आकार के चुम्बक को घोड़े के पैर से निकाल लिया और उसे अपने हाथ में पकड़ी डोरी के एक सिरे से मजबूती से बांध लिया।

कुछ ही देर में क्रिस्टी फिर से एफ्रोडाइट की मूर्ति के हाथ में पकड़े मटके पर खड़ी थी। क्रिस्टी ने अपने दोनों पैरों को मटके के दो ओर रखा था। इस बार उसने अपना बैलेंस ठीक से बनाया था।

अब क्रिस्टी ने अपने हाथ में पकड़ी डोरी का एक सिरा कसकर पकड़ा और चुम्बक वाला सिरा, धीरे-धीरे मटके के अंदर लटकाना शुरु कर दिया।

कुछ ही मेहनत के बाद मटके के अंदर से एक ‘खटाक’ की आवाज उभरी, जो इस बात का संकेत थी कि चुम्बक ने चाबी को चिपका लिया है।

अब क्रिस्टी ने धीरे-धीरे डोरी को ऊपर की ओर खींचना शुरु कर दिया। कुछ ही देर में क्रिस्टी ने चुम्बक को ऊपर निकाल लिया। चुम्बक में चिपकी चाबी साफ दिखाई दे रही थी।

अब क्रिस्टी धीरे-धीरे मटके से नीचे उतरी और उसने चाबी को पेरिस की मूर्ति के नेम प्लेट के नीचे बने सुराख में डालकर घुमा दिया।

जैसे ही क्रिस्टी ने चाबी को घुमाया ‘कट्-कट्’ की आवाज के साथ पेरिस की मूर्ति हर ओर से चिटकने लगी।

क्रिस्टी यह देखकर थोड़ा पीछे हट गई। उसे लगा कि शायद अब कोई नई मुसीबत आने वाली है?

कुछ ही देर में मूर्ति किसी कवच की भांति चारो ओर से टूटकर बिखर गई और उस मूर्ति के अंदर से एक सजीव इंसान बाहर निकला, जो कि शत्-प्रतिशत ऐलेक्स था।

मूर्ति से ऐलेक्स को बाहर निकलता देख, क्रिस्टी भागकर ऐलेक्स के गले लग गई।

क्रिस्टी की आँखों से लगातार आँसू निकल रहे थे। ऐलेक्स ने भी कसकर क्रिस्टी को गले से लगा रखा था। बड़ा ही भावपूर्ण दृश्य था। कुछ देर तक दोनों बिना किसी से कुछ बोले ऐसे ही गले लगे रहे, फिर क्रिस्टी धीरे से ऐलेक्स से अलग हो गई।

“बहुत-बहुत धन्यवाद इंद्राक्ष। मैं तुम्हारा अहसान जिंदगी भर नहीं भूलूंगी।” क्रिस्टी ने अपना सिर आसमान की ओर उठाते हुए कहा।

“यह इंद्राक्ष कौन है?” ऐलेक्स ने मुस्कुराते हुए पूछा- “मेरे मरते ही तुमने कोई दूसरा ब्वायफ्रेंड बना लिया था क्या?”

यह सुनकर क्रिस्टी ने अपने हाथ का बनावटी मुक्का बनाकर ऐलेक्स के पेट में मार दिया- “हां बना लिया था, पर तू फिर से वापस आ गया, इसीलिये उससे ब्रेकअप कर रही थी। सारा मामला बिगाड़ दिया तूने जिंदा होकर।”

यह कहकर क्रिस्टी ने मुस्कुराते हुए ऐलेक्स को पूरी बात बता दी। ऐलेक्स ने भी क्रिस्टी को अपने तिलिस्म की कहानी सुना दी।

तभी क्रिस्टी को एफ्रोडाइट की मूर्ति के नीचे एक बड़ा सा द्वार बना नजर आया। अब वह ऐलेक्स को लेकर उस द्वार में प्रवेश कर गई।

वह द्वार जिस स्थान पर निकला, वहां तौफीक व जेनिथ पहले से ही बैठे थे। तौफीक को जिंदा देख क्रिस्टी की खुशी का ठिकाना ना रहा। ठीक वैसा ही हाल जेनिथ का ऐलेक्स को देखकर हुआ।

सभी अब आपस में मिलकर काफी खुश दिखाई दे रहे थे।

जेनिथ ने क्रिस्टी को गले से लगा लिया- “मुझे पता है कि तुमने ही इंद्राक्ष से वरदान मांगकर तौफीक और ऐलेक्स को बचाया है। अब तो दोनों मिल भी गये। कम से कम अब तो बता दो अपने वरदान के बारे में?”

क्रिस्टी ने जेनिथ को भी इंद्राक्ष के वरदान के बारे में बता दिया।

अब सभी खुशी-खुशी सुयश और शैफाली के वहां पहुंचने का इंतजार करने लगे।

◆ ◆ ◆

ब्रह्मपात्र

27.01.2002, रविवार, राक्षसताल, हिमालय

राक्षसताल का आकार चंद्रमा के समान प्रतीत हो रहा था। राक्षसताल का स्वच्छ पानी चाँदी के समान चमचमा रहा था।

व्योम, विद्युम्ना से प्रथम चरण के युद्ध को समाप्त कर चुका था। अब विद्युम्ना को पराजित करने के लिये 2 चरण का युद्ध और शेष बचा था। यदि व्योम इन 2 चरणों में भी विद्युम्ना को पराजित कर देता, तो वह त्रिकाली के माता-पिता को विद्युम्ना के भ्रमन्तिका से छुड़ा सकता था।

वैसे व्योम स्वयं भी अपने अंदर की शक्तियों से आश्चर्य में था। विद्युम्ना के साथ युद्ध के प्रथम चरण में व्योम को माँ गंगा और सूर्यदेव की शक्तियों का भी पता चल गया था।

व्योम जानता था कि विद्युम्ना बहुत ही खतरनाक है, वह उसे हराने के लिये किसी भी शक्ति का प्रयोग कर सकती है? परंतु जिस समय व्योम के पास कोई शक्ति नहीं थी, वह तो तब भी नहीं घबराया था, फिर इस समय की तो बात ही अलग थी।

तभी त्रिकाली ने व्योम का हाथ पकड़कर हिलाते हुए कहा- "कहां खो गये व्योम? क्या सोच रहे हो?"

त्रिकाली के हिलाने से व्योम अपने ख्यालों से बाहर आ गया और त्रिकाली को देख मुस्कुराते हुए कहा- "मैं यह सोच रहा था कि कहीं विद्युम्ना मुझे मारने के लिये किसी स्वर्ग की अप्सरा को ना भेज दे? और मैं उसके सौंदर्य में फंस जाऊं। ऐसी स्थिति तो बहुत ही विकट होगी।"

व्योम ने जानबूझकर त्रिकाली को छेड़ते हुए कहा।

व्योम के शब्द सुनकर त्रिकाली ने व्योम को घूरकर देखा और तेज से उसकी दाहिनी बांह में चुटकी काटते हुए कहा- "फिर मैं तुम्हें ऐसे ही चुटकी काटकर उसके सौंदर्यजाल से बाहर ले आऊंगी।"

व्योम ने चिहुंककर अपनी बांह को देखा और फिर मुंह बनाते हुए कहा- "तुम्हारी चुटकी तो शेषनाग के विष से भी ज्यादा जहरीली है, देखो

मेरे हाथ पर गहरा निशान पड़ गया।”

“इस बार किसी सुंदरी की बात की तो तुम्हारे चेहरे पर पंजा भी मार दूंगी।” त्रिकाली ने अपने दाहिने हाथ का पंजा फैलाते हुए व्योम की ओर लहराया।

“ठीक है पत्नि जी, अब मैं तुम्हारे सिवा किसी भी सुंदरी की बात नहीं करुंगा, पर .... पर अपना यह भयानक पंजा मेरे चेहरे पर मत मारना।” व्योम ने डरने का अभिनय करते हुए कहा।

व्योम के अभिनय को देख त्रिकाली के होंठों पर एक प्यार भरी मुस्कान बिखर गई। अब उसने व्योम का हाथ पकड़ा और उसे लेकर राक्षसताल के अंदर की ओर चल दी।

दोनों ने ही राक्षसताल के पानी के अंदर प्रवेश किया।

राक्षसताल का पानी बिल्कुल खारा था। दोनों का ही मुंह नमकीन पानी से भर गया, फिर भी दोनों राक्षसताल की गहराई की ओर चल दिये।

इस समय व्योम पूरी तरह से सावधान नजर आ रहा था। कुछ ही देर में दोनों राक्षसताल की तली तक पहुंच गये। राक्षसताल की तली के अंदर एक पर्वत श्रृंखला डूबी हुई थी।

त्रिकाली तो पानी में साँस लेना जानती थी, पर इस समय माँ गंगा के कारण व्योम को भी पानी में साँस लेने में कोई परेशानी नहीं हो रही थी।

पर्वत की ऊंची-ऊंची चोटियां पानी के अंदर एक विचित्र दृश्य प्रस्तुत कर रहीं थीं।

व्योम अंदाज से त्रिकाली को लेकर एक दिशा की ओर बढ़ गया।

कुछ आगे चलने के बाद व्योम को पानी में उगी हुई घास की एक लंबी श्रृंखला दिखाई दी, जो कि एक बहुत बड़े से क्षेत्र में किसी भूल-भुलैया की मानिंद चारो ओर फैली थी।

व्योम ने त्रिकाली का हाथ थामा और पानी में तैरते हुए उस घास की भूल-भुलैया को पार करने की कोशिश की, पर अचानक से व्योम को उस पानी में, घास की भूल-भुलैया के ऊपर एक अदृश्य दीवार दिखाई दी।

व्योम जब त्रिकाली से पानी के अंदर बात कर रहा था तो उसके मुंह से बुलबुले निकल रहे थे, पर फिर भी व्योम की आवाज त्रिकाली को बिल्कुल साफ सुनाई दे रही थी।

“सामने तो अदृश्य दीवार है। लगता है कि हमें इस भूल-भुलैया को इस झील की तली पर चलकर पार करना होगा?” त्रिकाली ने व्योम की ओर देखते हुए कहा- “पर जाने क्यों मुझे ऐसा लग रहा है कि तली पर चलने में अवश्य ही किसी प्रकार का खतरा होगा? विद्युम्ना ने अवश्य ही यहां पर किसी प्रकार का जाल बिछाया होगा?”

व्योम ने त्रिकाली की बात सुन सहमति से अपना सिर हिलाया, पर उसकी नजर अभी भी उस भूल-भुलैया के मुख्य द्वार की ओर थी, जो कि घास से ही निर्मित नजर आ रहा था।

अब दोनों ही तैरना छोड़ झील की तली पर आकर खड़े हो गये।

व्योम के एक इशारे पर त्रिकाली, व्योम के साथ उस भूल-भुलैया में प्रवेश कर गई।

चारो ओर से लहराती हुई घास उस पूरे रास्ते को रहस्यमई बना रही थी। व्योम और त्रिकाली भूल-भुलैया के आड़े-टेढ़े रास्ते पर सावधान होकर धीरे-धीरे आगे बढ़ रहे थे।

कुछ आगे जाने पर व्योम को पानी में एक छोटा सा बुलबुला नजर आया। व्योम ने अपने हाथों की उंगलियों से उस बुलबुले को फोड़ दिया।

बुलबुले के फूटते ही व्योम के सामने एक जोर का धमाका हुआ और व्योम के हाथ की खाल पूरी झुलस गई। यह तो भला हो कि त्रिकाली व्योम के पीछे थी, इसलिये उस पर इस धमाके का कोई प्रभाव नहीं पड़ा।

“व्योमऽऽऽऽऽऽ।” त्रिकाली चीखकर व्योम के पास आ गई। तभी माँ गंगा की बूंद ने व्योम को सही कर दिया। यह देख त्रिकाली की जान में जान आई।

परंतु अब व्योम और भी ज्यादा सावधान नजर आने लगा। दोनों फिर से आगे की ओर बढ़ गए। तभी व्योम को कुछ आगे वैसे ही 4 बुलबुले पानी में नजर आए, जो कि आकार में भी पिछले बुलबुले से बड़े थे।

यह देख व्योम ने त्रिकाली को तुरंत अपने पीछे कर लिया।

अब व्योम के हाथ में पंचशूल नजर आने लगा। व्योम ने इस बार दूर से ही पंचशूल को उन बुलबुलों की ओर उछाल दिया।

जैसे ही पंचशूल उन बुलबुलों से टकराया, एक के बाद एक करते 4 जोरदार धमाके हुए, पर इस बार सूर्य की किरणों ने व्योम के आगे एक बार फिर से कवच का निर्माण कर दिया।

व्योम और त्रिकाली उस कवच के पीछे पूरी तरह से सुरक्षित थे। दोनों फिर आगे की ओर बढ़ गए। पर अब हर थोड़ी देर में उन्हें कुछ ना कुछ बुलबुले दिखाई दे रहे थे।

व्योम या तो अपना मार्ग बदल कर या फिर उन बुलबुलों को फोड़कर आगे बढ़ता जा रहा था। यह सिलसिला लगातार जारी था। पर जब काफी देर के बाद भी व्योम को बाहर निकलने का रास्ता नहीं मिला, तो व्योम एक जगह पर रुककर त्रिकाली को देखने लगा।

“मुझे लग रहा है कि यह कोई भूल-भुलैया है, जिससे निकलने का रास्ता कहीं और है? हम इस प्रकार से चलते हुए इस भूल-भुलैया से नहीं निकल सकते।” व्योम के आँखों में इस समय सोचने वाले भाव थे।

“तुम सही कह रहे हो व्योम।” त्रिकाली ने भी व्योम की बातों का समर्थन करते हुए कहा- “पर इस भूल-भुलैया में इन आड़े-टेढ़े रास्तों के अलावा और कुछ तो है भी नहीं। यहां तक कि हम इस भूल-भुलैया के ऊपर से तैर कर भी नहीं जा सकते, फिर हम इस भूल-भुलैया को कैसे पार कर पायेंगे?”

व्योम ने त्रिकाली की बात को सुना, पर इस समय उसका सारा ध्यान उस भूल-भुलैया की लहराती हुई हरी घास की ओर था, जिससे भूल-भुलैया की दीवारों का निर्माण किया गया था।

कुछ सोचने के बाद व्योम ने एक स्थान से उस हरी घास को स्पर्श किया। पर यह क्या? जैसे ही व्योम ने उस हरी घास को स्पर्श किया, उस घास ने व्योम को अपने अंदर खींचकर समाहित कर लिया।

व्योम को घास के अंदर घुसते देखकर, त्रिकाली ने भी उस हरी घास को स्पर्श कर लिया। त्रिकाली के साथ भी वही हुआ, जो व्योम के साथ

हुआ था। अब त्रिकाली भी घास के अंदर समा गई।

घास के अंदर व्योम और त्रिकाली फिर से मिल गये। पर आश्चर्य की बात यह थी कि उस घास के अंदर भी एक रास्ता बना था।

यह देख त्रिकाली के चेहरे पर एक मुस्कान आ गई। वह समझ गई कि अंजाने में ही व्योम ने उस छिपे हुए रास्ते को ढूंढ लिया, जो कि शायद इस भूल-भुलैया से निकलने का एक मात्र रास्ता था।

तभी उस घास के एक जगह से उन्हें एक पीले रंग की प्रकाश की किरण दिखाई दी। व्योम आगे बढ़कर उस विचित्र प्रकाश को देखने लगा, पर तभी घास के उस स्थान से एक हरे रंग की मछली निकल कर सामने आ गई, जिसका आकार 6 इंच का था।

उस हरी मछली का रंग घास के रंग से इतना ज्यादा मिल रहा था कि उसके रंग के कारण ही वह मछली पहले व्योम को दिखाई नहीं दी थी।

उस मछली के सिर एक गोल बल्ब के समान आकृति बनी थी, उसी आकृति से तेज पीले रंग का प्रकाश निकल रहा था। उसे देख कर ऐसा लग रहा था कि मानों उस मछली के सिर पर किसी ने पीले रंग का बल्ब फिट कर दिया हो।

उस मछली ने घूरकर दोनों को देखा और फिर तेजी से तैरती हुई पानी में आगे की ओर जाने लगी।

यह देख व्योम ने त्रिकाली का हाथ थामा और उस मछली के पीछे-पीछे चल दिया।

ऐसा लग रहा था कि जैसे उस मछली को वहां पर रास्ता दिखाने के लिये ही रखा गया हो।

रास्ते में किसी भी प्रकार की कोई मुसीबत नहीं आई। कुछ ही देर के बाद वह रहस्यमई भूल-भुलैया समाप्त होती दिखाई दी। यह देख दोनों ने ही राहत की साँस ली।

जिस स्थान पर भूल-भुलैया समाप्त हो रही थी, उस स्थान पर घास में एक गोल रिक्त स्थान बना था। हरी मछली उस रिक्त स्थान से होती हुई बाहर की ओर निकल गई।

मछली को बाहर निकलते देख व्योम भी त्रिकाली के साथ उस स्थान से बाहर निकल गया। पर बाहर निकलने के बाद व्योम को वह हरी मछली कहीं दिखाई नहीं दी?

दोनों एक बार फिर पानी में तैरते हुए आगे की ओर बढ़ चले।

कुछ आगे जाने के बाद व्योम को सामने की ओर से आती हुई 1 फुट की कुछ गोल लाल रंग की मछलियां दिखाईं दीं।

सभी मछलियों के शरीर पर लंबे-लंबे काँटे निकले हुए थे। उन मछलियों की आंखें भी उनके शरीर की अपेक्षा कुछ बड़ी लग रही थीं।

“सावधान त्रिकाली, यह मछलियां विद्युम्ना का भेजा हुआ कोई जाल भी हो सकती हैं? ... इसलिये इन मछलियों को अपने शरीर से छूने मत देना। हो सकता है कि यह जहरीली भी हों?” व्योम ने त्रिकाली को सावधान करते हुए कहा।

वैसे व्योम की बात सुनने के पहले ही त्रिकाली सावधान हो गई थी।

अब वह मछलियां उनके निकट आ चुकीं थीं, पर किसी भी मछली ने दोनों को कुछ नहीं कहा और वह तैरती हुई दोनों के बगल से निकलने लगीं।

पर जैसे ही कुछ मछलियां त्रिकाली के बगल से निकलीं, उन्होंने पानी में गोल-गोल घूमते हुए त्रिकाली को चारो ओर से घेर लिया।

अब वह मछलियां अपना मुंह खोलकर त्रिकाली को डराते हुए एक दिशा की ओर धक्का देने लगीं। उन्हें देखकर साफ पता चल रहा था कि वह मछलियां त्रिकाली को कोई नुकसान नहीं पहुंचाना चाहतीं, बल्कि उसे व्योम से दूर हटा रहीं हैं।

“लगता है कि विद्युम्ना से युद्ध का दूसरा चरण प्रारम्भ होने वाला है, तभी विद्युम्ना ने जानबूझकर त्रिकाली को दूर हटाया है?” व्योम ने मन ही मन सोचा और त्रिकाली को स्वयं से दूर रहने का इशारा किया।

व्योम का इशारा पाकर त्रिकाली एक बड़े से पहाड़ के नीचे जाकर खड़ी हो गई।

अब वह कंटीली मछलियां त्रिकाली के सामने इस प्रकार घूमने लगीं, मानों वह त्रिकाली के लिये पहरा दे रही हों।

तभी त्रिकाली को समुद्र के मध्य स्थित एक पहाड़ में कुछ हलचल होती हुई सी महसूस हुई और देखते ही देखते उस पहाड़ ने विशाल विद्युम्ना का आकार ले लिया।

“बहुत अच्छे व्योम, तुम आखिरकार भूल-भुलैया को पारकर यहां तक आ ही पहुंचे, पर अब इससे आगे नहीं बढ़ पाओगे क्योंकि यहां से हमारे युद्ध कर द्वितीय चरण प्रारम्भ होता है।” विद्युम्ना ने व्योम की ओर देखते हुए कहा- “और पूर्ण निर्धारित नियमों के आधार पर तुम्हारी पत्नि इस चरण में भी इस युद्ध में तुम्हारा साथ नहीं दे सकती। ..... पिछले चरण में मैं इसलिये तुमसे हार गई थी क्योंकि मुझे तुम्हारी शक्तियों के बारे में पता नहीं था, परंतु अब मैं तुम्हारी प्रत्येक शक्तियों से भली भाति परिचित हो चुकी हूं। इसलिये इस चरण में तुम्हें मृत्यु से कोई भी नहीं बचा सकता? ... तो फिर तैयार हो जाओ व्योम, मेरे द्वितीय चरण के वार को संभालने के लिये।”

यह कहकर विद्युम्ना ने एक जोर का अठ्ठहास किया और अपने हाथ में पकड़े त्रिसर्पमुखी दंड को हवा में लहराया।

विद्युम्ना के ऐसा करते ही पानी के अंदर एक 50 फुट ऊंचा राक्षस प्रकट हुआ, जिसके 3 सिर और 4 हाथ थे। उस राक्षस ने अपने 2 हाथों से एक बड़ी सी तलवार पकड़ रखी थी। उस तलवार के आखिरी सिरे पर एक गोल सा चक्र लगा हुआ था।

“यह ‘हस्तिका’ है व्योम। यह महादेव के त्रिसर्पमुखी दंड से निकला है, इसलिये इस पर किसी भी प्रकार के दिव्यास्त्र का कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा, इसे तुम सिर्फ अपने बाहुबल से ही हरा सकते हो।” विद्युम्ना ने कहा- “और यकीन मानो शारीरिक शक्ति के मुकाबले में तुम इसके समक्ष नगण्य ही महसूस करोगे। ... तो फिर अब मुझे देखना है व्योम कि तुम इस हस्तिका को किस प्रकार पराजित करोगे? .... जाओ हस्तिका तुम्हारा शिकार तुम्हारे सामने है।”

विद्युम्ना की बात सुन हस्तिका ने घूरकर व्योम के देखा और फिर अपनी बाकी की 2 भुजाओं को अपने कंधों की ओर मोड़कर, तेज गर्जना

करते हुए, व्योम के सामने अपना शक्ति प्रदर्शन किया।

हस्तिका की गर्जना और विद्युम्ना की बातें सुन त्रिकाली एक पल को कांप सी गई, पर फिर उसने अपने मन को कड़ा किया और व्योम की ओर बढ़ते हस्तिका को देखने लगी।

चूंकि हस्तिका की तलवार काफी लंबी थी, इसलिये व्योम से कुछ दूर रहते हुए हस्तिका ने अपनी तलवार जोर से घुमाई। यह देख व्योम ने पंचशूल को याद किया।

व्योम के याद करते ही चमचमाता हुआ पंचशूल व्योम के हाथों में प्रकट हो गया।

हस्तिका की तलवार के वार को व्योम ने अपने पंचशूल पर रोका, पर जैसे ही हस्तिका की तलवार व्योम के पंचशूल से टकराई, व्योम का पंचशूल अपने स्थान से अदृश्य हो गया।

यह देख व्योम समझ गया कि विद्युम्ना ने सही कहा था, इस हस्तिका से उसे अपने बाहुबल या फिर दिमाग से ही लड़ना होगा।

उधर हस्तिका ने अपनी तलवार का एक और वार व्योम पर कर दिया। व्योम के पास इस वार से बचने के लिये समय नहीं था, इसलिये व्योम ने अपने हाथों को नमस्कार की मुद्रा में किया और हस्तिका की तलवार को अपने दोनों हाथों के मध्य रोक लिया।

हस्तिका अपने वार को इस प्रकार रुकता देख और भी उग्र हो गया। अब वह अपनी पूरी शक्ति से अपनी तलवार का दबाव व्योम की ओर करने लगा। हस्तिका की तलवार धीरे-धीरे व्योम की ओर झुक रही थी, पर व्योम अभी भी इस वार से बचा हुआ था।

यह देख हस्तिका ने पता नहीं क्या किया कि तलवार के अगले भाग में लगा चक्र स्वतः ही तीव्र गति से नाचने लगा।

अब वह चक्र तेजी से व्योम के गले की ओर झुक रहा था, व्योम के सामने अब कोई रास्ता दिखाई नहीं दे रहा था। तभी व्योम ने अपने दाहिने पैर को तेजी से झील की तली पर मारा।

व्योम के ऐसा करते ही धरती में एक जोर का कंपन हुआ और हस्तिका के नीचे की जमीन अपनी जगह से धंस गई और हस्तिका उस धंसी हुई जमीन में सीने तक धंस गया।

अब हस्तिका स्वयं को फंसा महसूस कर रहा था। इसी के साथ तलवार पर हस्तिका की पकड़ ढीली हो गई। इस मौके का फायदा उठाकर व्योम ने हस्तिका की तलवार को उससे छीनकर कुछ दूर फेंक दिया।

उधर हस्तिका ने अपने हाथों का एक जोरदार प्रहार झील की तली पर किया। अब उसके आसपास की जमीन थोड़ी सी और टूट गई, इसी के साथ हस्तिका उस धंसी जमीन से बाहर आ गया।

अब हस्तिका ने अपनी प्रचंड बल का प्रयोग करते हुए एक पहाड़ सरीखी विशाल चट्टान को उखाड़कर अपने चारो हाथों में उठा लिया और उसे व्योम पर फेंक कर मार दिया।

हस्तिका के इस हमले को देख विद्युम्ना के चेहरे पर खुशी झलकने लगी। उसे पता था कि अब व्योम इस प्रहार से बच नहीं पायेगा और उस विशाल चट्टान के नीचे दबकर मारा जायेगा।

पर यह क्या? व्योम ने अपनी ओर आ रही उस भारी चट्टान को हवा में ही पकड़ लिया। यह देख विद्युम्ना की आँखें आश्चर्य से भर उठीं। उसे बिल्कुल उम्मीद नहीं थी कि एक साधारण मनुष्य इतना शक्तिशाली भी हो सकता है।

पर व्योम की इस शक्ति का राज गुरुत्व शक्ति थी, जिसके फलस्वरुप उस विशाल चट्टान का भार व्योम को महसूस ही नहीं हो रहा था।

अब व्योम ने झील की तली पर पड़ी हस्तिका की तलवार को देखा, एक पल में ही व्योम के दिमाग में एक शानदार विचार आया।

व्योम ने अब उस विशाल चट्टान को वापस हस्तिका की ओर उछाल दिया। विशाल चट्टान हस्तिका की ओर बढ़ी, पर चट्टान को हाथ से छोड़ते ही व्योम ने बिजली की तेजी से अपने पैर के पास पड़ी हस्तिका की तलवार को उठा लिया।

उधर हस्तिका ने व्योम की फेंकी चट्टान को अपने चारो हाथों से रोक लिया। तभी व्योम ने हस्तिका के सिर का निशाना लगाकर तलवार भी फेंक

कर मार दी।

हस्तिका ने अपनी ओर आ रही तलवार को देखा और अपने 2 हाथों से तलवार को रोकने की कोशिश करने लगा। उसी समय हस्तिका के बाकी दोनों हाथों से पकड़ी चट्टान का बैलेंस बिगड़ गया और वह नीचे गिरने लगी।

यह देख हस्तिका का ध्यान एक पल के लिये अपने हाथों में पकड़ी चट्टान की ओर गया, इसी एक पल में हस्तिका की तलवार ने हस्तिका का ही सिर उड़ा दिया।

हस्तिका का सिर कटते ही उसके हाथों में पकड़ी चट्टान भी उसके शरीर पर गिर पड़ी और हस्तिका का शरीर उसके नीचे दब गया।

यह देख विद्युम्ना ने बिना देर किये फिर त्रिसर्पमुखी दंड को हवा में लहराया।

विद्युम्ना के ऐसा करते ही त्रिसर्पमुखी दंड से एक लाल रंग की किरणें निकलीं और वहां पानी में एक लाल रंग का प्रकाश पिंड नजर आने लगा।

विद्युम्ना के ऐसा करते ही त्रिकाली के पास तैर रही सभी कंटीली मछलियां उस लाल रंग के प्रकाश पिंड में प्रवेश करने लगीं।

यह देख त्रिकाली एक अंजानी आशंका से घबरा उठी, पर व्योम अब भी शांत मन से, पानी में एक स्थान पर खड़ा होकर उस अद्भुत दृश्य को निहार रहा था, पर व्योम मन ही मन इस समय भी सतर्क था।

जैसे ही सभी मछलियों ने लाल रंग के प्रकाश पिंड में प्रवेश किया, वह प्रकाश पिंड अपने स्थान पर तेजी से नाचने लगा और व्योम के देखते ही देखते वह प्रकाश पिंड एक कंटीले, लाल रंग के ठोस पिंड में परिवर्तित हो गया।

“यह ‘रक्तकंट’ है व्योम, यह इस त्रिसर्पमुखी दंड की बल शक्ति से निर्मित है, जल के अंदर इसे कोई भी हरा नहीं सकता। अब तुम मरने के लिये तैयार हो जाओ।” विद्युम्ना ने व्योम को देख हंसते हुए कहा।

इसी के साथ रक्तकंट तेजी से व्योम की ओर लपका। व्योम ने रक्तकंट को अपनी ओर आता देख एक ओर छलांग मार दी। पर बचते-

बचते भी रक्तकंट व्योम के बांए हाथ को छूता हुआ निकल गया।

जिसके फलस्वरुप व्योम के बांए हाथ पर जख्म बन गया। उस जख्म में ना जाने ऐसा क्या था कि देवी गंगा भी उसे सही नहीं कर पा रहीं थीं। उस जख्म से खून की कुछ बूंदें निकलकर झील के पानी में मिलने लगीं।

व्योम के शरीर से निकली रक्त की हर बूंद, स्वतः ही खिंचकर उस रक्तकंट में समा रही थी। यह देख व्योम और त्रिकाली दोनों के ही चेहरे आश्चर्य से भर उठे, पर विद्युम्ना के चेहरे पर भरपूर मुस्कान थी।

“माँ गंगा, मेरे शरीर का घाव भर क्यों नहीं रहा है?” व्योम ने मन ही मन देवी गंगा से पूछा।

“पुत्र व्योम, रक्तकंट स्वयं महादेव की शक्तियों से निर्मित है, यह तुम्हारे जिस हिस्से पर घाव कर रहा है, उस हिस्से पर एक विचित्र प्रकार के जहर का लेप लगा रहा था, जिसके कारण मेरी जीवनदायिनी शक्ति तुम्हारे उस घाव के पास पहुंच ही नहीं पा रही है। इसी कारण से मैं तुम्हारे शरीर के घाव को भर पाने में असमर्थ हूं पुत्र। .... लगता है इस रक्तकंट से तुम्हें बिना मेरी सहायता के ही निपटना होगा।”

देवी गंगा के शब्दों को सुन व्योम के चेहरे पर चिंता के भाव आ गये।

तभी रक्तकंट पलटकर एक बार फिर व्योम की ओर लपका और इस बार उसके सीने पर घाव को बनाता हुआ आगे की ओर चला गया।

त्रिकाली भी इस समय व्योम को असहाय सा महसूस कर रही थी, पर नियमों में बंधे होने की वजह से वह व्योम की मदद भी नहीं कर सकती थी।

तभी रक्तकंट ने व्योम पर एक वार और कर दिया। इस बार व्योम को अपनी शक्ति क्षीण होती महसूस हुई।

अब व्योम ने पंचशूल को याद किया, पर पंचशूल को भी प्रकट होते ना देख व्योम ने सूर्यदेव का आहवान किया- “हे सूर्यदेव, क्या आप भी मुझे इस रक्तकंट से नहीं बचा सकते?”

“पुत्र व्योम, मैं और मेरा कवच दोनों ही महादेव की शक्ति के समक्ष असहाय हैं। मैं स्वयं इस समय तुम्हें बचा नहीं सकता, पर मैं तुम्हें इसे रक्तकंट से बचने का मार्ग अवश्य बता सकता हूं।” सूर्यदेव ने व्योम के मन में कहा।

“तो शीघ्र बताइये सूर्यदेव क्योंकि अब मैं इस रक्तकंट का सामना ज्यादा देर नहीं कर सकता।” व्योम ने रक्तकंट के एक और वार को अपने पीठ पर झेलते हुए कहा।

“इस रक्तकंट को पानी में नहीं मारा जा सकता पुत्र।” सूर्यदेव ने कहा- “इसलिये तुम्हें ‘ब्रह्मपात्र’ का आहवान करना होगा। अब वही तुम्हें इस संकट से बचा सकता है। .... शीघ्रता करो पुत्र ... अपने मुख से ब्रह्मपात्र का आहवान करो।”

व्योम को सूर्यदेव के शब्द समझ नहीं आये, पर अभी कुछ भी समझने का समय नहीं था क्योंकि व्योम के शरीर से काफी रक्त निकल चुका था। इसलिये व्योम ने बिना देर किये अपने मुख से तेज आवाज निकाली- “ब्रह्मपात्र”

व्योम के मुख से आवाज निकलते ही न्यूयार्क में स्थित ‘फोर्ट ट्रायन पार्क’ में पड़ी अमृत की शीशी अपने हवा में उठी और बिजली की तेजी के साथ हिमालय की ओर चल दी।

जी हाँ यह वही शीशी थी, जिसमें अमृत भरा था .... जिसे आर्यन ने व्योम को अष्टकोण में बंद करते समय उसके पास रखी थी .... जिसे लगभग 5000 वर्षों तक नन्हें व्योम ने अपने हाथों में पकड़ रखा था .... जो ब्रह्मपात्र के रुप में ब्रह्मकण की शक्ति का परिचायक थी .... जिसे स्वयं ब्रह्मदेव ने अपने हाथों से तैयार कर आर्यन को दिया था।

इस समय ब्रह्मपात्र की गति इतनी तेज थी कि ऐसा लग रहा था कि ब्रह्मपात्र सूर्य की किरणों पर बैठकर व्योम की ओर आ रहा हो।

कुछ ही पलों में ब्रह्मपात्र राक्षसताल के ऊपर पहुंच गया। ब्रह्मपात्र अभी भी रुका नहीं था, वह राक्षसताल के पानी को पार करता हुआ अब व्योम के सामने था।

पानी में तेजी से लहराती उस सुनहरी शीशी को देख व्योम आश्चर्य में पड़ गया।

तभी ब्रह्मपात्र का ढक्कन स्वतः ही ब्रह्मपात्र से अलग हुआ और अपना आकार बढ़ाने लगा। कुछ ही देर में ब्रह्मपात्र का ढक्कन एक विशाल ढाल के समान दिखाई देने लगा और इस बार जैसे रक्तकंट ने व्योम पर हमला किया, वह व्योम के आगे ढाल बनकर खड़ा हो गया।

व्योम इस बार रक्तकंट के वार से बच गया। यह देख त्रिकाली की आँखों में खुशी के आँसू आ गये। वह समझ गई कि अब व्योम को कुछ नहीं होगा।

अब रक्तकंट ने अपनी गति को बढ़ा दिया, पर वह जितनी बार व्योम पर हमला करता, ब्रह्मपात्र का विशाल ढक्कन एक अभेद्य ढाल की तरह से व्योम को बचा लेता।

“अब तो बता दीजिये सूर्यदेव की यह ब्रह्मपात्र क्या है? और मेरे पुकारने पर यह कहां से आ गया?” व्योम ने अपने मन की जिज्ञासा को शांत करने के उद्देश्य से पूछा।

“तुम्हारे पिता ने 5000 वर्ष पहले तुम्हें इसी ब्रह्मपात्र के साथ एक अष्टकोण के कवच में रखकर धरती के अंदर छिपा दिया था।” सूर्यदेव ने रहस्योद्घाटन करते हुए कहा।

“मेरे पिता ने!” व्योम ने आश्चर्य व्यक्त करते हुए कहा- “पर मेरे पिता महेन्द्र शर्मा तो एक साधारण व्यक्ति हैं, वह कैसे मुझे 5000 वर्ष पहले अष्टकोण में रख सकते हैं?”

“नहीं व्योम, महेन्द्र शर्मा तुम्हारे असली पिता नहीं हैं। तुम्हारे असली पिता का नाम आर्यन था, जो कि बहुत ही शक्तिशाली और वीर योद्धा था। महेन्द्र शर्मा ने तो तुम्हें जमीन के अंदर दबे अष्टकोण के कवच से प्राप्त किया था। यकीन मानो तुम एक देवपुत्र हो और यही वजह है कि तुम्हें नियति ने इतने दिव्यास्त्र प्रदान किये हैं।” सूर्यदेव ने कहा- “पर अब तुम इस युद्ध पर ध्यान दो ... तुम्हारा रहस्योद्घाटन तो जल्दी ही तुम्हें स्वयं पता चल जायेगा।”

सूर्यदेव की बात सुन व्योम ने अपना ध्यान वापस से युद्ध की ओर लगा दिया, परंतु अब वह अपने बारे में जानने के लिये बहुत ही ज्यादा उत्सुक दिखाई दे रहा था।

उधर ब्रह्मपात्र का ढक्कन पूरी तरह से रक्तकंट को परेशान किये हुए था कि तभी ब्रह्मपात्र भी अपना आकार बढ़ाने लगा।

यह देखकर व्योम, त्रिकाली और विद्युम्ना की निगाहें अब ब्रह्मपात्र पर टिक गईं थीं।

ब्रह्मपात्र का आकार धीरे-धीरे इतना विशाल हो गया कि अब रक्तकंट उसके सामने बहुत छोटा नजर आने लगा था।

तभी ब्रह्मपात्र ऊपर की ओर गया और उल्टा होकर तेजी से नीचे आया, जिसकी वजह से व्योम और रक्तकंट उस ब्रह्मपात्र के अंदर समा गये।

जैसे ही दोनों ब्रह्मपात्र के अंदर गए, ब्रह्मपात्र के अंदर से पूरा पानी समाप्त हो गया। अब ब्रह्मपात्र का पूरा क्षेत्र जलविहीन नजर आने लगा।

तभी व्योम के मन में सूर्यदेव की आवाज गूंजी- “पुत्र व्योम, अब ब्रह्मपात्र ने अपने अंदर के इस पूरे क्षेत्र को जलविहीन कर दिया है। यही उचित समय है अपने पंचशूल का प्रयोग कर रक्तकंट को समाप्त कर दो।”

सूर्यदेव की आवाज सुन व्योम ने बिना एक पल को गंवाए पंचशूल का आहवान किया और इससे पहले कि रक्तकंट अपने बचाव में कुछ कर पाता, व्योम ने पंचशूल को फेंक कर रक्तकंट पर मार दिया।

बिजली की तेजी से चमक बिखेरता पंचशूल रक्तकंट की ओर झपटा और उसके सभी काँटों को चीरता हुआ रक्तकंट को 2 टुकड़े में विभक्त कर दिया।

अब रक्तकंट के अंदर से लाल रंग का बहुत सारा रक्त निकलकर बाहर आ गया। इसी के साथ ब्रह्मपात्र ने उपर उठते हुए अपना घेरा हटा दिया।

ब्रह्मपात्र के घेरे के हटते ही वापस झील के जल ने रिक्त स्थान को भर लिया। इसी के साथ रक्तकंट का शरीर पानी में फैले अपने खून के

साथ हवा में विलीन हो गया।

जैसे ही ब्रह्मपात्र ने अपना घेरा हटाया, विद्युम्ना और त्रिकाली को अंदर का दृश्य दिखाई दे गया। जहां उस दृश्य को देखकर त्रिकाली खुशी से भर उठी, वहीं विद्युम्ना ने अपने दाँत को गुस्से से भींच लिया।

तभी ब्रह्मपात्र का ढक्कन वापस आकर ब्रह्मपात्र से जुड़ गया और इसी के साथ ब्रह्मपात्र ने अपना आकार बदल लिया।

अब ब्रह्मपात्र एक छोटे से सुनहरे रंग के मुकुट में परिवर्तित हो गया और व्योम के सिर पर जाकर विराजमान हो गया। उसे देख व्योम और त्रिकाली खुश हो गये। ब्रह्मपात्र के कारण व्योम की शक्ति में और बढ़ोतरी हो चुकी थी।

◆ ◆ ◆

चैपटर-8

सन-रिंग

तिलिस्मा 6.51

सुयश ने जिस द्वार को चुना, उसमें मेष और सिंह राशियां छिपी हुई थीं। सुयश जब द्वार से बाहर निकला तो उसने देखा कि वह एक विशाल आयताकार कमरे में है।

वह कमरा पूरी तरह से दूधिया रोशनी से चमचमा रहा था।

यहां तक कि उस कमरे की जमीन, छत, व दीवारें भी सफेद रंग से रंगी हुई थीं। पूरा कमरा सफेद रंग की चीनी मिट्टी से बना हुआ प्रतीत हो रहा था।

सुयश ने अपना सिर घुमाकर चारो ओर देखना शुरू कर दिया।

तभी सुयश की निगाहें कमरे की दीवारों पर लटकी विशाल पेंटिंग्स की ओर गई। कमरे में कुल 3 पेंटिंग्स अलग-अलग दिशाओं में लटकी हुई थीं।

पर पेंटिंग्स पर नजर पड़ते ही सुयश की आँखें आश्चर्य से फैल गईं।

सबसे पहली पेंटिंग में ऐमू की तस्वीर बनी थी, जो कि उत्तर दिशा की दीवार पर नीचे की ओर लगी थी। पेंटिंग में ऐमू एक पेड़ की डाल पर बैठा था और पेड़ पर लगे एक सुर्ख लाल रंग के फल को निहार रहा था।

दक्षिण दिशा की दीवार पर लहरों के ऊपर तैर रहे ‘सन राइजिंग’ की विशाल पेंटिंग टंगी थी। सन राइजिंग की पेंटिंग लगभग 200 फुट की ऊंचाई पर लगी थी। अगर पेंटिंग इतनी विशाल ना होती तो सुयश के लिये उसे देख पाना भी असंभव हो जाता।

सन राइजिंग को देखते ही सुयश एकाएक भावुक सा नजर आने लगा। पर कुछ ही देर में सुयश ने अपनी भावनाओं को नियंत्रित करते हुए

पूर्व दिशा की ओर अपनी नजरें घुमाईं।

पूर्व दिशा की ओर एक विशाल झरने की पेंटिंग टंगी थी, जो कि जमीन से लगभग 100 फुट की ऊंचाई पर लगी थी।

सभी पेंटिंग इतनी सजीव लग रहीं थीं, मानों वह अभी जीवित होकर पेंटिंग से बाहर निकल आयेंगी।

“यह तो बहुत ही अजीब सा कमरा है।” सुयश ने एक बार फिर से चारो ओर देखते हुए मन ही मन कहा- “इस कमरे की फर्श और दीवारें तो बहुत ज्यादा चिकनी हैं और देखने में बिल्कुल एक सी ही लग रही हैं। ...... इतने विशाल कमरे में कुछ रखा भी नहीं है? और ... और ऐमू व सन राइजिंग की पेंटिंग्स का यहां पर क्या काम? जरुर इन सभी पेंटिंग्स में कुछ ना कुछ रहस्य छिपा है? .... पर सन राइजिंग और झरने की पेंटिंग्स तो काफी ऊंचाई पर लगी हैं, वहां तक तो मेरा पहुंच पाना असंभव है। .... यानि कि सबसे पहले मुझे ऐमू की पेंटिंग पर ही ध्यान लगाना होगा।”

यह सोचकर सुयश ऐमू की पेंटिंग के पास जाकर खड़ा हो गया।

सुयश काफी देर तक ऐमू की पेंटिंग के पास खड़े होकर ऐमू को निहारता रहा। फिर उसने कुछ सोचकर ऐमू की पेटिंग को हाथ लगाकर देखा।

सुयश ने जैसे ही ऐमू की पेंटिंग को अपने हाथों से छुआ, ऐमू सजीव होकर पेंटिंग से बाहर आ गया।

पेंटिंग से बाहर आते ही ऐमू हवा में उड़ता हुआ जोर-जोर से चिल्लाने लगा- “दोस्त मिल गया .... दोस्त मिल गया .... ऐमू का दोस्त मिल गया।”

ऐमू को सजीव होते देख सुयश के भी आश्चर्य का ठिकाना ना रहा। सुयश ने खुशी से अपने दाहिने हाथ को सामने की ओर फैला दिया।

सुयश के हाथ को फैलता देख, ऐमू सुयश के हाथ पर आकर बैठ गया।

“ऐमू के दोस्त, तुम बार-बार ऐमू को छोड़ के चले जाते हो” ऐमू ने प्यार से सुयश के चेहरे को देखते हुए कहा- “अब तुम ऐमू को छोड़कर

कभी मत जाना।”

“ठीक है ऐमू, अब मैं तुम्हें छोड़कर कहीं नहीं जाऊंगा।” सुयश ने भी प्यार से ऐमू के सिर पर हाथ फेरते हुए कहा- “पर ये बताओ कि तुम इस तिलिस्म के अंदर कैसे आ गये?”

पर सुयश की बात सुनकर ऐमू ने कुछ नही कहा, वह बस अपनी पलकें झुकाकर सुयश को निहारता रहा।

अमूमन लगातार बोलने वाला ऐमू, जाने क्यों इस समय शांत था? वह बस लगातार सुयश को निहार रहा था।

उसे कुछ ना बोलते देख, सुयश फिर से अपने चारो ओर देखने लगा।

तभी सुयश की नजर उस दीवार पर पड़ी, जिस दीवार पर ऐमू की पेंटिंग टंगी थी, पर इस समय वह दीवार खाली दिखी। ऐसा लग रहा था कि ऐमू के पेंटिंग से निकलते ही, वह पूरी की पूरी पेंटिंग ही हवा में गायब हो गई।

अब सुयश की नजरें झरने वाली पेंटिंग पर जाकर टिक गईं।

“अगर ऐमू की पेंटिंग में रहस्य था, तो हो सकता है कि झरने की पेंटिंग में भी कोई रहस्य हो, पर उसे छू पाना तो बहुत ही मुश्किल है क्योंकि वह पेंटिंग काफी ऊंचाई पर लगी है ..... उसको छूने के लिये तो मुझे सीढ़ी चाहिये होगी ..... पर यहां पर सीढ़ी कहां से आयेगी? यह पूरे का पूरा कमरा तो खाली है। ... तो फिर झरने की पेंटिंग कैसे छुई जा सकती है?”

अभी सुयश झरने की पेंटिंग की ओर मुंह करके उसे देख ही रहा था कि तभी ऐमू ने उड़कर उस झरने की पेंटिंग को अपनी चोंच से छू लिया।

ऐमू के ऐसा करते ही पेंटिंग में मौजूद झरना भी सजीव हो गया और उसमें से पानी निकलकर जमीन पर गिरने लगा।

झरने के पानी के गिरने की रफ्तार बहुत तेज थी।

सुयश ने एक तरफ होकर उस पानी से अपनी जान तो बचा ली, पर अब वह पानी तेजी से कमरे में भरने लगा।

झरने से पानी को गिरता हुआ देखकर ऐमू भी सुयश के कंधे पर आकर बैठ गया।

“अब इस झरने के पानी को कैसे रोकना है? क्योंकि अगर इस झरने के पानी को मैंने रोका नहीं तो वह पूरे कमरे में भर जायेगा और मेरे पानी में तैरने की एक समय-सीमा है। उसके बाद मैं भी इस पानी में डूब कर मर जाऊंगा।” सुयश चारो ओर देखते हुए तेजी से अपना दिमाग लगा रहा था।

धीरे-धीरे कमरे में पानी भरता जा रहा था। सुयश तेजी से कमरे में चारो ओर घूमकर उस पानी से बचने की कोई तरकीब सोच रहा था।

झरने से पानी का गिरना अपने चरम पर था। कुछ ही देर में कमरे में सुयश के घुटने तक पानी भर गया।

काफी देर तक कमरे में घूमने के बाद भी सुयश को कमरे में कोई भी चीज नजर नहीं आई। अब सुयश की नजरें सिर्फ और सिर्फ सन राइजिंग की पेंटिंग की ओर थीं।

“अगर ऐमू और झरने की पेंटिग छूने से सजीव हो सकती हैं, तो सन राइजिंग की पेंटिंग भी छूने पर सजीव हो सकती है .... हो ना हो अब सन राइजिंग की पेंटिंग में ही इस तिलिस्म को तोड़ने का कोई राज छिपा हो सकता है?”

अब तक कमरे का पानी सुयश के सिर के ऊपर जा चुका था, इसलिये सुयश उस विशाल कमरे में तैर रहा था।

ऐमू सुयश के सिर के ऊपर उड़ रहा था।

ऐमू को देख सुयश ने ऐमू को सन राइजिंग की पेंटिंग छूने का इशारा किया। सुयश का इशारा भांपकर ऐमू ने उड़कर सन राइजिंग की पेंटिंग को छू लिया।

ऐमू के सन राइजिंग को छूते ही सन राइजिंग भी सजीव हो गया और वह पानी में आकर गिर गया। वह जहाज सन राइजिंग की डमी की भांति था। वह देखने में तो बिल्कुल सन राइजिंग जैसा लग रहा था, पर वह सन राइजिंग के समान विशाल नहीं था।

सन राइजिंग अब पानी में तैर रहा था। सन राइजिंग को पानी में तैरते देख ऐमू उसके आस-पास उड़ने लगा।

यह देख सुयश खुश हो गया। अब सुयश की निगाहें सन राइजिंग से लटक रही एक रस्सी की ओर गई।

कुछ ही देर में सुयश उस रस्सी के सहारे सन राइजिंग के ऊपर आ गया। सुयश के ऊपर आते ही ऐमू अपने पंख फड़फड़ाता हुआ सुयश के कंधे पर बैठ गया।

परंतु मुसीबत अभी खत्म नहीं हुई थी क्योंकि झरने से पानी अभी भी बह रहा था, जिसकी वजह से सन राइजिंग लगातार छत की ओर उठता जा रहा था।

“अगर मैंने इस झरने के पानी से बचने का कोई उपाय नहीं सोचा तो कुछ ही देर में सन राइजिंग भी कमरे की छत को छूने के बाद डूब जायेगा .... पर कैसे? .... इस झरने के पानी से कैसे छुटकारा पाया जा सकता है?”

तब तक कमरे के पानी का स्तर झरने के पेंटिंग के बराबर पहुंचकर झरने की पेंटिंग को छूने लगा। अब सुयश की निगाहें लगातार उस झरने की पेंटिंग की ओर थीं।

पर जैसे ही पानी ने पेंटिंग को अपने घेरे में लिया, उस पेंटिंग का पेंट पानी में भीगने की वजह से छूटने लगा। अब पेंट छूटने की वजह से झरना गायब हो गया।

इसी के साथ कमरे के पानी का स्तर भी अपनी जगह पर रुक गया। यह देख सुयश ने राहत की साँस ली।

“चलो एक मुसीबत से तो पीछा छूटा, पर इस तिलिस्म से बाहर निकलने का दरवाजा तो मुझे अभी भी नहीं मिला और दरवाजे को ढूंढे बिना तो यह द्वार पार नहीं होने वाला।”

तभी उस कमरे की संरचना को देखते हुए सुयश के दिमाग को एक झटका लगा- “अरे! यह तो एक विशाल बाथटब है .... यह बात मुझे पहले क्यों नहीं समझ में आई? .... पर अगर यह बाथटब है, तो इससे पानी की निकासी के लिये एक ढक्कन भी अवश्य होगा? .... पर ... पर वह ढक्कन

तो कमरे की जमीन पर कहीं होगा? ... इसका मतलब मैंने पूरा कमरा नहीं देखा। अगर देखा होता, तो मुझे बाथटब का ढक्कन अवश्य ही मिल जाता। ..... मतलब मुझे एक बार पानी की तली में जाना होगा .... पर अगर मैंने तली में जाकर बाथटब के ढक्कन को हटाया, तो पानी के फोर्स की वजह से मैं भी उस निकासी वाले स्थान से बाहर निकल जाऊंगा। .... और वह सारा पानी पता नहीं कहां जा रहा होगा? ऐसे में तो पानी के फोर्स की वजह से मेरी जान भी जा सकती है।"

अब सुयश ने सन राइजिंग के डेक को देखना शुरु कर दिया।

तभी ऐमू ने अपने पंख फड़फड़ाए और सन राइजिंग के एक किनारे पर जाकर, किसी चीज को देखकर जोर-जोर से चिल्लाने लगा- "पानी के अंदर जाना पडेगा - डाइविंग किट को लगाना पडेगा।"

ऐमू के शब्दों को सुनकर सुयश को कुछ समझ में नहीं आया, परंतु वह आगे बढ़कर उस स्थान को देखने लगा जिसे देखकर ऐमू लगातार चिल्ला रहा था।

उस स्थान पर सुयश को 1 डाइविंग किट और एक 100 फुट लंबी रस्सी का टुकड़ा मिल गया।

इन चीजों को देखने के बाद सुयश के दिमाग में एक प्लान आया। उसने सबसे पहले डाइविंग किट को अपने शरीर पर पहन लिया और उस लंबी रस्सी के एक सिरे को अपनी कमर में बांधा। सुयश ने रस्सी का दूसरा सिरा जहाज में एक स्थान पर मजबूती से बांध दिया।

इसके बाद सुयश ने एक गहरी साँस खींची और पानी में छलांग लगा दी।

ऐमू अभी भी उसी स्थान पर गोल-गोल उड़ रहा था, जिस स्थान पर सुयश ने पानी के अंदर छलांग लगाई थी।

कुछ ही देर में सुयश उस कृत्रिम सागर की तली में था। अब समय की चिंता नहीं थी, इसलिये सुयश पूरी तसल्ली से बाथटब की तली में उसका निकास द्वार ढूंढने लगा।

लगभग 15 मिनट की अपार मेहनत के बाद सुयश को तली में एक स्थान पर एक विशाल ढक्कन दिखाई दिया।

सुयश ने अब अपने शरीर पर बंधी रस्सी को खींचना शुरु कर दिया। कुछ ही देर में रस्सी ने खिंचना बंद कर दिया। अब सुयश ने रस्सी को उस स्थान से अपने शरीर पर मजबूती से फंसा लिया।

रस्सी को अपने शरीर पर कसने के बाद, सुयश पूरी तरह से निश्चिंत हो गया। अब सुयश ने बाथटब के ढक्कन को घुमाकर खोलने की कोशिश की, पर वह असफल रहा।

बाथटब का ढक्कन जरुरत से ज्यादा टाइट था। सुयश ने दोबारा पूरी ताकत लगाकर उस ढक्कन को खोलने की कोशिश की। पर सुयश का यह प्रयास भी व्यर्थ गया, ढक्कन अपनी जगह से टस से मस नहीं हुआ।

“ये ढक्कन तो मेरी पूरी ताकत लगाने के बाद भी हिल ही नहीं रहा। लगता है कि मुझे इसे उठाने के लिये कुछ और ही सोचना पड़ेगा?”

सुयश का दिमाग अब बहुत तेजी से चलने लगा।

तभी सुयश को पानी की सतह पर तैर रहे सन राइजिंग का ध्यान आया। कुछ देर सोचने के बाद सुयश ने अपने कमर में बंधी रस्सी को बाथटब के ढक्कन पर कस कर बांध दिया।

अब सुयश वापस पानी की सतह पर आ गया और रस्सी को पकड़ कर सन राइजिंग पर चढ़ गया।

सुयश की नजरें अब सन राइजिंग के कंट्रोलरुम पर थीं।

“अगर सन राइजिंग असली जैसा लग रहा है, तो यह चलता भी जरुर होगा।” यह सोचकर सुयश सन राइजिंग के कंट्रोल रुम में प्रवेश कर गया।

अब सुयश ने सन राइजिंग के स्टार्ट बटन को दबा कर देखा। सुयश का अंदाजा बिल्कुल सही था, एक जोर की घरघराहट के साथ सन राइजिंग का इंजन स्टार्ट हो गया।

इंजन की आवाज सुन सुयश की आँखें चमकने लगीं।

तभी ऐमू उड़कर सुयश के कंधे पर आकर बैठ गया और सुयश को देख कर खुश होकर बोला- “वाह- वाह ऐमू के दोस्त का दिमाग बहुत तेज है।“

ऐमू की बात सुन सुयश मुस्कुराया और उसने सन राइजिंग को आगे की ओर बढ़ा दिया।

सन राइजिंग के आगे बढ़ते ही डेक पर बंधी रस्सी को एक जोर का झटका लगा और इसी झटके के साथ रस्सी के दूसरे सिरे ने बाथटब के ढक्कन को खोल दिया।

बाथटब के ढक्कन के खुलते ही कमरे का पानी तेज आवाज के साथ बाथटब के सुराख से बाहर की ओर जाने लगा।

अब कमरे के पानी में एक विशाल भंवर नजर आने लगी, पर सुयश निश्चिंत था। वह जानता था कि बाथटब के इतने छोटे छेद से सन राइजिंग नहीं निकल पायेगा।

कुछ ही देर में कमरे का सारा पानी बाथटब के छेद से बाहर निकल गया।

सन राइजिंग अब सूखे बाथटब की सतह पर खड़ा था। सुयश सन राइजिंग से उतर कर बाथटब की जमीन पर आकर खड़ा हो गया।

तभी सुयश की नजर सन राइजिंग के ऊपर लिखे 'SUN RISING' शब्द पर गई, जिसका 'I' और 'S' अक्षर उखड़कर नीचे गिर गया था।

अब 'SUN RISING' के स्थान पर 'SUN RI_ _ NG' लिखा नजर आ रहा था।

"ये सन राइजिंग के अक्षर कैसे उखड़कर गिर गये? कहीं इसमें भी तो कोई रहस्य नहीं छिपा?"

यह सोच सुयश ने गिरे हुए दोनों अक्षरों 'I' और 'S' को उठा लिया।

वैसे तो दोनों अक्षर आकार में काफी बड़े थे, पर सुयश के उठाते ही उन दोनों अक्षरों का आकार बहुत छोटा हो गया।

सुयश उन दोनों अक्षरों को काफी देर तक देखता रहा, पर जब उसे उन अक्षरों में कुछ भी विशेष नजर नहीं आया? तो उसने उन दोनों अक्षरों को अपनी जेब में रख लिया।

तभी सुयश को कुछ दूरी पर एक बड़ा सा सीप नजर आया।

“अरे यह सीप यहां पर कैसे आ गया? पहले तो यह इस स्थान पर नहीं था।”

सुयश अब चलते हुए सीप वाले स्थान पर पहुंच गया। कुछ देर सीप को देखते रहने के बाद सुयश ने सीप को खोल दिया।

उस विशाल सीप में एक सफेद रंग का मोती रखा था। सुयश ने उस मोती को छूकर देखा।

“अरे! यह मोती तो स्पंज के समान लचीला दिख रहा है। दुनिया का कोई भी मोती ऐसा तो नहीं होता? कैश्वर ने इस मोती को यूँ ही तो नहीं रखा होगा यहां? जरुर इसके लचीलेपन में भी कोई ना कोई रहस्य छिपा है?”

अब सुयश उस स्थान पर आ गया, जहां कि ढक्कन खुलने की वजह से एक बड़ा सा कुंए के समान छेद नजर आ रहा था।

उस छेद में गहन अंधेरा होने की वजह से अंदर कुछ नजर नहीं आ रहा था।

“गहरा छेद- गहरा छेद, इसमें छिपा है कोई भेद?” ऐमू ने उस अंधेरे छेद में झांकते हुए कहा।

सुयश ने ऐमू की ओर देखा और फिर अपनी जेब में रखा एक छोटा सा फल उस छेद में लुढ़का कर, उसकी गहराई नापने की कोशिश की।

फल के छेद में गिरने के कुछ देर बाद तक भी, फल के लुढ़कने की आवाज सुयश को सुनाई देती रही।

“अरे बाप रे! यह तो काफी गहरा स्थान है, इसमें उतरने के बाद तो जिंदा बचना भी मुश्किल ही लग रहा है? .... पर .... पर इस बाथटब से बाहर जाने का, इस छेद के सिवा कोई और रास्ता भी तो नहीं है? ... इसका मतलब कुछ भी करके मुझे इस छेद से ही बाहर जाने के बारे में सोचना पड़ेगा?”

कुछ सोचकर सुयश उस स्पंज के समान लचीले सफेद मोती को सीप से निकालकर ले आया।

मोती का आकार लगभग उस छेद के समान ही था। यह देखकर सुयश के चेहरे पर मुस्कुराहट आ गई।

अब सुयश ने उस सफेद मोती को उस छेद से नीचे की ओर गिरा दिया और स्वयं उसके पीछे-पीछे कूद गया।

ऐमू भी सुयश के पीछे-पीछे उस अंतहीन छेद में प्रवेश कर गया।

अब सुयश फिसलता हुआ उस अंतहीन गहराई में नीचे की ओर जा रहा था।

◆ ◆ ◆

काँच की तितली

27.01.2002, रविवार, सामरा महल, अराका

वीनस को सामरा राज्य में आए आज 2 दिन हो गये थे। 2 दिन पहले जब एलनिको, एनम और रुफो ने न्यूयार्क के एक पार्क में वेगा और वीनस पर हमला करके उन्हें हरा दिया था, तभी युगाका और कलाट ने वहां आकर दोनों की ही जान बचाई थी।

उसके बाद कलाट, वेगा और वीनस को लेकर अपने ऊर्जा द्वार के माध्यम से सामरा राज्य आ गया था।

पिछले 2 दिनों में युगाका और कलाट ने अलग-अलग प्रकार से वीनस से हजारों प्रश्न पूछ लिये थे- जैसे कि लुफासा ने उसे न्यूयार्क क्यों भेजा? लुफासा के पास सीनोर राज्य में कौन-कौन सी शक्तियां हैं? मकोटा सीनोर राज्य को विकसित करने के लिये किस प्रकार की योजना पर कार्य कर रहा है? वगैरह ... वगैरह।

पर वीनस ने शांति के साथ युगाका और कलाट के सभी प्रश्नों का सही उत्तर दिया था। वैसे वीनस अभी भी निश्चिंत नहीं हुई थी कि युगाका और कलाट ने उसे स्वीकार कर लिया या नहीं? पर अब वीनस के पास और कोई विकल्प भी नहीं बचा था, इसलिये वीनस सामरा राज्य में अपने को एडजेस्ट करने की कोशिश कर रही थी।

2 दिन बाद एक शुभ दिन था, उसी दिन कलाट, वेगा और वीनस को महावृक्ष से मिलाने वाला था। इसलिये अभी 2 दिन तक वीनस सामरा राज्य में कहीं जा नहीं सकती थी? पर वीनस को इन सभी चीजों से कोई परेशानी नहीं थी, वह तो बस वेगा के साथ खुश थी।

पर वीनस इतना जानती थी कि जब लुफासा को यह पता चलेगा कि वीनस इस समय सामरा राज्य में है, तो वह जरुर मकोटा के साथ मिलकर कोई ना प्लान करेगा?

पर जो भी हो वीनस अब हर पल को जीना चाहती थी ... अपने वेगा के साथ।

इस समय वीनस सामरा महल के एक कक्ष में बैठी थी।

यह वेगा का ही कक्ष था, जिसमें वह अपने बचपन में रहता था। कक्ष काफी विशाल और भव्य था। चारो ओर सोने-चाँदी की चीजें रखीं थीं। कक्ष की दीवारों पर भी सोने से नक्काशी की गई थी।

कक्ष की एक दीवार में एक बड़ी सी खिड़की लगी थी, जो सामने बने एक विशाल उद्यान में खुलती थी।

चूंकि वेगा इस समय वाशरुम में नहा रहा था, इसलिये वीनस आकर उस खिड़की पर खड़ी हो गई। खिड़की के बाहर का नजारा भी अत्यंत खूबसूरत था।

उद्यान में चारो ओर हरे-भरे पेड़ लगे हुए थे। हर ओर लगे रंग-बिरंगे फूल उद्यान की खूबसूरती को और बढ़ा रहे थे।

तभी सूर्य ने बादलों की ओट से बाहर झांका और सूर्य की एक किरण आकर वीनस के चेहरे पर गिरने लगी, पर वीनस फिर भी खिड़की पर ही खड़ी रही।

कुछ ही देर में वीनस के माथे पर पसीने की बूंदें दिखाई देने लगीं, तभी उद्यान में लगे एक बड़े से वृक्ष ने अपने स्थान से हिलकर अपनी स्थिति को बदल लिया। अब वीनस के चेहरे पर वृक्ष के पत्तों की छाया आ गई।

बहुत ही अद्भुत दृश्य था, पर वीनस को अब युगाका और सामरा राज्य के बारे में सबकुछ पता था, इसलिये उसने इस दृश्य पर आश्चर्य प्रकट नहीं किया, पर उसने झुककर उस वृक्ष को धन्यवाद अवश्य दिया।

तभी वीनस को उद्यान में एक स्थान पर इंद्रधनुष बनता दिखाई दिया। यह वीनस के लिये एक नया अनुभव था, इसलिये वह चौंककर उस छोटे से इंद्रधनुष को निहारने लगी।

वीनस को वह इंद्रधनुष एक पेड़ के ऊपर से आता हुआ दिखाई दिया। अब वीनस ने एक नजर वाशरुम पर मारी। उसे पता था कि वेगा अभी 15 मिनट और बाहर नहीं निकलने वाला, इसलिये वीनस कक्ष से निकलकर बाहर के उद्यान में आ गई।

वीनस को वह इंद्रधनुष बहुत ही सुंदर लग रहा था, अतः वह उस इंद्रधनुष के उद्गम स्थल को ओर बढ़ गई।

वीनस चलती हुई उस पेड़ तक जा पहुंची, जिसके ऊपर से वह इंद्रधनुष बनता हुआ दिखाई दे रहा था, पर पेड़ से हो रही तेज रोशनी की वजह से वीनस को नीचे से कुछ नजर नहीं आ रहा था?

यह देख वीनस ने अपने हाथों को ऊपर की ओर उठाया, वीनस के ऐसा करते ही उस पेड़ की एक शाख नीचे की ओर झुकी। उस शाख को नीचे की ओर झुकते देख वीनस ने अपना पैर उस शाख में फंसाया और अपने दोनों हाथों से उस शाख को पकड़ लिया।

जैसे ही वीनस ने उस शाख को पकड़ा, वह शाख वीनस को लेकर इंद्रधनुष के उद्गम स्थल की ओर चल दी। ऊपर पहुंचकर वीनस उस पेड़ की एक मोटी सी डाल पर उतर गई।

इसी डाल के आखिरी छोर से वह सतरंगी चमक उत्पन्न हो रही थी, जो कि उस इंद्रधनुष का निर्माण कर रही थी।

वीनस ने अपने शरीर को संतुलित किया और डाल पर चलती हुई उस किनारे पर आ गई, जहां से तेज सतरंगी रोशनी उत्पन्न हो रही थी।

अत्याधिक पास जाने की वजह से वीनस को अब सबकुछ साफ-साफ दिखने लगा c।

उस पेड़ की शाख पर एक 1 फुट की काँच की तितली बैठी थी, जिसका पूरा शरीर तो पारदर्शी था, परंतु उसके पंख 7 अलग-अलग रंग की धारियों से बने थे।

सूर्य का प्रकाश उसी तितली के पंखों से छनकर उद्यान में गिर रहा था और उसी की वजह से उद्यान में एक इंद्रधनुष सा बनता हुआ प्रतीत हो रहा था।

इतनी विचित्र तितली को देखकर वीनस आश्चर्य से भर गई।

"यह इतनी सुंदर तितली यहां कहां से आ गई? इतनी विचित्र रंगों से भरी काँच की तितली के बारे में तो मैंने सुना तक नहीं। ... ऊपर से इसका आकार भी कितना विशाल है।" वीनस ने मन ही मन सोचा- "कहीं यह

तितली भी तो सामरा राज्य की अद्भुत कल्पनाशीलता का कोई नमूना तो नहीं?”

अब वीनस पूरी तरह से तितली के प्राकृतिक सौंदर्य में खो चुकी थी। कुछ देर तक उस सतरंगी तितली को ऐसे ही देखते रहने के बाद वीनस ने आगे बढ़कर उस तितली के पंखों को छूकर उसे पकड़ने की कोशिश की।

परंतु जैसे ही वीनस ने उस सतरंगी तितली को छुआ, उस सतरंगी तितली का आकार और भी ज्यादा बढ़ने लगा।

वीनस के देखते ही देखते उस सतरंगी तितली का आकार वीनस से भी ज्यादा बड़ा हो गया और इससे पहले कि वीनस कुछ और समझ पाती, उस सतरंगी तितली ने अपनी जीभ को लंबा कर वीनस को अपनी गिरफ्त में ले लिया।

जैसे ही तितली ने वीनस को अपनी जीभ में लपेटा, वीनस का पूरा शरीर जड़ बन गया।

अब वह सबकुछ देख और समझ तो पा रही थी, परंतु अपने शरीर के किसी भी अंग का प्रयोग नहीं कर पा रही थी।

तभी सतरंगी तितली के सभी रंग उसके शरीर से निकलने लगे और वह सभी रंग पेड़ के नीचे मौजूद एक छोटे से फूलों के पेड़ में समा गये।

अब सतरंगी तितली बिल्कुल पारदर्शी नजर अपने लगी थी।

उधर उस छोटे से पेड़ में लगा एक फूल अपना रंग बदलकर सतरंगी हो गया। बड़ा अजीब सा दृश्य था, उस पेड़ से लगे सभी फूल पीले रंग के थे, बस एक फूल ही अब सतरंगी नजर आ रहा था।

वीनस यह दृश्य अपनी आँखों से देख रही थी, परंतु वह कुछ कर नहीं पा रही थी? परंतु वीनस को जाने क्यों अब किसी अंजान खतरे का अहसास हो गया था?

तभी अचानक उस पारदर्शी काँच की तितली ने अपने पारदर्शी पंखों को फैलाया और वीनस के शरीर को अपने पंखों के नीचे छिपा लिया। अब तितली वीनस सहित बिल्कुल अदृश्य हो गई।

अब कोई जान भी नहीं सकता था कि उस पेड़ की एक डाल पर वीनस कैद हो गई है?

वीनस को अभी भी उद्यान की हर एक चीज साफ दिखाई दे रही थी।

तभी वीनस को ढूंढता हुआ वेगा भी उद्यान में आ गया। शायद वीनस को कमरे में ना पाकर वेगा बाहर आया था।

“वीनसऽऽऽऽऽऽऽ।” वेगा ने तेज से आवाज लगाते हुए वीनस को पुकारा, पर वेगा की आवाज उस उद्यान में ही इधर-उधर घूमकर वापस आ गई।

वीनस चाहती थी, कि किसी प्रकार वेगा उसे देख ले? पर वह तो एक अजीब से मायाजाल में इस समय फंसी थी, जिसमें से वह चाहकर भी वेगा को आवाज नहीं लगा पा रही थी।

तभी .... तभी वीनस की आँखें भय और आश्चर्य से चौड़ी हो गईं। वीनस के सामने मौजूद वह सतरंगी फूल एक इंसानी आकृति धारण करने लगा और वीनस के देखते ही देखते वह आकृति अब वीनस के समान नजर आने लगी।

वेगा की नजर अभी भी उस नकली वीनस की ओर नहीं गई थी, इसलिये उसने फिर से एक जोर की आवाज लगाई- “वीनसऽऽऽऽऽऽ तुम कहां हो? मुझे पता है कि तुम मेरे साथ कोई खेल खेल रही हो? ... पर अब बाहर आ जाओ। मुझे तुम्हारी चिंता हो रही है।”

अब नकली वीनस ने एक बार ऊपर पेड़ पर फंसी असली वीनस की ओर देखा और फिर मुस्कुराकर वेगा की ओर बढ़ गई।

“क्या वेगा ... तुम तो मुझे अपने सामने ना पाकर जरा सी देर में ही परेशान होने लगते हो?” नकली वीनस ने वेगा को देखकर मुस्कुराते हुए कहा और पास जाकर वेगा के गले से लग गई।

“क्या करुं? तुम्हारे बिना अब मेरा कहीं दिल ही नहीं लगता?” यह कहकर वेगा ने नकली वीनस को अपनी बांहों में उठाया और कक्ष के अंदर की ओर चल दिया।

वेगा एक पल के लिये भी नहीं समझ पाया कि वह नकली वीनस है और उधर पेड़ पर फंसी असली वीनस क्रोधित भाव से नकली वीनस को देख रही थी।

ना जाने क्यों इस समय वीनस को युगाका और कलाट पर शक हो रहा था? उसे लग रहा था कि जानबूझकर युगाका या फिर कलाट ने उसे इस प्रकार वेगा से अलग किया है .... पर क्यों? इसका जवाब तो वीनस के पास भी इस समय नहीं था।

तभी वीनस को हवा में उड़कर उधर आती हुई सैकड़ों नीली तितलियां दिखाई दीं।

वह सभी नीली तितलियां उस काँच की अदृश्य तितली के चारो ओर चिपक गईं। कुछ देर तक ऐसे ही चिपके रहने के बाद उन सभी नीली तितलियों ने वीनस सहित उस काँच की तितली को उठाया और उड़कर एक दिशा की ओर चल दीं।

उन्हें देखकर ऐसा महसूस हो रहा था कि मानों आकाश में एक नीला गोला उड़ता हुआ कहीं जा रहा है?

वीनस को नहीं पता था कि यह काँच की तितली उसे लेकर कहां जा रहीं हैं? वह तो बस अब कैसे भी इस मायाजाल से बचने का कोई तरीका सोच रही थी?

◆ ◆ ◆

हिमखंड

1 दिन पहले ....
26.01.2002, शनिवार, होटल ग्रैण्ड होम, न्यूयार्क, अमेरिका

विक्रम इस समय न्यूयार्क के एक होटल 'ग्रैण्ड होम' के कमरे में बैठा था।

कुछ देर पहले ही आकृति ने विक्रम को एक झूठी कहानी सुनाई थी, जिसमें उसने बताया था कि उसके पिता वहां से हजारों किलोमीटर दूर समुद्र में स्थित एक द्वीप अराका पर हैं और यदि आकृति उसे लेकर अपने पिता के पास जाये, तो उसके पिता विक्रम की स्मृतियों को वापस ला सकते हैं।

यही कहकर आकृति ने विक्रम को उसकी शक्तियों का प्रयोग करके अराका द्वीप पर ले जाने के लिये मना लिया था।

आकृति के द्वारा पहनाई हुई अभिमंत्रित नीली अंगूठी को 10 दिन पहनने के बाद विक्रम उसे उतार चुका था, इसलिये आकृति, विक्रम की स्मृतियां आने के पहले ही उसे अराका लेकर जाना चाहती थी।

विक्रम के मान जाने के बाद आकृति, विक्रम को कमरे में ही रुकने को बोल कुछ जरुरी सामान लाने के लिये मार्केट चली गई थी, इसलिये विक्रम इस समय होटल के कमरे में अकेला ही था।

विक्रम इस समय भी अपने पिछले समय के बारे में याद करने की कोशिश कर रहा था कि तभी उसे अपने दिमाग के किसी कोने में एक धीमी सी आवाज आती हुई सुनाई दी।

"विक्रम ..... विक्रम कहां हो तुम? .... क्या तुम मेरी आवाज सुन रहे हो?" यह आवाज शत-प्रतिशत असली वारुणि की ही थी।

इस आवाज को सुन विक्रम चौंक गया और ध्यान से उस आवाज को सुनने लगा।

विक्रम के ध्यान लगाने की वजह से विक्रम के मस्तिष्क के तार पूर्ण रुप से वारुणि से जुड़ गये, जिसके कारण अब विक्रम को वारुणि की

आवाज बिल्कुल साफ सुनाई देने लगी।

“विक्रम .... अगर तुम मुझे सुन रहे हो तो मेरी बातों का उत्तर दो।” वारुणि की आवाज पुनः विक्रम के मस्तिष्क में उभरी।

“कौन हो तुम? और तुम मेरे मस्तिष्क में कैसे बोल रही हो?” इस बार विक्रम ने उत्तर देते हुए कहा।

विक्रम की आवाज सुनते ही दूसरी तरफ से आ रही वारुणि की आवाज खुशियों से भर गई।

“ईश्वर का बहुत-बहुत धन्यवाद कि तुम बिल्कुल ठीक हो .... पर यह तुम कैसी बातें कर रहे हो विक्रम? ... अब क्या तुम अपनी वारुणि को भी भूल गए?” वारुणि की आवाज में इस बार दर्द के भाव स्पष्ट नजर आ रहे थे।

“वारुणि? ... पर तुम तो अभी मार्केट गई थी। क्या तुम मार्केट से बोल रही हो?” विक्रम ने ना समझने वाले भाव में पूछा।

“नहीं विक्रम, मैं असली वारुणि हूं। जो तुम्हारे साथ वारुणि बनकर रह रही है, वह असल में आकृति है, जो शलाका के वेष में तुम्हें वारुणि बनकर धोका दे रही है। परंतु तुम इस प्रकार से क्यों व्यवहार कर रहे हो? क्या तुम्हें मैं याद नहीं?”

वारुणि के शब्द सुन विक्रम का सिर चकरा गया, परंतु उसने तुरंत अपने को संभालते हुए कहा- “मुझे नहीं पता कि तुम कौन हो? और क्या कह रही हो? पर पता नहीं क्यों पिछले 10 दिन के पहले की मुझे कोई भी बातें याद नहीं हैं? क्या तुम किसी भी प्रकार से मेरी स्मृतियां वापस ला सकती हो?”

“विक्रम, तुम एक देवपुरुष हो, इसलिये कोई भी तुम्हारी स्मृतियां नहीं छीन सकता। पर मुझे तुम्हारे जीवन की एक पिछली घटना याद आ रही है, जिसमें एक बार वेदालय के समय में भी तुम्हारी स्मृतियां हिमशक्ति के प्रभाव से चली गईं थीं। शायद इस बार भी कुछ ऐसा ही हुआ होगा? परंतु तुम चिंता मत करो, मैं यहां से बैठे-बैठे ही अपनी मानसिक शक्तियों से तुम्हारे स्मृतियों पर पड़े कवच को तोड़ दूंगी, जिससे 10 मिनट के अंदर ही तुम्हारी पूरी स्मृतियां वापस आ जायेंगी। उसके बाद तुम्हें मुझसे कुछ

भी पूछने की जरुरत नहीं पड़ेगी?” वारुणि ने कहा- “पर ये याद रखना कि स्मृतियां आने के बाद तुम तुरंत मुझसे संपर्क करना, तब मैं तुम्हें आगे का प्लान बताऊंगी।”

“ठीक है।” विक्रम ने वारुणि की बात मान ली और वारुणि के द्वारा अपनी स्मृतियों पर पड़े कवच के टूटने का इंतजार करने लगा।

कुछ ही देर में विक्रम को अपने मस्तिष्क में कुछ रंग-बिरंगे सितारे चमकते हुए दिखाई देने लगे। जब वह सितारे कुछ कम हुए तो विक्रम की आँखों के आगे एक दृश्य उभरने लगा।

....

विक्रम इस समय नक्षत्रलोक की नक्षत्रशाला में उस विचित्र जीव के सामने खड़ा था, जिसे वारुणि ने ओजोन लेयर के पास से पकड़ा था।

विक्रम कुछ देर तक उस 3 आँख और 4 हाथ वाले उस विचित्र जीव को देखता रहा। वह विचित्र जीव इस समय बेहोश था।

काफी देर तक उस जीव को देखते रहने के बाद विक्रम वहां रखे एक कम्प्यूटर पर बैठ गया और वारुणि द्वारा बनाई गई उस जीव से संबंधित एक फाइल को पढ़ने लगा।

विक्रम ना जाने कितनी देर तक वह फाइल पढ़ता रहा। अब उसके चेहरे पर उलझन के भाव साफ नजर आ रहे थे।

अब विक्रम ने कम्प्यूटर पर लगी घड़ी पर नजर डाली। घड़ी 13 जनवरी की शाम 4 बजे का समय दर्शा रही थी।

चूंकि वारुणि ने रात भर काम किया था, इसलिये विक्रम ने उसे डिस्टर्ब करना सही नहीं समझा और नक्षत्रशाला से निकलकर बाहर आ गया।

कुछ ही देर में विक्रम हवा में उड़ता हुआ अंटार्कटिका की ओर जा रहा था।

लगभग 1 घंटे की तेज उड़ान भरने के बाद विक्रम अंटार्कटिका के ऊपर पहुंच गया। विक्रम को इस समय चारो ओर बर्फ ही बर्फ नजर आ रही थी।

विक्रम अंटार्कटिका की बर्फ के पास एक स्थान पर उतर गया। उसे अन्य जगहों की बनिस्पत यहां कुछ कम बर्फ नजर आ रही थी?

बर्फ के बीच-बीच में सख्त भूरे पत्थर भी नजर आ रहे थे।

"यही है वह स्थान, जहां की बर्फ ओजोन लेयर के टूटने की वजह से तेजी से पिघल रही है। ओजोन लेयर के उस स्थान से उस विचित्र जीव का मिलना, यह साबित करता है कि अवश्य ही यहां की बर्फ जानबूझकर पिघलाई जा रही है और अगर मेरा सोचना सही है, तो अवश्य ही मुझे इस स्थान पर कोई ना कोई साक्ष्य मिल जायेगा?"

विक्रम एक बार फिर उड़कर चारो ओर की पिघली हुई बर्फ को देखने लगा। विक्रम जानता था कि अंटार्कटिका में उस स्थान पर कोई नहीं रहता? इसलिये उसे उस स्थान पर उड़ने में कोई परेशानी नहीं हो रही थी?

तभी विक्रम को अपने पीछे किसी के होने का अहसास हुआ। यह अहसास होते ही विक्रम तेजी से पीछे पलटा।

विक्रम का अंदाजा बिल्कुल सही था। विक्रम के पीछे उसी के प्रकार से हवा में उड़ता हुआ एक मानव शरीर घूम रहा था।

विक्रम आश्चर्य से उस मानव शरीर को देखने लगा, पर एक पल में ही विक्रम को समझ में आ गया कि उसके पीछे उड़ रहा वह साया कोई इंसान नहीं अपितु कोई अंतरिक्ष का जीव है क्योंकि उस जीव का शरीर हल्के नीले रंग का था और उसने गाढ़े नीले रंग की ड्रेस पहन रखी थी।

उस एलियन की पोशाक पर बीचोबीच में एक सुनहरे रंग का गोला बना था, जिस पर अंग्रेजी भाषा के अक्षरों में A8 लिखा था।

चूंकि वह एलियन विक्रम से ज्यादा दूरी पर नहीं था, इसलिये विक्रम को उस एलियन के शरीर के आसपास घूम रहे 3 छोटे कंचे नजर आ गये।

उनमें से एक कंचा लाल, एक नीला और एक पीले रंग का था। वह सभी उस एलियन के शरीर के चारो ओर इस प्रकार घूम रहे थे, मानो वह एलियन कोई ग्रह हो और वह कंचे उस ग्रह के उपग्रह।

"कौन हो तुम? क्या तुम मेरी भाषा समझ सकते हो?" विक्रम ने हवा में रुके-रुके ही उस एलियन के सीने पर बने अंग्रेजी भाषा के अक्षर को

देखते हुए पूछा।

“मैं तुम्हारी भाषा तो क्या इस ब्रह्मांड की सभी भाषाओं को समझ सकता हूं .... मेरा नाम ‘रिंगो’ है और मैं यहां तुमसे तुम्हारी वायु शक्ति छीनने आया हूं।” रिंगो ने साफ अंग्रेजी बोलते हुए कहा।

“अरे! यह तो मेरे पीछे ही आया है।” विक्रम ने मन ही मन सोचा- “और यह मेरी शक्तियों के बारे में भी जानता है .... इसका मतलब कि जब तक मैं इसकी शक्तियों के बारे में जान ना जाऊं, मुझे इससे सावधान रहना होगा।”

“मेरी शक्तियां तो तुम्हें नहीं मिल सकतीं ... यह मेरे शरीर से जुड़ी हुई हैं।” विक्रम ने रिंगो को समझाते हुए कहा।

“कोई बात नहीं? मैं तुम्हें मारकर इन शक्तियों को तुम्हारे शरीर से निकाल लूंगा।” यह कहकर रिंगो ने पता नहीं क्या किया, कि उसके शरीर से जुड़े वह सभी कंचे बहुत तेज गति से नाचने लगे।

अब विक्रम और सावधान हो गया और ध्यान से रिंगो के शरीर के चारो ओर नाच रहे उन कंचों को देखने लगा।

तभी अचानक उस रिंगो के शरीर से जुड़ा लाल रंग वाला कंचा, आकार में किसी फुटबाल के समान हो गया और तेजी से गति करता हुआ विक्रम के शरीर से टकराया।

वह टक्कर इतनी भयानक थी कि विक्रम अंटार्कटिका की जमीन पर आ गिरा। एक पल में ही विक्रम समझ गया कि वह इस कंचे की और टक्कर नहीं सह पायेगा।

अब विक्रम ने अपने शरीर को धीरे से संभाला और उठकर खड़ा हो गया। पर जैसे ही उसने अपनी नजरें ऊपर की ओर उठाईं, उसके सिर पर तेज गति करता वह लाल कंचा फिर आ गिरा।

इस प्रहार के प्रभाव से विक्रम अंटार्कटिका की बर्फ में गर्दन तक धंस गया। विक्रम की जगह कोई साधारण इंसान होता तो वह उस कंचे की एक टक्कर से ही मर जाता, पर विक्रम एक दिव्य शक्ति धारक देवपुरुष था, जिसने अपने समस्त जीवन में बहुत सी ऐसी परेशानियों को देखा था।

इसलिये विक्रम ने इस बार अपना मुंह ऊपर की ओर करके एक गोल सीटी बजाई।

विक्रम के सीटी बजाते ही विक्रम के सिर के ऊपर एक तेज हवा का चक्रवात उत्पन्न हो गया और विक्रम के इशारे से उस चक्रवात ने रिंगो को अपने लपेटे में ले लिया।

जब तक रिंगो उस चक्रवात में फंसा था, तब तक किसी प्रकार से विक्रम उस बर्फ से बाहर आ गया। पर चूंकि विक्रम का शरीर बर्फ के प्रभाव से कुछ ज्यादा प्रभावित हो जाता था, इसलिये विक्रम को कुछ पलों के लिये अपना शरीर शिथिल पड़ता महसूस हुआ।

जब विक्रम कुछ बेहतर महसूस करने लगा, तो उसने अपने सिर पर घूम रहे चक्रवात को रोक दिया और उसके पीछे मौजूद रिंगो को देखने लगा। विक्रम को लगा था कि चक्रवात में फंस कर रिंगो का बुरा हाल हो गया होगा, पर यही विक्रम की भूल थी।

उस चक्रवात के हटते ही रिंगो मुस्कुराता हुआ दिखाई दिया। इस समय उसके आसपास घूम रहे तीनों कंचों ने उसके शरीर के चारो ओर एक कवच सा बना दिया था, जिसमें वह पूरी तरह से सुरक्षित था।

विक्रम यह देख कर हैरान हो गया।

इस बार विक्रम ने बिना रिंगो को दूसरा मौका दिये ही अपनी वायुशक्ति से बर्फ के अनेकों बड़े से टुकड़े उठाये और उन सभी टुकड़ों को रिंगो की ओर उछाल दिये।

बर्फ की विशाल चट्टान के समान टुकड़े हवा में लहराते हुए रिंगो की ओर उड़ चले, पर इससे पहले कि कोई भी बर्फ का टुकड़ा रिंगो को किसी भी प्रकार से नुकसान पहुंचा पाता, रिंगो के शरीर से जुड़े तीनों कंचे 1 वर्गमीटर आकार के हो गए और तेजी से हवा में आ रहे उन बर्फ के टुकड़ों को रास्तें में ही तोड़ दिया।

“यह रिंगो तो काफी शक्तिशाली लग रहा है और इसकी शक्ति भी काफी विचित्र है ... लगता है कि इससे लड़ने के लिये मुझे शक्ति के स्थान पर बुद्धि का प्रयोग करना पड़ेगा।”

यह सोच विक्रम ने अपने शरीर के चारो ओर रिंगो की ही भांति वायुशक्ति से एक कवच जैसा बना लिया।

“अब यह रिंगो मेरी वायुशक्ति के कवच को बेध नहीं सकता। यानि कि अब मैं इसके वार से सुरक्षित हूं। अब मुझे इसे शक्तिहीन करने के बारे में कुछ सोचना चाहिये? ... क्यों ना इसकी श्वास नली को बाधित कर दूं, इससे यह कुछ ही देर में शक्तिहीन हो जायेगा।”

यह सोच विक्रम चलता हुआ रिंगो के पास जा पहुंचा। इस बार रिंगो ने विक्रम पर कोई वार नहीं किया और वह ध्यान से विक्रम को देखने लगा। शायद वह विक्रम की अन्य शक्तियों के बारे में जानना चाहता था।

विक्रम ने पास पहुंचकर अपनी वायुशक्ति से रिंगो की नाक पर वार कर दिया। विक्रम की वायुशक्ति ने रिंगो की नाक के आसपास एक घेरा सा बना दिया।

परंतु यहां पर भी विक्रम की सोच गलत साबित हुई, क्योंकि रिंगो अभी भी आराम से खड़ा था। तभी रिंगो के शरीर से जुड़ा लाल कंचा एक बार फिर बड़ा हुआ और विक्रम की ओर लपका।

लाल कंचे को अपनी ओर आते देख विक्रम अपने स्थान से नहीं हिला, शायद उसे अपनी वायु शक्ति पर कुछ ज्यादा ही भरोसा था।

परंतु वह लाल कंचा विशाल आकार लिये हुए तेजी से आकर विक्रम के कवच को भेदता हुआ उसके शरीर से टकराया। यह प्रहार पिछले सभी प्रहारों से ज्यादा शक्तिशाली था।

इस भीषण प्रहार की वजह से विक्रम बर्फ में उछलता हुआ दूर जा गिरा। पर इस बार विक्रम उठ भी नहीं पाया कि तभी लाल और पीले दोनों कंचों ने एक साथ विक्रम को टक्कर मारी। इस प्रहार से विक्रम हवा में उड़ता एक बर्फ की बड़ी सी चट्टान के अंदर जा घुसा।

विक्रम की नाक से खून आ गया। विक्रम समझ गया कि वह रिंगो को हरा नहीं पायेगा, इसलिये उसने बिना देर किये अपने शरीर को मानसिक कवच के घेरे में ले लिया।

विक्रम को पता था कि इस मानसिक कवच को कोई नहीं तोड़ सकता और यह कवच स्वतः ही 24 घंटे के बाद गायब हो जायेगा।

विक्रम के मानसिक कवच के घेरे में आते ही उसके शरीर के चारो ओर पड़ी बर्फ एक गोले का आकार धारण करने लगी।

उस गोले से अब विक्रम को बाहर का सबकुछ नजर आ रहा था, पर वह जानता था कि 24 घंटे से पहले वह स्वयं भी अब इस गोले से नहीं निकल सकता और इन 24 घंटों में उसके चारो ओर जमी बर्फ धीरे-धीरे उसके मस्तिष्क को सुन्न करती जायेगी, जिससे वह बेहोश हो जायेगा और बर्फ में दबे होने के कारण वह अपनी स्मृतियां भी खो सकता है।

पर इस समय विक्रम को अपने बचाव के लिये जो समझ में आया, उसने वह कर दिया था। उसे विश्वास था अपनी वारुणि पर जो कि उसे किसी ना किसी प्रकार से ढूंढ ही लेती?

तभी रिंगो ने विक्रम के बर्फ के गोले को बर्फ की चट्टान के बाहर निकाल लिया और उसे अपने कंचों के माध्यम से तोड़ने की कोशिश करने लगा।

परंतु अथक परिश्रम के पश्चात् भी रिंगो उस बर्फ के गोले को तोड़ नहीं पाया, तो उसने बर्फ के गोले को अपने हाथ मे उठाकर एक ऊंची उड़ान भरी और आसमान में काफी ऊंचे पहुंचकर अपनी पूरी शक्ति लगाकर उस गोले को समुद्र की लहरों में उछाल दिया।

....

इसी के साथ विक्रम को अपना पिछला-अगला सबकुछ याद आ गया।

पर इस समय सबसे ज्यादा गुस्सा उसे आकृति पर आ रहा था, जो कि उसे पिछले 10 दिनों से नीली अंगूठी पहनाकर मूर्ख बना रही थी।

विक्रम एक पल में ही समझ गया था कि आकृति की नीली अंगूठी के कारण ही वारुणि उससे सम्पर्क नहीं कर पा रही थी।

आकृति अभी भी मार्केट से नहीं आई थी, इसलिये विक्रम ने गुस्से से काम ना लेते हुए वारुणि के कहे अनुसार उससे सम्पर्क करना शुरु कर दिया।

पर जो भी हो विक्रम अब आकृति को सबक जरुर सिखाना चाह रहा था।

◆ ◆ ◆

चैपटर-9

नरसिंह

तिलिस्मा 6.52

ऐमू भी सुयश के पीछे-पीछे विशाल बाथटब के उस अंतहीन छेद में प्रवेश कर गया। छेद में काफी अंधेरा था, पर जाने कैसे ऐमू को उस गहन अंधेरे में भी साफ दिखाई दे रहा था।

सुयश लगातार उस छेद में गिरता जा रहा था। आखिरकार 10 मिनट के बाद सुयश के इस सफर का अंत हुआ।

सफेद मोती किसी धरातल से टकराया और अगले ही क्षण सुयश उस स्पंजी सफेद मोती पर जाकर गिरा।

सफेद मोती के स्पंजी होने की वजह से सुयश को बिल्कुल भी चोट नहीं आई।

पर सफेद मोती जमीन से टकराते ही पता नहीं कैसे बीच से 2 टुकड़े हो गया और उस सफेद मोती के बीच से एक सफेद रंग की भेड़ निकली।

भेड़ जीवित थी और वह गिरते ही उठकर खड़ी हो गई। अब भेड़ जोर-जोर से मिमिया रही थी। भेड़ को देख कर ऐसा लग रहा था, कि जैसे वह मोती से आजाद होने की खुशियां मना रही हो।

“वाह रे कैश्वर! सीप के अंदर शीप (भेड़) की कल्पना तुम ही कर सकते थे।” सुयश ने भेड़ को देखते हुए कैश्वर की तारीफ की।

तभी ऐमू भी उस छेद से निकलकर बाहर आ गया। वह भी भेड़ को देख कर उसके ऊपर चक्कर लगाने लगा।

अब सुयश की नजरें अपने चारो ओर गईं।

यह एक विशाल कमरा था, जिसके बीचोबीच में लोहे के सरियों से एक बड़ा सा रिंग बना था। सरियों की ऊंचाई लगभग 30 फुट के आसपास

थी।

कमरे से बाहर निकलने के लिये कोई भी दरवाजा नहीं बना था।

कमरे में मौजूद रिंग के अंदर एक रिंग मास्टर की 6 फुट की मूर्ति लगी थी। मूर्ति ने अपने हाथों में एक हंटर पकड़ रखा था।

मूर्ति के आसपास एक शेर इधर-उधर घूम रहा था।

“लगता है कि तिलिस्म का यह भाग कैश्वर ने टुकड़ों में बनाया है। वैसे जो भी हो इस स्थान पर मेष और सिंह दोनों राशियों के प्रतीक भेड़ और शेर के रुप में मौजूद हैं। ... पर हो ना हो इस रिंग मास्टर की मूर्ति में भी कोई ना कोई रहस्य अवश्य छिपा होगा? .... पर उस रिंग मास्टर के पास जाऊं कैसे? उसके आसपास तो वह भयानक शेर घूम रहा है, जो कि मेरे अंदर प्रवेश करते ही मुझ पर आक्रमण कर देगा।”

तभी सुयश की नजर रिंग के बाहर घूम रही भेड़ पर पड़ी। भेड़ जब-जब मिमिया रही थी, शेर भी उत्तेजित होकर दहाड़ मार रहा था।

यह देखकर सुयश के दिमाग में एक विचार आया। सुयश अब रिंग के दरवाजे के पास पहुंच गया। दरवाजा बाहर से एक सांकल के द्वारा बंद था।

अब सुयश की नजर रिंग के अंदर खड़े शेर की ओर गई, जो सुयश को दरवाजे के पास आया देखकर वहीं आकर खड़ा हो गया था और सुयश को हिंसक भाव से घूर रहा था।

तभी भेड़ एक बार फिर मिमियाई। भेड़ की मिमियाहट सुनकर शेर दहाड़ मारकर भेड़ की ओर चला गया।

यह देखकर सुयश ने रिंग के दरवाजे पर लगी सांकल को हटाया और दरवाजे को खोल तेजी से रिंग की सलाखों पर ऊंचे चढ़ गया।

“ऐमू के दोस्त ऐमू को बचाओ, नहीं तो यह गंदा शेर ऐमू को खा जायेगा।“ ऐमू भी शेर से बचने के लिये, उस रिंग के ऊपर जाकर बैठ गया।

ऐमू के शब्दों को सुन सुयश ने मुस्कुरा कर ऊपर उड़ते हुए ऐमू को देखा और फिर बोला- “पर तुम तो ऊपर उड रहे हो ऐमू, तुम्हें भला शेर

कैसे खा पायेगा?”

उधर रिंग का दरवाजा खुलते देख शेर भागकर रिंग के बाहर आ गया।

शेर को रिंग के बाहर आते देख सुयश उतरकर रिंग के अंदर चला गया और उसने अंदर से रिंग का दरवाजा बंद कर लिया।

अब सुयश रिंग के अंदर था और शेर रिंग के बाहर।

उधर शेर ने छलांग लगाकर भेड़ को पकड़ लिया और उसे मारकर खाने लगा। शेर के खाने के स्पीड से साफ पता चल रहा था कि शेर कई दिनों से भूखा था।

उधर अब सुयश चलता हुआ रिंग मास्टर के पास पहुंच गया। सुयश की निगाह रिंग मास्टर पर थी। रिंग मास्टर के दाहिने हाथ में हंटर था और बांया हाथ खाली था।

रिंग मास्टर ने बांये हाथ की अनामिका उंगली में एक अंगूठी पहन रखी थी, जिस पर सूर्य की आकृति बनी हुई थी।

“रिंग मास्टर की पूरी मूर्ति पत्थर की है, बस इसकी अंगूठी और हंटर ही असली जैसा लग रहा है। इसका मतलब इन दोनों ही चीजों का प्रयोग किसी स्थान पर होना है?”

यह सोच सुयश ने रिंग मास्टर के हाथ से पहले हंटर निकालने की कोशिश की। पर हंटर अपने स्थान से हिला भी नहीं।

तभी सुयश के दिमाग को एक झटका सा लगा।

“अरे! पिछले कमरे में जब सन राइजिंग के 2 अक्षर गिर गये थे, तो वह ‘SUN RING’ ही तो बन गया था, जिसका मतलब सूर्य की अंगूठी होता है और यहां इस रिंग मास्टर ने भी सूर्य की आकृति वाली अंगूठी पहन रखी है। इसका साफ मतलब है कि इस अंगूठी में अवश्य कोई शक्ति है? .... पहले इस अंगूठी को ही निकालने की कोशिश करता हूं।”

चूंकि रिंग मास्टर के बांये हाथ की मुद्रा के हिसाब से उसकी उंगलियां सीधी थीं, इसलिये सुयश को इस कार्य में कोई भी परेशानी नहीं आई?

अब सूर्य की आकृति वाली अंगूठी सुयश के हाथ में थी। कुछ देर तक अंगूठी को देखते रहने के बाद सुयश ने उस अंगूठी को अपने बांये हाथ की अनामिका उंगली में पहन लिया।

अंगूठी सुयश की उंगली में बिल्कुल फिट आ गई।

अब सुयश ने फिर से रिंग मास्टर के हाथ से हंटर लेने की कोशिश की। इस बार में आसानी से हंटर सुयश के हाथ में आ गया।

“यह हंटर तो मेरे हाथ में आ गया, पर अब इस हंटर से करना क्या है? ... कहीं ये हंटर उस शेर को नियंत्रित करने के लिये तो नहीं?”

यह सोच हिम्मत दिखाते हुए सुयश अब रिंग के बाहर आ गया।

“रुक जाओ ऐमू के दोस्त नहीं तो वह शेर तुम्हें खा जायेगा।“ ऐमू ने सुयश के सिर के ऊपर से उड़ते हुए चीखकर कहा।

सुयश को रिंग के बाहर आते देख, शेर ने एक जोर की दहाड़ मारी और सुयश की ओर लपका। शेर को अपनी ओर आते देख एक पल के लिये सुयश का दिल जोरों से धड़कने लगा।

तभी शेर की निगाह सुयश के हाथ में पहनी अंगूठी और हंटर पर गई। दोनों ही चीजों पर नजर पड़ते ही शेर की उत्तेजना शांत हो गई।

अब शेर, सुयश के पास आया और उसका पैर चाटने लगा। यह देख सुयश ने राहत की साँस ली।

कुछ देर तक पैर चाटने के बाद शेर खड़ा हुआ और उसने एक जोर की दहाड़ मारी।

जाने क्या सोचकर सुयश शेर की पीठ पर बैठ गया?

सुयश को अपनी पीठ पर बैठता देख, शेर तेजी से कमरे की एक दीवार की ओर दौड़ पड़ा।

“अरे कोई मुझे भी साथ ले लो?” ऐमू हवा में उड़ता हुआ उस शेर के पीछे भागा।

शेर के दौड़ने की गति बहुत तेज थी। शेर अब कमरे की दीवार से टकराने ही वाला था। यह देख सुयश ने जोर से अपनी आँखें बंद कर लीं।

तभी सुयश को अपने चेहरे पर ठंडी हवाओं के झोंकों का अहसास हुआ। यह अहसास होते ही सुयश ने अपनी आँखें खोल दीं।

इस समय वह शेर की पीठ पर था और शेर किसी जंगल में तेजी से एक दिशा की ओर दौड़ रहा था।

“लगता है कि उस कमरे में दीवार वाली जगह पर कोई अदृश्य रास्ता था, जो कि सिर्फ शेर को दिखाई दे रहा था।

तभी सुयश की निगाह शेर के साथ-साथ उड़ रहे ऐमू पर गई। ऐमू को देखकर ऐसा लग रहा था कि मानो ऐमू अब किसी भी हालत में सुयश को नहीं छोड़ना चाह रहा हो?

सुयश ने अपने शरीर को नियंत्रित करने के लिये शेर के बालों को मजबूती से पकड़ रखा था।

पता नहीं वह कौन सा जंगल था, पर वह काफी हरा-भरा था। सुयश उस हरे-भरे जंगल को देखता हुआ इस अनोखी सवारी का लुत्फ उठा रहा था।

लगभग 20 मिनट तक ऐसे ही अनवरत दौड़ते रहने के बाद शेर एक बड़े से झरने के पास आकर रुक गया। झरने के आसपास का तापमान काफी कम होने के कारण, झरने का पानी हवा में ही जम गया था।

“लगता है शेर पागल हो गया है, जो नहाने के लिए इतनी दूर तक दौड़ कर आया है।” ऐमू ने झरने के आसपास उड़ते हुए कहा।

उस झरने के नीचे एक बर्फ की 10 फुट ऊंची चट्टान दिखाई दे रही थी। ध्यान से देखने पर प्रतीत हो रहा था कि उस बर्फ की चट्टान में कोई आदमकद योद्धा खड़ा है, जो कि शायद तापमान कम होने की वजह से झरने के नीचे खड़े-खड़े ही बर्फ में परिवर्तित हो गया था।

झरने के सामने की ओर एक पहाड़ी गुफा भी बनी दिखाई दे रही थी।

गुफा के ऊपर -बड़े-बड़े धातु के अक्षरों से ‘AR_E_’ लिखा था।

गुफा के बाहर एक योद्धा की मूर्ति लगी थी, जिसके सिर पर भेड़ के समान 2 मुड़ी हुई सींघें बनी हुई थीं।

“ये योद्धा तो ग्रीक माइथोलॉजी का पात्र ‘एरीज’ लग रहा है, जो कि मेष राशि का प्रतिनिधित्व करता है। पर एरीज तो युद्ध का देवता है... अब इसके यहां होने का क्या मतलब है? और मुझे तो गुफा के ऊपर लगे अक्षर भी अधूरे दिख रहे हैं ..... कहीं गुफा के ऊपर ‘ARIES’ ही तो नहीं लिखा? और इसके ‘I’ व ‘S’ अक्षर कहीं गायब हो? .... एक मिनट .... एक ‘I’ और ‘S’ तो मेरी जेब में भी है, जो कि मुझे सन राइजिंग से मिला था। कहीं वह अक्षर इसी जगह के लिये ही तो नहीं मिला था?”

यह सोचकर सुयश ने अपनी जेब से दोनो अक्षर निकाल लिये, लेकिन गुफा पर लिखे अक्षर काफी ऊंचे लगे थे और सुयश को अपने आसपास कोई भी ऐसी चीज नहीं दिखाई दे रही थी, जिसके माध्यम से वह इन दोनों अक्षरों को गुफा के ऊपर लगाकर देख पाता।

तभी सुयश की नजरें ऐमू पर जाकर टिक गईं, जो कि उसके सिर के ऊपर गोल-गोल उड़ रहा था।

सुयश ने सीटी बजाकर ऐमू को नीचे उतरने का इशारा किया।

सुयश ने सीटी को बिल्कुल आर्यन की तरह बजाया था, जिसे सुनकर ऐमू, सुयश के कंधे पर आकर बैठ गया।

“ऐमू, मैं जानता हूं कि तुम अंग्रेजी भाषा पढ़ भी सकते हो।” सुयश ने ऐमू को समझाते हुए कहा- “तुम्हें अब इन दोनों अक्षरों को गुफा पर लिखे अक्षरों के पास इस प्रकार लगाना होगा कि उससे एरीज शब्द बन जाये?”

इतना कहकर सुयश ने एक लकड़ी से जमीन पर एरीज की स्पेलिंग लिख कर ऐमू को बता दिया।

“ऐमू समझ गया। .... ऐमू सब समझ गया। ऐमू अभी जाता और अभी आता।” यह कहकर ऐमू ने अपने दोनों पंजों में दोनों अक्षरों को पकड़ा और गुफा के ऊपर की ओर उड़ गया।

उड़ते हुए ऐमू उस स्थान पर पहुंच गया, जहां पर एरीज शब्द के बाकी अक्षर लगे हुए थे।

जैसे ही ऐमू ने पहले अक्षर ‘I’ को उसके स्थान पर लगाया, वह अक्षर बड़ा होकर स्वयं ही उस खाली स्थान पर फिट हो गया।

यह देख ऐमू ने ‘S’ अक्षर को भी उसके स्थान पर फिट कर दिया। अब दोनों अक्षरों का आकार गुफा पर लगे बाकी अक्षरों के बराबर हो गया।

तभी एक ‘खटाक’ की आवाज के साथ एरीज योद्धा जीवित हो गया। जीवित होते ही एरीज ने सुयश को घूरना शुरु कर दिया।

इससे पहले कि सुयश अपने बचाव में कुछ कर पाता, एरीज ने सुयश पर हमला कर दिया।

एरीज के सिर पर लगी दाहिनी सींघ आग की तरह दहकने लगी। अब एरीज ने अपने दाहिना हाथ उठाकर सुयश की ओर कर दिया।

एरीज के सींघ से कुछ आग की लपटें, एरीज के कंधे से होते हुए उसके हाथों में जाकर भर गईं। अब एरीज के हाथ से आग की लपटें निकलकर सुयश की ओर बढ़ीं।

एरीज की आग ने सुयश के शरीर को पूरी तरह से झुलसा देना था कि तभी वहां खड़े शेर ने एक छलांग मारी और आग व सुयश के बीच में आ गया।

एरीज की आग से शेर का शरीर जलने लगा। शेर ने अपने शरीर की परवाह ना करते हुए भी एक जोर की दहाड़ लगाई और एरीज के ऊपर छलांग लगा दी।

जलता हुआ शेर, एरीज को लिये हुए जमीन पर गिर गया और एरीज को जगह-जगह से काटने लगा।

एरीज और शेर का युद्ध देखकर सुयश समझ गया कि शेर बहुत ज्यादा देर तक एरीज को रोक नहीं पायेगा? इसलिये सुयश तेजी से अपने बचाव के लिये चारो ओर नजरें दौड़ाने लगा।

अब सुयश की निगाह 10 फुट की बर्फ की चट्टान पर थी, जिसमें बंद कोई योद्धा सुयश को नजर आ रहा था।

“कैश्वर ने अगर एरीज को यहां रखा है, तो अवश्य ही उससे बचने के लिये यहां पर कोई ना कोई उपाय जरुर रखा होगा। कहीं इस बर्फ में बंद

योद्धा एरीज से बचने का उपाय तो नहीं? .... पर इस योद्धा को बर्फ से कैसे निकाला जा सकता है?”

उधर एरीज ने बार-बार अग्निवर्षा करके शेर को पूरी तरह से जला डाला था।

अब शेर जमीन पर पड़ा अपनी अंतिम साँसें गिन रहा था।

जब एरीज निश्चिंत हो गया कि शेर में जान नहीं बची है, तो वह वापस सुयश की ओर घूम गया।

यह देख सुयश तुरंत बर्फ की चट्टान के आगे खड़ा हो गया और एरीज की अग्निवर्षा का इंतजार करने लगा।

बहरहाल सुयश को ज्यादा इंतजार नहीं करना पड़ा, एरीज ने एक बार फिर अपनी दाहिनी सींघ से आग की ऊर्जा को एकत्र किया और सुयश के ऊपर वार कर दिया।

परंतु इस बार सुयश पूरी तरह से चौकन्ना था, उसने एक दिशा में कूद कर अपने आपको बचा लिया।

पर एरीज के इस वार से सुयश के पीछे खड़ी बर्फ की चट्टान पूरी तरह से पिघल गई। बर्फ के पिघलते ही बर्फ के अंदर मौजूद योद्धा साफ-साफ दिखाई देने लगा।

वह योद्धा एक सिंहमानव था, जो कि भगवान नरसिंह की प्रतिकृति दिखाई दे रहा था।

बर्फ से सिंहमानव को निकलता देख सुयश एक बार तो डर ही गया। उसे लगा कि कहीं यह सिंहमानव भी उस पर हमला ना करने लगे? पर सिंहमानव बर्फ पिघलने के बाद भी अपने स्थान पर निष्क्रिय अवस्था में खड़ा था।

“यह सिंहमानव निष्क्रिय अवस्था में क्यों है? क्या इसे भी किसी दूसरे तरीके से सजीव करना है?”

सिंहमानव को देख एरीज थोड़ा सा घबराकर पीछे हट गया। सुयश ने एरीज के चेहरे पर घबराहट के भाव को साफ पढ़ लिया। इससे वह यह तो जान गया कि सिंहमानव से एरीज भी घबरा रहा है।

अब बस सुयश को सिंहमानव को सक्रिय करने के बारे में सोचना था।

तभी सुयश की निगाह बादलों को चीर कर जमीन की ओर आ रही सूर्य की किरणों पर पड़ी, जो कि नरसिंह के बांये हाथ की अनामिका उंगली पर पड़ रही थी।

यह देखते ही सुयश के दिमाग को एक झटका सा लगा। अब सुयश की निगाहें अपने हाथ में पहनी उस सूर्य की आकृति वाली अंगूठी पर गई, जो कि उसने रिंग मास्टर के हाथ से निकाल कर पहनी थी।

उधर एरीज की अब बांई सींघ बर्फ की तरह से ठंडी होने लगी थी।

उसे देख सुयश सारी कहानी एक पल में ही समझ गया। वह जान गया कि एरीज के बांये सींघ में बर्फ की शक्ति है और इसी शक्ति की सहायता से एरीज ने सिंहमानव को बर्फ में बदल दिया होगा।

“लगता है कि रिंग मास्टर की सूर्य वाली अंगूठी सिंहमानव की ही है और शायद सन राइजिंग अपने अक्षरों के माध्यम से इसी पहेली के बारे में बताना चाह रहा था? ... यानि कि इससे पहले कि एरीज अपनी बर्फ की शक्तियों से मुझ पर कोई वार करे, मुझे सिंहमानव को जिंदा करना होगा?”

अब सुयश ने अपनी पूरी शक्ति लगाकर सिंहमानव की ओर छलांग लगा दी और इससे पहले कि एरीज उस पर अपनी बर्फ शक्ति से वार करता, उसने अपने हाथ में पहनी अंगूठी को सिंहमानव को पहना दिया।

तभी एरीज के बांये हाथ से निकली बर्फशक्ति ने सुयश के शरीर को चारो ओर ढक लिया और देखते ही देखते वह बर्फ के पुतले में परिवर्तित हो गया।

पर बर्फ के पुतले में परिवर्तित होने के पहले ही सुयश ने अपना कार्य पूर्ण कर लिया था। अच्छी बात यह थी कि बर्फ के अंदर भी सुयश आसानी से साँस ले रहा था।

सिंहमानव की उंगली में अंगूठी आते ही सिंहमानव जीवित हो गया। जीवित होते ही सिंहमानव बिना कोई मौका दिये, एरीज पर टूट पड़ा।

सिंहमानव के हाथ के नाखून बिल्कुल देवता नरसिंह की भांति ही थे। सिंहमानव ने अपने नाखून के एक वार से ही एरीज के पेट को फाड़ डाला।

एक पल में ही एरीज का शव जमीन पर गिरा पड़ा था। एरीज के मरते ही सिंहमानव ने एक बार सुयश कर ओर देखा और फिर सूर्यदेव को प्रणाम कर अपने स्थान से गायब हो गया।

यह देख सुयश को आश्चर्य हुआ। उसे लग रहा था कि एरीज को मारने के बाद सिंहमानव उसे बर्फ से सुरक्षित निकाल लेगा, पर ऐसा नहीं हुआ था।

तभी सुयश को हवा में उड़ते हुए ऐमू के पंजें में दबा हुआ एक छोटे से दर्पण का टुकड़ा दिखाई दिया।

ऐमू ने दर्पण के उस टुकड़े को उस स्थान पर ले जाकर रख दिया, जहां सूर्य की किरण गिर रही थी। ऐमू के ऐसा करते ही दर्पण ने सूर्य की रोशनी को परावर्तित करके सुयश की ओर मोड़ दिया।

जैसे ही सूर्य की किरणों ने सुयश के बर्फ के पुतले को छुआ, सुयश के शरीर पर बना सूर्य वाला सुनहरा टैटू चमचमा उठा। इसी के साथ सुयश के शरीर पर से बर्फ का पिघलना शुरु हो गया।

कुछ ही देर में सुयश के शरीर पर जमी पूरी बर्फ पिघल गई और सुयश सुरक्षित बाहर आ गया।

अब सुयश की निगाह एरीज की गुफा पर थी। सुयश ने ऐमू को अपने साथ लिया और धीरे-धीरे चलता हुआ उस गुफा में प्रवेश कर गया।

गुफा का दूसरा सिरा जिस स्थान पर निकला, वहां तौफीक, जेनिथ, ऐलेक्स व क्रिस्टी पहले से ही बैठे थे। तौफीक और ऐलेक्स को जिंदा देख सुयश खुश हो गया।

सभी अब आपस में मिलकर काफी खुश दिखाई दे रहे थे। कुछ ही देर में सभी ने एक दूसरे को अपनी कहानी सुना दी।

अब सभी खुशी-खुशी शैफाली के वहां पहुंचने का इंतजार करने लगे।

◆ ◆ ◆

रक्षक लियो

27.01.2002, रविवार, सीनोर महल, अराका द्वीप

इस समय मेलाइट, सुर्वया और सनूरा किसी पक्की सहेलियों की भांति सीनोर महल के एक कक्ष में बैठी हुईं आपस में हंसी-मजाक कर रहीं थीं।

"तो फिर अब तुम्हारा अपनी जिंदगी को लेकर आगे के बारे में क्या प्लान है मेलाइट?" सुर्वया ने मेलाइट की ओर देखते हुए पूछा।

"कुछ खास नहीं ... बस अपने रोजी के साथ सीरीनिया के जंगलों में बने अपने निम्फिया महल में बाकी की जिंदगी शान से बितानी है।" मेलाइट के चेहरे पर रोजर का नाम लेते हुए एक लालिमा सी छा गई।

"आय हाय! रोजी बोलते हुए क्या निखार आया है अपनी मेलाइट के चेहरे पर।" सुर्वया ने मेलाइट को चिढ़ाने की कोशिश की- "वैसे तुम्हारा वह 'नाभिकीय टार्च' इस समय कर क्या रहा है?"

"मुझे याद करने के सिवा और क्या करेगा?" मेलाइट ने सुर्वया को आँख मारते हुए कहा- "वैसे भी मैं उसे और कुछ करने थोड़े ही दूंगी?"

"अरे, ये बताओ कि तुम उसे उसकी शक्तियों के बारे में बता क्यों नहीं देती?" सनूरा ने मेलाइट से कहा- "बेचारा दिन भर परेशान होकर बस अपनी नाभि से निकलते प्रकाश को ही देखता रहता है। ... अरे उसे तो अपनी शक्तियों के बारे में भी कुछ भी नहीं पता? ऐसे कब तक चलेगा?"

"मैं उसे बताना तो चाहती हूं, पर जैसे ही वह मेरे सामने आता है, उसका चेहरा देखते ही मुझे शरारत सूझने लगती है। क्या करुं वह है ही इतना क्यूट?" मेलाइट ने शोखी भरे अंदाज में कहा।

लेकिन इससे पहले कि कोई कुछ और पूछ पाता कि तभी पास वाले रोजर के कमरे से किसी चीज के जोर से गिरने की आवाज सुनाई दी?

वह तेज आवाज सुन तीनों ही चौंक गईं।

“लगता है कि तुम्हारा रोजी तुम्हारे प्यार में पागल हो गया है।” सुर्वया ने मुस्कुराते हुए कहा और उठकर रोजर के कमरे की ओर चल दी- “तुम लोग यहीं बैठो, मैं जरा रोजर के कमरे से होकर आती हूं।”

“ये लो, प्यार वो तुम्हारा है और चिंता उसकी तुम्हारी सहेली को हो रही है।” सनूरा ने मेलाइट को चिढ़ाते हुए कहा, पर मेलाइट ने सनूरा की बात का बुरा नहीं माना।

सुर्वया अब रोजर के कमरे की ओर चल दी। तभी सुर्वया को फिर रोजर के कमरे से किसी चीज के गिरने की आवाज सुनाई दी?

दूसरी बार आवाज सुनकर अब सुर्वया की आँखें शंका के अंदाज में सिकुड़ गईं, पर जाने क्यों उसे यह विश्वास था कि इतनी सुरक्षा को भेदकर कोई भी परेशानी उनके महल में नहीं पहुंच सकती?

सुर्वया ने बिना आवाज किये रोजर के कमरे के दरवाजे को धक्का दिया, पर दरवाजा अंदर से बंद था। दरवाजा अंदर से बंद देखकर सुर्वया को थोड़ा सा अजीब जरुर लगा क्योंकि इससे पहले उसने कभी भी रोजर को अंदर से दरवाजा बंद किये हुए नहीं देखा था?

तभी अंदर से किसी शेर के दहाड़ने की जोर की आवाज सुनाई दी। यह आवाज इतनी तेज थी कि इस बार सनूरा और मेलाइट भी सुर्वया के पास आ पहुंची।

“क्या हुआ? यह शेर की आवाज कहां से आई?” सनूरा ने घबराते हुए सुर्वया से पूछा।

“मुझे भी नहीं पता कि अंदर शेर कहां से आया? परंतु दरवाजा अंदर से बंद होने के कारण मैं अंदर नहीं जा पाई।” सुर्वया ने कहा।

“कहीं अंदर लुफासा तो नहीं, जो कि शेर बनकर रोजर के साथ हंसी-मजाक कर रहा है?” मेलाइट के चेहरे पर भी अब चिंता की लकीरें साफ दिखने लगीं थीं।

“नहीं लुफासा इस समय अपनी बहन वीनस से मिलने के लिये वाशिंगटन गया है। वह इस समय महल में है ही नहीं।” सनूरा ने कहा।

"फिर तो अवश्य ही अंदर कोई अंजान मुसीबत है, जो पता नहीं किस प्रकार से अंदर पहुंच गई है?" मेलाइट ने परेशान होते हुए कहा।

"तुम लोग परेशान मत हो। यह किसी सिंह की आवाज है और सिंह किसी भी प्रकार का क्यों ना हो? मैं उसे नियंत्रित करना जानती हूं।" सुर्वया ने कहा- "अब बस तुम लोग थोड़ा पीछे हट जाओ और बाकी का काम मुझ पर छोड़ दो ... और यकीन मानो मुझे कुछ भी नहीं होगा?"

सुर्वया के शब्दों को सुन मेलाइट और सनूरा कमरे के दरवाजे से थोड़ा दूर हट गईं, पर उनकी नजर अभी भी सुर्वया पर ही थी।

सुर्वया ने सनूरा और मेलाइट को दूर हटते देख अपना पैर जोर से कक्ष के दरवाजे पर मारा। सुर्वया में पता नहीं कितनी शक्ति भरी थी? कि सुर्वया के एक वार से ही रोजर के कक्ष का दरवाजा टूटकर नीचे गिर गया।

अब सुर्वया ने सनूरा और मेलाइट को पीछे रहने का इशारा किया और स्वयं रोजर के कक्ष में प्रवेश कर गई।

कक्ष में प्रवेश करते ही सुर्वया ने अपनी नजरें चारो ओर दौड़ाईं, पर उसे कक्ष में कोई नहीं दिखाई दिया? सुर्वया की नजरें बिल्कुल किसी शेरनी की भांति चौकन्नी दिख रही थीं।

तभी सुर्वया को कक्ष में रखे एक सिंहासन के पीछे से किसी विशाल शेर की पूंछ दिखाई दी, जो कि धीरे-धीरे हिल रही थी।

सुर्वया ने शेर को देखते ही अपने मुंह से एक धीमी सी सीटी बजाई, जिसे सुनकर वह शेर सिंहासन के पीछे से निकलकर बाहर आ गया और आश्चर्य से सीटी बजाती सुर्वया को देखने लगा।

यह शेर लियो था, जो कि उस समय रोजर के बनाए सुनहरे द्वार में प्रवेश कर सीनोर महल में स्थित रोजर के कक्ष में आ गया था और ऐसा इस कारण हुआ था क्योंकि उस समय सुनहरा द्वार बनाते समय रोजर सीनोर महल के अपने कमरे के बारे में सोच रहा था।

उधर सुर्वया अब शेर को देखते हुए लगातार सीटी बजा रही थी और अपने दोनों हाथों को आगे कर शेर की तरफ हिला रही थी।

सुर्वया को ऐसा करते देख लियो अब शांत नजर आने लगा और धीरे-धीरे सुर्वया की ओर बढ़ने लगा।

शेर को अपनी ओर बढ़ता देख सुर्वया अब अपने स्थान पर रुक गई और बिना डरे हुए शेर की आँखों में देखने लगी।

लियो चलता हुआ सुर्वया के पास पहुंचा और सुर्वया के चारो ओर घूमकर उसे सूंघने लगा। पता नहीं लियो को सुर्वया में क्या समझ आया कि अब वह सुर्वया के सामने अपनी पूंछ हिलाने लगा था।

“बहुत अच्छे!” सुर्वया ने लियो की पीठ को थपथपाते हुए कहा- “क्या नाम है तुम्हारा? और तुम इस कमरे में कैसे आए?”

सुर्वया को अपनी भाषा बोलते देख लियो चौंक गया और सुर्वया के चेहरे के सामने जाकर खड़ा हो गया।

“मेरा नाम लियो है। मैं यहां एक सुनहरे द्वार से पहुंचा हूं। पर आप कौन हो? और हमारी भाषा कैसे बोल सकती हो?” लियो ने कहा।

“मेरा नाम सुर्वया है और मैं सिंहलोक की राजकुमारी हूं।” सुर्वया ने कहा- “मुझे देवताओं का आशीर्वाद प्राप्त है, जिससे मैं सभी सिंहों से बात कर लेती हूं और वह मुझे किसी प्रकार की हानि नहीं पहुंचाते।”

“तो क्या आपको देवता जीयूष का आशीर्वाद प्राप्त है?” लियो ने पूछा- “क्योंकि वही सबसे बड़े देवता हैं ... वैसे मैं तो देवी आर्टेमिस का सबसे प्यारा सिंह हूं, पर मुझे आप बहुत अच्छी लगीं।”

“नहीं लियो, मुझे महादेव का आशीर्वाद प्राप्त है, जो पूर्व दिशा में स्थित द्वीपसमूह के देवता हैं। पर मैं अभी तुम्हारी कहानी नहीं सुन सकती क्योंकि इस कक्ष के बाहर मेरी 2 सहेलियां मेरी प्रतीक्षा कर रहीं हैं। पहले उन्हें मैं तुम्हारे बारे में बता दूं, फिर आराम से बैठकर तुम्हारे यहां पहुंचने की कहानी सुनती हूं .... अब मैं तुम्हें लेकर बाहर चलने जा रही हूं, पर ध्यान रखना कि तुम्हें यहां पर उपस्थित किसी भी व्यक्ति पर कोई प्रहार नहीं करना है।” सुर्वया ने लियो को समझाते हुए कहा।

सुर्वया की बात सुन लियो ने अपना सिर हिलाकर अपनी सहमति दे दी।

अब सुर्वया धीरे से लियो के ऊपर सवार हो गई और रोजर के कक्ष से बाहर निकल आई।

मेलाइट और सनूरा कक्ष के बाहर सुर्वया का बेसब्री से इंतजार कर रहे थे, वह सुर्वया को शेर पर बैठे देख खुश हो गईं।

तभी मेलाइट की निगाह लियो के ऊपर गई और वह भागती हुई लियो के गले से लग गई।

“अरे लियो, तुम यहां कैसे आ गए? क्या देवी आर्टेमिस भी तुम्हारे साथ यहां आई हैं?” मेलाइट तो जैसे लियो को इतने दिन बाद देखकर प्रसन्न हो गई थी।

मेलाइट को लियो के गले लगते देख सुर्वया लियो से उतर गई। उसे पता चल गया कि लियो मेलाइट का ही सिंह है।

लियो भी प्यार से मेलाइट का हाथ चाटने लगा। मेलाइट को शेर की भाषा नहीं आती थी, पर लियो के इस प्रकार हाथ चाटने से वह सबकुछ समझ गई।

सनूरा भी एक बेजुबान के इस प्रकार के व्यवहार से प्रसन्न दिख रही थी।

कुछ देर के बाद मेलाइट लियो से अलग हुई। परंतु अभी तक किसी की समझ में यह नहीं आया था कि लियो आखिर यहां पहुंचा कैसे? और रोजर बंद कक्ष से कहां गायब हो गया?

परंतु सुर्वया ने लियो की कहानी सुनकर अंदाजा लगा लिया, कि रोजर के साथ क्या हुआ होगा? और लियो की कहानी को अक्षरशः सनूरा और मेलाइट को सुना दिया।

“इसका मतलब रोजर मेरी बहनों से भी मिला होगा।” अब मेलाइट के चेहरे पर खुशी के भाव स्पष्ट देखे जा सकते थे- “प्लीज सुर्वया जरा अपनी दिव्यदृष्टि से देखकर बताओ ना कि इस समय रोजर कहां पर है? और वह क्या कर रहा है? कहीं वह किसी मुसीबत में ना फंस जाए?”

“ठीक है मेलाइट, मैं तुम्हें रोजर के बारे में सबकुछ बता दूंगी, परंतु इसके बदले में मुझे तुमसे एक चीज चाहिये होगी?” सुर्वया के शब्दों में

रहस्य भरा था।

“तुम्हें मुझसे कौन सी चीज चाहिये सुर्वया?” मेलाइट ने ना समझने वाले भाव से कहा।

“मुझे तुम्हारा यह सिंह लियो हमेशा-हमेशा के लिये चाहिये मेलाइट।” सुर्वया ने कहा- “मुझे यह सिंह बहुत अच्छा लगा।”

“इसमें पूछने की क्या बात है सुर्वया, लियो तो मैं तुम्हें वैसे ही दे दूंगी। आखिर तुमने मेरे रोजर की एक बार जान भी तो बचाई थी। ... और वैसे भी मुझे सिंहो की भाषा नहीं आती और तुमसे तो लियो बात भी कर ले रहा है। इसलिये मुझे लगता है कि यह तुम्हारे ही पास सही रहेगा। .... पर ... पर एक बार तुम्हें लियो से भी इसके बारे में पूछ लेना चाहिये। आखिर पता तो चले कि वह भी तुम्हारे साथ रहना चाहता है कि नहीं?”

मेलाइट की बात सुन लियो सुर्वया के पास जाकर अपनी पूंछ हिलाने लगा।

“लो जी ... यह तो पहले से ही तैयार दिख रहा है। बल्कि यह तो काफी प्रसन्न भी दिख रहा है।” सनूरा ने लियो को देखते हुए कहा- “अच्छा लियो, अब तुम जब तक इस महल में हो तुम्हें मेरी बात भी माननी पड़ेगी क्योंकि रिश्ते में हम तुम्हारी मौसी लगीं।”

सनूरा ने आखिरी बात बिल्ली के अंदाज में कही, जिसे सुनकर सभी हंस दिये।

अब सुर्वया ने अपनी आँखें बंद कर लीं और रोजर को देखने लगी। रोजर इस समय ‘निम्फिया’ के सामने खड़े होकर उस महल को निहार रहा था।

सुर्वया ने यह बात मेलाइट को बता दी।

“इसका मतलब रोजर स्वयं ही अपनी सभी शक्तियों के बारे में जानना चाहता है।” मेलाइट ने कहा- “चलो अच्छा ही है, अब उससे कुछ छिपाने की जरुरत भी नहीं पड़ेगी?”

अभी यह सब बातें कर ही रहे थे कि तभी महल के छत पर किसी चीज के गिरने की तेज आवाज सुनाई दी। वह आवाज सुनते ही सभी

सीढ़ियों से होते हुए महल की छत की ओर भागे।

पर ऊपर पहुंचकर सभी की आँखें खुशियों से भर गईं।

सीनोर महल की छत पर इस समय वारुणि और हनुका खड़े थे। वारुणि को देख सुर्वया ने आगे बढ़कर उसे गले से लगा लिया।

“अरे! वारुणि तुम भी यहां पर .... क्या बात है। लगता है कि अराका द्वीप पर कुछ बड़ा होने वाला है? जो इतने सारे शक्तिधारक एक साथ यहां पर एकत्रित हो रहे हैं।” सुर्वया ने वारुणि की ओर देखते हुए कहा।

“तुम सही कह रही हो सुर्वया, सच में इस द्वीप पर कुछ बड़ा होने वाला है? परंतु तुम्हें भी अभी उस बड़ी घटना का पूर्ण अंदाजा नहीं है ... पर चिंता मत करो, मैं आ गई हूं तो मैं तुम्हें सबकुछ बता दूंगी ... लेकिन इससे पहले हमें किसी को बंदी बनाने के बारे में सोचना होगा?”

“बंदी? पर किसे?” सुर्वया ने ना समझते हुए कहा।

“बता दूंगी ... पर जरा यहां खड़े बाकी लोगों से मेरा परिचय तो हो जाये।” वारुणि ने वहां खड़े मेलाइट और सनूरा की ओर इशारा करते हुए कहा।

“यह वारुणि है, इसने भी तुम्हारी देवी शलाका और आकृति की तरह वेदालय से ही शिक्षा ली है।” सुर्वया ने वारुणि का परिचय सभी से कराते हुए कहा और फिर सुर्वया ने वारुणि को मेलाइट और सनूरा के बारे में सबकुछ बता दिया।

“ठीक है ... इसका मतलब इस समय लुफासा यहां पर नहीं है?” वारुणि ने सनूरा की ओर देखते हुए कहा।

“आप ... आप लुफासा को कैसे जानती हैं?” सनूरा ने आश्चर्य से वारुणि की ओर देखते हुए कहा।

“मैं इस समय इस पृथ्वी पर उपस्थित उन सभी शक्तियों के बारे में जानती हूं, जिनकी मुझे आवश्यकता पड़ने वाली है।” वारुणि ने कहा।

तभी आसमान से एक बड़ी सी चिड़िया आकर उन सभी के सामने महल की छत पर उतरी। सभी अभी उस पक्षी को देख ही रहे थे कि तभी

उस पक्षी ने लुफासा का रुप धारण कर लिया।

परंतु इस समय लुफासा के चेहरे पर थके-थके से भाव थे।

“क्या हुआ लुफासा? तुम वीनस को अपने साथ लेकर क्यों नहीं आए?” सनूरा ने चिंतित लुफासा को देखते हुए पूछा।

“वीनस को सामरा का युवराज वेगा अपने साथ लेकर कहीं चला गया? अब मैं उस वेगा को छोड़ूंगा नहीं।” लुफासा ने गुस्से से कहा और वहां खड़ी वारुणि और लियो को अंजान नजरों से निहारने लगा।

सनूरा ने एक ही साँस में लुफासा को वहां घटी घटना के बारे में बता दिया। यह सुन लुफासा खुश हो गया।

“लगता है कि ईश्वर भी चाहते हैं कि अराका के युद्ध में हम विजयी हों, इसलिये एक-एक कर सभी शक्तियों को हमारी ओर करते जा रहे हैं।” लुफासा ने सभी को देखते हुए कहा।

“चलो फिर 2 और शक्तियों को अपनी ओर कर लेते हैं .... कुछ ही देर में वह भी यहां पहुंचते ही होंगे।” वारुणि ने लुफासा की ओर देखते हुए कहा।

“आप कौन सी और 2 शक्तियों की बातें कर रहीं है? क्या कोई और भी यहां आ रहा है?” सनूरा ने वारुणि की ओर देखते हुए पूछा।

“हां .... अभी कुछ ही देर में विक्रम और आकृति यहां आने वाले हैं? .... मैंने अपनी मानसिक शक्तियों से विक्रम से बात कर लिया है ... पर हमें उनके आने के पहले यहां पर कुछ तैयारियां करनी होंगी।” वारुणि ने कहा।

“आकृति?” आकृति का नाम सुनते ही सुर्वया के चेहरे पर परेशानी के भाव नजर आने लगे।

“तुम चिंता मत करो सुर्वया, मेरे रहते आकृति अब तुम्हारा कुछ नहीं कर पायेगी।” वारुणि ने सुर्वया को दिलासा देते हुए कहा।

“पर आकृति के पास बहुत सी चमत्कारी शक्तियां हैं ... ऐसे में हम उसे नियंत्रित कैसे कर पायेंगे?” सनूरा ने भी अपनी चिंता व्यक्त करते हुए कहा- “और वह यहां आते ही मकोटा के साथ मिल जायेगी। उसका

मकोटा से मिलने के बाद मकोटा और शक्तिशाली हो जायेगा, फिर वह पूरे अराका पर अपना अधिपत्य कायम करने की कोशिश करेगा।”

“ऐसा कुछ भी नहीं होगा सनूरा।” वारुणि ने कहा- “आकृति की एक बहुत बड़ी कमजोरी मेरे हाथ लग गई है और उसके कारण वह मकोटा का नहीं बल्कि हमारा साथ देगी। इसलिये तुरंत पहले मुझे वहां ले चलो, जहां कि आने के बाद वह जायेगी।”

वारुणि की बात सुन सनूरा सभी को लेकर महल में नीचे की ओर चल दी। महाबली हनुका भी इस समय उन सभी के साथ था।

◆ ◆ ◆

वज्र शक्ति

27.01.2002, रविवार, सीनोर महल, अराका द्वीप

आकृति ने आखिर विक्रम को अराका द्वीप पर जाने के लिये मना लिया था।

इस समय दोनों ही आकाश मार्ग से अराका द्वीप की ओर जा रहे थे।

विक्रम ने आकृति की सुनहरी ढाल के नीचे एक वायुचक्र बना दिया था, जिसके कारण वह सुनहरी ढाल हवा में तैर रही थी और उसी सुनहरी ढाल पर आकृति खड़े होकर अपना रास्ता तय कर रही थी।

इस समय आकृति की पीठ पर नीले रंग का एक छोटा सा बैग था। शायद इसमें वहीं सामान था, जिसे कि खरीदने के लिये आकृति मार्केट गई थी।

आकृति के चेहरे पर तेज हवा के थपेड़े पड़ रहे थे, पर वह पहले भी इस प्रकार से आकाश में उड़ चुकी थी, इसलिये उसके लिये यह स्थिति नई नहीं थी।

अराका अब मात्र 10 नॉटिकल मील की दूरी पर बचा था। चूंकि दोनों काफी ऊंचाई पर उड़ रहे थे, इसलिये पानी पर तैरता अराका उन्हें दूर से ही नजर आ रहा था।

विक्रम के लिये पानी पर तैरते किसी द्वीप को देखना एक नया अनुभव था, इसलिये वह मंत्रमुग्ध हो सिर्फ द्वीप की ओर ही देख रहा था कि तभी समुद्र के अंदर से 2 नीले रंग के एलियन निकलकर विक्रम के सामने जा खड़े हुए।

एक की ड्रेस पर A5 और दूसरे की ड्रेस पर A6 लिखा था। यह दोनो एलियन ‘ओलैनो’ व ‘वूडान’ थे, जो कि एण्ड्रोवर्स पावर का एक हिस्सा थे।

उन दोनों को अपने सामने खड़ा देख विक्रम व आकृति उसी स्थान पर हवा में रुक गये और ध्यान से उन दोनों एलियन को देखने लगे।

विक्रम के लिये यह पता करना ज्यादा मुश्किल नहीं था कि वह दोनों उनसे क्या चाहते हैं? क्योंकि ऐसे ही एक एलियन ने कुछ दिन पहले विक्रम को बेहोश कर उसकी स्मृतियां छीन लीं थीं?

“कौन हो तुम दोनों? और हमारा रास्ता रोककर क्यों खड़े हो?” आकृति ने ओलैनो और वूडान को देखते हुए तेज आवाज में पूछा।

“ये दोनो हमसे हमारी शक्तियां छीनने आये हैं।” उन दोनों के कुछ बोलने के पहले ही विक्रम ने आकृति को सावधान करते हुए कहा- “ऐसे ही एक जीव के कारण कुछ दिन पहले मेरी स्मृति चली गई थी?”

विक्रम की बात सुन आकृति हैरानी से उसकी ओर देखने लगी- “तो क्या? .... तो क्या तुम्हारी स्मृतियां वापस आ गईं हैं? और तुम्हें सबकुछ याद आ गया है?”

“अभी यहां पर बहस करने का समय नहीं है आकृति ... पहले हमें इनसे निपटने के बारे में सोचना होगा, नहीं तो शायद इस रहस्य को बताने के लिये हम जीवित ही ना बचें।” विक्रम ने आकृति को सावधान करते हुए कहा, पर विक्रम की नजरें बात करते हुए भी ओलैनो और वूडान पर थीं।

विक्रम के द्वारा अपना नाम लेते देख आकृति को इस समय ओलैनो और वूडान से ज्यादा भय विक्रम से लग रहा था।

“मेरा नाम ओलैनो और इसका वूडान है।” ओलैनो ने दोनों को देखते हुए शांत भाव से कहा- “अब जब तुम्हें पता ही है कि हम यहां क्या करने आए हैं, तो मुझे लगता है कि तुम दोनों को पहले ही हार मानकर अपनी शक्तियां हमारे हवाले कर देनीं चाहियें। ... मुझे पता है कि तुम दोनों में एक बहुत ही ज्यादा खतरनाक है और वह आसानी से अपनी शक्तियां हमारे हवाले नहीं करेगा। इसलिये हम अपनी पूरी तैयारी से तुम्हारे पास आएं हैं।”

यह कहते ही ओलैनो के दोनों हाथ किसी मजबूत धातु के हथौड़े में परिवर्तित हो गये और उसने बिजली की फूर्ति दिखाते हुए विक्रम पर पहला वार कर दिया।

ओलैनो के हाथ किसी घन की तरह विक्रम के पेट से टकराए और विक्रम लहराता हुआ समुद्र के गहरे पानी में जा गिरा।

विक्रम के पानी में गिरते ही ओलैनो भी बिजली की गति से समुद्र में समा गया।

उधर आकृति, वूडान के सामने खड़ी उससे बचने का कोई तरीका सोच रही थी क्योंकि इस समय वह हवा में उस सुनहरी ढाल पर थी और ऐसी स्थिति में अगर वह कुछ भी करती, तो वह भी समुद्र के पानी में गिर जाती और बहुत कम ही लोग जानते थे कि आकृति की एक कमजोरी पानी भी है, पानी में जाते ही आकृति को अपनी साँसें बंद होती हुई महसूस होती थीं।

तभी वूडान ने आकृति को देखते हुए अपने मुंह से एक फूंक मारी। वूडान की उस फूंक में पता नहीं क्या था कि आकृति के आसपास की हवा समाप्त हो गई और अब आकृति एक बड़े से गोले में अनियंत्रित होकर इधर-उधर नाचने लगी।

कुछ ही देर में आकृति उस सुनहरी ढाल से नीचे गिर गई, परंतु अब भी वह हवा के उस विचित्र गोले में सुनहरी ढाल सहित इधर-उधर नाच रही थी।

कई बार तो वह सुनहरी ढाल ही आकृति के शरीर से टकरा गई, जिसके कारण आकृति के मुंह से लगातार चीखें निकल रहीं थीं। कुछ ही पलों में आकृति को महसूस हो गया कि वह वूडान के इस मायाजाल से नहीं लड़ सकती।

वहीं दूसरी ओर विक्रम भी समुद्र के पानी में अपनी वायु शक्ति का प्रयोग नहीं कर पा रहा था, जिसके कारण ओलैनो लगातार विक्रम पर अपने हाथों से प्रहार करता जा रहा था।

शायद ओलैनो को पता था कि विक्रम पानी में असहाय हो जाता है, इसलिये वह विक्रम को पानी से बाहर निकलने भी नहीं दे रहा था।

ओलैनो के लगातार वज्र जैसे प्रहारों के कारण विक्रम की शक्ति लगातार क्षीण होती जा रही थी। इस समय ओलैनो की नजरें विक्रम पर थीं कि तभी विक्रम को पानी में तैरती कोई इंसानी आकृति अपने पास आती हुई महसूस हुई।

इसी के साथ उस रहस्यमय साये ने ओलैनो के शरीर पर अपने घूंसे का जोरदार प्रहार किया।

ओलैनो इस प्रहार से समुद्र में उभरी एक विशाल चट्टान से जा टकराया, पर इस एक घूंसे से ही ओलैनो जान गया कि उस पर किसी महाबली ने वार किया है।

अब विक्रम थोड़ा चैतन्य हो गया और उस रहस्यमय साये को देखने लगा, वह रहस्यमय साया और कोई नहीं बल्कि महाबली हनुका था।

हनुका को देख विक्रम के चेहरे पर एक धीमी सी मुस्कान बिखर गई। वह समझ गया कि अब ओलैनो की खैर नहीं।

तभी हनुका ने विक्रम का हाथ थामा और बिजली की गति से समुद्र के पानी से निकलकर वापस हवा में आ गया।

पर इस समय समुद्र के ऊपर का नजारा भी बदला-बदला सा नजर आ रहा था क्योंकि इस समय हवा में वूडान को घेरे वारुणि और सुर्वया खड़े थे।

वारुणि के शरीर के चारो ओर वायु शक्ति का एक चक्रवात सा नजर आ रहा था और सुर्वया इस समय एक विशाल सिंह पर सवार थी, जो कि अपने सुनहरे पंखों के सहारे हवा में उड़ रहा था। वह सिंह और कोई नहीं बल्कि लियो था, जो कि पहली बार आसमान में उड़ने का आनंद उठा रहा था।

सिंह की पीठ पर लगे उन सुनहरे पंखों को देख विक्रम तुरंत समझ गया कि यह सुनहरे पंख उस सिंह को वारुणि ने ही दिये हैं क्योंकि वेदालय के समय में वारुणि पहले भी इन सुनहरे पंखों का प्रयोग कर चुकी थी।

इस समय सुर्वया के हाथ में सुनहरे रंग के तीर-धनुष थे, जिसे उसने वूडान की ओर तान रखा था।

यह देख विक्रम ने तेज उड़ान भरी और वारुणि के गले से आकर लग गया- “मुझे पता था कि तुम मुझे अवश्य ढूंढ लोगी।”

“अरे ... अरे, युद्ध के समय पर प्यार दर्शाना जरुरी है क्या?” वारुणि ने हड़बड़ाते हुए विक्रम को अपने से अलग किया- “देख नहीं रहे कि यहां

पर किस प्रकार का दृश्य चल रहा है?”

यह देख विक्रम ने विक्रम ने अजीब सा मुंह बनाकर प्यार से वारुणि को देखा और फिर उसकी नजरें वूडान पर थीं।

तभी वारुणि के हाथ से हवा की तेज तरंगें निकलीं और उन तरंगों ने आकृति के चारो ओर बने गोले को काट दिया। उस गोले के कटते ही आकृति तेजी से पानी में जा गिरी।

पानी में गिरते ही एक पल में आकृति की सांस तेजी से फूलने लगी। पर इस बार विक्रम ने अपने हाथों से इशारा किया, जिससे सुनहरी ढाल तेजी से आकृति की ओर लपकी और आकृति को लेकर एक बार फिर वह ढाल हवा में आ गई।

अब जाकर कहीं आकृति ने राहत की साँस ली, पर जैसे ही उसकी नजर सुर्वया, वारुणि और हनुका पर पड़ी, एक पल में वह समझ गई कि अब उसका खेल खत्म हो चुका है। अतः वह सिर झुकाकर अब इस युद्ध के समाप्त होने का इंतजार करने लगी।

तभी वूडान ने पता नहीं क्या इशारा किया कि समुद्र के पानी से 4 शार्क मछलियां बाहर आ गईं और हवा में उड़ते हुए वारुणि, विक्रम, सुर्वया और आकृति के चारो ओर घूमने लगीं।

उन 4 शार्क मछलियों को हवा में उड़ता देख सभी अचंभित हो गए क्योंकि उन्हें नहीं पता था कि यह वूडान की किस प्रकार की शक्ति है? और अब आगे वह शार्क क्या करने वाली हैं? परंतु वारुणि, विक्रम और सुर्वया अब उन शार्क के किसी भी हमले से बचने के लिये पूरी तरह से सावधान थे।

सभी को उन शार्क मछलियों के जाल में फंसता देख हनुका उनकी ओर बढ़ा, कि तभी पानी से ओलैनो बाहर निकला और हनुका को एक तेज घूंसा जड़ दिया।

हनुका ने आज तक इतना शक्तिशाली प्रहार नहीं झेला था, अगर हनुका के पास चमत्कारी शक्तियां ना होतीं, तो ओलैनो के इस वार से हनुका का मारा जाना तय था।

हनुका ने हवा में लहराते हुए अपने शरीर को नियंत्रित किया और बिजली की गति से ओलैनो की ओर चल दिया। हनुका को इस प्रकार अपनी ओर आते देख ओलैनो ने अपने हाथ की ही तरह से अपने पूरे शरीर को वज्र के समान बना लिया।

अब ओलैनो भी तीव्र गति से हनुका की ओर उड़ चला। 2 महाशक्तियां आपस में टकराने वाली थीं। उधर आकृति की नजरें कभी हवा में उड़ रही उन शार्कों पर तो कभी हनुका और ओलैनो की ओर जा रहीं थीं।

तभी एक भयानक विस्फोट करते हनुका और ओलैनो आपस में जा टकराये। उन दोनो के आपस में टकराने से इतनी तीव्र आवाज हुई कि उसकी आवाज अराका द्वीप तक जा पहुंची।

मेलाइट और सनूरा दूर से ही यह युद्ध देख रहे थे। इतना भीषण टकराव देखकर वह दोनों भी सिहर उठीं।

पर वारुणि के कहे अनुसार वह उन लोगों की सहायता के लिये नहीं जा सकती थीं। लुफासा भी आसमान में चील बनकर उड़ते हुए इस महायुद्ध को देख रहा था।

उधर हनुका और ओलैनो दोनो किसी चट्टान की भांति एक दूसरे पर भीषण प्रहार कर रहे थे। उन्हें देखकर ऐसा लग रहा था कि मानो 2 पर्वत आपस में टकरा रहे हैं।

वहीं दूसरी ओर सभी शार्क मछलियों ने पता नहीं किस प्रकार कि ध्वनि अपने मुंह से निकालनी शुरु कर दी, वह ध्वनि इतनी कर्कश थी, कि उसने सभी के कानों के पर्दों पर असर करना शुरु कर दिया।

इतनी तीव्र ध्वनि को सुनकर सभी ने अपने कानों पर हाथ रख लिया।

तभी सुर्वया के कान किसी सिंह के समान अपने आप बडे हो गये और उन्होंने स्वतः ही मुड़कर सुर्वया के पूरे कानों को ढक लिया। अब सुर्वया को वह तीव्र ध्वनि सुनाई नहीं दे रही थी।

यह देख सुर्वया ने उन शार्क मछलियों पर अपने तीरों की बौछार कर दी।

सुर्वया के तीर अब शार्क मछलियों के मुंह को बींधते चले जा रहे थे।

कुछ ही देर में सभी शार्क मछलियों का मुंह तीरों से पूरी तरह से बंद हो गया। अब वह मछलियां अपने मुंह से ध्वनि तरंगें नहीं छोड पा रहीं थीं।

तभी वूडान ने विक्रम व वारुणि की ओर अपना हाथ करके विचित्र तरंगें छोड़नी शुरु की दीं, पर इस बार विक्रम और वारुणि की सम्मिलित वायु शक्ति ने उन तरंगों को बीच में ही रोक लिया।

उधर हवा में उछलता लियो अब सभी शार्क मछलियों के माँस को अपने पंजों और तेज दाँतों से उधेड़ रहा था।

तभी आकृति ने सुनहरी ढाल पर खड़े-खड़े ही अपने मुंह से कुछ मंत्र पढ़ा। आकृति के ऐसा करते ही उसके हाथ में एक भयानक चक्र नजर आने लगा। अब आकृति की आँखों में गुस्से के भाव दिख रहे थे।

आकृति ने एक बार उस चक्र को देखा और फिर उसे वूडान की ओर उछाल दिया।

चूंकि इस समय वूडान का सारा ध्यान विक्रम और वारुणि की ओर था, इसलिये वह आकृति की ओर से आते हुए उस भयानक चक्र को देख नहीं सका और एक पल में उस चक्र ने वूडान का सिर धड़ से अलग कर दिया।

वूडान का शरीर हवा में लहराया और अपने सिर के साथ समुद्र के पानी में समा गया।

वूडान के शरीर के नीचे गिरते ही वह चारो शार्क भी पानी में गिरकर गायब हो गईं।

उधर वूडान का शरीर जैसे ही पानी के अंदर गिरा, उसकी गर्दन से तीव्र तरंगें निकलीं और इसी के साथ समुद्र में गिरा उसका कटा हुआ सिर वापस आकर वूडान के गर्दन से जुड़ गया।

इस प्रकार वूडान एक बार फिर जीवित हो गया, पर इस बार वूडान पानी के अंदर से नहीं निकला और पानी के अंदर ही रहते हुए ओलैनो और हनुका का युद्ध देखने लगा।

उसे पूरा विश्वास था कि कुछ ही देर में ओलैनो हनुका का अंत कर देगा। क्योंकि ओलैनो जितना लड़ता जाता उसकी शक्ति बढ़ती जाती थी।

उधर वूडान को मरता देख सभी ने राहत की साँस ली। अब सभी की निगाहें ओलैनो और हनुका के युद्ध पर थी।

दोनों एक दूसरे से लड़ते हुए कभी समुद्र में गिरते और फिर अगले ही पल समुद्र की चट्टानों को तोड़ते हुए वापस हवा में आ जाते। कोई भी हार मानता नहीं दिख रहा था।

"मुझे लग रहा है कि इस दुष्ट राक्षस की शक्तियां बढ़ती जा रहीं हैं क्योंकि इसके प्रहारो की शक्ति और स्फूर्ति भी मुझे बढ़ी हुई प्रतीत हो रही है।" हनुका ने ओलैनो के शरीर पर तेज प्रहार करते हुए सोचा- "अगर ऐसे ही चलता रहा, तो मैं इस राक्षस से परजित हो जाऊंगा, मुझे इस समय अपनी शारीरिक शक्ति नहीं, अपितु अपने मस्तिष्क का सहारा लेना पड़ेगा।"

यह सोच हनुका लगातार ओलैनो के नीले शरीर को देखने लगा।

तभी हनुका के दिमाग में एक ख्याल आया- "इस राक्षस का बाहरी शरीर तो बिल्कुल वज्र के समान है, जिस पर मेरी शक्ति का कोई प्रभाव नहीं पड़ रहा, परंतु क्या इसका आंतरिक शरीर भी वज्र के समान होगा?"

यह सोच हनुका के चेहरे पर एक मुस्कुराहट आ गई और इस बार जैसे ही ओलैनो, हनुका के पास आया, हनुका ने अपने शरीर का आकार एक चींटी के समान कर लिया और ओलैनो की नाक से होते हुए उसके शरीर के अंदर प्रवेश कर गया।

उधर हनुका को गायब देख ओलैनो अपने चारो ओर देखने लगा कि तभी ओलैनो को अपने शरीर के अंदर से बहुत तेज दर्द का अहसास हुआ।

परंतु इससे पहले कि ओलैनो अपने आंतरिक शरीर को भी वज्र का बना पाता, हनुका अपना आकार बढ़ाता हुआ ओलैनो के शरीर को बीच से फाड़कर बाहर आ गया।

इसी के साथ ओलैनो का क्षत-विक्षत शरीर समुद्र के पानी में जा गिरा।

यह देख सभी ने जोर से जयकारा लगाया- “महाबली हनुका की जय।”

उधर वूडान, ओलैनो को मरता देख पानी के अंदर ही अंदर तैरता हुआ वहां से भाग गया।

अब सभी हनुका सहित अराका द्वीप पर पहुंच गये।

एक बार फिर आकृति ने अपना सिर झुका लिया। इस समय वह बहुत शर्मिंदा महसूस कर रही थी।

“घबराओ नहीं आकृति, मैं तुम्हें कुछ नहीं कहूंगी?” वारुणि ने आकृति का हाथ अपने हाथ में लेते हुए कहा- “उल्टा मैं तुम्हें एक शुभ समाचार सुनाना चाहती हूं।”

वारुणि के शब्दों को सुनकर आकृति आश्चर्य से वारुणि को देखने लगी। उसे समझ नहीं आया कि वारुणि उसके लिये किस प्रकार के शुभ समाचार के बारे में बात कर रही है?

“तुम्हारा पुत्र अभी जीवित है आकृति। उसे आर्यन ने नहीं मारा था और वह इस समय एक पूर्ण युवक बन चुका है।” वारुणि ने रहस्योद्घाटन करते हुए कहा।

“क्याऽऽऽऽऽऽऽऽ?” वारुणि के शब्द सुन आकृति की आँखों से झर-झर आँसू गिरने लगे- “म ... म ... मेरा पुत्र अभी जीवित है। ... कहां है? कहां है मेरा पुत्र वारुणि? मैं उसे देखना चाहती हूं। मैं उससे मिलना चाहती हूं। कहां है मेरे आर्यन की आखिरी निशानी? बताओ मुझे वारुणि।”

यह कहकर आकृति वारुणि को झंझोड़ने सी लगी।

“बता दूंगी। ... वरन् मैं तुम्हें उससे मिला भी दूंगी ... पर .... पर तुम्हें भविष्य में होने वाले देवयुद्ध में बिना किसी शर्त के हमारी सहायता करनी होगी।” वारुणि ने कहा।

मैं तैयार हूं।” आकृति ने बिना एक भी पल व्यर्थ किये हुए कहा- “बस मुझे एक बार मेरे पुत्र से मिला दो वारुणि। मैं तुम्हारा यह अहसान कभी भी नहीं भूलूंगी।”

“ठीक है आकृति, तो अब तुम कुछ दिनों तक सीनोर महल में इन सभी के साथ रहो, मैं तुम्हारे पुत्र को लाने के लिये जा रही हूं। शीघ्र ही मैं तुम्हारे पुत्र के साथ वापस लौटूंगी। पर अपना दिया हुआ वचन याद रखना आकृति।” वारुणि ने कहा।

“मैं अपना दिया वचन कभी नहीं भूलती वारुणि, इस बारे में तुम्हें पता भी है।” आकृति ने वारुणि को देखते हुए कहा- “और हां ... मैंने विक्रम के साथ जो भी किया, उसके लिये तुम मुझे क्षमा कर देना।”

“मैंने तुम्हें उसके लिये क्षमा किया आकृति” वारुणि ने आकृति के हाथ को प्यार से सहलाते हुए कहा।

वारुणि के इस व्यवहार से विक्रम खुश नहीं लगा। परंतु उसने बीच में किसी प्रकार का कोई हस्तक्षेप करना उचित नहीं समझा। वह जानता था कि वारुणि कभी कुछ गलत नहीं करेगी, आकृति को क्षमा करने के पीछे अवश्य ही कोई कारण था।

“क्या मुझे भी आपके साथ चलना चाहिये नक्षत्रलोक की राजकुमारी।” हनुका ने वारुणि को देखते हुए पूछा।

“नहीं महाबली, मैं आकृति के पुत्र को लेने अकेले ही जाऊंगी। आप यहां रुककर सुर्वया को दिया अपना वचन पूरा कीजिये।” इतना कहकर आकृति, विक्रम की ओर मुड़ी और उसने आगे बढ़कर विक्रम के कान में कुछ देर तक कुछ कहा, जो कि किसी को सुनाई नहीं दिया।

इसके बाद वारुणि लुफासा की ओर मुड़ी- “लुफासा, यह सभी लोग तुम्हारे तब तक अतिथि रहेंगे, जब तक अराका दुष्ट शक्तियों से मुक्त नहीं हो जाता और हां इस समय हनुका ने पूरे अराका द्वीप के ऊपर लगी अदृश्य दीवार को हटा दिया है, इसलिये यह ध्यान रखना कि अब कोई भी कहीं से भी तुम्हारे राज्य में प्रविष्ठ हो सकता है? .... एक आखिरी बात और ... जब तक देवयुद्ध समाप्त नहीं हो जाता, तब तक सीनोर और सामरा को आपसी दुश्मनी को किनारे रखना होगा, नहीं तो हम यह युद्ध कभी नहीं जीत सकते?”

वारुणि के शब्दों को समझ लुफासा की आँखों में लाल डोरे तैरने लगे- “पर उन्होंने हमारे माता-पिता को मारा था और फिर वह अभी मेरी बहन को भी ले गये, ऐसे में मैं उन्हें क्षमा किस प्रकार कर सकता हूं?”

“कभी-कभी जो दिखता है, वो होता नहीं है युवराज।” वारुणि के शब्द अर्थ से भरे थे- “यह भी हो सकता है कि किसी ने तुम्हें गलत कहा हो?”

यह कहकर वारुणि ने एक बार विक्रम को देखा और फिर सभी को हाथ हिलाते हुए हवा में उड़ गई।

वारुणि के जाने के बाद विक्रम भी सबसे विदा लेकर वहां से उड़ गया, शायद वारुणि ने उसे कोई काम दे दिया था, जो उसके आने के पहले पूर्ण होना आवश्यक था।

लुफासा अब बाकी बचे सभी लोगों को लेकर सीनोर महल की ओर चल दिया, पर अब उसकी आँखों में एक प्रश्न भरा था जो कि अनसुलझा था।

उधर दूर कहीं कम्प्यूटर स्क्रीन पर बैठा मकोटा उन सभी को घूर रहा था, उसकी आँखों में भी एक चमक थी, पर वह चमक हिंसक भाव लिये हुए थी।

◆ ◆ ◆

चैपटर-10

सुनहरी मछली

तिलिस्मा 6.61

शैफाली ने जिस द्वार को चुना, उसमें मीन और कन्या राशियां छिपी हुई थीं। शैफाली उस द्वार के माध्यम से एक विशाल कमरे में जाकर गिरी।

शैफाली के मुंह से एक हल्की सी कराह निकली, पर वह तुरंत उठकर खड़ी हो गई और ध्यान से उस कमरे को देखने लगी।

वह कमरा देखने में किसी राजा के दरबार की तरह महसूस हो रहा था। उस कमरे में 4 सिंहासन रखे हुए थे। उसमें से 1 सिंहासन कुछ बड़ा और बाकी के 3 सिंहासन छोटे थे।

बड़े सिंहासन पर एक राजा की मूर्ति रखी थी, जो कि बैठने के मुद्रा में सिंहासन पर विराजमान थी। बाकी के 3 सिंहासन बिल्कुल खाली थे, पर उन प्रत्येक सिंहासन के आगे हिंदी भाषा में लिखी नामों की तख्तियां लगीं थीं।

तख्तियों पर लिखे नाम कुछ इस प्रकार थे- अवनी, सुगंधा और रश्मि।

नाम से ही पता चल रहा था कि वह तीनों सिंहासन उस राजा की राजकुमारियों के हैं, परंतु वह राजकुमारियां कहां है? यह नहीं पता चल रहा था।

बाकी उस कमरे में कुछ भी नहीं था।

शैफाली ने धीरे-धीरे वहां उपस्थित सभी सिंहासनों को हिला-डुलाकर देखा, परंतु कोई भी घटना नहीं घटी?

कुछ सोचने के बाद शैफाली, राजकुमारी अवनी वाले खाली सिंहासन पर बैठ गई।

तभी एक रोशनी का तेज झमाका हुआ। इस तेज झमाके से एक पल के लिये शैफाली की आँखें बंद हो गईं।

पर जैसे ही शैफाली की आँखें खुलीं, तो वह हैरान हो गई। वह इस समय गहरे समुद्र के बीच एक छोटे से द्वीप पर थी।

वह द्वीप काफी छोटा था। उसका आकार मात्र 18 से 20 मीटर के बीच था।

उस द्वीप के बीचोबीच में एक सफेद रंग की ऊंची सी चट्टान दिख रही थी। उस चट्टान के चारो ओर लगभग 8 नारियल के पेड़ लगे थे।

कुछ नारियल के पेड़ सीधे और कुछ दाहिने व बांये झुके हुए लगे थे। बाकी उस द्वीप पर कुछ भी नजर नहीं आ रहा था।

शैफाली ने एक नजर गहरे नीले समुद्र पर मारी और फिर उस छोटे से द्वीप को ध्यान से देखने लगी।

"इस द्वीप पर तो नारियल के पेड़ों के अलावा कुछ भी नजर नहीं आ रहा? यहां मुझे करना क्या है?"

शैफाली मन ही मन बड़बड़ाई और चक्कर लगाकर उस द्वीप का निरीक्षण करने लगी।

पर जब कई बार द्वीप का सूक्ष्म निरीक्षण करने के बाद भी शैफाली को कुछ नजर नहीं आया? तो वह परेशान होकर एक छोटी सी चट्टान पर जाकर बैठ गई और द्वीप के अंदर लगे उन नारियल के पेड़ों को देखने लगी।

तभी नारियल के पेड़ों की बेतरतीब आकृति ने शैफाली के दिमाग को एक झटका दिया।

"अरे! इन 8 नारियल के पेड़ों से तो अंग्रेजी भाषा के बड़े अक्षरों में अवनी लिखा है .... और मैं उस कमरे में भी राजकुमारी अवनी के सिंहासन पर ही बैठी भी थी .... इसका मतलब इन पेड़ों से राजकुमारी अवनी का अवश्य ही कोई सम्बन्ध है? .... पर क्या?"

अब शैफाली ध्यान से उन पेड़ों और उस पर लगे नारियल को देखने लगी।

अभी शैफाली पेड़ों को देख ही रही थी कि उसे कहीं से ‘छप्-छप्’ की आवाज आती हुई सुनाई दी।

इस अंजानी आवाज को सुन शैफाली नारियल को छोड़, उस दिशा में देखने लगी, जिधर से वह आवाज आ रही थी।

शैफाली को कुछ दूरी पर एक नन्हीं सी सुनहरी मछली एक छोटे से गड्ढे में उछलती हुई दिखाई दी। उस गड्ढे में बहुत थोड़ा सा पानी था, जो कि उस नन्हीं मछली के लिये पर्याप्त नहीं लग रहा था।

शायद वह नन्हीं मछली समुद्र की लहरों के साथ इस छोटे से द्वीप पर आ गई थी। पानी पर्याप्त ना होने की वजह से वह मछली बार-बार उछलकर लहरों की ओर जाने की असफल कोशिश कर रही थी।

यह देख शैफाली से रहा ना गया। वह धीरे-धीरे चलती हुई उस नन्हीं मछली की ओर आ गई और जल से भरे उस छोटे से गड्ढे को निहारने लगी।

“मैं जिस द्वार में प्रवेश की थी, उसमें मीन और कन्या राशि ही तो थीं। कहीं यह मछली उसी मीन राशि का प्रतिनिधित्व करने वाली कोई जीव तो नहीं? या फिर इस मछली का सम्बन्ध भी किसी ना किसी प्रकार से राजकुमारी अवनी से है?”

कुछ सोचकर शैफाली ने झुककर उस सुनहरी मछली को उठा लिया और उसे उस छोटे से गड्ढे से एक बड़े से गड्ढे में डाल दिया।

बड़े गड्ढे में छोटे गड्ढे की अपेक्षा कुछ ज्यादा पानी था।

नन्हीं मछली ज्यादा पानी देखकर खुश हो गई।

यह देख शैफाली धीरे से मुस्कुराई और फिर पलटकर वापस नारियल के पेड़ की ओर बढ़ गई।

अभी शैफाली मात्र 2 कदम ही आगे बढ़ी थी कि उसे फिर से ‘छप्-छप्’ की आवाज आती सुनाई दी।

दोबारा से उसी आवाज को सुन शैफाली आश्चर्य से पीछे पलट गई।

शैफाली की नजर जैसे ही उस नन्हीं मछली पर पड़ी, वह बुरी तरह से चौंक गई क्योंकि अब वह सुनहरी मछली शैफाली को आकार में कुछ बड़ी नजर आ रही थी।

आकार में बड़ी हो जाने की वजह से अब वह बड़ा गड्ढा भी मछली के लिये छोटा पड़ने लगा था।

“अरे यह मछली इतनी जल्दी इतनी बड़ी कैसे हो गई? कहीं यह कैश्वर का फैलाया कोई मायाजाल तो नहीं?”

कुछ देर तक मछली को देखते रहने के बाद शैफाली ने एक बार फिर से उस सुनहरी मछली को उठाया और इस बार उसे समुद्र के पानी की ओर उछाल दिया।

हवा में उड़ती हुई सुनहरी मछली समुद्र के गहरे पानी में जा गिरी।

अब शैफाली का ध्यान फिर से नारियल के पेड़ पर केन्द्रित हो गया, पर उसे उन पेड़ों में कुछ भी विचित्र चीज नजर नहीं आई? वह एक साधारण नारियल के पेड़ की ही भांति दिख रहे थे।

यह देख शैफाली ने अपनी सोच को दूसरी दिशा में मोड़ दिया।

“कहीं यह द्वीप भी अराका की तरह अंदर से खोखला तो नहीं?” शैफाली के दिमाग में एक अजीब सा विचार आया- “लगता है कि इसका पता लगाने के लिये मुझे पानी के अंदर की ओर जाना होगा?”

यह सोच शैफाली अब द्वीप के किनारे आकर खड़ी हो गई, पर इससे पहले कि शैफाली किनारे से पानी के अंदर उतर पाती, पूरे द्वीप को एक भयंकर झटका लगा। तेज झटके की वजह से पूरा द्वीप थरथरा उठा।

“ये तो भूकंप जैसा लग रहा है, पर बीच समुद्र में इतने छोटे द्वीप के पास तो भूकंप को नहीं आना चाहिये?”

तभी शैफाली की नजर पानी के नीचे तैर रहे किसी विशाल जीव की ओर गई। उस जीव की सुनहरी आकृति पानी में भी अपनी चमक बिखेर रही थी।

परंतु इससे पहले कि शैफाली उस विचित्र जीव के बारे में कोई अनुमान लगा पाती, वह विचित्र जीव स्वयं ही समुद्र की सतह पर आ गया।

वह जीव और कोई नहीं बल्कि वही सुनहरी मछली थी, जिसका आकार अब उस छोटे से द्वीप से भी बड़ा हो गया था और वही विशाल मछली अपने सिर की टक्कर उस द्वीप पर मार रही थी।

“अरे बाप रे! यह मछली तो आकार में बढ़ती ही जा रही है .... अब .... अब तो यह मेरे लिये ही एक बहुत बड़ा खतरा बन चुकी है, पर बिना किसी शक्ति के इतनी विशाल मछली का मुकाबला कैसे करुं?”

शैफाली अभी इस बारे में विचार कर ही रही थी कि तभी उस सुनहरी मछली ने अपने सिर की एक और टक्कर, जोर से द्वीप पर मारी।

मछली की टक्कर से इस बार तो द्वीप टूटते-टूटते बचा, परंतु द्वीप पर मौजूद सभी नारियल के पेड़ इस टक्कर से बच नहीं पाये और वह जमीन पर गिर कर धाराशाई हो गये।

यहां तक कि उन पेड़ों के बीच उपस्थित उस सफेद चट्टान में भी कुछ दरारें नजर आने लगीं।

“अगर मछली ने एक टक्कर और मारी तो इस द्वीप को टूटने से कोई नहीं बचा सकता?”

अब शैफाली पूरी तरह से सतर्क नजर आने लगी थी, पर अभी भी उसे स्वयं को बचाने का कोई उपाय नजर नहीं आ रहा था?

तभी शैफाली को वह सुनहरी मछली समुद्र में कुछ दूर जाकर वापस आती हुई दिखाई दी।

शैफाली लगातार पास आ रही उस सुनहरी मछली को ही देख रही थी। पर पास आने के बाद अप्रत्याशित रुप से मछली ने उस छोटे से द्वीप को टक्कर मारने के स्थान पर, अपना विशाल मुंह फाड़कर उस द्वीप को पूरा का पूरा ही निगल लिया।

कुछ ही पलों में शैफाली उस नन्हें द्वीप के साथ पूरा का पूरा उस सुनहरी मछली के पेट में समा गई।

सुनहरी मछली बिना चबाये ही उस द्वीप को निगल गई थी।

“अब तो गये काम से।” शैफाली अपने मन ही मन बुदबुदाई- “उस द्वीप से बच निकलना मुश्किल दिख रहा था, तो फिर अब भला इस मछली के पेट से बिना किसी शक्ति के कैसे निकला जा सकता है?”

यह सोच शैफाली मछली के पेट को ध्यान से देखने लगी। पर मछली के पेट में हर ओर बस पानी ही पानी भरा हुआ था।

पता नहीं मछली किस प्रकार से तैर रही थी? कि शैफाली को उसके पेट में बिल्कुल भी झटके महसूस नहीं हो रहे थे।

शैफाली अभी भी मछली के पेट में उस द्वीप पर ही खड़ी थी, जो कि अभी भी बिल्कुल सीधा था।

तभी शैफाली का ध्यान अपने आसपास टूटे पड़े असंख्य नारियल की ओर गया, जो कि मछली की टक्कर के बाद पेड़ सहित जमीन पर आ गिरे थे।

नारियल को देखकर शैफाली को नारियल का पानी पीने की इच्छा हुई, अतः उसने अपने पास दिख रहे एक नारियल को उठा लिया।

शैफाली ने नारियल को हिलाकर उसके अंदर मौजूद पानी को चेक किया। पर हिलाते ही शैफाली को पता चल गया कि उस नारियल में ज्यादा पानी नहीं है, इसलिये शैफाली ने उसे मछली के पेट में भरे पानी में फेंक दिया।

अब शैफाली अपने पास पड़े दूसरे नारियल की ओर बढ़ी, पर शैफाली ने जैसे ही उस नारियल को हिलाया, उसे एक महीन सी आवाज सुनाई दी- “आह!”

शायद कोई और होता, तो वह इस आवाज पर ध्यान भी नहीं देता, पर वह शैफाली थी, जिसके कि कान जरुरत से ज्यादा ही तेज थे।

उस अंजानी आवाज को सुन शैफाली चौंक गई, अब उसने ध्यान से उस नारियल को देखा और उसे फिर से एक बार जोर से हिलाया।

इस बार शैफाली को एक स्पष्ट आवाज सुनाई दी, जो कि निश्चित ही उस नारियल से आ रही थी- “उफ!”

यह देख शैफाली ने कान लगाकर उस नारियल से आती आवाज को सुनने की चेष्टा की, पर आवाज इतनी साफ नहीं थी कि उसे ठीक से सुना जा सके। यह देख शैफाली ने पास पड़े एक धारदार पत्थर से उस नारियल को पूरा छील लिया और एक नुकीले पत्थर से उस नारियल में एक छेद कर लिया।

शैफाली ने नारियल के छेद वाले स्थान पर आँख लगाकर अंदर की ओर देखा, पर उसे कुछ नजर नहीं आया? तभी उसे फिर से नारियल के अंदर से आती हुई आवाज सुनाई दी।

इस बार वह आवाज बिल्कुल साफ थी- "मुझे इस नारियल से निकालो, मैं यहां बंद हूं।"

आवाज हिंदी भाषा में थी, जिसे शैफाली अच्छी तरह से समझ पा रही थी।

अब शैफाली ने एक बारीक लकड़ी का टुकड़ा उठाया और उसे धीरे से नारियल के उस छेद से अंदर की ओर डाल दिया।

"तुम जो भी हो, इस लकड़ी को पकड़ कर ऊपर आ जाओ।" शैफाली ने नारियल को देखते हुए धीरे से कहा।

तभी शैफाली को नारियल में पड़ा लकड़ी का टुकड़ा हिलता दिखाई दिया, अब शैफाली ने उस लकड़ी के टुकड़े को धीरे-धीरे नारियल से बाहर निकाल लिया।

शैफाली की तेज आँखों ने उस लकड़ी पर लटकी हुई एक लड़की को देख लिया, जिसका आकार एक चींटी के आकार के समान था।

पर जैसे ही वह लड़की नारियल के बाहर आई, आश्चर्यजनक रुप से उसका आकार बढ़ने लगा। कुछ ही देर में वह एक पूर्ण लड़की के आकार में आ गई।

उस लड़की ने किसी राजकुमारी के समान एक चमकती हुई नीले रंग की पोशाक पहन रखी थी।

इससे पहले कि शैफाली उससे कुछ पूछ पाती, उस लड़की ने ही बोलना शुरु कर दिया- "मेरा नाम अवनी है और मैं राजा कर्णम की पुत्री

हूं। कुछ दिन पहले एक असुर ने मुझे और मेरी बाकी की 2 बहनों सुगंधा व रश्मि को हमारे राज्य से उठा लिया। उसने ही मुझे इस नारियल के अंदर बंद कर दिया था। मुझे इस स्थान से स्वतंत्र कराने के लिये आपका बहुत-बहुत धन्यवाद। क्या आप मुझे मेरे महल में उपस्थित सिंहासन तक छोड़ सकती हैं?"

अवनी का बोला एक-एक शब्द नपा तुला था। उसने यह भी नहीं पूछा कि वह इस समय कहां है? यहां तक कि उसने शैफाली से उसका परिचय भी नहीं पूछा, इससे शैफाली समझ गई कि यह कैश्वर का बनाया हुआ एक पात्र है, जिसका निर्माण तिलिस्मा के लिये किया गया है।

"ठीक है मैं तुम्हें तुम्हारे महल तक पहुंचा दूंगी।" शैफाली ने अवनी की ओर देखते हुए कहा- "परंतु पहले मैं स्वयं यहां से निकलने का रास्ता तो ढूंढ लूं।"

"यहां से निकलने का रास्ता तो वहां ऊपर है।" शैफाली की बात सुनकर अवनी ने मछली के पेट में ऊपर की ओर इशारा करते हुए कहा।

अवनी का इशारा देख शैफाली की नजरें ऊपर की ओर चलीं गईं। ऊपर कुछ ऊंचाई पर हवा में एक द्वार बना था, जो कि इन दोनों की पहुंच से लगभग 20 फुट ऊपर था।

"अच्छा तो यहां से निकलने का द्वार ऊपर की ओर है।" शैफाली ने मन ही मन कहा- "पर बिना किसी चीज की सहायता के इतनी ऊपर तक पहुंचा कैसे जा सकता है?"

तभी शैफाली की निगाह एक जगह पर, मछली के पेट में भरे पानी में पड़ी। पानी में उस स्थान पर कुछ बुलबुले उठ रहे थे।

उन बुलबुलों को देखकर ऐसा प्रतीत हो रहा था, जैसे मछली के पेट में उस स्थान पर कुछ पक रहा हो?

अब शैफाली ध्यान लगाकर उन बुलबुलों को देखने लगी। कुछ ही देर में शैफाली की तीव्र निगाहों ने पानी में उस स्थान पर गिरे एक छोटे से सफेद पत्थर के टुकड़े को पहचान लिया। वही सफेद पत्थर उन बुलबुलों के निकलने का कारण था।

तभी शैफाली के दिमाग को एक झटका लगा और वह तुरंत उस छोटे से द्वीप पर उपस्थित उस सफेद चट्टान के पास पहुंच गई और ध्यान से उसे देखने लगी। अवनी भी शैफाली के पीछे-पीछे उस स्थान पर पहुंच गई।

“अरे ये तो चूने की चट्टान है और चूने के विशेषता यह होती है कि वह साधारण पानी के सम्पर्क में आते ही उबलना शुरु हो जाता है। इसका मतलब कि यदि मैं इस चट्टान के टुकड़े को तोड़-तोड़ कर पानी में फेंकूं, तो मछली के पेट में मौजूद पानी का तापमान बढ़ना शुरु हो जायेगा .... और फिर कुछ ना कुछ तो अवश्य ही होगा? पर इस चट्टान को तोडूं किस चीज से?”

तभी शैफाली की नजर नारियल के टूटे हुए एक नुकीले पेड़ की ओर गई।

शैफाली ने उस नुकीले लकड़ी के टुकड़े को उठा लिया और जगह-जगह से चिटकी हुई चूने की चट्टान में फंसा-फंसा कर उस चट्टान को तोड़ना शुरु कर दिया।

जितनी चट्टान टूटती, शैफाली उसे नारियल के पत्तों के सहारे उठाकर, मछली के पेट में भरे पानी में फेंकती जा रही थी।

शैफाली को ऐसा करते देख अवनी ने भी चूने के टुकड़ों को पानी में फेंकना शुरु कर दिया।

कुछ ही देर में दोनों के द्वारा फेंकी गई चूने की चट्टानों ने अपना काम करना शुरु कर दिया। मछली के पेट में मौजूद पानी बुरी तरह से उबलने लगा। इसी के साथ वहां पानी से तेज भाप बनना शुरु हो गई।

अब मछली के पेट ने अंदर से जोर-जोर से फूलना-पिचकना शुरु कर दिया। यह देख शैफाली ने चूने को फेंकने की गति को और तेज कर दिया।

कुछ ही देर में चूने की वजह से मछली के पेट ने सिकुड़ना शुरु कर दिया। अब मछली का आकार लगातार छोटा होता जा रहा था और इसी के साथ हवा में उत्पन्न द्वार धीरे-धीरे नीचे आता जा रहा था।

शैफाली का सोचना काम कर गया था। वह लगातार पास आ रहे उस द्वार को देख रही थी। शैफाली को यह डर था कि अगर समय रहते वह

अवनी के साथ उस द्वार में प्रवेश नहीं कर पाई तो कहीं वह लगातार छोटी हो रही मछली के पेट में पिस ना जाये?

जैसे ही हवा में बना वह द्वार शैफाली के पास पहुंचा, शैफाली ने झट से अवनी का हाथ पकड़ उस द्वार के अंदर छलांग लगा दी।

इसी के साथ मछली सिकुड़कर हवा में गायब हो गई, पर मछली के सिकुड़ने के पहले ही शैफाली व अवनी उस हवा में बने द्वार के माध्यम से दूसरी ओर चली गई थीं।

शैफाली, अवनी के साथ उसी कमरे में जाकर गिरी, जहां 4 सिंहासन रखे थे। अपने सिंहासन को देखते ही अवनी खुश होकर उस सिंहासन पर जाकर बैठ गई।

सिंहासन पर बैठते ही अवनी, राजा कर्णम की तरह पत्थर की बन गई। अब कमरे में 2 सिंहासन ही खाली बचे थे।

शैफाली समझ गई कि अब उसे दूसरी राजकुमारी सुगंधा को ढूंढना होगा। यह सोच शैफाली राजकुमारी सुगंधा के सिंहासन पर आकर बैठ गई।

ऐसा करते ही एक बार फिर तेज रोशनी के कारण शैफाली की आँखें बंद हो गईं।

◆ ◆ ◆

महाकाली

27.01.2002, रविवार, राक्षसताल, हिमालय

व्योम ने विद्युम्ना की त्रिसर्पमुखी दंड की बलशक्ति से निर्मित रक्तकंट को भी हरा दिया था। उसे हराते हुए सूर्यदेव के द्वारा व्योम को ये भी पता चल गया था कि उसका असली पिता महेन्द्र शर्मा नहीं बल्कि कोई आर्यन था, जिसने 5000 वर्ष पहले उसे एक अष्टकोण के कवच में बंद करके जमीन के अंदर छिपा दिया था।

व्योम अभी भी विद्युम्ना के सामने खड़ा उसके अगले वार का इंतजार कर रहा था, पर इस समय उसके चेहरे पर उलझन व उत्सुकता के मिलेजुले भाव थे।

त्रिकाली ने दूर खड़े होते हुए भी व्योम के चेहरे के भावों को भली भांति पढ़ लिया था, पर युद्ध के नियमों के अंतर्गत वह व्योम से कुछ पूछ नहीं पा रही थी? त्रिकाली को तो बस इस युद्ध के द्वितीय चरण के समाप्त होने का इंतजार था।

तभी विद्युम्ना ने अपने त्रिसर्पमुखी दंड को एक चट्टान की ओर घुमा दिया। त्रिसर्पमुखी दंड से जल में कुछ गोल तरंगे सी उत्पन्न हुई और जाकर एक चट्टान पर पड़ीं।

इसी के साथ वह पूरी चट्टान जगह-जगह से टूटकर बिखरने लगी। उसे देखकर ऐसा लग रहा था कि मानो कोई मूर्तिकार किसी चट्टान को तराश कर मूर्ति बना रहा हो।

व्योम आश्चर्य से विद्युम्ना के अगले वार को देख रहा था। अब वह चट्टान एक अजीब सी दानव आकृति धारण करने लगी, जिसका आकार 10 फुट के आसपास था।

उस दानव के सिर, शरीर और हाथ तो एक दैत्य की तरह से लग रहे थे, पर उसके पैर के स्थान पर एक बड़ी सी ड्रिल मशीन जैसी लगी थी। वह पूरा दानव चट्टान के समान ही दिख रहा था।

उसे देखकर व्योम जोर से हंसा- “अरे, इस दानव के पैर तो हैं ही नहीं। इस प्रकार का अपाहिज दानव तो मैंने पहली बार देखा है। यह चलकर मेरे पास आएगा कि मुझे स्वयं इसके पास जाना होगा?”

व्योम की बात सुन विद्युम्ना मुस्कुराते हुए बोली- “इसका नाम ‘टिकाबू’ है ... यह भी महादेव की बल शक्ति से निर्मित है। इसलिये इससे लड़ने से पहले इस पर हंसना ठीक नहीं है व्योम।”

“टिकाबू! .... हाऽऽऽ हाऽऽऽ हाऽऽऽ अरे यह स्वयं बिना पैरों के टिक नहीं पा रहा और इसका नाम टिकाबू रखा है।” व्योम की हंसी टिकाबू को देख निरंतर जारी थी।

व्योम को हंसते देख टिकाबू अपने स्थान पर उछला और एक ही छलांग में व्योम के समीप आ पहुंचा।

टिकाबू की इतनी ऊंची छलांग देखकर व्योम आश्चर्य में पड़ गया और टिकाबू को देखने लगा।

तभी टिकाबू ने एक बार फिर उछलकर अपने शरीर रुपी ड्रिल मशीन से व्योम के ऊपर हमला कर दिया।

टिकाबू को उछलते देखकर व्योम अपने स्थान से हट गया। व्योम जिस स्थान पर खड़ा था, टिकाबू उस स्थान की जमीन को छेद करता हुआ जमीन में समा गया।

अब उस स्थान पर जमीन में एक छेद नजर आने लगा था।

व्योम ने उस गड्ढे में झांककर देखा, गड्ढा बहुत ही गहरा था, पर व्योम को उस गड्ढे में टिकाबू कहीं नजर नहीं आया।

तभी व्योम को अपने पीछे से एक जोरदार आवाज सुनाई दी। व्योम तेजी से पलटा। व्योम को अपने पीछे कुछ दूरी पर, जमीन के दूसरे हिस्से से टिकाबू निकलता हुआ दिखाई दिया।

अब टिकाबू फिर से व्योम का घूर रहा था। अब व्योम, टिकाबू से पूरी तरह से सावधान हो गया था।

तभी टिकाबू एक दूसरी जगह से वापस जमीन में समा गया। अब व्योम अपना सिर घुमाकर अपने आसपास देखने लगा। व्योम को पता था

कि अभी टिकाबू किसी अंजान जगह से बाहर निकलकर उस पर हमला करेगा?

तभी टिकाबू ठीक उसी जगह से जमीन से निकला, जिस स्थान पर व्योम खड़ा हुआ था। वैसे तो व्योम सावधान था, पर फिर भी टिकाबू ने इस बार व्योम को पीछे से अपनी बलिष्ठ भुजाओं में पकड़ लिया और इससे पहले कि व्योम अपने बचाव में कुछ कर पाता, टिकाबू, व्योम को लेकर दूसरे स्थान से जमीन में समा गया।

यह देखकर त्रिकाली की जान सूख गई। उसे नहीं पता था कि व्योम जमीन के अंदर अपना बचाव कैसे करेगा?

उधर विद्युम्ना के मुख से जोर की हंसी निकलने लगी- "हाऽऽऽ हाऽऽऽऽ हाऽऽऽऽ टिकाबू के इस वार से व्योम नहीं बच सकता। अब टिकाबू, व्योम की धरा में समाधि बना कर ही वापस लौटेगा।"

विद्युम्ना का सोचना बिल्कुल सही था, कुछ ही देर में टिकाबू जमीन के एक स्थान से बाहर आता हुआ दिखाई दिया, पर इस समय व्योम उसके हाथों में नहीं दिख रहा था।

यह देख त्रिकाली अत्यंत घबरा गई। उसके पास व्योम को बचाने का इस समय कोई मार्ग नहीं दिख रहा था?

बाहर निकलकर टिकाबू ने विजयी अंदाज में विद्युम्ना की ओर देखा। विद्युम्ना ने धीरे से सिर हिलाकर टिकाबू को इस जीत की बधाई दी और फिर त्रिकाली की ओर मुड़कर बोली- "अब तुम यहां से वापस लौट जाओ त्रिकाली, टिकाबू की समाधि शक्ति से आज तक कोई बच नहीं पाया? अब तुम्हें कभी भी व्योम नहीं मिल पायेगा?"

विद्युम्ना की बात सुनकर त्रिकाली को गुस्सा आ गया। त्रिकाली ने अपने दोनों हाथों की मुट्ठियां कस कर बांध ली।

इस समय त्रिकाली को देखकर ऐसा लग रहा था कि त्रिकाली अब विद्युम्ना पर अपनी हिम शक्ति का प्रयोग करने ही वाली हो कि तभी झील की तली एक स्थान से चिटकने लगी।

यह देख सभी आश्चर्य से उस स्थान को देखने लगे।

तभी एक स्थान से जमीन को फाड़ता हुआ एक काँच का अष्टकोण के समान कवच निकला। व्योम उस अष्टकोण कवच में पूरी तरह से सुरक्षित नजर आ रहा था।

वह अष्टकोण कवच इस समय एक स्त्री के हाथों में था, जो कि निस्संदेह कोई देवी थीं।

देवी के चेहरे पर इस समय क्रोध के निशान साफ नजर आ रहे थे। जमीन से बाहर निकलकर उन्होंने गुस्से से विद्युम्ना की ओर देखा और फिर व्योम को उस अष्टकोण कवच से बाहर निकाल दिया।

व्योम के बाहर निकलते ही अष्टकोण कवच अपने स्थान पर जमीन में समा गया।

"मैं भूदेवी हूं व्योम, मैंने ही यह अष्टकोण कवच तुम्हारे पिता आर्यन को उस समय दिया था, जब वह वेदालय में पढ़ता था। जब तुम्हारे पिता ने तुम्हें इस अष्टकोण कवच में बंदकर पृथ्वी के गर्भ में डाला, तो मैंने तुम्हारे पिता से सदैव तुम्हारी सुरक्षा का वचन दिया था।" भूदेवी ने आर्यन को देखते हुए कहा- "मेरे रहते तुम्हें इस धरा पर या फिर इसके अंदर कोई नुकसान नहीं पहुंचा सकता? अब उठो व्योम और मेरी शक्ति का प्रयोग कर इस टिकाबू का अंत करो।"

वैसे तो व्योम को भूदेवी के कहे आधे शब्द समझ में नहीं आये, पर इस समय व्योम ज्यादा दिमाग नहीं लगाना चाहता था, इसलिये उसने बिना देर किये भूदेवी का आहवान करते हुए झील की तली की जमीन को धीरे से थपथपाया।

व्योम के ऐसा करते ही राक्षसताल की मिट्टी से वज्र के समान एक बड़ी सी ड्रिल मशीन प्रकट हुई और आश्चर्य से वहां खड़े टिकाबू की ओर झपटी।

इससे पहले कि विद्युम्ना टिकाबू को बचाने के लिये कुछ भी कर पाती, उस वज्र के समान ड्रिल मशीन ने टिकाबू को बीच से पूरा चीर डाला। अपना कार्य पूरा कर वह ड्रिल मशीन वापस धरा में समा गई।

अब भूदेवी ने अपना हाथ वरमुद्रा के अंदाज में व्योम की ओर किया और स्वयं वहां से अदृश्य हो गईं, पर इस समय त्रिकाली के चेहरे पर व्योम

के लिये प्यार के भाव स्पष्ट देखे जा सकते थे।

अब व्योम ने विद्युम्ना की ओर देखते हुए कहा- "अब आप किसी और शक्ति को प्रयोग करना चाहती हैं? या फिर इस दूसरे चरण में भी अपनी हार स्वीकार कर रही हैं?"

व्योम के शब्द सुन विद्युम्ना क्रोधावेश में पूरी तरह से सुलग उठी- "लगता है कि तुम्हें जानबूझकर देवताओं ने अपनी शक्तियां देकर यहां भेजा है, इसीलिये वह बार-बार अलग-अलग प्रकार से तुम्हारी मदद करने आ रहे हैं .... लेकिन तुम चिंता ना करो व्योम, मैं तुम्हें इस चरण में जीतने नहीं दूंगी।"

यह कहकर विद्युम्ना ने तेज आवाज में पुकारा- "तिमिंगलाऽऽऽऽऽऽ"

विद्युम्ना के यह कहते ही व्योम को झील के पानी में एक बड़ी सी आकृति आती हुई दिखाई दी। वह आकृति इतनी विशाल थी कि उसने एक प्रकार से पूरी झील को ही अपनी विशाल काया से घेर लिया था।

उसे देख कर ऐसा महसूस हो रहा था कि मानों झील के पानी में कोई विशाल हिमखण्ड तैर रहा हो।

कुछ ही देर में वह विशाल आकृति व्योम के पास पहुंच गई, जिसे देखकर त्रिकाली की साँसें ही रुक गई। वह एक अत्यंत विशाल मछली थी, जिसका आकार व्हेल मछली से भी 10 गुना बड़ा था।

"यह तो 'मैग्लोडॉन' है ... पर यह तो हजारों वर्षों पहले ही विलुप्त हो गई थी।" यह सोच व्योम ने तुरंत पंचशूल का आहवान किया।

व्योम ने अब पंचशूल को तेजी से गोल-गोल नचाना शुरु कर दिया, जिससे झील के पानी में एक भंवर बन गई, पर वह भंवर उस तिमिंगला का कुछ नहीं कर पाई?

इसी के साथ तिमिंगला ने आगे बढ़कर व्योम को अपने मुंह में भर लिया।

एक सेकेण्ड से भी कम समय में व्योम तिमिंगला के पेट में पहुंच गया। अब व्योम ने अपने पंचशूल से तिमिंगला के पेट पर वार किया, पर

पता नहीं तिमिंगला का पेट किस प्रकार का था? कि व्योम के पंचशूल का उस पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा।

अब व्योम ने भगवान सूर्यदेव को याद कर अपने हाथों से सुनहरी किरणें फेंकना शुरु कर दिया, पर इन सूर्य किरणों का भी तिमिंगला के पेट की आंतरिक त्वचा पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा?

यह देख व्योम के चेहरे पर चिंता की लकीरें उभर आईं और उसने अपनी आँख बंद कर माँ गंगा का आहवान किया- "हे माँ गंगे, अब आप ही मुझे इस तिमिंगला के पेट से निकलने का कोई रास्ता दिखाइये?"

"पुत्र व्योम, तिमिंगला समुद्र में रहने वाली एक राक्षसी शक्ति है, जिसे त्रिदेवों से वरदान स्वरुप विद्युम्ना ने प्राप्त किया था। इसी के प्रभाव से राक्षसताल का जल भी समुद्र की भांति नमकीन हो गया है। इस तिमिंगला पर किसी भी प्रकार की देवशक्ति का कोई असर नहीं होगा? इसे मिले वरदान के स्वरुप इसके पेट से देवता भी स्वयं नहीं निकल सकते, इसलिये विद्युम्ना ने तुम्हारे विरुद्ध इस तिमिंगला का प्रयोग किया है। पर अगर तुम इस तिमिंगला के पेट से निकलने में कामयाब हो गये, तो यह तिमिंगला स्वयं विद्युम्ना को छोड़कर वापस समुद्र में चली जायेगी।" देवी गंगा ने व्योम को तिमिंगला का रहस्य बताया।

"पर माता, अगर इसके पेट से देवता भी स्वयं नहीं निकल सकते, तो मैं भला ......।" तभी कुछ कहते-कहते व्योम की आँखें चमक उठीं- "एक मिनट रुकिये माता .... आपने कहा कि देवता भी स्वयं की इच्छा से इसके पेट से नहीं निकल सकते। ... पर अगर यह मुझे स्वयं ही उगल दे, तो क्या तब भी यह विद्युम्ना को छोड़ समुद्र में चली जायेगी?"

"हां पुत्र।" देवी गंगा के शब्दों में आश्चर्य झलका- "परंतु यह स्वयं ऐसा क्यों करेगी पुत्र?"

"करेगी ... जरुर करेगी।" व्योम के शब्दों में दृढ़ता साफ झलक रही थी- "माता, यह समुद्र की मछली है, जिसका शरीर नमकीन पानी में रहने का अभ्यस्त है। पर अगर इसके ऊपर स्वच्छ जल डाला जाये, तो मुझे पूरा विश्वास है कि यह स्वच्छ जल को पचा नहीं पायेगी।"

व्योम के शब्द सुन देवी गंगा को व्योम का प्लान पूर्ण रुप से समझ आ गया।

अब गंगा की तेज लहर व्योम के शरीर से निकली और तिमिंगला के पेट की आंतरिक त्वचा पर स्वच्छ जल का छिड़काव करने लगी।

एक पल में ही तिमिंगला अपने शरीर को दांये-बांये मोड़नी लगी। बाहर खड़े विद्युम्ना और त्रिकाली को समझ नहीं आ रहा था कि तिमिंगला इस प्रकार क्यों बेचैन है?

तभी तिमिंगला ने एक जोर की उल्टी की और उसके पेट में भरे स्वच्छ जल के साथ व्योम भी निकलकर बाहर आ गया।

व्योम के बाहर निकलते ही तिमिंगला ने विद्युम्ना को एक बार देखा और फिर अपने स्थान से गायब हो गई। शायद देवी गंगा के कहे अनुसार वह राक्षसताल को हमेशा-हमेशा के लिये छोड़कर समुद्र के पानी में चली गई थी।

व्योम को एक बार फिर से सुरक्षित देख त्रिकाली समझ गई कि अब व्योम युद्ध के इस द्वितीय चरण में भी जीतने वाला है।

“लगता है कि तुम इस प्रकार अपनी हार नहीं मानोगे।” विद्युम्ना ने अपने दाँत पीसते हुए कहा- “तो फिर ठीक है अब तुम्हें मृत्यु देने स्वयं मृत्यु के देवता को आना पड़ेगा।”

यह कहकर विद्युम्ना एक पल को रुकी और फिर जोर से अपना त्रिसर्पमुखी दंड को लहराते हुए बोली- “मृत्यु के देवता यम प्रकट हो।”

विद्युम्ना के यह बोलते ही राक्षसताल के उस जल में एक खूंखार भैंसा दिखाई दिया, जो दौड़कर व्योम की ओर ही आ रहा था। उस भैंसे के नथुने से अग्नि की ज्वाला निकल रही थी, जो कि पानी में भी अजीब सी चमक बिखेर रही थी।

उस भैंसे के ऊपर मृत्यु के देवता यम बैठे थे, जिनके कंधे पर यमपाश बंधा था। उन्होंने अपने हाथ में एक बड़ी सी गदा पकड़ रखी थी।

पास पहुंचकर यम ने विद्युम्ना की ओर देखा।

“इस दुष्ट व्योम को मारकर इसकी आत्मा अपने साथ ले जाइये यमदेव।” अब विद्युम्ना थोड़ा गुस्से में दिखाई दे रही थी।

यम ने विद्युम्ना के हाथ में पकड़ा त्रिसर्पमुखी दंड को देखा और फिर व्योम के पास जाकर खड़े हो गये। उन्हें देखकर साफ लग रहा था कि वह भी इस त्रिसर्पमुखी दंड से बंधे हुए थे।

अब यमदेव ने अपने कंधे पर टंगे यमपाश को उतारा और उसे फेंककर व्योम के गले में फंसाने की कोशिश की। पर यमपाश व्योम के गले में नहीं फंसा।

यह देख यमदेव ने दोबारा कोशिश की, पर इस बार भी यमपाश व्योम के गले से छिटक कर दूर हट गया।

व्योम अभी भी एक स्थान पर खडा मुस्कुरा रहा था।

यह देख यमदेव की आँखें आश्चर्य से सिकुड़ गईं- "यह कैसे हो सकता है? मेरे यमपाश से तो कोई नहीं बच सकता, ऐसा मुझे वरदान प्राप्त है। ऐसा तो सिर्फ वही कर सकता है, जो अमृत्व को प्राप्त कर चुका हो या फिर हजारों वर्षों तक अमृत के समीप रहा हो। .... कहीं ... कहीं यह कोई देवमानव तो नहीं?"

यह सोच यमदेव ने यमपाश को वापस अपने कंधे पर रखा और व्योम को घूरकर देखने लगे। अब यमदेव की आँखों से एक तीव्र किरण निकलकर व्योम के शरीर पर पड़ने लगी।

यह एक प्रकार की निरीक्षण तरंगें थीं, जिसके माध्यम से यमदेव व्योम के शरीर की जांच कर रहे थे।

विचित्र बात यह थी कि यमदेव के सिवा किसी को भी यह तरंगे नजर नहीं आ रहीं थीं। व्योम को यमदेव उसे घूरते हुए दिखाई दे रहे थे।

"अरे, इसके शरीर में तो माँ गंगा का वास है ... शायद इसी के कारण मैं इसकी आत्मा को नहीं खींच पा रहा हूं .... पर ... पर ... यह इसके दाहिने हाथ पर तो मेरे पिता सूर्यदेव का निशान है। इसका मतलब कि इस युवक के पास कोई दिव्यास्त्र भी है? ... अब तो मुझे इससे सावधान रहना होगा।" यह सोच यमदेव अपने भैंसे से उतरे और अपने हाथ में गदा संभाल कर व्योम की ओर बढ़े।

यमदेव को अपनी ओर बढ़ते देख व्योम ने भी सूर्यदेव का आहवान किया, अब व्योम के हाथ में चमचमाता हुआ पंचशूल प्रकट हो गया।

व्योम के हाथ में पंचशूल देख यमदेव विचलित हो गये- “यह तो पिताजी का ही दिव्यास्त्र है, जिसे उनके पुत्र के सिवा कोई नहीं उठा सकता। इस हिसाब से तो यह मेरा भाई हुआ .... मैं इसके साथ युद्ध नहीं कर सकता।”

अब यमदेव अपने स्थान पर रुक गये और पलटकर विद्युम्ना की ओर देखा। विद्युम्ना से नजरें मिलते ही यमदेव ने धीरे से अपना सिर ना में हिलाया और अपने भैंसे सहित वहां से गायब हो गये।

व्योम को समझ में नहीं आया कि यमदेव ने ऐसा क्यों किया? पर विद्युम्ना की एक और शक्ति को विफल देख व्योम ने विद्युम्ना को ललकारा- “क्या आपके पास कोई और शक्ति बची है विद्युम्ना? या फिर मैं यह समझ लूं कि आप ने अपनी हार स्वीकार कर ली है?”

व्योम के शब्द सुन विद्युम्ना सोच में पड़ गई- “व्योम के पास देवताओं की शक्तियां हैं ... और मैं इतनी कोशिशों के बाद भी व्योम की सभी शक्तियों के बारे में नहीं जान पा रही? अगर ऐसे ही कुछ देर तक चलता रहा तो मैं वास्तव में द्वितीय चरण में व्योम से हार जाऊंगी। .... मुझे ... मुझे व्योम को हराने के लिये पहले उसकी देवशक्तियों को उससे अलग करना होगा।”

यह सोच विद्युम्ना ने अपनी काली शक्ति का प्रयोग कर दिया। अब विद्युम्ना के शरीर से एक काले रंग का दैत्य बाहर आ गया, जिसका नाम कालतरंग था।

कालतरंग ने विद्युम्ना के शरीर से बाहर आते ही अपनी आँखों से गाढ़े काले रंग का तरल पदार्थ निकालना शुरु कर दिया। वह तरल पदार्थ राक्षसताल की जल की सतह की ओर बढ़ने लगा।

विद्युम्ना के इस वार को व्योम समझ नहीं पाया। वह तो जल की सतह की ओर बढ़ रहे उस काले द्रव को देख रहा था।

कुछ ही देर में उस काले द्रव ने पूरे राक्षसताल की जल की सतह को ढक लिया, जिसके कारण सूर्य की किरणों ने राक्षसताल में आना बंद कर दिया।

जैसे ही सूर्य की किरणें आना बंद हुईं, राक्षसताल के जल में पूर्ण अंधकार छाने लगा। इसी के साथ व्योम के हाथ में पकड़ा पंचशूल उसके हाथ से गायब हो गया।

उधर विद्युम्ना के त्रिसर्पमुखी दंड से ऊर्जा की एक तेज चमक उत्पन्न हो गई। उसे देखकर ऐसा लग रहा था कि मानो राक्षसताल के अंदर कोई दूसरा सूर्य उग आया हो?

पंचशूल के गायब होते ही व्योम को विद्युम्ना का प्लान समझ में आ गया।

“इस दैत्य का नाम कालतरंग है व्योम, यह काली शक्तियों से निर्मित दैत्य है, इसे सिर्फ और सिर्फ सूर्य की किरणों से ही मारा जा सकता है, पर इसने अपनी कालद्रव शक्ति से सूर्यदेव की किरणों को राक्षसताल में प्रवेश करने से बाधित कर दिया है। इसलिये अब तुम इसे नहीं मार सकते।” विद्युम्ना ने एक बार फिर अपना जाल बिछाया।

अब कालतरंग के हाथ में एक काले रंग का फरसा दिखाई देने लगा, जिसे लेकर वह व्योम की ओर बढ़ने लगा।

लेकिन इससे पहले कि कालतरंग अपने प्लान में सफल हो पाता, व्योम के दाहिने हाथ पर बना सूर्य के समान टैटू अचानक तेजी से चमकने लगा।

इसी के साथ वह टैटू व्योम के हाथ से निकल कर अपनी अलौलिक किरणें बिखेरता, राक्षसताल के जल में एक जगह पर जाकर स्थिर हो गया। उसके कारण राक्षसताल में एक नए सूर्य का उदय हो चुका था।

तभी व्योम के हाथ में फिर से पंचशूल प्रकट हो गया। इस बार व्योम ने बिना कालतरंग को मौका दिये ही उस पर पंचशूल फेंक कर मार दिया।

पंचशूल बिजली की तेजी से आगे बढ़ा और कालतरंग के फरसे को काटता हुआ, उसके शरीर में धंस गया।

पंचशूल के कालतरंग के शरीर में घुसते ही कालतरंग का शरीर पूरा का पूरा टूटकर राक्षसताल में बिखर गया। इसी के साथ राक्षसताल के जल को घेरे वह काला द्रव स्वतः ही समाप्त हो गया और सूर्य की आभामई किरणें फिर से राक्षसताल को प्रकाशमय बनाने लगीं।

इसी के साथ सूर्य का टैटू वापस जाकर व्योम की कलाई पर छप गया।

अब विद्युम्ना के क्रोध का बांध टूट गया- “ठीक है व्योम, अब तुम महादेव की सबसे शक्तिशाली शक्ति का सामना करने के लिये तैयार हो जाओ। वैसे तो मैं इस शक्ति का प्रयोग तुम्हारे विरुद्ध करना नहीं चाहती थी, पर अब तुमने मुझे इस शक्ति का प्रयोग करने के लिये विवश कर दिया है। अब तुम्हारी मृत्यु अवश्यंभावी है।”

अब विद्युम्ना का चेहरा गुस्से की अधिकता से लाल हो गया- “हे देवी महाकाली, प्रकट होइये और अपने प्रचंड कृपाण से इस दुष्ट व्योम का मस्तक काट दीजिये।”

विद्युम्ना के इतना कहते ही राक्षसताल के जल में तेज हलचल होने लगी इसी के साथ अपने शरीर से तीव्र ऊर्जा छोड़ती देवी महाकाली उत्पन्न हो गईं।

महाकाली अपने पूर्ण रौद्ररुप में थीं, उनकी जीभ बाहर निकली थी। उनके आठों हाथों में अलग-अलग शस्त्र नजर आ रहे थे। उन्होंने नरमुण्डों की माला धारण कर रखी थी।

महाकाली का विकराल रुप देख व्योम और त्रिकाली तो क्या विद्युम्ना भी घबरा गई।

त्रिकाली और व्योम, महाकाली को देखते ही समझ गए, कि महाकाली से नहीं लड़ा जा सकता।

तभी राक्षसताल में सतह की ओर से कोई आकृति आती हुई दिखाई दी। जी हां, यह और कोई नहीं बल्कि शलाका थी।

शलाका तेजी से तैरती हुई व्योम की ओर बढ़ रही थी। अब शलाका की नजर भी महाकाली पर पड़ गई थी और महाकाली को देख शलाका को किसी अंजानी आशंका ने सताना शुरु कर दिया था?

तभी व्योम की ओर बढ़ रही महाकाली के सामने देवी गंगा, भूदेवी और सूर्यदेव नजर आने लगे। इस समय पर सभी ने महाकाली के सामने अपने हाथ जोड़ रखे थे।

तभी त्रिकाली को मानो होश आया, वह भी चीखकर व्योम की ओर लपकी। ऐसा लग रहा था कि मानो त्रिकाली, महाकाली से कुछ कहना चाह रही थी, पर तभी महाकाली ने अपने दाहिने पैर को राक्षसताल की जमीन पर धीरे से पटका।

महाकाली के ऐसा करते ही पूरे राक्षसताल में समय अचानक से रुक गया। अब महाकाली को छोड़ सभी लोग अपने स्थान पर बिल्कुल स्थिर हो गये।

अब महाकाली निरंतर व्योम की ओर बढ़ रहीं थीं, पर अब व्योम के लिये कोई भी कुछ भी नहीं कर सकता था।

व्योम, त्रिकाली, सूर्यदेव, भूदेवी, देवी गंगा और शलाका कातर नजरों से बस महाकाली की ओर देख रहे थे। सभी को अब किसी अनिष्ट के घटित होने की संभावनाएं साफ नजर आ रहीं थीं।

इस समय सिर्फ विद्युम्ना के चेहरे पर ही मुस्कान थी।

महाकाली अब धीरे-धीरे बढ़ती हुई व्योम के पास पहुंच गईं। तभी महाकाली की निगाह व्योम के गले में बंधे रक्षाकवच पर गई।

यह वही रक्षाकवच था, जिसे त्रिकाली ने शादी करते समय महाकाली की ही मूर्ति के सामने, व्योम के गले में डाला था।

उस रक्षाकवच को देख महाकाली एक पल को ठिठकीं, पर अगले ही पल महाकाली ने अपने हाथ में पकड़े कृपाण से व्योम का सिर काट दिया।

व्योम का सिर कट कर महाकाली के पैरों में जा गिरा, पर व्योम का धड़ अभी भी अपने स्थान पर खड़ा था। आश्चर्य की बात यह थी कि व्योम के शरीर से खून की एक भी बूंद नहीं निकली, शायद यह समय के रुकने के कारण हुआ था।

व्योम के गले में बंधा वह रक्षाकवच अभी भी व्योम के गले में ही बंधा था।

यह दृश्य देखकर त्रिकाली चीखना चाह रही थी, पर समय के रुके होने की वजह से वह चीख भी नहीं पा रही थी। कमोबेश यही हाल शलाका का था।

महाकाली ने अब एक बार पलटकर त्रिकाली की ओर देखा और फिर अपने स्थान से अदृश्य हो गईं। महाकाली के अदृश्य होते ही समय फिर से शुरु हो गया।

इसी के साथ व्योम का शरीर अपने स्थान से लहराकर वहीं जमीन पर गिर गया। पर अभी भी व्योम के शरीर से खून की एक भी बूंद नहीं निकली।

अब त्रिकाली चीखती हुई व्योम के शरीर के पास पहुंच गई। त्रिकाली के आँखों से आँसू बह रहे थे, पर झील में होने के कारण वह सभी आँसू, आँख से निकलते ही झील के पानी में मिल जा रहे थे।

भूदेवी, देवी गंगा और सूर्यदेव अब अपने स्थान से गायब हो गये थे।

त्रिकाली ने भागकर व्योम का कटा हुआ सिर उठाया और व्योम के शरीर को उठाकर अपनी गोद में रख लिया। अब त्रिकाली लगातार विलाप कर रही थी।

त्रिकाली को इस युद्ध से ऐसे परिणाम की कोई आशा नहीं थी, पर होता वही है, जो नियति ने पहले से ही तय कर रखा हो। नियति के आगे आज तक भला किसकी चल पाई है?

◆ ◆ ◆

चैपटर-11

तितली की पायल

तिलिस्मा 6.62

इस बार जब शैफाली की आँख खुली, तो उसने स्वयं को एक बहुत बड़े से उद्यान में पाया। इस उद्यान में हजारों फूलों के पेड़ लगे थे, जिन पर सुर्ख लाल रंग के फूलों की कलियां लगीं थीं।

देखने में वह सभी कलियाँ गुलाब के फूलों के जैसी ही दिख रही थीं, पर आकार में वह लगभग 1 फुट की नजर आ रही थीं।

जहां तक नजर जा रही थी, चारो ओर बस कलियाँ ही कलियाँ बिखरी हुई थीं।

उन सुर्ख कलियों की खुशबू पूरे वातावरण में फैली थी। जाने उस खुशबू में ऐसा क्या था? जिसे सूंघकर शैफाली स्वयं को बहुत तरोताजा महसूस करने लगी।

नीले आसमान के नीचे सुर्ख लाल कलियां प्रकृति का सर्वोत्तम नजारा प्रस्तुत कर रहे थे।

शैफाली ने एक बार उस पूरे स्थान का अच्छी तरह से जांच लिया, पर शैफाली को वहां उन फूलों के सिवा कुछ भी नजर नहीं आया।

“मेरे हिसाब से यहां पर राजकुमारी सुगंधा को होना चाहिये था, पर लगता है कि कैश्वर ने यहां भी राजकुमारी को कहीं पर छिपा कर रखा है? पर यहां तो इन कलियों के सिवा कुछ है ही नहीं। कहीं राजकुमारी सुगंधा किसी ऐसे ही फूल में तो नहीं? क्योंकि राजकुमारी अवनी को भी कैश्वर ने नारियल के अंदर छिपा कर रखा था। .... पर इतने सारे फूलों को खोलकर मैं उसे चेक कैसे कर पाऊंगी? इसमें तो बहुत समय लग सकता है।”

अभी शैफाली अपने ही ख्यालों में खोई हुई थी कि तभी शैफाली को किसी पायल की आवाज वातावरण में सुनाई दी- “छन्-छन्”

शैफाली उस आवाज को सुनकर चौंक गई। तभी उस आवाज को सुनकर सभी कलियाँ स्वतः ही खिल गईं। कलियों के खिलने की विचित्र सी आवाज वातावरण में गूंज गई- “फटाक”

शैफाली, पायल की आवाज का स्रोत जानने के लिये अपने चारो ओर देखने लगी, पर उसे दूर-दूर तक कोई नजर नहीं आया।

धीरे-धीरे सभी कलियाँ अपने आप फिर से बंद होने लगीं। जैसे ही सभी कलियाँ बंद हुईं, तभी पायल की आवाज एक बार फिर वातावरण में गूंजी- “छन्-छन्”

पायल की आवाज सुनकर कलियाँ एक बार फिर खिल उठीं।

इस बार शैफाली को वह आवाज अपने दाहिने ओर से आती हुई सुनाई दी।

“मेरी कैलकुलेशन के हिसाब से यह आवाज मेरे 10 मीटर दाहिनी ओर से आई है, पर मुझे कोई नजर क्यों नहीं आ रहा?” यह सोच शैफाली अपनी दाहिनी ओर चल दी।

10 मीटर आगे जाने के बाद शैफाली की निगाह एक 1 फुट बड़ी, विचित्र सी तितली पर पड़ी।

तितली का रंग बिल्कुल सुनहरा था और उसके दोनों पंखों पर 2 आँखों जैसी आकृति बनी थी। तितली के पंख भी साधारण तितलियों से अलग और बड़े नजर आ रहे थे।

तभी सभी कलियाँ फिर से बंद होना शुरु हो गईं। जैसे ही सभी कलियाँ बंद हुईं, उस अनोखी तितली ने अपने पैरों को जोर से हिलाया।

तितली के पैर हिलाते ही पायल की आवाज एक बार फिर वातावरण में गूंजी, पर इस बार शैफाली की नजर तितली के पैरों पर गई।

तितली ने अपने नन्हें पैरों में पायल पहन रखी थी।

“अच्छा तो यह तितली ही अपने पैरों से पायल बजा रही थी। कहीं .... कहीं यही तो राजकुमारी सुगंधा नहीं है?”

यह सोच शैफाली ने अपने हाथों को बढ़ाकर उस तितली को पकड़ लिया।

परंतु जैसे ही शैफाली ने तितली को अपने हाथों से पकड़ा, शैफाली का शरीर अचानक से छोटा होना शुरु हो गया।

यह देख शैफाली तितली को छोड़कर स्वयं को ध्यान से देखने लगी। शैफाली के यह दृश्य किस अजूबे से कम नहीं था, पर मैग्ना इस तरह की अनोखी दृश्यों से नहीं घबराने वाली थी।

कुछ ही देर में शैफाली का आकार एक मटर के दाने के समान हो गया।

अब वह तितली शैफाली को काफी बड़ी नजर आने लगी थी।

नन्हीं कद की शैफाली इस समय उन सुर्ख फूलों के पेड़ों के बीच खड़ी थी और हवा में उड़ रही उस अनोखी तितली को निहार रही थी।

तभी उड़ती हुई तितली जमीन पर उतरकर शैफाली के पास आ गई और शैफाली को ध्यान से देखने लगी।

कुछ देर सोचने के बाद शैफाली को जाने क्या सूझा कि उसने तितली के पैर को कस कर पकड़ लिया। शैफाली के पैर को पकड़ते ही वह अनोखी तितली, शैफाली सहित हवा में उड़ गई।

चूंकि मैग्ना को ड्रैंगो पर बैठकर आसमान में उड़ने का बहुत अनुभव था, इसलिये शैफाली बिना घबराए हवा में भी तितली का पैर पकड़कर लटकी हुई थी।

तितली उस उद्यान में एक फूल के पेड़ के ऊपर हवा में गोल-गोल घूमने लगी।

“यह तितली एक ही जगह पर क्यों घूम रही है? यह कहीं और क्यों नहीं जा रही? कहीं इस स्थान पर कोई रहस्य तो नहीं छिपा? जो यह मुझे दिखाना चाह रही है।”

अब शैफाली ध्यान से उस पेड़ को देखने लगी, पर उसे उस पेड़ में कुछ भी खास नजर नहीं आया। तभी तितली ने हवा में उड़ते हुए ही एक

बार फिर से अपने पैरों को झटका दिया। जिससे उसके पैरों में बंधी पायल बज उठी।

पायल की आवाज सुन एक बार फिर सभी कलियाँ खिल उठीं।

अब वह तितली उड़ती हुई, उसी लाल फूल के ऊपर आकर बैठ गई, जिसके ऊपर वह इतनी देर से चक्कर लगा रही थी।

“अरे बाप रे! यह तितली तो इस खिले फूल पर आकर बैठ गई। अगर यह कुछ ही देर में यहां से नहीं हटी, तो फूल के बंद होने पर मैं भी इस तितली के साथ-साथ हमेशा के लिये इस फूल में बंद हो जाऊंगी। .... मुझे तुरंत कुछ ना कुछ करना होगा?”

शैफाली अब तितली का पैर छोड़ उस लाल फूल की एक पंखुड़ी पर उतर गई।

शैफाली ने एक बार उस लाल फूल को देखा और फिर जाने क्या सोचकर तितली के पैरों में बंधी उस पायल को खोल दिया।

जैसे ही शैफाली ने तितली के दूसरे पैर की पायल को खोला, अचानक से वह फूल जिस पर तितली उतरी थी, उसका रंग लाल से बदलकर सुनहरा हो गया।

शैफाली ने चौंककर पूरे उद्यान पर नजरें डाली, पर उस फूल को छोड़कर सभी फूल अभी भी लाल रंग के ही नजर आ रहे थे।

“लगता है कि यह फूल अन्य फूलों से कुछ अलग है? तभी यह तितली भी इसी फूल के चारो ओर चक्कर लगा रही थी।”

तभी शैफाली की नजर फूल के बीच स्थित एक गोल से गड्ढे पर पड़ी- “लगता है कि इस गड्ढे में फूल का नेक्टर भरा है क्योंकि तितली भी इस गड्ढे को ही निहार रही है।”

अब शैफाली, पंखुड़ी पर चलते हुए थोड़ा और आगे बढ़ गई और उस गहरे गड्ढे में झांकने का प्रयास करने लगी।

तभी पंखुड़ी पर पड़ी ओस की बूंद पर, पैर पड़ जाने की वजह से शैफाली फिसल गई और उस विशाल गड्ढे में जा गिरी।

वह गड्ढा एक कुंए के समान ही था। शैफाली सीधा उस कुंए में भरे नेक्टर में जा गिरी।

जोर से गिरने की वजह से नेक्टर की कुछ बूंदे शैफाली के मुंह में चली गईं। वह नेक्टर काफी मीठा और लिसलिसा था।

“मैं तो नेक्टर के बीच में आकर गिर गई। .... अब .... अब मैं यहां से निकलूंगी कैसे? क्योंकि कुंए की दीवारें तो बहुत सपाट हैं। ऐसे में दीवारों को पकड़कर ऊपर चढ़ना तो लगभग नामुमकिन है।”

तभी शैफाली को कुंए के ऊपर उस अनोखी तितली का चेहरा नजर आया, जो कि शैफाली के उस कुंए में गिर जाने के बाद, ऊपर से झांक कर देख रही थी।

अब तितली के मुंह से उसकी सूंडनुमा जीभ (प्रोबोसिस) निकली और शैफाली के देखते ही देखते वह कुंए के अंदर की ओर बढ़ी।

तितली की जीभ किसी एस्ट्रा की तरह थी। शैफाली समझ गई कि अब वह जीभ ही उसे यहां से बाहर निकाल सकती है, इसलिये जैसे ही तितली की जीभ ने नेक्टर को पीना शुरु किया, शैफाली ने लपक कर तितली की जीभ को उछलकर पकड़ लिया।

वैसे तो तितली की जीभ शैफाली को थोड़ी लिसलिसी सी लग रही थी, पर शैफाली ने उसे छोड़ा नहीं।

थोड़ा नेक्टर पीने के बाद तितली ने अपनी जीभ को वापस खींचना शुरु कर दिया। इसी के साथ शैफाली भी उस कुंए से निकलकर ऊपर की ओर जाने लगी।

फूल के ऊपर पहुंचकर तितली ने अपनी जीभ को मोड़कर अपने मुंह में रख लिया, पर उससे पहले ही शैफाली तितली की जीभ छोड़कर फूल की पंखुड़ी पर आ गई।

तभी उस तितली का रुप परिवर्तित होने लगा। कुछ ही देर में वह तितली एक सुन्दर सी राजकुमारी में परिवर्तित हो गई।

उसे देख शैफाली समझ गई कि यही तितली राजकुमारी सुगंधा है। बड़ी होते ही सुगंधा ने एक बड़े से पत्ते को मोड़कर एक दोने का रुप दे

दिया और उस दोने में, आसपास के फूलों पर गिरी ओस की बूंदों को एकत्रित करने लगी।

शैफाली अभी भी नन्हें आकार में राजकुमारी सुगंधा की गतिविधियों को ध्यान से देख रही थी। जब पत्ते के दोने में काफी मात्रा में ओस एकत्रित हो गई, तो सुगंधा ने वह पूरी की पूरी ओस को शैफाली के ऊपर उड़ेल दिया।

इससे पहले कि शैफाली, सुगंधा की इस हरकत को समझ पाती, उसके शरीर का आकार बढ़ने लगा। कुछ ही देर में शैफाली अपने सामान्य आकार में सुगंधा के सामने खड़ी थी।

अब शैफाली ने सुगंधा की ओर देखा। सुगंधा ने भी अवनी की भांति अपना रटा-रटाया वाक्य बोलना शुरु कर दिया।

“मेरा नाम राजकुमारी सुगंधा है और मैं राजा कर्णम की पुत्री हूं। कुछ दिन पहले एक असुर ने मुझे और मेरी बाकी की 2 बहनों अवनी व रश्मि को हमारे राज्य से उठा लिया। उसने ही मुझे तितली बनाकर इस उद्यान में बंद कर दिया था। मुझे इस स्थान से स्वतंत्र कराने के लिये आपका बहुत-बहुत धन्यवाद। क्या आप मुझे मेरे महल में उपस्थित सिंहासन तक छोड़ सकती हैं?”

“बिल्कुल छोड़ सकती हूं, पर यहां से निकलने का द्वार मुझे नहीं पता।” शैफाली ने सुगंधा को देखते हुए कहा।

शैफाली की बात सुन सुगंधा ने एक ओर को इशारा किया। सुगंधा का इशारा समझ शैफाली ने जैसे ही इशारे की दिशा में देखा, वह चौंक गई। इस समय शैफाली से कुछ दूरी पर हवा में 2 पायल दिखाई दे रही थीं। दोनों पायलों का आकार काफी बड़ा था। उन पायलों के बीच हवा में 2 द्वार दिखाई दे रहे थे।

उन दोनों पायलों को देख शैफाली समझ गई कि यह वही पायल हैं, जो शुरु में तितली बनी सुगंधा ने पहन रखे थे।

शैफाली ने सुगंधा को एक द्वार में प्रवेश करने का इशारा किया और स्वयं दूसरे द्वार में प्रवेश कर गई।

पिछली बार की तरह यह द्वार भी उसी दरबार में निकला, जहां सभी राजकुमारियों के सिंहासन रखे थे। अपने सिंहासन को देख सुगंधा उस पर जाकर बैठ गई।

सुगंधा के बैठते ही वह भी अवनी की तरह पत्थर की मूर्ति में परिवर्तित हो गई।

अब कमरे में 1 सिंहासन ही खाली बचा था। शैफाली समझ गई कि अब उसे राजकुमारी रश्मि को ढूंढने के लिये जाना पड़ेगा। यह सोच शैफाली राजकुमारी रश्मि के सिंहासन पर जाकर बैठ गई।

इसी के साथ शैफाली का शरीर कणों में बिखर कर एक और यात्रा पर चल दिया।

◆ ◆ ◆

क्रोधाग्नि

27.01.2002, रविवार, राक्षसताल, हिमालय

त्रिकाली ने भागकर व्योम का कटा हुआ सिर उठाया और व्योम के शरीर को उठाकर अपनी गोद में रख लिया। अब त्रिकाली लगातार विलाप कर रही थी।

उसने तो यह भी नहीं सोचा कि वहां पर देवी शलाका क्या कर रहीं हैं?

उधर शलाका की नजरें अब लगातार मुस्कुरा रही विद्युम्ना की ओर थीं- "विद्युम्नाऽऽऽऽऽऽऽ।"

शलाका की आवाज ने विद्युम्ना का ध्यान शलाका की ओर कर दिया।

"अरे यह शलाका यहां पर क्या कर रही है?" शलाका को देख विद्युम्ना की आँखों में भी आश्चर्य के भाव उभरे।

अब एक पल के लिये त्रिकाली की नजर भी शलाका पर चली गई।

तभी शलाका के हाथ में त्रिशूल नजर आने लगा। अब शलाका के पूरे शरीर से अग्नि की लपटें निकल रहीं थीं। पता नहीं यह कैसी अग्नि थी? जो कि पानी में भी विकराल रुप धारण किये हुई थी।

"आपने मेरे पुत्र को मार डाला। आपने मेरे आर्यन की आखिरी निशानी को भी मुझसे दूर कर दिया।" शलाका का शरीर ही नहीं मानों शब्द भी ज्वाला उगल रहे थे- "मैं आपको और आपके इस राक्षसताल को आज पूरी तरह से भस्म कर दूंगी।"

यह कहकर शलाका ने अपने शरीर का ताप और भी ज्यादा बढ़ाना शुरु कर दिया।

"यह तुम्हारा और आर्यन का पुत्र है?" विद्युम्ना के चेहरे पर आश्चर्य के भाव उभरे।

त्रिकाली के लिये भी शलाका का एक-एक शब्द रहस्य से भरा था, चाहे कुछ पलों के लिये ही सही पर त्रिकाली का ध्यान भी इस समय शलाका की ओर चला गया।

"व्योम, देवी शलाका का पुत्र है ... इस हिसाब से तो यह भी अटलांटियन हुआ।" त्रिकाली तेजी से सोच रही थी- "पर हमारी शादी के समय तो देवी महाकाली ने ही हमें आशीर्वाद दिया था, फिर उन्हें व्योम के गले में मेरा बांधा हुआ रक्षाकवच दिखाई क्यों नहीं दिया? क्यों महाकाली को मुझे दिया वरदान याद नहीं आया?"

उधर शलाका का क्रोध बढ़ता ही जा रहा था। तभी राक्षस दीर्घमुख वहां प्रकट हो गया और अपने बड़े से मुख से शलाका को निगल लिया, पर अगले ही पल दीर्घमुख का पूरा शरीर जलने लगा और शलाका दीर्घमुख का पेट फाड़कर बाहर आ गई।

अब विद्युम्ना को थोड़ी घबराहट सी महसूस हुई और उसने गायब होकर वहां से भागने की कोशिश की, पर शलाका को जैसे विद्युम्ना की इस चाल का अहसास हो गया। इसलिये शलाका के हाथों से अग्नि की एक किरण निकली और उसने विद्युम्ना को चारो ओर से घेर लिया।

अब शलाका वहां से भाग नहीं पा रही थी। इधर राक्षसताल का पानी लगातार गर्म होता जा रहा था, यह देख त्रिकाली ने अपने और व्योम के शरीर को हिमशक्ति का प्रयोग करके एक बड़े से हिमकवच में ढक लिया।

तभी व्योम के गले में पड़ा त्रिकाली का पहनाया हुआ रक्षाकवच अचानक से तेज रोशनी बिखेरने लगा। यह देख त्रिकाली ने आश्चर्यचकित होते हुए व्योम का सिर उसके धड़ से लगा दिया।

अब उस रक्षाकवच ने तेज रोशनी बिखेरते हुए, व्योम के पूरे गले को ढक लिया। त्रिकाली की निगाहें अब एक अंजानी सी उम्मीद से सिर्फ और सिर्फ व्योम के चेहरे की ओर थी।

कुछ देर बाद रक्षाकवच से निकलती रोशनी थोड़ी कम हो गई। रोशनी के कम होते ही त्रिकाली ने व्योम की गर्दन के पास देखा। व्योम की गर्दन अब जुड़ चुकी थी और उस स्थान पर कोई निशान भी दिखाई नहीं दे रहा था।

अब धीरे-धीरे त्रिकाली के चेहरे पर मुस्कान के भाव उभरते जा रहे थे। अब उसे विश्वास हो चला था कि यह सब महाकाली का ही चमत्कार है।

तभी त्रिकाली के कानों में महाकाली की आवाज गूंज उठी- "मैंने तुम्हारे बचपन में तुम्हें एक वरदान दिया था त्रिकाली, जो आज मैंने फलीभूत कर दिया है। मैंने तुमसे कहा था कि मेरे दिये हुए रक्षाकवच को तुम जिस भी व्यक्ति पर आसक्त होकर उसके गले में वह रक्षाकवच बांधोगी, मैं उसके प्राणों को 3 बार अभयदान दूंगी। परंतु इसके लिये तुम्हें अपने राज्य में मेरी मूर्ति बनवाकर 10 वर्षों तक उसकी पूजा करनी होगी। उसके बाद मेरी वह मूर्ति स्वतः ही गायब हो जायेगी। तो मैंने अपना दिया वचन आज प्रथम बार पूर्ण कर दिया।"

इतना कहकर महाकाली की आवाज आनी बंद हो गई। इसी के साथ व्योम ने कराह कर अपनी आँखें खोल दीं।

व्योम का शरीर अभी भी त्रिकाली की गोद में था। व्योम की नजर जैसे ही त्रिकाली पर पड़ी, वह अपनी पलकें झपकाते हुए बोल उठा- "लगता है कि मुझे अपनी पत्नि से बहुत प्यार है, देखो स्वर्ग की अप्सरा भी त्रिकाली की ही शक्ल में महसूस हो रही है।"

यह सुन त्रिकाली ने व्योम के हाथ पर जोर की चुटकी काट लिया।

"अरे-अरे, यह तो सच में मैं अपनी पत्नि की गोद में लेटा हूं।" यह कहकर व्योम उठकर खड़ा हो गया, पर अपने आसपास का नजारा देखकर व्योम हैरान रह गया- "अरे, ये मैं बर्फ के कमरे में कैसे आ गया? मैं तो विद्युम्ना से लड़ रहा था।"

यह सुन त्रिकाली ने संक्षिप्त शब्दों में व्योम को सबकुछ बता दिया, जिसे सुनकर व्योम आश्चर्य से भर उठा- "इसका मतलब तुम्हारे द्वीप की देवी शलाका ही मेरी माता हैं और उन्होंने इस झील में प्रचंड अग्नि को प्रज्वलित कर विद्युम्ना को उसमें फंसा दिया है।"

अब व्योम ने त्रिकाली से हिमकवच को हटाने के लिये कहा।

व्योम की बात मान त्रिकाली ने डरते-डरते हिमकवच हटा दिया। हिमकवच के हटते ही अग्नि की एक तेज ज्वाला अंदर प्रवेश की, पर

व्योम के पीछे होने की वजह से उस ज्वाला ने त्रिकाली पर कोई असर नहीं डाला।

अब व्योम उस हिमकवच के बाहर निकल गया और त्रिकाली को हिमकवच के अंदर ही रहने को कहा।

व्योम के बाहर निकलते ही त्रिकाली ने हिमकवच को दोबारा से बंद कर दिया।

शलाका की अग्नि इस समय व्योम पर कोई असर नहीं डाल रही थी। व्योम चलते हुए शलाका के पास पहुंच गया, जो कि इस समय क्रोध में बिल्कुल अंधी दिख रही थी।

"अपनी अग्नि का प्रवाह बंद कर दीजिये माता, मैं अभी जीवित हूं।" व्योम ने शलाका के सामने आते हुए कहा।

व्योम के शब्दों को सुन शलाका का ध्यान व्योम की ओर हो गया। व्योम को सकुशल देख शलाका ने अपने अग्नि के प्रवाह को बंद कर दिया।

तब तक राक्षसताल का जल काफी गर्म हो गया था, और उसमें उपस्थित सभी जीव तड़पने लगे थे। शलाका को अग्नि का प्रवाह बंद करता देख विद्युम्ना ने राहत की साँस ली।

शलाका ने अब व्योम के चेहरे को प्यार से छुआ। व्योम को जीवित देख शलाका का मातृत्व प्रेम छलक आया। उसे अब व्योम में आर्यन का चेहरा नजर आने लगा।

तभी अग्नि का प्रवाह बंद होते देख त्रिकाली ने अपना हिमकवच हटा दिया और अपनी हिमशक्ति से राक्षसताल के जल को पुनः सामान्य तापमान पर कर दिया।

शलाका से मिलकर पता नहीं क्यों व्योम की आँखों में भी मोती छलकने लगे, पर व्योम को पता था कि इस समय वह कहां पर है? इसलिये अब व्योम विद्युम्ना की ओर मुड़ा।

अब व्योम के हाथ में भी पंचशूल नजर आने लगा- "बताओ विद्युम्ना, अब आप इस द्वितीय चरण में अपनी हार स्वीकार करती हो या नहीं?"

व्योम और शलाका को अपनी ओर अस्त्र ताने हुए देखकर इस बार विद्युम्ना ने अपनी हार स्वीकार करते हुए कहा- “मैं जान चुकी हूं व्योम कि तुम एक देवपुत्र हो और तुम्हें देवताओं की असंख्य शक्तियां प्राप्त हैं। मैं कितनी भी कोशिश कर लूं, परंतु मैं तुमसे कभी जीत नहीं पाऊंगी। इसलिये मैं अपने पिछले कृत्य पर शर्मिंदा हूं व्योम और मैं द्वितीय चरण की भी हार स्वीकार करती हूं। आगे बढ़ो व्योम और राक्षसलोक में प्रविष्ठ होकर त्रिशाल और कलिका को स्वतंत्र करा लो, पर यह याद रखना व्योम कि हमारे युद्ध का तृतीय चरण यहीं से शुरु हो रहा है।”

विद्युम्ना के शब्द सुनते ही त्रिकाली दौड़कर व्योम के गले से लिपट गई- “आखिरकार तुमने युद्ध के द्वितीय चरण में भी विद्युम्ना को परास्त कर दिया व्योम। तुम सर्वशक्तिमान हो व्योम .... तुमसे श्रेष्ठ इस संसार में कोई नहीं है? अब युद्ध के इस तृतीय चरण में मैं भी अपनी हिम शक्ति सहित तुम्हारे साथ हूं।”

“और मैं भी अपनी अग्नि शक्ति सहित अपने पुत्र के साथ हूं।” शलाका ने भी दोनों का हाथ थामते हुए कहा।

जैसे ही त्रिकाली को शलाका के वहां होने का अहसास हुआ, वह एक झटके से व्योम से अलग होकर शलाका के पैर छूने लगी।

“सदैव प्रसन्न रहो और यूं ही एक दूसरे का साथ देते रहो।” शलाका जो कि अब वहां के बारे में सबकुछ जान चुकी थी, खुश होकर त्रिकाली को आशीर्वाद देते हुए कहा।

अब सभी ने संक्षिप्त शब्दों में एक दूसरे से अपनी कहानी सुना दी।

“तो फिर चलो व्योम, अब देर ना करते हुए, विद्युम्ना के भ्रमन्तिका से त्रिकाली के माता-पिता को सुरक्षित निकालकर लाते हैं।” शलाका के शब्दों में गजब की दृढ़ता दिखाई दे रही थी।

तभी एक अंजान आवाज उस झील में उभरी- “मैं भी अब तुम लोगों के साथ हूं।”

सभी ने उस अंजान आवाज की ओर अपना सिर घुमाकर देखा। वह आवाज वारुणि की थी, जो कि राक्षसताल के जल में खड़ी शलाका को निहार रही थी।

"अरे वारुणि, तुम यहां पर कैसे?" शलाका ने आश्चर्य से वारुणि को देखते हुए पूछा।

"बहुत लंबी कहानी है, इसलिये वह सब बातें आराम से बैठकर करेंगे। अभी पहले त्रिशाल व कलिका को छुड़ाना आवश्यक है, इसलिये उस कार्य में मैं तुम्हारे साथ हूं।" वारुणि ने शलाका से कहा।

त्रिकाली, वारुणि के मुंह से अपने माता-पिता का नाम सुनकर आश्चर्य में पड़ गई, पर वारुणि के कहे अनुसार उसने अभी वारुणि से कुछ पूछा नहीं।

अब शलाका ने वारुणि का भी परिचय व्योम और त्रिकाली से करा दिया। वारुणि से मिलकर त्रिकाली खुश हो गई। अब उसे पूर्ण विश्वास हो गया कि अब वह अपने माता-पिता को छुड़ाने में अवश्य सफल हो जायेगी।

अतः अब सभी राक्षसलोक के द्वार की ओर बढ़ गए।

शलाका और वारुणि के लिये राक्षसलोक कोई नया नहीं था, वह पहले भी कई बार देवलोक के समय में वहां आ चुके थे, इसलिये उन्हें राक्षसलोक के रास्ते का पूर्ण ज्ञान था।

कुछ दूर जाने पर सभी को पानी के अंदर एक विशाल व्हेल के आकार की मछली, झील की तली पर मुंह खोले हुए पड़ी दिखाई दी।

पास जाने पर व्योम व त्रिकाली को पता चल गया कि वह असली मछली नहीं थी, बल्कि वही था, राक्षसलोक जाने का द्वार।

अब सभी उस मछली के मुंह में प्रवेश कर गये। अंदर धुप्प अंधेरा था। अंधेरे को महसूस कर व्योम के हाथ में बना सूर्य का टैटू चमकने लगा।

सूर्य के टैटू में अब वह स्थान पूरा जगमगा उठा। कुछ देर तक ऐसे ही चलते रहने के बाद सभी को दूर तेज रोशनी दिखाई दी।

कुछ ही देर में सभी उस रोशनी के स्रोत तक पहुंच गये। वहां पर पानी के बीच में एक बड़ा सा मैदान के समान खाली स्थान था, जिसमें बिल्कुल भी पानी नहीं था।

उस बड़े से स्थान में एक विशाल महल बना हुआ था। उस महल के द्वार पर एक भव्य सोने का द्वार था, जो कि इस समय बंद दिखाई दे रहा था।

व्योम ने सावधानी से उस द्वार को खोला और सभी उस द्वार के माध्यम से अंदर की ओर बढ़ गए।

महल के अंदर का प्रथम कक्ष शतरंज के खेल की भांति बना था। पूरे कमरे में काले-सफेद 64 वर्गाकार खाने बने हुए थे, जिन पर काँच के कुछ मोहरे भी खड़े थे।

तभी वारुणि की नजर सामने कुछ दूरी पर खड़े काले रंग से बने, काँच के एक राक्षस की ओर गयी, जो कि शतरंज के खेल में काले मोहरों का प्रतिनिधित्व करता हुआ दिखाई दे रहा था।

वारुणि उसे देखते ही पहचान गई। वह कालबाहु था, विद्युम्ना का पुत्र कालबाहु, जिसे लेने के लिये त्रिशाल और कलिका वहां आये थे।

"सावधान दोस्तों, हमारे सामने काले रंग के मोहरों के बीच विद्युम्ना का पुत्र कालबाहु खड़ा है, इसके पास कई मायावी शक्तियां हैं। सभी लोग उससे सावधान रहना।" वारुणि ने सभी को सचेत करते हुए कहा।

वारुणि के शब्द सुन व्योम के हाथों में पंचशूल नजर आने लगा।

कालबाहु एक 20 फुट ऊंचा मजबूत कद काठी वाला योद्धा सरीखा राक्षस था, उसके शरीर पर 8 हाथ थे, 2 हाथ बिल्कुल इंसानों की तरह थे, परंतु बाकी के 6 हाथ केकड़े के जैसे थे।

परंतु कालबाहु इस समय किसी निर्जीव मोहरे की भांति वहां खड़ा रहा। यह देख धीरे-धीरे वारुणि आगे की ओर बढ़ी।

परंतु कालबाहु अभी भी स्थिर खड़ा था। अब वारुणि के दोनों हाथों में वायु घूमना शुरु हो गई थी। पर शलाका अभी भी कालबाहु को ध्यान से देख रही थी।

तभी शलाका की निगाह सफेद मोहरों की ओर गई। सफेद मोहरों का प्रतिनिधित्व विद्युम्ना के पति बाणकेतु के हाथ में था।

“वारुणि सफेद मोहरों पर भी ध्यान रखना, इसका प्रतिनिधित्व विद्युम्ना का पति राक्षसराज बाणकेतु कर रहा है और हो ना हो विद्युम्ना का भ्रमन्तिका यहां से शुरु हो गया है।” शलाका ने वारुणि को चेतावनी देते हुए कहा।

व्योम और त्रिकाली के लिये तो सभी नाम बिल्कुल नए थे, पर वह भी इस समय पूरी तरह से सावधान नजर आने लगे।

महल के अंदर की ओर जाने का द्वार शतरंज के इन्हीं मोहरों के बीच से होकर जा रहा था, इसलिये मजबूरन सभी को इसी रास्ते से होकर उधर जाना था।

सभी ने सतर्कतावश अपने कदमों को आगे की ओर बढ़ाया, तभी एक काले सैनिक ने जीवित होकर वारुणि के ऊपर आक्रमण कर दिया।

पर पीछे से आ रहे व्योम ने उस काले सैनिक को अपना पंचशूल फेंककर मार दिया। पंचशूल उस काले सैनिक को मारने के बाद वापस व्योम के पास आ गया।

तभी एक सफेद घोड़े के पंख निकल आये और वह जीवित होकर उड़ता हुआ शलाका की ओर झपटा, जिसे त्रिकाली ने अपनी हिम शक्ति से हवा में ही बर्फ का बना दिया।

वह सफेद घोड़ा बर्फ बनने के बाद नीचे भी नहीं आया, वह हवा में ही बर्फ बनकर उस पूरे शतरंज पर चक्कर लगाने लगा।

इस बार काले हाथी ने अपने स्थान पर खड़े-खड़े ही अपनी सूंढ़ को लंबा करके त्रिकाली को पकड़ लिया। अब वह हाथी त्रिकाली को अपनी सूंढ़ के द्वारा हवा में इधर-उधर नचाने लगा, जिसके कारण कोई भी हाथी पर निशाना नहीं लगा पा रहा था।

अब वारुणी की नजरें लगातार हिल रही त्रिकाली की ओर थीं। कुछ देर ऐसे ही देखते रहने के बाद वारुणि ने अपने हाथ से वायुचक्र निकाला, जो कि हवा में घूमता हुआ हाथी के पास जाकर स्थिर हो गया और जैसे ही उसे हाथी की सूंढ़ रुकती हुई दिखी, उस वायुचक्र ने हाथी की सूंढ़ को काट दिया।

हाथी की सूंढ़ कटते ही त्रिकाली ने अपनी हिम शक्ति से हाथी पर बर्फ के काँटों की बौछार कर दी। अब एक पल में ही वह हाथी जमीन पर गिरा पड़ा था।

अब बार-बार कोई ना कोई मोहरा या सैनिक जीवित होकर किसी ना किसी पर आक्रमण कर रहा था, पर हर बार सभी एक दूसरे को बचाते हुए आगे बढ़ते जा रहे थे।

शलाका की तेज निगाहें लगातार समाप्त हो रहे उन शतरंज के मोहरों पर थीं। इसी के साथ शलाका का दिमाग भी तेजी से चल रहा था।

अब शतरंज के बोर्ड पर सिर्फ 2 ही मोहरे बचे थे। एक विद्युम्ना का पुत्र कालबाहु और दूसरा विद्युम्ना का पति बाणकेतु।

इस बार जैसे ही वारुणि आगे की ओर बढ़ी, तभी कालबाहु की मूर्ति जाग उठी। कालबाहु को जागते देख व्योम ने अपना पंचशूल कालबाहु की ओर तान लिया, पर इससे पहले कि व्योम पंचशूल का प्रयोग कर पाता कि तभी शलाका ने चीखकर व्योम को रोक दिया- "रुक जाओ व्योम, यह भ्रमन्तिका है। अवश्य ही यहां पर विद्युम्ना ने कोई मायाजाल फैला रखा है। जाने क्यों मुझे ऐसा महसूस हो रहा है कि यह कालबाहु नहीं है, बल्कि उसके वेष में कोई और है, जिसे विद्युम्ना हमारे द्वारा मरवाना चाहती है। ... जरा सोचो, कि विद्युम्ना अपने पति और पुत्र को पहले ही द्वार में क्यों रखेगी? और वह भी इतने साधारण से शतरंज के मोहरों के साथ। और ... और अभी तक कालबाहु ने हम पर आक्रमण क्यों नहीं किया?"

शलाका के शब्दों को सुनकर व्योम का भी माथा ठनक गया और वह ध्यान से कालबाहु को देखने लगा, जो कि एक स्थान पर खड़ा होकर व्योम को अजीब सी नजरों से घूर रहा था।

"मान गये शलाका तुम्हें।" तभी वातावरण में विद्युम्ना की आवाज सुनाई दी- "तुम्हारी नजरें और मस्तिष्क तो अभी तक तेज है। पर अब तुम लोग मेरे इस भ्रमन्तिका से नहीं बच सकते।"

विद्युम्ना की बात सुन शलाका की निगाह शतरंज रुपी जमीन पर गई। इस समय वहां मौजूद सभी लोग शतरंज के सिर्फ काले खानों पर ही खड़े थे।

यह देख शलाका का दिमाग किसी अंजानी आशंका से काँप उठा, लेकिन इससे पहले कि शलाका सभी को विद्युम्ना की अगली चाल के बारे में आगाह कर पाती कि तभी उन सभी काले खानों के ऊपर से 8 फिट की काँच की ट्यूब प्रकट हुईं और उसने वहां खड़े व्योम, त्रिकाली, शलाका, वारुणि, कालबाहु और बाणकेतु को अपने अंदर फंसा लिया।

सभी कुछ इतनी तेजी से हुआ था कि किसी के सावधान होने से पहले सभी विद्युम्ना के शिकंजे में फंस गए थे।

तभी विद्युम्ना अठ्ठहास करते हुए सबके समक्ष अपने असली आकार में प्रकट हो गई। इस समय विद्युम्ना के साथ असली बाणकेतु और कालबाहु भी थे।

विद्युम्ना अब बारी-बारी से सभी को देखते हुए बोली- “यह सभी काँच की ट्यूब महादेव की त्रिसर्पमुखी दंड की छल शक्ति से निर्मित हैं, इन्हें अंदर से किसी भी अस्त्र-शस्त्र का प्रयोग कर तोड़ा नहीं जा सकता और तुम इन्हें उठाकर फेंक भी नहीं सकते क्योंकि इनका भार पृथ्वी के भार के बराबर है। वारुणि, शलाका और त्रिकाली तुम तीनों के काँच के ट्यूब के अंदर ऑक्सीजन या कोई वातावरण नहीं है। अब ऐसी स्थिति में ना तो वारुणि अपनी वायु शक्ति का प्रयोग कर सकती है, ना ही बिना ऑक्सीजन के शलाका की अग्नि शक्ति काम करेगी। अब रही बात त्रिकाली की तो त्रिकाली की हिम शक्तियों के प्रयोग के लिये भी वातावरण में पानी या नमी का होना आवश्यक है। इसलिये त्रिकाली भी अपनी शक्तियों का प्रयोग इस स्थान पर नहीं कर पाएगी। हां व्योम के लिये मैंने खास तरह के काँच के ट्यूब का निर्माण किया है। व्योम को सूर्यदेव की सहायता ना मिले इसके लिये उसके ट्यूब पर एक पारदर्शक पदार्थ का लेप किया गया है, जिससे सूर्य की किरणें ट्यूब के अंदर ना जा सकें और बिना किसी वातावरण के व्योम की मदद देवी गंगा भी नहीं कर सकतीं। अब रह गईं भूदेवी, तो उनकी मदद प्राप्त करने के लिये व्योम को भूमि का स्पर्श करना ही पड़ेगा, पर इस ट्यूब में रहते हुए व्योम का शरीर हवा में लटका रहेगा, जिसके कारण व्योम भूदेवी की भी मदद नहीं ले सकता। अब बचा व्योम का पंचशूल या फिर उसके मस्तक पर लगे मुकुट के रुप में ब्रह्मपात्र। ये दोनों ही दिव्य शक्तियां इस काँच के ट्यूब को अंदर से तोड़ नहीं सकतीं और ना ही ये किसी प्रकार से बाहर निकल सकती हैं? .... हां अब आप लोग ये

जरुर सोच रहे होंगे कि मैंने कालबाहु और बाणकेतु को क्यों कैद कर लिया? ... अरे, यही दोनों तो हैं त्रिशाल और कलिका। जिन्हें संज्ञाशून्य कर मैंने उन्हें कालबाहु और बाणकेतु का रुप दिया था, पर शलाका की कुशाग्र बुद्धि के बल पर तुम बच गये। नहीं तो मैंने इन दोनों को तुम लोगों से ही मरवा देना था। .... अब तुम लोग चाहो तो अपनी किसी भी शक्ति का प्रयोग कर लो, परंतु इस स्थान से बाहर नहीं आ सकते?”

इतना कहकर विद्युम्ना एक बार फिर जोर से हंसी और वहां खड़े होकर सभी के प्रयासों को देखने लगी। इसी के साथ त्रिशाल और कलिका भी अपने असली रुप में आ गये, परंतु वह दोनों इस समय बिल्कुल निष्चेत थे और उस काँच की ट्यूब में हवा में घूम रहे थे।

विद्युम्ना की बात सुन शलाका ने एक-एक कर अपनी सभी शक्तियों का आहवान कर लिया, परंतु उस काँच की ट्यूब में शलाका की कोई शक्ति काम नहीं की? यहां तक कि शलाका उस स्थान से गायब होकर भी कहीं नहीं जा पा रही थी? अब शलाका ने आर्ची या फिर रुद्राक्ष-शिवन्या से मदद मांगने की कोशिश की, परंतु वह सब भी व्यर्थ ही गया। थक कर शलाका चुपचाप दूसरे लोगों की ओर देखने लगी।

उधर कमोबेश वारुणि और त्रिकाली का भी वही हाल था, वह भी अपनी सभी शक्तियों का आहवान कर थक चुकी थीं।

दूसरी ओर हवा में लटक रहे व्योम ने अपने पंचशूल और ब्रह्मपात्र को भी आजमा कर देख लिया, पर विद्युम्ना ने सही कहा था, व्योम की ये दोनों ही शक्तियां वहां पर व्यर्थ महसूस हो रहीं थीं।

व्योम ने देवी गंगा, सूर्यदेव और भूदेवी का भी आहवान किया, पर कोई भी उसकी मदद कर पाने में असमर्थ था।

तभी व्योम को अपने हाथ में बने सूर्य के टैटू का ध्यान आया। व्योम ने सूर्य के टैटू को अपने हाथों से स्पर्श किया। व्योम के स्पर्श करते ही सूर्य का टैटू व्योम के हाथ से निकला, पर इससे पहले कि सूर्य का टैटू कोई चमत्कार दिखला पाता, वह स्वतः ही शतरंज के काले खानों पर जाकर चिपक गया।

काले खाने पर चिपकते ही सूर्य के टैटू की चमक स्वतः ही समाप्त हो गई और वह पूरी तरह से निष्क्रिय हो गया।

यह देख विद्युम्ना जोर से हंसी- "मैं यह बात तो तुम्हें बताना भूल ही गई थी व्योम कि तुम्हारा सूर्य का टैटू भी इस कैप्सूल में तुम्हारी कोई मदद नहीं कर सकता? मुझे पहले से पता था कि सभी शक्तियों के प्रयोग करने के बाद तुम अपनी सूर्य के टैटू वाली शक्ति को जरुर प्रयोग में लाओगे, इसलिये मैंने पहले से ही उस टैटू की काट को उन काले खानों पर लगा दिया था, जिन्होंने तुम्हारे सूर्य के टैटू की सारी ऊर्जा को अपने अंदर सोख लिया है। .... हाऽऽऽ हाऽऽऽ हाऽऽऽ व्योम, इसीलिये मेरे भ्रमन्तिका को इस पृथ्वी का सबसे बड़ा मायाजाल कहते हैं क्योंकि मैं इसका निर्माण अपने शत्रु की शक्तियों को देखने के बाद ही करती हूं। अब तुम सभी को इस स्थान से कोई भी नहीं बचा सकता।"

कहते-कहते विद्युम्ना, व्योम के काँच के ट्यूब के बिल्कुल समीप आ गई।

विद्युम्ना की बात सुन व्योम को महावृक्ष की कही बात याद आ गई- "एक बात हमेशा ध्यान रखना व्योम, जब तक तुम विद्युम्ना के सामने ना पहुंच जाओ, तब तक अपनी किसी एक शक्ति का प्रयोग मत करना, वहीं शक्ति अंत में तुम्हें विजय दिलायेगी।"

व्योम ने अब मुस्कुरा कर विद्युम्ना की ओर देखा और मन ही मन में उसने अपनी गुरुत्व शक्ति को याद किया। यही तो थी वह शक्ति, जिसे महावृक्ष के कहने के अनुसार अभी तक व्योम ने प्रयोग नहीं की थी और जिसका भान अभी विद्युम्ना को भी नहीं था।

विद्युम्ना ऐसी स्थिति में भी व्योम को मुस्कुराते देखकर एक पल के लिये भ्रमित हो गई। लेकिन तब तक देर हो चुकी थी, व्योम ने काँच के ट्यूब के अंदर से सभी की ट्यूब पर अपनी गुरुत्व शक्ति से प्रहार कर दिया।

व्योम के ऐसा करते ही पृथ्वी के समान द्रव्यमान वाली काँच की सभी ट्यूब, भारविहीन होकर हवा में तैरने लगीं और इसी के साथ सभी अपनी काँच की ट्यूब से बाहर आ गये।

व्योम ने बाहर निकलते ही अपना पंचशूल निकाला और कालबाहु को अपनी भुजाओं में पकड़ उस पर पंचशूल तान दिया।

अब शलाका और वारुणि ने विद्युम्ना और बाणकेतु को दोनों ओर से घेर लिया।

उधर त्रिकाली भागकर त्रिशाल और कलिका की ओर चली गई और उन्हें अपनी शक्ति के प्रभाव से जगाने लगी।

इधर विद्युम्ना ऐसी स्थिति में भी घबराई नहीं। अब उसके हाथों में महादेव का दिया हुआ त्रिसर्पमुखी दंड एक बार फिर से नजर आने लगा।

“ये महादेव का दिया हुआ दंड है व्योम, यह जिसके पास भी रहता है, उसे कोई नहीं हरा सकता, यही महादेव का वरदान भी है। इसलिये अभी भी तुम्हारे पास समय है, मेरे पुत्र को छोड़कर यहां से चले जाओ, नहीं तो मुझे एक बार फिर से महाकाली का आहवान करना पड़ेगा और महाकाली के समक्ष तुम सबकी शक्तियां नगण्य हैं।” विद्युम्ना ने गरजते हुए कहा।

उधर त्रिकाली, त्रिशाल और कलिका को होश में लाने में सफल हो गई थी और जल्दी-जल्दी उन्हें यहां की स्थितियों के बारे में बता रही थी।

व्योम इस समय पूर्ण मुश्किल में था, इसलिये भूदेवी, देवी गंगा और सूर्यदेव एक बार फिर से व्योम की मदद के लिये प्रकट हो गये।

इधर त्रिशाल, कलिका, शलाका व वारुणि ने भी खतरा भांपकर अपनी शक्तियों का आहवान कर लिया था। सभी को पता था कि अगर महाकाली एक बार फिर प्रकट हुईं, तो फिर से इस युद्ध का पलड़ा पलट जाना था।

यह सोच सभी ने एकसाथ विद्युम्ना पर अपनी शक्तियों का प्रहार कर दिया। उधर त्रिकाली की नजर बाणकेतु पर थी, जो कि अभी भी विद्युम्ना से दूर खड़ा जाने क्या सोच रहा था?

अब देवी गंगा की जल शक्ति, वारुणि की वायु शक्ति, शलाका की अग्नि शक्ति, भूदेवी की धरा शक्ति, सूर्यदेव की आकाश शक्ति, त्रिशाल की ध्वनि शक्ति और कलिका की प्रकाश शक्ति एक साथ विद्युम्ना की ओर बढ़ीं।

उन सभी शक्तियों को एक साथ अपनी ओर आते देख विद्युम्ना ने महादेव का स्मरण किया और अपना त्रिसर्पमुखी दंड आगे कर दिया।

सभी शक्तियां एक साथ त्रिसर्पमुखी दंड से टकराईं और इसी के साथ विद्युम्ना के हाथ से त्रिसर्पमुखी दंड कहीं हवा में विलीन हो गया।

यह देख सभी ने अपने प्रहारों को रोक दिया और विद्युम्ना की ओर देखने लगे।

दंड को हवा में विलीन होते देख विद्युम्ना की आँखें आश्चर्य से चौड़ी हो गईं और उसने महादेव का स्मरण किया- “हे महादेव, आपने मुझे स्वयं अपना त्रिसर्पमुखी दंड दिया था, जिसे मुझसे मेरी इच्छा के विरुद्ध कोई मुझसे छीन नहीं सकता था? और उसके रहते मुझे कोई भी हरा नहीं सकता था? फिर मेरा सर्पदंड कैसे मेरे हाथ से गायब हो गया?”

विद्युम्ना इस समय बहुत ही असहाय महसूस कर रही थी।

तभी राक्षसताल के जल में महादेव का छाया शरीर दिखाई दिया, जिन्हें देख सभी ने अपने अस्त्रों को नीचे कर लिया और झुककर महादेव को प्रणाम करने लगे।

“विद्युम्ना, मैंने पहले ही कहा था कि जब तुम अपने मार्ग से विमुख हो जाओगी, तो मेरे पंचभूत तुम्हें मार्ग दिखायेंगे।” महादेव ने विद्युम्ना को देखते हुए कहा- “अब जब तुम स्वयं ही मेरे पंचभूत की सप्त शक्तियों से युद्ध करोगी, तो तुम्हारा त्रिसर्पमुखी दंड तो गायब होना ही था।”

महादेव के शब्द सुन विद्युम्ना ने अपने चारो ओर देखा। महादेव ने सच ही तो कहा था, इस समय उनके पंचभूत की सभी सप्त शक्तियां किसी ना किसी रुप में यहां विराजमान थीं।

यह देख विद्युम्ना ने व्योम की ओर हाथ जोड़कर अपनी पराजय स्वीकार कर ली। इसी के साथ महादेव का छाया शरीर भी वहां से गायब हो गया, परंतु अब सब कुछ वहां व्योम के अधिकार में था।

“ठीक है व्योम, मैं इस तृतीय चरण में भी अपनी हार स्वीकार करती हूं।” विद्युम्ना ने अपना सिर झुकाते हुए कहा- “अब शर्त के मुताबिक तुम त्रिशाल और कलिका को लेकर यहां से जा सकते हो। .... पर ये याद रखना कि मैं कभी नहीं भूलूंगी कि तुम्हारे कारण ही मेरा त्रिसर्पमुखी दंड मेरे पास से गया है। ... अब तुम मेरे पुत्र को छोड़कर मुझे दे दो, उसे लेकर मैं यहां से चली जाऊंगी।”

यह कहकर विद्युम्ना ने घूरकर व्योम की ओर देखा। व्योम अभी भी कालबाहु की ओर अपना पंचशूल ताने खड़ा हुआ था।

परंतु विद्युम्ना के शब्द सुन व्योम मुस्कुराते हुए बोला- “आप अपने पति के साथ यहां से जाना चाहो, तो जा सकती हो विद्युम्ना, परंतु मैं कालबाहु को आपके सुपुर्द नहीं कर सकता, इस कालबाहु पर त्रिकाली के माता-पिता का अधिकार है। ... वह अब इस कालबाहु को ऋषि विश्वाकु को सुपुर्द कर अपने वचन का निर्वाह करेंगे।”

व्योम के शब्द सुन त्रिशाल और कलिका की आँखें चमक उठीं। त्रिकाली की आँखों में भी व्योम के लिये सम्मान के भाव उभरे।

उधर व्योम के शब्द सुन विद्युम्ना ने कातर नजरों से कालबाहु की ओर देखा और बाणकेतु का हाथ पकड़ वहां से गायब हो गई।

व्योम ने विद्युम्ना को गायब होते देख, कालबाहु को त्रिशाल के हवाले कर दिया।

युद्ध अब समाप्त हो चुका था, इसलिये त्रिशाल और कलिका ने त्रिकाली और व्योम को गले से लगा लिया।

कुछ देर बाद सभी राक्षसताल से निकलकर ऊपर हिमालय पर पहुंच गये।

राक्षसताल के बाहर जेम्स शलाका की प्रतीक्षा कर रहा था। शलाका सहित सभी को राक्षसताल से बाहर आता देख जेम्स के चेहरे पर मुस्कान बिखर गई।

राक्षसताल से बाहर आते ही वारुणि ने माया से प्राप्त देवयुद्ध की जानकारी सभी को दे दी।

“इसका मतलब देवयुद्ध अब निकट है।” त्रिशाल ने कहा- “अतः देवयुद्ध शुरु होने से पहले हमें अपने अधूरे कार्यों को पूर्ण करना होगा। ..... और इस कार्य के तहत हमें सबसे पहले कालबाहु को लेकर ऋषि विश्वाकु के पास जाना होगा त्रिकाली, पर हम यह कार्य समाप्त करते ही तुम लोगों से आकर अवश्य मिलेंगे।”

त्रिशाल की बात सुन त्रिकाली की आँखों में मोती टिमटिमाने लगे, परंतु उसे पता था कि कालबाहु को ऋषि विश्वाकु को सौंपना भी आवश्यक है, इसलिये उसने कुछ कहा नहीं? बस आगे बढ़कर कलिका के गले से लग गई।

कलिका ने त्रिकाली के सिर पर हाथ फेरा और फिर उससे अलग होकर अपना हाथ हवा में हिलाया। कलिका के ऐसा करते ही हवा में प्रकाशपुंज से बना हुआ एक चाँदी के समान रथ उत्पन्न हुआ, जिसे नीले किरणों से बने मोर खींच रहे थे।

कलिका, त्रिशाल और कालबाहु को लेकर उस रथ पर सवार हो गई और सबके देखते ही देखते हवा में उड़कर गायब हो गई।

त्रिशाल और कलिका के जाने के बाद शलाका ने भी आकृति, आर्यन और सुयश की जानकारी व्योम को दे दी।

व्योम, सुयश के रहस्योद्घाटन से आश्चर्यचकित हो गया। साथ ही साथ अब उसे आकृति की भी चिंता सताने लगी।

“मैं तो अपने आपको एक साधारण मनुष्य समझ रहा था, पर मेरी कहानी तो किसी परीकथा से भी ज्यादा रहस्यमई निकली? लेकिन जो भी हो मुझे ये विश्वास है कि एक दिन अवश्य मेरे साथ मेरा पूरा परिवार होगा। .... इसी के साथ मैं आपसे भी अपनी माता की हुई गलती के लिये क्षमा चाहता हूं और आपसे विनम्र निवेदन करता हूं कि आप भी हो सके तो मेरी माता को क्षमा कर देना।” इतना कहकर व्योम ने शलाका के सन्मुख अपने हाथ जोड़ दिये- “वैसे क्या मैं जान सकता हूं कि मेरी माता आकृति इस समय कहां पर हैं?”

“तुम्हारी माता, इस समय अराका द्वीप पर स्थित सीनोर राज्य में हैं व्योम।” शलाका के बोलने के पहले ही वारुणि ने बोल दिया- “और मैं तुम दोनों को वहीं ले जाने के लिये आई हूं।”

वारुणि की बात सुन व्योम के चेहरे पर प्रसन्नता झलकने लगी।

“मैं भी तुम्हें वचन देती हूं पुत्र कि मैं आकृति से कभी अनुचित शब्दों का प्रयोग नहीं करुंगी और जितनी जल्दी हो सके, मैं भी अराका पर आकर तुम्हारी माता से अवश्य मिलूंगी।” शलाका ने व्योम के सिर पर हाथ रखते हुए कहा- “वैसे अभी मुझे भी कुछ और प्रश्नों के उत्तर प्राप्त करने बाकी हैं। इसलिये मैं भी अभी जेम्स के साथ किसी दूसरे स्थान के लिये निकल रही हूं?”

यह कहकर शलाका ने वारुणि की ओर मुड़ते हुए कहा- "“इस समय मैं तुम्हारे साथ नहीं चल सकती वारुणि। अभी तुम व्योम और त्रिकाली को लेकर यहां से जाओ। परंतु मैं तुम्हें विश्वास दिलाती हूं कि अपना कार्य समाप्त करने के बाद, मैं आकर तुम लोगों से अवश्य मिलूंगी। अभी के लिये मुझे भी यहां से जाने की आज्ञा दो वारुणि।”

शलाका के शब्द सुन वारुणि ने अपना सिर हिला दिया।

इसी के साथ शलाका ने एक बार त्रिकाली के सिर पर भी हाथ रखा और जेम्स को लेकर वहां पर अदृश्य खड़े आर्केडिया की ओर बढ़ गई।

शलाका को जाते देख त्रिकाली ने वारुणि से कहा- “सीनोर तो हमारा दुश्मन राज्य है, मैं व्योम के साथ वहां पर नहीं जा सकती। नहीं तो मेरा भाई युगाका और बाबा कलाट बुरा मान जायेंगे।”

“ऐसा कुछ नहीं होगा त्रिकाली और वैसे भी मैं तुम्हें ये बता दूं कि तुम्हारे छोटे भाई वेगा ने लुफासा की बहन वीनस से शादी कर ली है, जिसकी अनुमति तुम्हारे बाबा और भाई दे चुके हैं, इस कारण से वर्षों की दुश्मनी वैसे भी समाप्त होने वाली है।” वारुणि ने कहा।

वारुणि के शब्द को सुन त्रिकाली खुश हो गई- “तो क्या वेगा भी अराका पर आ चुका है?”

“हां त्रिकाली, पर अब यहां खड़े होकर ज्यादा प्रश्न मत करो और अराका पर चलने की तैयारी करो। मैं तुम्हारे बाकी प्रश्नों का उत्तर वहीं पर दूंगी।” वारुणी ने कहा।

इसी के साथ वारुणि, व्योम और त्रिकाली को लेकर अराका द्वीप की ओर बढ़ गई, जहां पर एक माँ अपने पुत्र से, 5000 वर्ष से मिलने का इंतजार कर रही थी।

◆ ◆ ◆

चैपटर-12

हिम रश्मि

तिलिस्मा 6.63

शैफाली को अपना शरीर हवा में बिखरता हुआ सा महसूस हुआ। जब शैफाली ने अपनी आँखें खोलीं, तो उसने अपने आपको एक विचित्र से स्थान पर पाया।

यह एक बहुत खूबसूरत सी घाटी थी, जिसमें चारो ओर रंग-बिरंगे फूल लगे थे। चारो ओर पहाड़ों से घिरा यह क्षेत्र, प्रकृति का एक सुंदर दृश्य प्रस्तुत कर रहा था।

आसमान में सूर्य अपनी किरणें बिखेरता हुआ चमचमा रहा था। उस सुंदर सी घाटी के बीच में एक 500 फिट से भी बड़ा काँच का पारदर्शी ग्लोब रखा था।

उस काँच के ग्लोब के पास एक 20 फुट ऊंचा विशाल मटका रखा था, जिसके पास एक सफेद रंग का बड़ा सा हाथी खड़ा था। उस हाथी की 5 सूंड थीं।

वह हाथी अपनी पांचों सूंड से मटके में रखे जल को खींचकर जाने कैसे बड़े-बड़े बुलबुले बना रहा था? हाथी के द्वारा बनाए गये बुलबुले हवा में उड़ते हुए काँच के ग्लोब के पास जाकर उससे टकरा रहे थे।

बुलबुले के ग्लोब से टकराते ही बुलबुला फूट जा रहा था, जिस स्थान पर बुलबुला फूट रहा था, ग्लोब के अंदर उस स्थान से, कुछ बर्फ के फाहे बनकर ग्लोब के अंदर फैल रहे थे।

ग्लोब के अंदर बर्फ के फाहे बनने की वजह से ग्लोब के अंदर का वातावरण बिल्कुल ठंडा प्रतीत हो रहा था।

बड़ा ही विचित्र दृश्य था, ग्लोब के बाहर सूर्य अपनी गर्मी बिखेर रहा था, तो ग्लोब के अंदर बर्फ के फाहे पूरे वातावरण को जमा रहे थे।

ग्लोब के बीचोबीच में एक छोटी सी झील दिखाई दे रही थी, जिसके मध्य सफेद रंग के पत्थरों से निर्मित एक खूबसूरत राजकुमारी की प्रतिमा लगी थी। राजकुमारी के हाथ नृत्य की मुद्रा में थे और वह मूर्ति धीरे-धीरे गोल-गोल नाच रही थी।

ठंड अधिक होने की वजह से झील का पानी भी बिल्कुल सफेद नजर आ रहा था। श्वेत जल में बहुत से गुलाबी रंग के कमल खिले हुए थे।

शैफाली ने पहले जी भरकर, प्रकृति के इस सुंदर दृश्य को देखा और फिर उस काँच के ग्लोब की ओर चल दी।

शैफाली ने ग्लोब को अपने हाथों से ठोक कर देखा, शैफाली को ग्लोब काफी मजबूत दिखाई दिया।

“इस ग्लोब के अंदर झील में खड़ी मूर्ति ही राजकुमारी रश्मि लग रही है, पर इस मूर्ति में प्रवेश करने का द्वार कहीं दिखाई नहीं दे रहा? मुझे एक बार इस ग्लोब के चारो ओर घूमकर देख लेना चाहिये।”

यह सोचकर शैफाली ग्लोब के चारो ओर घूमकर उसमें प्रवेश करने का द्वार तलाशने लगी, पर ग्लोब का पूरा चक्कर लगा लेने के बाद भी शैफाली को ग्लोब में प्रवेश करने का द्वार कहीं नजर नहीं आया?

कुछ सोचने के बाद शैफाली अब उस हाथी के पास आकर खड़ी हो गई और ध्यान से उस हाथी की गतिविधियों को देखने लगी, पर काफी देर बाद भी शैफाली को समझ नहीं आया कि वह हाथी, वो बुलबुले बना कैसे रहा है?

अब शैफाली ने उस मटके पर भी चढ़कर देखा, पर मटके के अंदर भी जल के सिवा कुछ विशेष नहीं था।

अब शैफाली बुलबुले को देखते हुए ग्लोब के पास आ गई और ध्यान से बुलबुले को फटते हुए देखने लगी।

कुछ देर तक सभी चीजों को देखने के बाद भी शैफाली को ग्लोब में प्रवेश करने का द्वार नहीं मिला।

अब शैफाली चलती हुई वापस मटके के पास आई और मटके पर चढ़कर उसके अंदर प्रवेश कर गई। शैफाली को लगा था कि शायद मटके

के अंदर कुछ रहस्य छिपा हो?

तभी मटके के जल को देख अचानक शैफाली के दिमाग में एक अनोखा विचार आया। अब वह मटके में हाथी के सूंड डालने का इंतजार करने लगी।

कुछ ही देर में उसका इंतजार समाप्त हुआ, हाथी ने मटके में अपनी पांचों सूंड डाली और जोर से साँस को अंदर की ओर खींचा।

हाथी के जोर से साँस खींचने के कारण, मटके के जल के साथ शैफाली भी हाथी की सूंड के अंदर पहुंच गई।

अब हाथी ने अपनी सूंड से जोर से हवा को बाहर की ओर निकाला। हाथी के ऐसा करते ही पांच बड़े बुलबुले बनने शुरु हो गये, पर इस बार एक बुलबुले में शैफाली भी थी।

पांचो बुलबुले हवा में उड़ते हुए काँच के ग्लोब की ओर चल दिये।

शैफाली की नजरें लगातार काँच के ग्लोब की ओर ही थीं। तभी अन्य बुलबुलों के साथ शैफाली का बुलबुला भी काँच के ग्लोब से जा टकराया।

जैसे ही शैफाली का बुलबुला फटा, कुछ पानी की छींटों के साथ शैफाली भी काँच के ग्लोब के अंदर पहुंच गई।

शैफाली का सोचना बिल्कुल सही था, मटके के जल में ही ग्लोब के अंदर जाने की शक्ति छिपी थी।

अब शैफाली की नजर झील में खड़ी उस मूर्ति की ओर थी।

तभी शैफाली को अपना शरीर जमता हुआ सा महसूस हुआ।

“अरे यह मेरा शरीर कैसे जमने लगा? ग्लोब के अंदर का तापमान इतना भी कम नहीं है, जो शरीर को जमा दे। …फिर …. कहीं ऐसा तो नहीं कि मटके का पानी मुझे धीरे-धीरे बर्फ में बदल रहा है? …. जरुर ऐसा ही होगा क्योंकि वह मटके का जल ही ग्लोब में बनने वाली बर्फ का आधार है …. फिर … अब मैं क्या करुं? … मुझे जल्द से जल्द अपने शरीर पर लगे मटके के जल को हटाना होगा। … पर कैसे?”

तभी शैफाली की नजर ग्लोब के अंदर बनी झील की ओर गई। अब शैफाली ने बिना देर किये उस झील के अंदर छलांग लगा दी।

‘छपाक’ की एक आवाज के साथ शैफाली का शरीर झील के पानी को काटता हुआ नीचे की ओर गया।

झील में चारो ओर कमल की डंडियां ही दिखाई दे रहीं थीं, जो कि झील की तली की ओर जा रही थीं।

झील का पानी वहां के वातावरण की बनिस्पत कम ठंडा था। शैफाली को झील के पानी में काफी राहत महसूस हुई।

शैफाली ने पानी के अंदर ही अंदर अपने शरीर को अपने हाथों से रगड़ कर साफ किया और वापस झील की सतह की ओर चल दी।

पर जैसे ही शैफाली झील की सतह के पास पहुंचीए उसका सिर बहुत तेज आवाज के साथ किसी अदृश्य दीवार से जा टकराया।

“यह क्या? मैं इस झील की सतह पर क्यों नहीं आ पा रही?” शैफाली ने पानी के अंदर से ही बाहर की ओर देखते हुए कहा- “लगता है यह भी एक प्रकार का मायाजाल है? .... अब मुझे इस झील से निकलने का भी कोई उपाय सोचना होगा?”

अब शैफाली की नजर झील के अंदर चारो ओर घूमने लगी, पर पानी में उसे कमल की डंडियों के सिवा कुछ भी नजर नहीं आया।

शैफाली अब कमल की डंडियों का पीछा करते हुए झील की तली की ओर चल दी।

कुछ नीचे जाते ही शैफाली को झील की तली नजर आने लगी। झील की तली में शैफाली को मेडूसा की विशाल मूर्ति का सिर रखा दिखाई दिया।

मेडूसा की मूर्ति का शरीर नहीं था और उसके बालों से सर्प के स्थान पर, वही कमल की डंडियां निकली हुई थीं।

मेडूसा की मूर्ति देखकर शैफाली कुछ देर के लिये भावुक दिखाई दी, परंतु तुरंत ही उसने अपने मन को स्थिर करते हुए नियंत्रित किया।

“यह कैश्वर भी ना ..... जाने क्या-क्या सोचता रहता है?”

अब शैफाली मेडूसा के सिर को ध्यान से देखने लगी। दूसरा कोई होता तो शायद वह मेडूसा की मूर्ति की भी आँखों में नहीं झांकता, पर शैफाली की आँखों पर तो असली मेडूसा का भी कोई प्रभाव नहीं पड़ना था।

शैफाली लगातार मेडूसा के सिर से निकली कमल की डंडियों को ध्यान से देख रही थी। कुछ देर तक ऐसे ही देखते रहने के बाद शैफाली ने कमल की डंडियों को मेडूसा के सिर से तोड़ना शुरु कर दिया।

कमल की हर डंडी टूटते ही झील की तली से उठकर झील की सतह की ओर जा रही थी।

कुछ ही देर में शैफाली ने कमल की सभी डंडियों को तोड़कर फेंक दिया। सभी डंडियों के टूटते ही 20 फुट व्यास का मेडूसा का वह सिर भी अचानक से हल्का होकर झील की सतह की ओर चल दिया।

मेडूसा का सिर झील की सतह की ओर जाते हुए देखकर, शैफाली भी उस सिर के पीछे-पीछे चल दी।

मेंडूसा के सिर के ऊपर जाने की गति बहुत तेज थी। झील की सतह के पास पहुंचकर मेडूसा का सिर तेजी से झील की अदृश्य सतह से टकराया और उसे तोड़ता हुआ पानी के ऊपर आ गया।

अब शैफाली ने सतह के पास पहुंचकर सतह को हाथ लगाया, परंतु अब झील की सतह पर जाने में शैफाली को किसी भी प्रकार के अवरोध का सामना नहीं करना पड़ा। शायद मेडूसा के सिर ने उस अदृश्य दीवार को पूरी तरह से तोड़ दिया था।

यह देख शैफाली ने राहत की साँस ली और तैरती हुई राजकुमारी रश्मि की मूर्ति की ओर चल दी।

राजकुमारी रश्मि की मूर्ति झील की सतह पर तैर रहे एक छोटे से हिमखण्ड पर थी। यह देख शैफाली उस हिमखण्ड पर चढ़ गई और उस मूर्ति को अलग-अलग जगह से छूकर देखने लगी।

काफी देर तक देखते रहने के बाद भी शैफाली को राजकुमारी रश्मि को जिंदा करने का कोई उपाय समझ नहीं आया।

तभी शैफाली की नजर झील की सतह पर तैर रही मेडूसा की मूर्ति के सिर की ओर गई। इस समय मेडूसा का चेहरा रश्मि से अलग दिशा में था।

तभी शैफाली के दिमाग को एक झटका लगा और वह वापस झील के पानी में कूदकर मेडूसा की मूर्ति की ओर बढ़ गई।

मेडूसा के सिर के पास पहुंचकर शैफाली ने मेडूसा का चेहरा राजकुमारी रश्मि की मूर्ति की ओर कर दिया।

जैसे ही मेडूसा की आँखें राजकुमारी रश्मि की मूर्ति की आँखों की ओर हुईं, अचानक से राजकुमारी रश्मि की मूर्ति सजीव हो गई।

“मैं समझ गई। यहां पर कैश्वर ने सब उल्टा कर रखा था। मेडूसा के सिर पर सर्प की जगह कमल को खिलाने का मतलब की मेडूसा की शक्तियां भी यहां पर उल्टा काम कर रहीं हैं। यानि की उसकी आँखों में देखने वाली पत्थर की कोई भी मूर्ति सजीव हो जायेगी।”

तभी राजकुमारी रश्मि ने भी झील के पानी में छलांग लगाई और तैरती हुई शैफाली के पास जा पहुंची।

बाकी दोनों राजकुमारियों की तरह रश्मि ने भी रटा-रटाया शब्द शैफाली को बोल धन्यवाद दिया। इसके बाद दोनों ही तैरकर किनारे की ओर आ गईं।

“क्या तुम्हें यहां से निकलने का द्वार पता है?” शैफाली ने झील के पानी से बाहर निकलते हुए रश्मि से पूछा।

शैफाली की बात सुन रश्मि ने काँच के ग्लोब से बाहर की ओर इशारा किया। रश्मि का इशारा देख शैफाली ने उस दिशा में देखा, जिधर रश्मि इशारा कर रही थी।

ग्लोब के बाहर रखा मटका इस समय अपने स्थान से गायब था और उसकी जगह पर ही हवा में उत्पन्न एक द्वार दिखाई दे रहा था।

“यह तो मुसीबत हो गई। इस स्थान से निकलने का द्वार तो काँच के ग्लोब से बाहर है.... परंतु अब मैं राजकुमारी के साथ इस स्थान से बाहर कैसे निकलूंगी?”

शैफाली की नजर एक बार फिर से अपने आसपास घूमने लगी। तभी शैफाली की निगाह झील के पानी में तैर रही मेडूसा के सिर की ओर गई, जो अभी भी झील की सतह पर तैर रहा था।

अब शैफाली ने पलटकर ग्लोब के बाहर खड़े पांच सूंड वाले हाथी की ओर देखा। हाथी की मूर्ति ग्लोब की ओर ही देख रही थी।

यह देख शैफाली ने मेडूसा के विशाल सिर को झील के पानी से बाहर निकाला और फिर उसे उठाकर बाहर खड़े हाथी के चेहरे की ओर कर दिया।

मेडूसा की आँख में देखते ही बाहर खड़ा हाथी जीवित हो गया और तेजी से काँच के ग्लोब की ओर भागा। ग्लोब के पास आते ही हाथी ने एक जोरदार टक्कर मारकर काँच के ग्लोब को तोड़ दिया।

अब शैफाली और राजकुमारी रश्मि दोनों ही बाहर आ गईं, पर जैसे ही शैफाली हवा में तैर रहे उस द्वार की ओर बढ़ी, उस स्थान पर कुछ चीजें स्वतः ही प्रकट होने लगीं।

यह चीजें कुछ और नहीं बल्कि उस कमरे में रखे वही चारो सिंहासन थे, जिस पर राजा कर्णम और उसकी 2 पुत्रियां पहले से ही बैठीं थीं।

राजकुमारी रश्मि का सिंहासन अभी भी खाली था। यह देखकर राजकुमारी रश्मि चलती हुई अपने सिंहासन के पास पहुंची और उस पर जाकर बैठ गई।

सिंहासन पर बैठते ही राजकुमारी रश्मि भी पत्थर की मूर्ति में परिवर्तित हो गई।

इसी के साथ तीनों राजकुमारियों के सामने लगी तख्तियों पर लिखे उनके नामों के पहले अक्षर तेजी से चमकने लगे और इससे पहले कि शैफाली कुछ समझ पाती, वह तीनों अक्षर तख्तियों से निकलकर हवा में उड़ने लगे।

अवनी का ‘अ’, सुगंधा का ‘सु’ और रश्मि का ‘र’ मिलकर हवा में ‘असुर’ शब्द का निर्माण करने लगे।

यह देखते ही शैफाली समझ गई कि अभी इस द्वार की मुसीबतें समाप्त नहीं हुई हैं। अब वह ध्यान से हवा में नाच रहे उन तीनों अक्षरों को देख रही थी।

तभी वह तीनों अक्षर वहां घूम रहे उस पांच सूंड वाले सफेद हाथी के माथे से जाकर चिपक गए। इसी के साथ आश्चर्यजनक रुप से उस हाथी के अंदर बदलाव होने लगे।

हाथी पहले अपने 2 पैरों पर खड़ा हो गया। अब हाथी का आकार भी बढ़ना शुरु हो गया। देखते ही देखते हाथी का आकार 100 फुट का हो गया।

अब हाथी की आकृति एक राक्षसनुमा हो गई। उसके अगले पैर भी अब किसी राक्षस के पंजे के समान दिखने लगे। हाथी के सिर पर 2 सींघें भी निकल आईं और उसकी पांचों सूंड, 5 खतरनाक सर्प में परिवर्तित हो गई।

“हे भगवान! अब इस भयानक असुर से बिना किसी शक्ति के कैसे लड़ूं? यह तो मुझे पल भर में मसल देगा। ... पहले पता होता कि यह हाथी कोई असुर है, तो मैं इसे मेडूसा के सिर से जीवित ही नहीं करती। .... मेडूसा का सिर?”

अब शैफाली की नजर मेडूसा के सिर की ओर गई, जो कि अभी भी उससे कुछ दूरी पर पड़ा था?

“अगर किसी प्रकार मेडूसा के सिर को उसकी वास्तविक शक्तियां प्राप्त हो जायें, तो मैं इस भयानक असुर को फिर से पत्थर में परिवर्तित कर सकती हूं .... पर कैसे? .... मेडूसा के सिर को उसकी शक्तियां यहां पर भला कैसे प्राप्त हो सकती हैं? .... उसके लिये तो उसके सिर पर सर्प का होना आवश्यक है ... पर यहां पर सर्प??? अरे! इस असुर हाथी की सूंड भी तो सर्प में परिवर्तित हो गई है, कहीं इसी को काटकर तो मेडूसा के सिर पर तो नहीं लगाना?”

अभी शैफाली अपने ख्यालों में गुम थी कि तभी राजा कर्णम सहित उनकी तीनों पुत्रियां अपने सिंहासन सहित गायब हो गईं और इसी के साथ उस हाथी ने एक भयंकर हुंकार भरी।

“अब तुम्हें गजासुर से कोई नहीं बचा सकता नन्हीं लड़की।” यह कहकर गजासुर ने शैफाली को पकड़ने के लिये अपना विशाल हाथ बढ़ाया, पर शैफाली ने एक दिशा में कूदकर स्वयं को बचाया।

“अगर मेरा सोचना ठीक है तो मुझे कैसे भी इस गजासुर की सूंड को काटकर मेडूसा के सिर पर लगाना होगा। .... पर बिना किसी धारदार हथियार के मैं इस गजासुर की सर्प रुपी सूंड को कैसे काट पाऊंगी?”

तभी शैफाली की सोच को गजासुर ने विराम दिया। उसने फिर अपना हाथ शैफाली की ओर बढ़ाया, शैफाली की नजर पूरी की पूरी गजासुर के हाथ पर थी, तभी गजासुर ने चालाकी दिखाते हुए अपने पैर से शैफाली पर प्रहार कर दिया।

गजासुर के पैर का प्रहार अत्यंत शक्तिशाली था। शैफाली इस प्रहार से उछलती हुई दूर जा गिरी।

परंतु शैफाली बिना देर किये उठकर खड़ी हो गई। गजासुर की टक्कर से शैफाली के होंठ एक जगह से कट गया, जिससे अब थोड़ा सा खून रिसने लगा था।

शैफाली ने अपने कटे होंठों से बह रहे खून को अपने हाथों से पोंछा। अब उसकी आँखें अंगारे के समान दहकने लगी थी।

इस समय शैफाली को देखकर ऐसा लग रहा था कि मानो शैफाली पूरी की पूरी मैग्ना के रुप में परिवर्तित हो गई हो।

शैफाली ने मैग्ना को यादकर अपने शरीर की अंदर की शक्ति को जगाया और अपने सिर को हल्का सा झटका दे, खूनी नजरों से गजासुर को घूरने लगी।

शैफाली को उठकर खड़े होते देख गजासुर झूमता हुआ शैफाली की ओर बढ़ा, पर इस बार शैफाली एक कदम भी पीछे नहीं हटी। वह लगातार गजासुर को पास आते हुए देख रही थी।

शैफाली के पास पहुंचकर एक बार फिर गजासुर ने अपने पैरों का प्रहार शैफाली पर किया, पर इस बार शैफाली ने गजासुर के पैर के प्रहार को अपने हाथों से रोका और इससे पहले कि गजासुर को कुछ समझ आता, शैफाली ने गजासुर का पैर अपनी ओर खींचकर उसे जमीन पर गिरा दिया।

अब शैफाली उछलकर गजासुर के ऊपर चढ़ गई और उसने गजासुर की एक सर्पनुमा सूंड को पकड़ लिया और इससे पहले कि गजासुर अपने बचाव में कुछ कर पाता, शैफाली ने बिना किसी हथियार के ही खींचकर गजासुर की एक सूंड को तोड़ दिया।

एक सूंड के टूटते ही वहां से खून की धार बह निकली।

अब शैफाली भागकर मेडूसा के सिर के पास पहुंच गई और उसने हाथी की कटी सूंड को मेडूसा के सिर से छुआया। वह सूंड तुरंत ही मेडूसा के सिर में फिट हो गई, पर मेडूसा अभी भी सक्रिय नहीं हुई।

जिसे देखकर शैफाली समझ गई कि गजासुर की सभी सूंड को मेडूसा के सिर से जोड़ना होगा।

उधर गजासुर अब अपने स्थान से उठने की कोशिश कर रहा था। इसलिये शैफाली दौड़कर पुनः गजासुर के सीने पर सवार हो गई।

गजासुर ने अपने दोनों हाथों से शैफाली को पकड़ने की कोशिश की, पर शैफाली किसी प्रकार से बचती हुई, एक बार फिर गजासुर के चेहरे तक पहुंच गई।

शैफाली ने अब गजासुर की दूसरी सूंड को तोड़ लिया, पर मेडूसा की ओर वापस जाते हुए, कुछ सेकेण्ड के लिये शैफाली का ध्यान गजासुर के हाथों की ओर से हट गया। इसी मौके का फायदा उठाते हुए गजासुर ने शैफाली को पीछे से पकड़ लिया और उसे पूरी ताकत से आसमान की ओर उछाल दिया।

एक सेकेण्ड में ही शैफाली आसमान में थी। शैफाली ने अभी भी अपने हाथों से गजासुर की दूसरी सूंड को नहीं छोड़ा था। एक निश्चित ऊंचाई तक पहुंचने के बाद शैफाली का शरीर तेजी से जमीन की ओर आने लगा।

शैफाली के पास अपने बचाव का कोई उपाय नहीं दिख रहा था, मगर इससे पहले कि शैफाली का शरीर जमीन से टकरा पाता, अचानक शैफाली को हवा में एक झटका लगा और उसे महसूस हुआ कि हवा में ही किसी ने उसका हाथ थाम लिया है।

शैफाली की नजर अपने हाथ थामने वाले की ओर गई, परंतु वह उस व्यक्ति को पहचान नहीं पाई। लेकिन जैसे ही शैफाली की नजर हवा में उड़ते ब्रूनो पर पड़ी, वह खुशी से चीख उठी।

तभी शैफाली को ब्रूनो पर बैठे हुए उस व्यक्ति का स्पर्श जाना पहचाना सा महसूस हुआ। अब शैफाली की आँखें दुगनी खुशी से चमक उठीं, ब्रूनो पर बैठा वह जवान व्यक्ति और कोई नहीं बल्कि अलबर्ट था।

“ग्रैण्ड अंकल आप! आप इतने जवान कैसे दिखने लगे?” शैफाली ने हवा में लहराते हुए पूछा।

“अभी बताने का समय नहीं है, पहले इस राक्षस से तो निपट लें, फिर आराम से सारी बातें बताता हूं।” यह कहकर अलबर्ट ने शैफाली को ब्रूनो के ऊपर खींच लिया और उस गजासुर की पहुंच से थोड़ा दूर चला गया।

“ग्रैण्ड अंकल, इस राक्षस का नाम गजासुर है, हमें इसे मारने के लिये, पहले इसकी सारी सर्प के समान सूंड को तोड़कर, वहां जमीन पर पड़े मेडूसा के सिर में फिट करना होगा।” शैफाली ने अलबर्ट को मेडूसा के सिर की ओर इशारा करते हुए कहा- “पर परेशानी यह है कि हमारे पास कोई धारदार हथियार ना होने की वजह से यह काम थोड़ा सा मुश्किल प्रतीत हो रहा है। पर अब मुझे फिक्र करने की कोई जरुरत नहीं है क्योंकि अब आप लोग आ गये हैं।”

यह कहकर शैफाली ने ब्रूनो को मेडूसा के सिर की ओर चलने का इशारा किया।

ब्रूनो उड़ता हुआ मेडूसा के सिर के पास जा उतरा। ब्रूनो को मेडूसा के सिर के पास उतरते देख गजासुर उसी ओर को चल दिया।

उधर तब तक शैफाली ने अपने हाथ में पकड़ी दूसरी सूंड को भी मेडूसा के सिर में फिट कर दिया।

तभी गजासुर को उसी ओर आता देख ब्रूनो, अलबर्ट व शैफाली को वहीं छोड़ तेजी से उड़ता हुआ गजासुर की ओर बढ़ा।

गजासुर ने उड़ते हुए ब्रूनो को हाथ से पकड़ने की कोशिश की, पर हवा में लहराता हुआ ब्रूनो कुछ ही देर में गजासुर के चेहरे के पास पहुंच गया।

अब ब्रूनो ने गजासुर की तीसरी सूंड को अपने नुकीले दाँतों से पकड़ा और अपनी ओर खींचकर तोड़ दिया।

कुछ ही देर में ब्रूनो, शैफाली के पास था। ब्रूनो ने गजासुर की उस सूंड को शैफाली को पकड़ाया और फिर से गजासुर की ओर चल दिया।

गजासुर हवा में उड़ रहे ब्रूनो को पकड़ने की बार-बार कोशिश कर रहा था, पर ब्रूनो की फूर्ति के कारण गजासुर के हर प्रयास विफल नजर आने लगे।

कुछ ही देर की मेहनत के बाद ब्रूनो ने गजासुर की सभी सूंड को एक-एक कर शैफाली के हवाले कर दिया।

“ग्रैण्ड अंकल, अब मैं आखिरी सर्प रुपी सूंड को लगाकर मेडूसा को जिंदा करने जा रही हूं। इसलिये आप कुछ देर के लिये यहां से दूर हटकर अपनी आँखें बंद कर लीजिये और किसी भी हाल में मेडूसा की आँखों में मत देखना।”

शैफाली के शब्द सुन अलबर्ट तुरंत वहां से कुछ दूर हट गया और शैफाली के कहे अनुसार अपनी आँखों को बंद कर लिया।

अब शैफाली ने गजासुर की आखिरी सूंड को भी मेडूसा के सिर में फिट कर दिया। जैसे ही आखिरी सूंड मेडूसा के सिर में फिट हुई, अचानक से मेडूसा का सिर जीवित दिखाई देने लगा।

अब शैफाली ने सीटी बजाकर ब्रूनो को अपने पास बुलाया और उस पर मेडूसा का सिर लेकर बैठ गई। अब ब्रूनो उड़ता हुआ गजासुर के सिर के पास जा पहुंचा।

जैसे ही गजासुर ने मेडूसा की आँखों में देखा, गजासुर पत्थर का हो गया, पर यह क्या? .... पत्थर का बनने के बाद भी गजासुर का आक्रमण

जारी था।

तभी शैफाली के हाथ में पकड़ा मेडूसा का सिर अपने आप ही हवा में विलीन हो गया।

“यह क्या? यह गजासुर तो पत्थर का बनने के बाद भी रुक नहीं रहा। .... अब .... अब इसे कैसे खत्म किया जाये?”

तभी शैफाली की निगाह पत्थर के गजासुर के सिर पर लगी सींघों की ओर गई, पत्थर का बनने के बाद गजासुर की सींघें तेजी से चमकने लगीं थीं।

यह देख शैफाली ने ब्रूनो को गजासुर के सिर की ओर चलने का इशारा किया। ब्रूनो, शैफाली का इशारा पाकर गजासुर के सिर के पास पहुंच गया।

तभी गजासुर ने इस बार अविश्वसनीय फूर्ति दिखाते हुए अपने हाथों से ब्रूनो पर वार कर दिया। गजासुर के भीषण प्रहार से ब्रूनो को तेज झटका लगा और शैफाली ब्रूनो के शरीर से नीचे गिरने लगी।

पर नीचे गिरती हुई शैफाली ने अपने शरीर को हवा में लहराया और गजासुर के कंधे पर कूद गई।

इससे पहले कि गजासुर फिर से कुछ कर पाता, इस बार शैफाली ने हवा में छलांग लगाई और गजासुर की टूटी हुई सूंड की सहायता से गजासुर के सिर तक आ गई।

सिर तक पहुंचते ही शैफाली ने गजासुर की दोनों सींघों को अपने हाथों से पकड़ लिया और उसे एक तेज झटके से जड़ से उखाड़ लिया।

सींघों के उखड़ते ही गजासुर जोर से चिंघाड़ा और वहीं लहराकर जमीन की ओर गिरने लगा। गजासुर का बैलेंस बिगड़ने से शैफाली भी नीचे की ओर गिरने लगी, तभी एक बार फिर से ब्रूनो ने हवा में ही शैफाली को लपक लिया।

यह दृश्य देखकर शैफाली को मैग्ना की पुरानी याद आ गई, जब ड्रैंगो, मैग्ना को हवा में लपक कर उसे अपनी पीठ पर बैठा लेता था।

अलबर्ट भी गजासुर को मरते देख खुश हो गया। ब्रूनो अब उड़ता हुआ अलबर्ट के पास आ पहुंचा।

शैफाली ब्रूनो से उतरकर अलबर्ट के पास जा पहुंची। अलबर्ट ने भी शैफाली को अपने बीते दिनों की सारी बातें बता दीं।

अब शैफाली व अलबर्ट, ब्रूनो सहित हवा में बने उस द्वार की ओर चल दिये, जो कि अभी गजासुर के मरने के बाद वहां पर बन गया था।

तीनों ही उस द्वार से होते हुए एक स्थान पर पहुंच गये, जहां पर पहले से ही ऐलेक्स, क्रिस्टी, सुयश, जेनिथ और तौफीक बैठे हुए थे।

सभी शैफाली को आता देख खुशी से भर उठे, पर उनमें से किसी ने भी अलबर्ट को नहीं पहचाना। यह देख शैफाली ने सभी को अलबर्ट की पूरी कहानी सुना दी। अलबर्ट की कहानी सुन सभी आश्चर्य से भर गये।

“प्रोफेसर, अब तो आप मुझसे भी जवान दिखाई देने लगे हैं। चलिये इस अराका द्वीप पर आने का आपको भी कोई तो फायदा हुआ।” सुयश ने अलबर्ट के हवा में लहराते घने बालों को देखते हुए कहा।

सुयश की बात सुन सभी के चेहरे पर मुस्कुराहट के भाव आ गये।

“तो चलो दोस्तों, एक बार फिर से कैश्वर को अपनी सम्मिलित शक्ति का चमत्कार दिखाते हैं।” इस बार क्रिस्टी ने जोर से कहा।

अब सबकी निगाहें सामने दिख रहे द्वार की ओर थीं, जिस पर लिखा था- “तिलिस्मा 7.1”

सभी एक-एक कर तिलिस्मा के नए द्वार में प्रवेश कर गये।

◆ ◆ ◆

गरुणाक्ष पर्वत

30.01.2002, बुधवार, गंधमादन पर्वत, हिमालय

प्रातःकाल का समय था। सूर्यदेव अपनी सुनहरी किरणों को लेकर नीले आकाश में अपनी अद्भुत छटा बिखेर रहे थे।

हिमालय पर अनेकों श्वेत हिमशिखर, सूर्य की सुनहरी किरणों में खोकर अपनी रात भर की थकान मिटा रहे थे।

कैलाश पर्वत भी सोने के समान चमचमा रहा था।

ऐसे पवित्र वातावरण में नीलाभ लगातार चलता हुआ कैलाश पर्वत की उत्तर दिशा की ओर जा रहा था। हिमालय पर इलावृत और भद्राश्व खंड के बीच स्थित है- 'गंधमादन पर्वत'। देवताओं का वह स्थान जहां वह साधना करते हैं।

वीरभद्र व भैरव से मिलने के पश्चात् अब नीलाभ का लक्ष्य महाबली हनुमान से आशीर्वाद प्राप्त करना था, परंतु यह लक्ष्य भी पिछले लक्ष्य के समान ही दुष्कर था क्योंकि हनुमान भी महादेव के अवतारों में से एक थे।

कहते हैं कि भगवान श्री राम के मृत्युलोक से जाने के बाद हनुमान ने अपने रहने का स्थान गंधमादन पर्वत को ही बना लिया था।

इस समय नीलाभ के चारो ओर स्वच्छ, स्निग्ध, श्वेत हिमखंड फैले हुए थे।

गंधमादन पर्वत अब अत्यंत निकट था। बहुत ही पवित्र वातावरण था। धीरे-धीरे नीलाभ को सुगंधित वनों से ढका हुआ गंधमादन पर्वत दिखाई देने लगा।

मंद-मंद वायु अपने अंदर अनेकों प्रकार की खुशबू ले वातावरण में बह रही थी।

वैसे तो नीलाभ अपनी दैवीय शक्तियों से पलभर में गंधमादन पहुंच सकता था, परंतु देवताओं से आशीर्वाद प्राप्त करने की इच्छा से वह अपनी दैवीय शक्तियों का प्रयोग नहीं कर सकता था।

शरीर पर गिनती के वस्त्र होने के बाद भी नीलाभ ठंड महसूस नहीं कर रहा था क्योंकि उसने अपना समस्त जीवन ही हिमालय पर व्यतीत किया था।

धीरे-धीरे रसीले फलों से लदे वृक्ष नजर आने लगे, परंतु नीलाभ ना तो आराम करने के लिये रुक रहा था और ना ही किसी फल का सेवन कर रहा था।

चलते-चलते नीलाभ एक छोटी सी घाटी में स्थित कमल सरोवर के पास पहुंच गया।

नीलाभ को पता था कि हनुमान उसी कमल सरोवर के निकट ही किसी गुफा में रहते हैं। नीलाभ ने चारो ओर अपनी दृष्टि दौड़ाई, परंतु उसे कहीं कोई जीवित जीव या प्राणि नहीं दिखाई दिया।

अंततः नीलाभ ने एक बार फिर अपने रक्त की एक बूंद को हवा में उछाला और नीलिमा को याद किया।

नीलाभ की रक्त की बूंद जिस स्थान पर गिरी, वहां पर नीले रंग की छोटी चिड़िया के रुप में नीलिमा प्रकट हो गई।

"मुझे महाबली हनुमान से मिलना है नीलिमा। मेरे पास समय बहुत कम है इसलिये शीघ्र से शीघ्र मुझे उनके पास ले चलो।" नीलाभ ने नीलिमा को देखते हुए कहा।

नीलाभ के इतना कहते ही नन्हीं नीलिमा अपने पंखों को तेजी से हिलाते हुए एक दिशा की ओर उड़ चली।

नीलाभ, नीलिमा के पीछे-पीछे जा रहा था। नीलिमा उस सुरम्य वन में लगातार आगे बढ़ रही थी।

तभी नीलाभ को मंद पवन की सरसराहट के मध्य एक हल्की सी आवाज सुनाई दी- "राऽऽऽऽऽऽम ...... राऽऽऽऽऽऽऽम।"

राम नाम की ध्वनि को सुनते ही नीलाभ के चेहरे पर मुस्कुराहट का भाव आ गया, वह समझ गया कि हनुमान कहीं निकट ही हैं।

उधर उड़ते-उड़ते नीलिमा एक विशाल वृक्ष के पास जाकर रुक गई और उस वृक्ष की ओर देखते हुए जोर-जोर से चीं-चीं करने लगी।

नीलिमा को ऐसा करते देख नीलाभ उस वृक्ष को ध्यान से देखने लगा। राम नाम की गूंज उसी वृक्ष से आ रही थी, पर उस वृक्ष के आसपास कोई नजर नहीं आ रहा था?

अब नीलाभ आगे बढ़कर उस वृक्ष को निहारने लगा, परंतु नीलाभ को उस वृक्ष पर किसी प्रकार की कोटर तक नहीं दिखाई दी?

तभी नीलाभ की नजर उस वृक्ष के पत्तों पर गई। उस वृक्ष के पत्ते का आकार पान की भांति था, परंतु उस वृक्ष का एक पत्ता 2 फुट का था।

नीलाभ ने कभी भी इतने बड़े पान के आकार के पत्ते को नहीं देखा था, इसलिये वह उत्सुकतावश उन पत्तों के और नजदीक आ गया।

नीलिमा अब शांत भाव से नीलाभ को देख रही थी। राम नाम की ध्वनि अभी भी वृक्ष से हो रही थी।

तभी नीलाभ को एक पत्ते पर कुछ लिखा हुआ दिखाई दिया। यह देख नीलाभ ने एक पत्ते को स्पर्श किया और उस पर लिखे शब्द को पढ़ने लगा।

उस पत्ते पर सिन्दूरी रंग से संस्कृत भाषा में 'राम' लिखा था। उस पत्ते पर राम लिखा देखकर नीलाभ ने अपनी नजर वृक्ष के बाकी पत्तों की ओर दौड़ाई।

परंतु बाकी के पत्तों पर नजर पड़ते ही नीलाभ आश्चर्य से भर उठा क्योंकि उस वृक्ष के सभी पत्तों पर राम लिखा था।

अब नीलाभ ने आश्चर्य से नीलिमा की ओर देखा। नीलिमा ने नीलाभ को अपनी ओर देखते पाकर उस वृक्ष के चारो ओर इस प्रकार से गोल-गोल घूमने लगी, मानों वह उस वृक्ष की परिक्रमा कर रही हो।

यह देख नीलाभ अपने हाथ जोड़कर उस वृक्ष के समक्ष बैठ गया- "हे पवनपुत्र आपकी लीला अपरंपार है। हम समझ गये कि इस वृक्ष के रुप में यह आप ही हैं और यह सभी पत्ते आपके रोम-रोम को प्रदर्शित कर रहे हैं। हमें पता है कि आप के रोम-रोम में आपके प्रभु श्री राम हैं। इसलिये हे बजरंग बली आप अपनी लीला का त्याग कर, हमें दर्शन देकर हमारी कामना पूर्ण करें।"

नीलाभ के इतना कहते ही उस वृक्ष के सभी पत्तों से एक सुनहरी ऊर्जा निकलने लगी और वह ऊर्जा एक गोले का रुप ले उस वृक्ष के चारो ओर नाचने लगी।

इसी के साथ उस वृक्ष ने महाबली हनुमान का रुप ले लिया।

"हे महाबली, नीलाभ का प्रणाम स्वीकार करें।" नीलाभ ने हनुमान को प्रणाम करते हुए कहा।

"आयुष्मान भव नीलाभ।" हनुमान ने अपने दाहिने हाथ को वरमुद्रा में करते हुए कहा- "बताइये आप मुझसे मिलने क्यों आए हैं? .... पर एक बात का ध्यान रखें कि यदि आप हनुका को मुझे वापस करने आए हैं, तो यह कदापि नहीं हो सकता।"

हनुमान के वचन सुन नीलाभ मुस्कुरा उठा- "नहीं महाबली, हनुका तो आपका दिया हुआ अद्धितीय आशीर्वाद है, मैं उसे भला क्यों वापस करुंगा? .... मैं तो यहां पर आपको प्रसन्न कर कुछ क्षणों के लिये महादेव की शक्तियों का वरण करने हेतु आशीर्वाद लेने आया हूं।"

नीलाभ की बात सुन एक पल के लिये हनुमान के चेहरे पर अचरज के भाव आए, पर अगले ही पल उनके चेहरे पर मुस्कुराहट के भाव आ गए।

"पर मुझे प्रसन्न करना इतना आसान नहीं है नीलाभ।" हनुमान ने मंद-मंद मुस्कुराते हुए कहा।

"आप बस अपनी इच्छा व्यक्त करें बजरंग बली, मैं आपकी इच्छा को पूर्ण करने की हर संभव कोशिश करुंगा।" नीलाभ ने विनय करते हुए कहा।

"ठीक है। तो यदि तुम मुझे प्रसन्न ही करना चाहते हो, तो एक बार मुझे मेरे प्रभु श्री राम के बाल रुप के दर्शन करवा दो।" अपने प्रभु श्री राम का नाम लेते ही हनुमान का चेहरा खुशी से जगमगा उठा।

"पर .... पर मैं भला प्रभु श्री राम के बाल रुप के दर्शन आपको कैसे करवा सकता हूं?" हनुमान के शब्दों को सुन नीलाभ के चेहरे पर आश्चर्य व असमंजस के भाव आ गए- "प्रभु श्री राम तो अब मृत्युलोक से जा चुके हैं, फिर उनके बाल रुप के दर्शन आपको किस प्रकार हो सकते हैं?"

“हो सकते हैं।” हनुमान ने नीलाभ को देखते हुए कहा- “यहां से 100 योजन की दूरी पर गरुणाक्ष पर्वत है। उस पर्वत पर भगवान विष्णु का एक प्राचीन और विशाल मंदिर है, जिसे दशावतार मंदिर के नाम से जाना जाता है। उस मंदिर में भगवान विष्णु के समस्त 10 अवतारों की मूर्तियां स्थित हैं। वह सभी मूर्तियां भगवान विष्णु की चमत्कारी शक्तियों से निर्मित हैं, जिसे छूने पर वह सजीव हो जाती हैं। उन्हीं मूर्तियों में मेरे प्रभु श्री राम की एक बालरुप की मूर्ति भी है। मैं चाहता हूं कि आप मुझे उस मूर्ति के माध्यम से मेरे प्रभु के बालरुप के दर्शन कराएं। ..... अगर आप ऐसा करने में सफल हो गये, तो मैं आपको अवश्य ही महादेव की शक्तियों को वरण करने का आशीर्वाद दूंगा।”

इतना कहकर हनुमान चुप हो गए और आशारुपी भाव से नीलाभ की ओर देखने लगे।

“परंतु यह कार्य तो आप स्वयं भी कर सकते हैं, फिर यह कार्य मुझसे क्यों करवाना चाहते हैं? जबकि आपका कार्य मुझे अधिक दुष्कर नहीं प्रतीत हो रहा।” नीलाभ ने उलझे-उलझे शब्दों में कहा।

“मैं आपके इस प्रश्न का उत्तर दूसरे तरीके से देना चाहता हूं नीलाभ।” हनुमान ने एक नया ही प्रश्न नीलाभ से कर लिया- “क्या आप बता सकते हैं कि आपने मुझ तक पहुंचने के लिये अपनी किसी चमत्कारी शक्ति का सहारा क्यों नहीं लिया?”

“क्योंकि अपने भगवान तक पहुंचने के लिये किसी चमत्कारी शक्ति की नहीं अपितु भक्ति की आवश्यकता होती है। इसलिये मनुष्य भी सदैव पौराणिक मंदिरों को पर्वतों की चोटियों पर ही बनाता आया है, जिससे वह भक्तिपूर्ण श्रम करके ही भगवान के पास पहुंच सके।” नीलाभ ने अपने ज्ञान का परिचय देते हुए कहा।

“सत्य कहा नीलाभ। इसीलिये मैं अपने प्रभु श्री राम की मूर्ति तक नहीं पहुंच सकता क्योंकि गरुणाक्ष पर्वत तक पहुंचने का मार्ग अत्यंत दुष्कर है और मैं बिना किसी चमत्कारी शक्ति के वहां तक नहीं पहुंच सकता? इसीलिये इस का र्य के लिये मुझे आपकी सहायता की आवश्यकता है।”

हनुमान के शब्दों में बहुत ही ठहराव था, जिससे नीलाभ उनके अभिप्राय को तो नहीं समझ पाया, परंतु उनकी इच्छा को पूरी करने के लिये तैयार अवश्य हो गया।

नीलाभ को सिर हिलाते देख हनुमान प्रसन्न हो गये।

“तो फिर ठीक है, आप अपनी शक्तियों के द्वारा मुझे गरुणाक्ष पर्वत पर लेकर चलिये। मैं अपने प्रभु के बालरुप से मिलने के लिये व्यग्र हूं और हां ..... मेरे साथ चलने पर आपको मार्ग दिखाने के लिये इस नीलिमा की आवश्यकता भी नहीं रहेगी।”

हनुमान के कथनों को सुन नीलिमा अपने स्थान से गायब हो गई।

अब नीलाभ ने अपने दाँतों को जोर से दबाया। नीलाभ के ऐसा करते ही उसके शरीर का आकार 20 फुट का हो गया।

अब नीलाभ ने एक जोर की आवाज लगाई- “नीलपंख प्रकट हो।”

नीलाभ के इतना कहते ही उसकी पीठ के दोनों ओर से 2 जोड़ी नीले रंग के पंख निकल आए।

अब नीलाभ हनुमान की ओर मुड़ते हुए बोला- “तो फिर आइये पवनपुत्र, आप मेरी पीठ पर बैठ जाइये ..... मैं आपको गरुणाक्ष पर्वत की ओर लेकर चलता हूं।”

नीलाभ की बात सुन हनुमान मुस्कुराए और नीलाभ की पीठ पर चढ़कर बैठ गये।

हनुमान के पीठ पर बैठते ही नीलाभ उन्हें लेकर आसमान की ओर उड़ गया।

नीलाभ के नीले पंख हवा में गतिमान थे। नीलाभ के उड़ने की गति भी बहुत तेज थी।

उधर हनुमान के लिये भी यह एक नया ही अनुभव था। अरे जो स्वयं उड़कर सूर्य को निगल सकता था, उसके लिये किसी दूसरे का सहारा लेना एक विचित्र अनुभव ही तो था।

नीलाभ द्रुत गति से उड़ रहा था और हनुमान उसे मार्ग दिखा रहे थे।

लगभग आधा घंटा ऐसे ही उड़ते रहने के बाद नीलाभ को कुछ दूर एक विशाल झील दिखाई दी, हनुमान ने नीलाभ को उस दिशा में चलने का इशारा किया।

नीलाभ को झील के बीचोबीच काफी दूरी पर एक आसमान छूता हुआ पर्वत दिखाई दिया। उस पर्वत का आकार गरुण की चोंच के समान था।

उसे देखते ही नीलाभ समझ गया कि वही गरुणाक्ष पर्वत है, जहां उसे हनुमान को लेकर जाना है।

परंतु जैसे ही नीलाभ उस झील के ऊपर पहुंचा, वह तेजी से नीचे गिरने लगा।

किसी प्रकार से नीलाभ ने अपने शरीर को हवा में संतुलित किया और उस झील के किनारे ही उतर गया।

किनारे पर उतरते ही नीलाभ के शरीर पर निकले नीले पंख स्वतः ही कहीं गायब हो गये?

"यह वैष्णव झील है नीलाभ, कोई भी जीव इसके ऊपर से हवा में उड़कर गरुणाक्ष पर्वत तक नहीं जा सकता।" हनुमान ने परेशान नीलाभ को देखते हुए कहा।

"तो फिर ठीक है आप फिर से मेरी पीठ पर बैठ जाइये, मैं इस झील को तैर कर आपको गरुणाक्ष पर्वत तक पहुंचा दूंगा।" नीलाभ ने वैष्णव झील की ओर देखते हुए कहा।

"यह भी संभव नहीं है नीलाभ।" हनुमान, नीलाभ की ओर देखते हुए मुस्कुराए- "यह भगवान विष्णु की शक्तियों से निर्मित झील है, इसे कोई तैर कर भी पार नहीं कर सकता?"

"क्या???" अब नीलाभ के चेहरे पर असीमित उलझन नजर आने लगी- "अगर इसे उड़कर या तैर पार नहीं किया जा सकता, तो फिर इसे कैसे पार करेंगे?"

"यह तो मुझे नहीं पता। इसका हल तो आपको स्वयं ढूंढना होगा।" यह कहकर हनुमान एक बड़े से पत्थर पर आराम से बैठ गए।

“मैं तो यहां आराम कर रहा हूं। जब आपको इस झील को पार करने का कोई हल मिल जाये, तो मुझे उठा देना।”

नीलाभ, हनुमान के व्यवहार से आश्चर्यचकित हो उठा, परंतु वह कुछ बोला नहीं। वह तो अब बस उस वैष्णव झील को पार करने के बारे में सोच रहा था।

परंतु काफी देर के बाद भी जब नीलाभ को झील को पार करने का कोई तरीका समझ में नहीं आया, तो वह सोच में पड़ गया।

“लगता है पवनपुत्र भी मेरी किसी प्रकार से परीक्षा ले रहे हैं? अन्यथा यह इस झील को पार करने का कोई ना कोई मार्ग अवश्य बता देते? ..... पर अगर पवनपुत्र आराम की मुद्रा में हैं, तो यह तो निश्चित है कि इस झील को पार करने का कोई मार्ग अवश्य है? .... पर क्या? .... ना तैर कर ... ना उड़कर .... फिर ... फिर क्या धरा के नीचे से इतनी लंबी सुरंग खोदनी है? ... नहीं-नहीं यह नहीं हो सकता .... इतनी लंबी सुरंग खोदने से तो हिमालय का संतुलन ही समाप्त हो सकता है ... इस समस्या का हल कुछ अलग होना चाहिये। ... पर क्या? .... हे महादेव हमें मार्ग दिखाएं। ..... अरे हां भगवान श्री राम के समक्ष भी तो ऐसी ही समस्या उत्पन्न हुई थी, जब उन्हें अपनी वानर सेना के साथ समुद्र पार करना था ... तब ... तब तो नल और नील ने वहां पड़े पत्थरों पर राम लिखकर उन्हें पानी में तैरा दिया था। .... कहीं ... कहीं मुझे भी तो ऐसा ही कुछ नहीं करना?”

यह सोच नीलाभ ने वहां पड़ी एक 5 फुट ऊंची चट्टान को उठाया और उस पर एक नुकीले पत्थर से खुरचकर ‘राम’ लिख दिया।

इसके बाद नीलाभ ने जैसे ही उस चट्टान को वैष्णव झील में डाला, वह चट्टान पानी में तैरने लगी।

यह देख नीलाभ प्रसन्नता से भर उठा। अब उसने दौड़कर हनुमान को उठाया- “हे पवनपुत्र, मुझे इस झील को पार करने का मार्ग मिल गया। अब आप शीघ्रता से इस चट्टान पर सवार हो जाइये, आपके इस चट्टान पर बैठते ही मैं इस चट्टान को पानी में खींचता हुआ गरुणाक्ष पर्वत पर लेता जाऊंगा।”

नीलाभ की बात सुन हनुमान ने उस चट्टान पर लिखे 'राम' शब्द को देखा और फिर नीलाभ की ओर पलटकर बोले- "आपने इस समस्या का हल तो बहुत ही अच्छा निकाला है नीलाभ, परंतु जिस चट्टान पर मेरे प्रभु का नाम लिखा हो, उस चट्टान पर मैं भला अपने पैर कैसे रख सकता हूं?"

हनुमान के शब्द सुन नीलाभ चकरा गया- "पर आपने रामायणकाल में भी तो ऐसे ही समुद्र को पार किया था।"

"लगता है आपको पूर्ण ज्ञान नहीं है नीलाभ।" हनुमान ने नीलाभ को समझाते हुए कहा- "लंका जाने के लिये नल व नील के द्वारा बनाए गये पुल पर मैंने पैर भी नहीं रखा था, मैंने तो उस समय उड़कर ही समुद्र पार किया था। .... मैं अपने प्रभु के नाम वाली चट्टान पर कदापि अपने पैर नहीं रख सकता, आपको इस झील को पार करने का कोई और मार्ग सोचना होगा नीलाभ?"

हनुमान के शब्दों में अपने प्रभु श्री राम के प्रति पूर्ण समर्पण दिखाई दे रहा था। इसलिये हनुमान के वचनों को सुन नीलाभ ने हाथ जोड़कर हनुमान की भक्ति को प्रणाम किया और दोबारा से कोई दूसरा मार्ग सोचने लगा, परंतु इस बार नीलाभ ने ज्यादा समय नहीं लिया।

अब नीलाभ ने वैष्णव झील के पानी में छलांग लगा दी।

नीलाभ को झील में छलांग लगाते देख हनुमान विचित्र नजरों से नीलाभ को देखने लगे।

उधर नीलाभ का शरीर राम नाम की चट्टान के समीप ही गिरा। पानी में गिरते ही नीलाभ ने डूबने से बचने के लिये, राम नाम की चट्टान को पकड़ लिया।

चट्टान को पकड़ते ही नीलाभ का शरीर झील के पानी में तैरने लगा। यह देख पता नहीं क्या सोच नीलाभ ने अपना मुंह विशाल आकार में फाड़ा और उस राम नाम की चट्टान को अपने मुंह में भर कर खा लिया।

चट्टान को खाने के बाद भी नीलाभ का शरीर झील के पानी पर तैर रहा था। यह देख नीलाभ खुश हो गया।

"माना कि आप अपने प्रभु का नाम लिखी चट्टान पर अपना पैर नहीं रख सकते, परंतु अब तो उस चट्टान को निगलकर मैंने प्रभु श्री राम की

भक्ति को अपने अंदर समाहित कर लिया है। अतः अब आपको दोबारा मेरी पीठ पर बैठना ही होगा।

अब हनुमान ने मुस्कुराकर नीलाभ की ओर देखा और फिर उछलकर नीलाभ की पीठ पर पुनः सवार हो गये।

नीलाभ अब वैष्णव झील में तैरता हुआ हनुमान को लेकर गरुणाक्ष पर्वत की ओर बढ़ने लगा।

◆ ◆ ◆

चैपटर-13

महादेव की जटाएं

तिलिस्मा 7.11

सुयश सहित सभी तिलिस्मा के सातवें द्वार में प्रवेश कर गये, पर वह जिस स्थान पर निकले उसे देख कर सभी की आँखें खुली की खुली रह गईं।

सभी इस समय एक विशाल ग्रह पर खड़े थे, चारो ओर से सफेद रंग से चमकने वाला वह ग्रह उबड़-खाबड़ पत्थरों से भरा हुआ था। उस ग्रह का आसमान सुर्ख लाल रंग का था। वहां पर एक विशाल पहाड़ भी था, जो देखने में कैलाश पर्वत की प्रतिकृति प्रतीत हो रहा था।

उस पर्वत के चारो ओर इस प्रकार रस्सियां बंधी थीं, मानों वह कैलाश पर्वत ना होकर कोई उल्टा पड़ा लट्टू हो, जिसे नचाने के लिये चारो ओर से रस्सियों से बांधा गया हो।

उस पहाड़ से कुछ ऊंचाई पर सफेद रंग का एक चंद्रमा आसमान में चमक रहा था। चन्द्रमा का आकार चन्द्राकार ही था।

उस पर्वत से कुछ दूरी पर एक अग्नि के समान चमचमाता हुआ त्रिशूल जमीन में गड़ा हुआ था। उस त्रिशूल पर एक डमरु भी लटका हुआ था। त्रिशूल के आगे एक लाल रंग की रेखा से 2 फिट व्यास का गोला बना था, पर उस गोले में कुछ भी नहीं था?

त्रिशूल से कुछ दूरी पर जमीन पर, एक धनुष भी रखा था। धनुष को देख कर ऐसा लग रहा था कि मानो उसे किसी पवित्र जल से बनाया गया हो। धनुष की डोरी भी जल से बनी हुई प्रतीत हो रही थी।

वहां से कुछ दूरी पर नेत्र के आकार में एक छोटा सा जल का सरोवर बना हुआ था। उस सरोवर के पास एक 6 फुट का रोबोट खड़ा था, जिसने

किसी एस्ट्रोनॉट की तरह से सूट पहना हुआ था, पर उस रोबोट के सिर के स्थान पर एक गोल घड़ी लगी हुई थी, जिसमें 12 बजा हुआ था।

उस रोबोट ने अपने दोनों हाथों में 7 छोटे बोर्ड पकड़ रखें थे, जिन पर भैतिक विज्ञान के कुछ शब्द लिख रखे थे। वह शब्द क्रमशः इस प्रकार से थे- "ध्वनि, ऊर्जा, द्रव्यमान, समय, गति, बल और कार्य"

"यह सब क्या है?" जेनिथ ने पूरे स्थान को ध्यान से देखते हुए कहा- "यहां की तो सभी चीजें बहुत ही विचित्र हैं।"

"जेनिथ सही कह रही है, यह मायाजाल तो इस पूरे ग्रह पर फैला है।" क्रिस्टी ने जेनिथ की बात का सपोर्ट करते हुए कहा- "और पिछले सभी द्वार से ज्यादा खतरनाक दिख रहा है।"

"खतरनाक तो होगा ही।" सुयश ने चारो ओर देखते हुए कहा- "आखिर ये तिलिस्मा का आखिरी भाग जो है ..... पर मुझे यहां की सारी चीजें कुछ ईश्वरीय शक्ति के समान लग रहीं हैं।"

अभी सुयश कुछ बोलने जा ही रहा था कि तभी ऐमू की आवाज ने सभी को चौंका दिया- "ॐ नमः शिवाय् ..... ॐ नमः शिवाय्।"

ऐमू के शब्द सुनकर सुयश के दिमाग को एक हल्का सा झटका लगा, अब वह ध्यान से उस ग्रह की पूरी चीजों को देखने लगा।

कुछ देर तक ऐसे ही देखते रहने के बाद सुयश ने बोलना शुरु कर दिया- "वैसे तो मुझे इस द्वार को समझने में थोड़ा समय लगता, पर ऐमू के शब्दों ने इस गुत्थी को जल्दी ही सुलझा दिया। .... तिलिस्मा का यह द्वार हिन्दू देवता भगवान शिव की शक्तियों को ध्यान में रखकर बनाया गया है। ..... जैसे कि त्रिशूल, डमरु, चन्द्रमा और कैलाश पर्वत की प्रतिकृति ... सब कुछ महादेव की शक्तियां ही लग रहीं हैं .... यहां तक कि मुझे तो यह धनुष भी महादेव का ही लग रहा है। ... बस यह रोबोट और भौतिक विज्ञान के नियम कुछ अलग से दिख रहे हैं?"

"कैप्टेन, यहां पर धनुष तो है, पर किसी भी प्रकार का तीर तो दिखाई ही नहीं दे रहा है?" अलबर्ट ने सुयश की ओर देखते हुए कहा।

अलबर्ट की बात सुन सभी जमीन पर रखे जलधनुष के पास आ गये।

सुयश कुछ देर तक जलधनुष को देखता रहा, फिर उसने जलधनुष को अपने हाथ से स्पर्श करके देखा। सुयश को वह जलधनुष काफी ठंडा सा प्रतीत हुआ। यह देख सुयश ने उस जलधनुष को अपने हाथों से उठाने का प्रयास किया, पर सुयश इस कार्य में सफल नहीं हो पाया।

“यह जलधनुष तो बहुत भारी है, इसे हाथों से उठाया नहीं जा सकता।” सुयश ने बारी-बारी सभी को देखते हुए कहा- “इसका मतलब हमें पहले किसी और चीज को हाथ लगाना होगा?”

“कैप्टेन हमें त्रिशूल को जमीन से निकालकर देखना चाहिये।” ऐलेक्स ने त्रिशूल की ओर इशारा करते हुए कहा- “हो सकता है कि उसमें कुछ रहस्य छिपा हो?”

ऐलेक्स की बात सुन सुयश ने आगे बढ़कर त्रिशूल को भी जमीन से निकालने की कोशिश की, पर सुयश की असीम शक्ति लगाने के बाद भी त्रिशूल अपने स्थान से टस से मस नहीं हुआ।

“कैप्टेन अंकल, मुझे इस त्रिशूल पर लटका यह डमरु कुछ अपूर्ण सा नजर आ रहा है।” शैफाली ने सुयश का ध्यान डमरु की ओर लाते हुए कहा- “साधारणतया प्रत्येक डमरु को बजाने के लिये उसकी डोरी में दो मनके बंधे होते हैं, उसी मनके की चोट से डमरु ध्वनि उत्पन्न करता है, पर इस डमरु में वैसा कोई भी मनका नजर नहीं आ रहा है?”

शैफाली की बात बिल्कुल सही थी, डमरु से मनका गायब था।

“तो फिर अपने कार्य की शुरुआत इसी डमरु के मनके को ढूंढने से शुरु करते हैं।” तौफीक ने कहा- “पर वह मनका होगा कहां पर?”

“मनका इसी ग्रह पर कहीं ना कहीं होगा? हमें चारो ओर बिखरकर उस मनके को ढूंढने की कोशिश करनी होगी।” जेनिथ ने कहा।

जेनिथ की बात सुन सभी चारो ओर बिखरकर डमरु के मनके को ढूंढने की कोशिश करने लगे। पर 1 घंटा ढूंढने के बाद भी किसी को मनका कहीं नहीं मिला?

सभी अब मनका ढूंढकर एक जगह आकर एकत्र हो गये।

“कैप्टेन, डमरु का मनका इस ग्रह पर कहीं नहीं है?” क्रिस्टी ने कहा- “मैंने यहां मौजूद सरोवर में भी झांक कर देख लिया। क्या डमरु में मनका की जगह कोई और चीज इस्तेमाल नहीं की जा सकती?”

“नहीं। महादेव का डमरु अत्यंत पवित्र होता है, भले ही इसका निर्माण कैश्वर ने किया हो, फिर भी डमरु में मनका के सिवा कुछ भी लगाया नहीं जा सकता।” सुयश ने क्रिस्टी को समझाते हुए कहा- “महादेव के डमरु में मनके के स्थान पर पवित्र रुद्राक्ष का प्रयोग किया जाता है और हिंदू पुराणों के हिसाब से रुद्राक्ष का वृक्ष भगवान शिव के नेत्रों से निकले अश्रु की बूंदों से बना था।”

“तो फिर यहां पर मनके का होना संभव नहीं है कैप्टेन।” अलबर्ट ने कहा- “क्योंकि यह पूरा स्थान पत्थरों से बना है, इसलिये इस स्थान पर किसी भी प्रकार के वृक्ष की कल्पना ही नहीं की जा सकती?”

तभी ऐलेक्स की निगाह त्रिशूल के पास बने उस लाल रंग के गोले पर गई। अब ऐलेक्स ध्यान से उस गोले को देखने लगा।

“कैप्टेन, जरा इस लाल रंग के गोले के मध्य देखिये।” ऐलेक्स ने सुयश को उस लाल गोले की ओर इशारा करते हुए कहा- “अगर ध्यान से देखा जाये तो इस पूरे ग्रह पर एक इस गोले के अंदर का ही स्थान है, जिसके अंदर पत्थर नहीं बल्कि मिट्टी भरी हुई है। कहीं रुद्राक्ष का वृक्ष इस मिट्टी से ही तो नहीं निकलेगा?”

“कह तो तुम ठीक ही रहे हो ऐलेक्स।” सुयश ने ऐलेक्स को समझाते हुए कहा- “कि इस गोले के अंदर मिट्टी भरी है, परंतु मैंने तुम्हें बताया कि रुद्राक्ष का वृक्ष सिर्फ महादेव के अश्रु से ही निर्मित हो सकता है। अब इस स्थान पर महादेव के अश्रु भला किस प्रकार प्राप्त हो सकते हैं?”

तभी ऐमू फिर जोर-जोर से चिल्लाया- “हर हर महादेव .... हर-हर महादेव।”

अब सुयश का ध्यान ऐमू की ओर गया। ऐमू लगातार उस सरोवर के ऊपर उड़ते हुए महादेव का जयकारा लगा रहा था।

यह देख सुयश ने उस सरोवर की ओर ध्यान से देखा, तभी सुयश के मस्तिष्क को एक झटका सा लगा।

“कहीं यह सरोवर महादेव के तीसरे नेत्र का प्रतीक तो नहीं है?” सुयश के शब्द थोड़ा तेज थे, जिसे सबने सुना।

अब सभी सरोवर की बनावट को निहार रहे थे।

“कैप्टेन अंकल, सरोवर की बनावट बिल्कुल महादेव की तीसरे नेत्र की ही तरह है .... अगर यह सच में महादेव के तीसरे नेत्र का प्रतीक है, तो इसमें मौजूद जल भी महादेव के अश्रु का प्रतीक होंगे और ऐसी स्थिति में इस सरोवर के जल को अगर हम उस गोले वाली मिट्टी के अंदर डालें, तो फिर रुद्राक्ष के वृक्ष का निर्माण हो सकता है।” शैफाली ने सबके समक्ष अपने विचार प्रस्तुत किये, पर जो भी हो शैफाली के विचारों में दृढ़ता नजर आ रही थी।

यह सुन सभी ने अपने हाथों की अंजुली में सरोवर का जल भरकर, गोले के अंदर की मिट्टी में डालना शुरु कर दिया।

सभी के उस गोले में जल डालते ही उस गोले के मध्य से एक वृक्ष की कोपल फूटी और सबके देखते ही देखते वह एक रुद्राक्ष के वृक्ष में परिवर्तित हो गई। वृक्ष के पूर्ण रुप लेते ही उस वृक्ष पर रुद्राक्ष निकलने शुरु हो गये।

यह देख सुयश ने उस रुद्राक्ष के वृक्ष को अभिवादन किया और अपने हाथ बढ़ाकर नीचे लगे 2 रुद्राक्ष को तोड़ लिया।

उन रुद्राक्ष को तोड़ते ही वह वृक्ष गोले सहित कहीं गायब हो गया। उसे देखकर ऐसा लगा कि मानो वह वृक्ष, सभी को 2 रुद्राक्ष देने के लिये ही उत्पन्न हुआ था।

सुयश ने अब त्रिशूल पर टंगा डमरु उतार कर अपने हाथों में ले लिया और उसके धागे में रुद्राक्ष को मनके की भांति लगा दिया।

अब डमरु बजने के लिये बिल्कुल तैयार था।

“सभी लोग अपने आसपास हो रहे बदलाव का ध्यान रखना।” यह कहकर सुयश ने डमरु को जोर से बजा दिया।

वातावरण में डमरु की तेज आवाज गूंजी। ऐसा लगा जैसे स्वयं भोलेनाथ प्रकट होने वाले हों। डमरु के बजते ही सभी की नजरें चारो ओर

घूमीं।

तभी सभी को उस ग्रह की जमीन में कुछ कंपन होते महसूस हुए। ऐसा महसूस हुआ जैसे कि भूकंप आया हो।

वह भूकंप मात्र 5 सेकेण्ड ही रहा। 5 सेकेण्ड बाद ग्रह की धरती स्वतः ही शांत हो गई। इसी के साथ सुयश के हाथ में पकड़ा डमरु स्वतः ही वातावरण में विलीन हो गया। शायद उस डमरु का कार्य अब समाप्त हो गया था।

“कैप्टेन, डमरु की ध्वनि तो बहुत ही तीव्र थी। लग रहा है कि भूकंप उसी के कारण आया था।” अलबर्ट ने सुयश की ओर देखते हुए कहा।

“कैप्टेन, उस भूकंप के बाद सरोवर के पास खड़े रोबोट के हाथ से भौतिक विज्ञान के एक सूत्र ‘ध्वनि’ का बोर्ड गायब हो गया है।” ऐलेक्स ने कहा- “अब रोबोट के हाथ में सिर्फ 6 बोर्ड ही बचे हैं।”

“इसका मतलब हमें दिया गया ध्वनि का कार्य अब डमरु की वजह से पूर्ण हो गया है।” शैफाली ने कहा- “और अब हमें भौतिक विज्ञान के अन्य सूत्रों का पता लगाकर उन्हें भी पूर्ण करना होगा।”

धीरे-धीरे सभी को वहां का कार्य समझ में आने लगा था।

तभी जेनिथ ने सभी का ध्यान वहां खड़े त्रिशूल की ओर करवाया- “कैप्टेन, जमीन पर लगा वह त्रिशूल भूकंप के बाद कुछ ढीला हो गया है, मुझे लगता है कि अब उस त्रिशूल को जमीन से निकाला जा सकता है।”

जेनिथ की बात सुन शैफाली ने आगे बढ़कर उस त्रिशूल को जमीन से निकालने की कोशिश की। जरा सी कोशिश में ही त्रिशूल शैफाली के हाथ में आ गया।

“कैप्टेन अंकल, यह त्रिशूल तो चुम्बक का बना हुआ लग रहा है।” शैफाली ने त्रिशूल को ध्यान से देखते हुए कहा।

“चुम्बक का!” अलबर्ट के स्वर आश्चर्य भरे थे- “इसका मतलब इस त्रिशूल का उपयोग किसी लोहे की चीज को आकर्षित करने के लिये किया जायेगा। .... पर .... पर इस ग्रह पर तो कोई भी चीज लोहे की बनी नहीं दिखाई दे रही है।”

“है प्रोफेसर।” ऐलेक्स ने अलबर्ट को देखते हुए कहा- “इस ग्रह पर खड़े उस रोबोट के शरीर पर लोहे का ही कवच है। ... पर उस रोबोट का इस त्रिशूल से क्या सम्बन्ध हो सकता है? बस यही नहीं समझ में आ रहा।”

“जो भी सम्बन्ध हो, पर इस त्रिशूल की चुम्बकीय ऊर्जा बहुत ही शक्तिशाली लग रही है।” शैफाली ने त्रिशूल को पूरी ताकत से पकड़ते हुए कहा- “अगर वह रोबोट इससे इतना ज्यादा दूर नहीं होता, तो इस त्रिशूल की ऊर्जा ने अभी रोबोट को अपने पास खींच लेना था।”

“त्रिशूल की ऊर्जा!” सुयश, शैफाली के शब्दों को सुन जोर से बोला- “एक मिनट शैफाली .... अगर हम उस रोबोट की बात करें तो उसके हाथ में पहले 7 बोर्ड थे, जिनमें से एक ‘ध्वनि’ वाला बोर्ड गायब हो गया, तो कहीं ऐसा तो नहीं कि बोर्ड के अनुसार हमें जिस ऊर्जा की तलाश है, यह त्रिशूल उसी ऊर्जा का प्रतीक हो।”

“फिर तो यह धनुष ‘द्रव्यमान’ का प्रतीक हो सकता है।” अलबर्ट ने कहा- “क्योंकि शायद अधिक द्रव्यमान (भार) की वजह से ही यह धनुष हम उठा नहीं पा रहे हैं।”

तभी शैफाली के हाथ में थमा त्रिशूल स्वतः ही उसके हाथ से निकला और जमीन पर गिरे धनुष पर जाकर तीर के स्थान पर लग गया।

इसी के साथ धनुष अपने स्थान से उठकर हवा में लहराने लगा। धनुष पर लगे त्रिशूल का निशाना इस समय कैलाश पर्वत की ओर था।

“कैप्टेन, रोबोट के हाथ में थमा ‘द्रव्यमान’ वाला बोर्ड भी गायब हो गया है।” शैफाली ने सभी का ध्यान रोबोट की ओर कराते हुए कहा- “इसका मतलब त्रिशूल की वजह से धनुष का द्रव्यमान समाप्त हो गया और अंजाने में ही हमारा एक कार्य और पूर्ण हो गया। इसी के साथ हमें यह भी पता चल गया कि इस धनुष का कोई तीर नहीं है, बल्कि हमें त्रिशूल से ही तीर का कार्य करना है।”

“इसका मतलब हमारा अगला कार्य त्रिशूल की ऊर्जा का उपयोग करना है, क्योंकि रोबोट के सबसे बांई ओर अब ऊर्जा का ही बोर्ड है।” तौफीक ने कहा- “पर इस त्रिशूल का उपयोग करना कहां पर है?”

“इस समय त्रिशूल का मुंह कैलाश पर्वत की ओर ही है, इसका मतलब हमें इस त्रिशूल को उस दिशा में ही छोड़ना होगा।” क्रिस्टी ने कैलाश पर्वत की ओर इशारा करते हुए कहा।

क्रिस्टी की बात सुन सुयश ने आगे बढ़कर धनुष की प्रत्यंचा को अपने हाथों से पकड़ लिया और त्रिशूल के द्वारा कैलाश पर्वत को लक्ष्य बनाकर प्रत्यंचा को पीछे की ओर खींचना शुरु कर दिया।

प्रत्यंचा को पूरा खींचने के बाद सुयश उस प्रत्यंचा को अपने हाथों से छोड़ दिया। सुयश के ऐसा करते ही त्रिशूल पूरे वेग से कैलाश पर्वत की ओर बढ़ा।

ऐसा लगा कि मानों आसमान में कहीं कोई बिजली सी कड़की हो। जल की प्रत्यंचा से छूटा अग्नि के समान त्रिशूल कुछ ही क्षणों में कैलाश पर्वत के ऊपर पहुंच गया और कैलाश पर्वत की चोटी से कुछ ऊंचाई पर पहुंचकर हवा में ही कैलाश पर्वत के परितः गोल-गोल परिक्रमा लगाने लगा।

“यह क्या? क्या इस त्रिशूल का कोई लक्ष्य नहीं है? जो यह कैलाश पर्वत के चारो ओर चक्कर लगा रहा है।” ऐलेक्स ने त्रिशूल की ओर देखते हुए कहा।

शैफाली अभी भी बहुत ध्यान से कैलाश पर्वत के ऊपर चक्कर लगाते उस त्रिशूल को देख रही थी।

कुछ चक्कर लगाने के बाद त्रिशूल वापस लौट आया और पुनः धनुष के ऊपर चढ़ गया।

तभी शैफाली को कैलाश पर्वत की चोटी पर, पर्वत से लिपटी रस्सी का एक सिरा दिखाई दिया।

“मुझे लग रहा है कि कैलाश पर्वत पर लिपटी रस्सी में अवश्य ही कोई रहस्य छिपा है?” शैफाली ने सुयश की ओर देखते हुए कहा- “शायद उसी रस्सी के कारण त्रिशूल अपना कार्य बिना किये हुए ही वापस आ गया। .... हमें एक बार कैलाश पर्वत से लिपटी रस्सी को हटाने की कोशिश करनी चाहिये।”

शैफाली की बात सुन ऐमू तुरंत कैलाश पर्वत की चोटी तक जा पहुंचा और अपनी नन्हीं सी चोंच से उस रस्सी को खोलने की असफल कोशिश करने लगा।

यह देख शैफाली ब्रूनो के ऊपर बैठ गई और ब्रूनो को पर्वत के शिखर की ओर चलने का इशारा किया।

शैफाली का इशारा पाकर ब्रूनो तेजी से शैफाली को ले उस पर्वत की चोटी की ओर उड़ गया।

कुछ ही देर में ब्रूनो ऐमू के बगल में था। ब्रूनो को अपने बगल में उड़ता देख ऐमू ने एक बुरा सा मुंह बनाया और पलटकर वापस सुयश के पास आ गया- "गन्दा कुत्ता ... ऐमू की नकल करता ...... ऐमू की तरह उड़ता ... ।"

सुयश ने ऐमू के शब्द सुने और मुस्कुरा दिया। ऐमू अब सुयश के कंधे पर बैठकर गुस्से से हवा में उड़ते ब्रूनो को घूर रहा था।

उधर ब्रूनो पर बैठी हुई शैफाली ने भी पर्वत की चोटी से लिपटी रस्सी के सिरे को अपने हाथों से खींचकर निकालने की कोशिश की, पर शैफाली भी पूरी शक्ति लगाने के बाद भी उस रस्सी को थोड़ा सा भी हिला नहीं सकी।

"लगता है कि इस रस्सी को निकालने के लिये कैश्वर ने कोई युक्ति रखी है, मुझे उस युक्ति के बारे में पता लगाना होगा।" यह कहकर शैफाली ने ब्रूनो को पर्वत के चारो ओर उड़ने का इशारा किया और स्वयं हवा में उड़ते हुए पूरे कैलाश का अवलोकन करने लगी।

सभी नीचे से उड़ती हुई शैफाली को देख रहे थे। सभी को पता था कि शैफाली अवश्य ही कोई ना कोई रहस्य पता करके ही वापस आएगी? इसलिये सभी उसके वापस लौटने की प्रतीक्षा कर रहे थे।

सभी को बहुत ज्यादा देर तक इंतजार नहीं करना पड़ा, शैफाली 5 मिनट में ही सभी के पास वापस आ गई।

इस समय सभी शैफाली के चेहरे को आशारुपी नजरों से निहार रहे थे।

“कैप्टेन अंकल मैंने पूरे कैलाश पर्वत को ध्यान से देख लिया।” शैफाली ने सभी को निहारते देख बोलना शुरु कर दिया- “मुझे लगता है कि कैलाश पर्वत पर लिपटी वह रस्सी और कुछ नहीं बल्कि महादेव की जटाओं का प्रतीक चिन्ह है। क्योंकि मैंने देखा कि महादेव की वह जटाएं कैलाश पर्वत के 12 चक्कर पूरे कर रहीं हैं और ध्यान से देखने पर पता चला कि त्रिशूल भी कैलाश पर्वत के ऊपर 12 चक्कर ही लगाकर वापस चला गया था। तो इसका साफ मतलब है कि बिना महादेव की जटाओं को खोले, हम इस द्वार को पार नहीं कर पायेंगे। पर किसी मानव शक्ति के माध्यम से खींचकर महादेव की जटाओं को नहीं खोला जा सकता, उसे खोलने के लिये हमें किसी वाह्य बल की आवश्यकता होगी? और इतना शक्तिशाली वाह्य बल हमें सिर्फ और सिर्फ इस चुम्बकीय त्रिशूल से ही प्राप्त हो सकता है।”

“चुम्बकीय त्रिशूल से? पर वह कैसे?” सुयश को शैफाली के शब्द समझ नहीं आये।

“कैप्टेन अंकल, मैं यह बात आपको समझाने के स्थान पर करके ही दिखा देती हूं।” शैफाली ने सभी को आश्चर्य के झूले में झूलने दिया और स्वयं सरोवर के पास खड़े रोबोट के पास पहुंच गई।

सभी इस प्रकार से शैफाली को देख रहे थे, मानों शैफाली कोई जादूगर हो और वह उन सभी को अपना अगला शो दिखाने वाली हो।

शैफाली ने कुछ देर तक रोबोट को यूं ही देखा और फिर उस रोबोट के शरीर पर चढ़ा लोहे का कवच निकाल लिया। अब शैफाली ने एक बार सभी को देखा और फिर उस रोबोट के कवच को अपने शरीर पर पहन लिया।

आश्चर्यजनक तरीके से वह लोहे का कवच शैफाली के शरीर पर फिट आ गया।

“अब मैं एक बार फिर से कैलाश पर्वत की ओर जा रही हूं, पर जब मैं आपसे इशारा करुं, तो आपको एक बार फिर से उस त्रिशूल को कैलाश पर्वत की ओर छोड़ देना है। बाकी का सारा काम आप मुझ पर छोड़ दीजिये।”

इस बार शैफाली के शब्द सुनकर सुयश और अलबर्ट के चेहरे पर मुस्कान बिखर गई। शायद वह समझ गए थे कि अब शैफाली क्या करने जा रही है?

सुयश ने 'थम्ब्स अप' की स्टाइल में अपने अंगूठे को ऊपर कर शैफाली को अपनी स्वीकृति दे दी।

अब शैफाली ब्रूनो पर चढ़कर कैलाश पर्वत की ओर चल दी। कवच की वजह से इस समय शैफाली का भार थोड़ा बढ़ गया था, पर ब्रूनो को अब भी कोई परेशानी नहीं हो रही थी।

कैलाश पर्वत के पास पहुंचकर शैफाली, जटाओं के आखिरी सिरे के पास उतर गई और उसने ब्रूनो को थोड़ा दूर हटने का इशारा किया।

शैफाली का इशारा देख ब्रूनो, शैफाली से दूर हट गया।

अब शैफाली ने एक बार महादेव की जटाओं को छूकर अपने माथे से लगाया और फिर उसने मैग्ना की भांति अपने शरीर की अंतरिक शक्ति को एकठ्ठा किया।

शैफाली जानती थी कि यह महादेव की वास्तविक जटाएं नहीं हैं, परंतु महादेव के नाम पर बनी उन जटाओं का भी सम्मान करना आवश्यक था।

अब शैफाली ने जटाओं के आखिरी सिरे को अपने दोनों हाथों से जोर से पकड़ लिया।

इसके बाद शैफाली ने सुयश को त्रिशूल चलाने का इशारा किया।

शैफाली का इशारा पाकर सुयश ने एक बार फिर से धनुष की प्रत्यंचा खींचकर त्रिशूल को कैलाश पर्वत की ओर चला दिया।

बिजली की तेजी से त्रिशूल कैलाश पर्वत की चोटी के ऊपर पहुंच गया और कैलाश पर्वत की परिक्रमा लगाने लगा, पर इस बार त्रिशूल की चुंबकीय शक्ति ने अपना असर दिखाया।

चूंकि शैफाली के शरीर पर लोहे का कवच था, इसलिये त्रिशूल ने पर्वत के ऊपर घूमते हुए शैफाली को अपनी ओर खींचना शुरु कर दिया।

शैफाली ने महादेव की जटा को कस कर पकड़ रखा था, इसलिये शैफाली तो त्रिशूल की ओर नहीं जा पाई, पर उसका पूरा शरीर त्रिशूल के घूमने की दिशा में कैलाश के चारो ओर हवा में घूमने लगा।

इसी के साथ कैलाश पर्वत पर लिपटी वह महादेव की जटाएं भी खुलना शुरु हो गईं।

जटाएं जैसे-जैसे खुलती जा रही थी, शैफाली उन जटाओं को अपनी ओर खींचकर आगे बढ़ती जा रही थी।

महादेव की जटा के हर एक चक्कर के खुलते ही रोबोट के सिर पर लगी घड़ी भी 1 घंटा आगे बढ़ती जा रही थी।

बहुत ही विचित्र दृश्य था, पर शैफाली के इस अभूतपूर्व प्रदर्शन को देखकर सबके मुंह खुले के खुले रह गये।

शैफाली के अलावा यह कार्य और किसी के बस का नहीं था?

कुछ ही देर में शैफाली ने कैलाश पर्वत पर लिपटी पूरी जटाओं को त्रिशूल की चुम्बकीय शक्ति का प्रयोग करते हुए खोल दिया।

जैसे ही पूरी जटाएं खुली, त्रिशूल और धनुष हवा में स्वयमेव अदृश्य हो गये। इसी के साथ रोबोट के चेहरे पर लगी घड़ी ने भी 12 घंटे के चक्कर को पूरा कर लिया।

तभी रोबोट के हाथ में पकड़ा ‘ऊर्जा’ का बोर्ड भी हवा में गायब हो गया।

तभी एक चमत्कार हुआ और अद्भुत तरीके से उस पूरे ग्रह का समय अपने आप रुक गया।

अब उस ग्रह पर जो भी जहां पर था, सब अपनी जगह फ्रीज हो गया। सभी अपने आसपास के वातावरण को देख व महसूस कर पा रहे थे, पर कुछ भी हरकत नहीं कर पा रहे थे। सभी के लिये इस प्रकार की स्थिति बहुत ही अलग थी क्योंकि बिना हिले हुए कोई कैसे इस कार्य को पूर्ण कर पाता?

अब किसी के भी पास उस मुसीबत से बच निकलने का कोई रास्ता नहीं दिख रहा था। अब उन्हें इंतजार था, तो बस किसी चमत्कार का। पर

क्या तिलिस्मा में कोई चमत्कार संभव था? इस प्रश्न का उत्तर तो भविष्य मे छिपा था।

◆ ◆ ◆

गरुणदेव

30.01.2002, बुधवार, वैष्णव झील, हिमालय

नीलाभ अब वैष्णव झील में तैरता हुआ हनुमान को लेकर गरुणाक्ष पर्वत की ओर बढ़ रहा था।

नीलाभ ने वैष्णव झील का तीन चौथाई रास्ता पार कर लिया था। अब नीलाभ को गरुणाक्ष पर्वत दिखाई देने लगा।

तभी अचानक से नीलाभ को गरुणाक्ष पर्वत से पहले ही झील के पानी से कोई धारदार चक्र के समान की वस्तु निकलती हुई दिखाई दी।

"यह तो कोई चक्र जैसा दिखाई दे रहा है? ... क्या हो सकता है यह?" नीलाभ ने पानी में उस स्थान पर रुकते हुए कहा।

"यह भगवान विष्णु का सुदर्शन चक्र है, इसके रहते हम इस झील को नहीं पार कर सकते नीलाभ। .... इससे बचकर रहना होगा।" हनुमान ने नीलाभ को समझाते हुए कहा।

सुदर्शन चक्र अब पानी से आधा बाहर आ गया था। आधा बाहर निकलते ही वह एक स्थान पर रुक गया और तेजी के साथ अपना आकार बढ़ाने लगा।

नीलाभ के देखते ही देखते सुदर्शन चक्र ने झील के संपूर्ण चौड़ाई को घेर लिया और इससे पहले कि नीलाभ कुछ समझ पाता, सुदर्शन चक्र पानी में तेजी से नाचने लगा।

सुदर्शन चक्र के तेज नाचने की वजह से वैष्णव झील का पानी भी तेजी से उछलने लगा।

"अब क्या करें?" नीलाभ ने चिंता भरे शब्दों में कहा- "सुदर्शन चक्र तो आधा झील के बाहर है और आधा झील के अंदर .... ऐसी स्थिति में हम किसी भी प्रकार से झील के इस हिस्से को पार नहीं कर सकते?"

धीरे-धीरे नीलाभ को समझ आ गया था कि क्यों हनुमान उसे यहां लेकर आए हैं? शायद नीलाभ की शक्तियों का प्रयोग इस स्थान से बेहतर

कहीं हो ही नहीं सकता था?

नीलाभ झील में एक स्थान पर रुका लगातार तीव्र गति से नाच रहे सुदर्शन चक्र को निहार रहा था। इसी के साथ नीलाभ का मस्तिष्क भी तीव्र गति से चल रहा था।

“वैसे तो इस सुदर्शन चक्र के बीचोबीच में एक बड़ा सा रिक्त स्थान है, परंतु मैं इतने बड़े आकार में पवनपुत्र के साथ उस रिक्त स्थान से नहीं निकल सकता .... मुझे इससे बचने के लिये कोई और ही उपाय सोचना होगा? ..... परंतु क्या? ... यह तो भगवान विष्णु की शक्ति है, इससे मुझे उनका कोई परम भक्त ही बाहर निकाल सकता है। .... भगवान विष्णु का परम भक्त तो स्वयं हनुमान ही हैं ... पर इस समय तो वह स्वयं मेरी परीक्षा ले रहे हैं .... मुझे नहीं लगता कि वह इस समय मेरी कोई सहायता करेंगे? .... फिर ... फिर और कौन इस समय मेरी सहायता कर सकता है? ...... शेषनाग .... हां इस समय उनके अलावा मेरी और कोई सहायता नहीं कर सकता?”

यह सोच नीलाभ ने मन ही मन शेषनाग का आहवान किया- “हे नागों के देवता शेषनाग ... मैं आपके और आपके भाई नागराज वासुकी के ही नागदंत शक्तियों का वृहद रुप हूं .... जिसे आपने किसी शुभ उद्देश्य के लिये क्षीर सागर की तली में छिपा कर रखा था .... परंतु समुद्र मंथन के समय निकले विष के कारण मैं धरा पर आ गया था। .... इस प्रकार हे शेषनाग आप ही मेरे विष का कारक और निर्माता हो .... इसलिये आज मैं आपका आहवान करता हूं .... हे नागदेव, आप तो भगवान विष्णु के परम भक्त हो ... पूरे जग में आपको ही उनका सानिध्य प्राप्त हुआ है ... आप भगवान विष्णु के कई अवतारों में उनके साथ थे .... अतः यह सुदर्शन चक्र अब आप ही रोक कर हमें इस कठिनाई से बचा सकते हो। .... प्रकट हो नागदेव ... प्रकट हो।”

नीलाभ के इतना सोचते ही वैष्णव झील के पानी से अपने सातो सिर लहराते हुए शेषनाग प्रकट हो गए।

प्रकट होते ही विशाल शेषनाग ने नीलाभ को हनुमान सहित अपने फन पर उठा लिया। अब शेषनाग ने अपना आकार बढ़ाना शुरु कर दिया।

हनुमान ने शेषनाग को झुककर प्रणाम किया। इस समय हनुमान के चेहरे पर एक मोहक मुस्कान थिरक रही थी।

कुछ ही देर में शेषनाग का फन, सुदर्शन चक्र के भी ऊपर चला गया। अब शेषनाग ने सुदर्शन चक्र की ओर बढ़ना शुरु कर दिया

शेषनाग कुछ ही पलों में सुदर्शन चक्र के बिल्कुल समीप पहुंच गये। अब शेषनाग की पूंछ तो सुदर्शन चक्र के पीछे थी, परंतु उनका फन सुदर्शन चक्र को पार कर गया।

फन के सुदर्शन चक्र को पार करते ही शेषनाग ने नीलाभ को हनुमान सहित दूसरी ओर छोड़ दिया।

नीलाभ ने अपने शरीर को नियंत्रित करते हुए हनुमान को गिरने नहीं दिया।

छपाक की तेज आवाज करता नीलाभ का शरीर वैष्णव झील के पानी में जा गिरा। इसी के साथ सुदर्शन चक्र वापस झील में समा गया और शेषनाग भी अपने स्थान से गायब हो गये।

एक बार फिर नीलाभ, हनुमान को अपनी पीठ पर बैठाकर गरुणाक्ष पर्वत की ओर चल दिया।

गरुणाक्ष पर्वत अब मात्र 500 मीटर ही दूर बचा था।

तभी नीलाभ को झील के पानी में एक विशाल लहर उठती दिखाई दी, जो कि धीरे-धीरे उन्हीं की ओर आ रही थी।

उसे देखते ही नीलाभ समझ गया कि यह कोई नई मुसीबत है? अब उस विशाल लहर ने झील के पानी को 2 भागों में विभक्त कर दिया।

वह लहर कुछ इस प्रकार उठ रही थी, मानों कोई उस झील के पानी को किसी छिलके की तरह से उतार रहा हो।

कुछ ही देर में उस विशाल लहर ने नीलाभ के शरीर को हवा में काफी ऊपर तक उठा दिया। यह देख नीलाभ ने हनुमान को अपने कंधे पर बैठा लिया।

तभी आश्चर्यजनक तरीके से झील के पानी से उठी वह लहर बर्फ की तरह जम गई।

अब नीलाभ उस ऊंची लहर के ऊपर खड़ा गरुणाक्ष पर्वत की ओर देख रहा था।

इस समय गरुणाक्ष पर्वत और नीलाभ के मध्य पानी नहीं बल्कि अग्नि की झील नजर आ रही थी।

बड़ी आश्चर्य की बात थी कि अग्नि की झील होने के बाद भी वह अग्नि उस बर्फ की लहर को नहीं पिघला रही थी।

बर्फ की लहर लगभग 20 फुट मोटी थी, इसलिये नीलाभ को उस पर खड़े होने में कोई परेशानी नहीं हो रही थी, परंतु अब एक नया प्रश्न खड़ा हो गया था कि अब इस अग्नि की झील को किस प्रकार पार करें?

तभी नीलाभ की इस समस्या का समाधान किया पवनपुत्र हनुमान ने- “चूंकि अब वैष्णव झील का पानी का स्थान अग्नि ने ले लिया है, इसलिये अब तुम इसके ऊपर से उड़ सकते हो नीलाभ।”

हनुमान के शब्द सुन नीलाभ ने फिर से अपने नीलपंख को याद किया। तुरंत ही नीलाभ के पीठ पर पुनः नीले रंग के पंख नजर आने लगे।

नीलाभ ने अपने पंखों को फड़फड़ाया और हनुमान सहित एक बार फिर से गरुणाक्ष पर्वत की ओर बढ़ने लगा।

गरुणाक्ष पर्वत अब बहुत पास था, तभी अचानक से गरुणाक्ष पर्वत पर एक विशाल गरुण नजर आने लगा। जो कि नीलाभ को पास आता देख अपने पंख जोर-जोर से हिलाने लगा।

गरुण के पंख हिलाते ही उसमें से तेज हवा निकली और नीलाभ की ओर चल दी।

जैसे ही वह हवा नीलाभ से टकराई, नीलाभ आगे बढ़ने के स्थान पर पीछे की ओर जाने लगा।

नीलाभ अब आगे बढ़ने के लिये अपनी पूरी शक्ति लगा रहा था, परंतु वह जितनी तेजी से अपने पंख हिला रहा था, उससे भी ज्यादा तेजी से गरुण अपने पंखों से वायु उत्पन्न कर नीलाभ को पीछे धकेल दे रहा था।

बहुत देर तक नीलाभ कोशिश करता रहा, परंतु वह गरुणाक्ष पर्वत की ओर नहीं जा पाया।

यह देख नीलाभ हवा में एक स्थान पर रुक गया और फिर से इस नई मुश्किल से पार पाने का कोई उपाय सोचने लगा?

पर बहुत कोशिश के बाद भी नीलाभ को कुछ समझ में नही आया? अब वह कातर दृष्टि से हनुमान की ओर देखने लगा।

परंतु हनुमान ने नीलाभ को अपनी ओर देखते पाकर अपना चेहरा ऊपर की ओर उठा लिया और आसमान की ओर देखने लगे।

नीलाभ को हनुमान का यह परिवर्तन समझ नहीं आया, पर जैसे ही उसकी नजर उस दिशा में गई, जिधर हनुमान देख रहे थे, वह बुरी तरह से चौंक गया क्योंकि नीलाभ के सिर के ऊपर हवा में एक सफेद बादल की टुकड़ी घूम रही थी।

परंतु उस बादल का आकार किसी मंदिर की भांति प्रतीत हो रहा था और उस मंदिर पर एक लाल रंग की ध्वजा लगी थी, जिस पर सुनहरे अक्षरों में राम लिखा था।

अब नीलाभ ध्यान से उस ध्वजा को देखने लगा। कुछ देर तक ध्यान से रामध्वजा को देखने के बाद नीलाभ के चेहरे पर मुस्कान बिखर गई क्योंकि ध्वजा वायु के विपरीत गरुणाक्ष पर्वत की ओर लहरा रही थी।

अब नीलाभ उड़कर उस मंदिर समान बादल के समीप आ गया और कुछ सोचने के बाद उसने रामध्वजा को बादलों पर से उतारकर अपने हाथ में ले लिया।

अब नीलाभ रामध्वजा को लेकर एक बार फिर से गरुणाक्ष पर्वत की ओर चल दिया। नीलाभ को अपनी ओर आते देख गरुण ने फिर अपनी पूरी शक्ति लगाकर अपने पंखों से वायु उत्पन्न करनी शुरु कर दी।

पर इस बार नीलाभ को आगे बढ़ने से गरुणवायु रोक नहीं पाई। कुछ ही देर में नीलाभ, हनुमान सहित गरुणाक्ष पर्वत पर गरुण के सामने खड़ा था।

नीलाभ को पास आया देखकर गरुण ने अपने पंख चलाना बंद कर दिया और झुककर हनुमान को प्रणाम किया।

गरुण को प्रणाम करता देख हनुमान और नीलाभ ने भी गरुण के समक्ष अपने हाथ जोड़ दिये।

नीलाभ की निगाह अब गरुणाक्ष पर्वत पर दिख रहे दशावतार मंदिर की ओर थी। दशावतार मंदिर अभी नीलाभ से 500 मीटर की दूरी पर था, परंतु मंदिर की विशाल अट्टालिकाओं ने अपना परिचय इतनी दूर से भी नीलाभ को करा दिया था।

नीलाभ को मंदिर की ओर देखते हुए पाकर गरुण ने कहा- "मैं इस दशावतार मंदिर का प्रहरी हूं नीलाभ .... और मेरे रहते कोई भी उस मंदिर तक नहीं पहुंच सकता? इसलिये वहां पहुंचने का विचार त्याग कर यहां से चले जाइये। अन्यथा आपको मृत्यु का सामना करना पड़ेगा ... और वैसे भी आपके शरीर से किसी विषधर की सुगंध आ रही है ... और आप तो जानते ही होंगे कि विषधर का माँस मुझे अत्यंत प्रिय है।"

"मैं आपके बारे में जानता हूं गरुणदेव।" नीलाभ ने हाथ जोड़े हुए ही विनम्र शब्दों में कहा- "परंतु मुझे किसी भी प्रकार से दशावतार मंदिर से प्रभु श्री राम के बालरुप की मूर्ति के दर्शन पवनपुत्र को कराने ही होंगे। मैं स्वयं आपसे युद्ध नहीं करना चाहता अतः आप कृपा करके कोई ऐसा तरीका बताएं? जिससे मेरा कार्य भी पूर्ण हो जाये और आपकी सुरक्षा भी बनी रहे।"

नीलाभ की बात सुन गरुणदेव कुछ देर तक सोचते रहे और फिर बोले- "ठीक है नीलाभ, आप दोनों में से जो भी दशावतार मंदिर की ओर जाना चाहे, जा सकता है, परंतु उसे अपना कुछ माँस मुझे खिलाकर मेरी भूख मिटानी होगी।"

गरुण की बात सुनकर हनुमान वहीं गरुणाक्ष पर्वत पर ही बैठते हुए बोले- "मेरा आकार तो छोटा है गरुणदेव, मुझे खाकर तो आपकी भूख भी नहीं मिटेगी, अतः मैं तो यहीं रुककर नीलाभ के मंदिर से लौटने की प्रतीक्षा करुंगा।"

एक प्रकार से हनुमान ने कम शब्दों में सबकुछ निधार्रित कर दिया।

यह सुनकर नीलाभ बोल उठा- “मुझे अपना माँस आपको खिलाने में किसी प्रकार की कोई भी परेशानी महसूस नहीं हो रही? परंतु मेरा शरीर ‘हलाहल विष’ से निर्मित है, इसलिये हे गरुणदेव, यदि आप मेरे शरीर का माँस का टुकड़ा ग्रहण करेंगे, तो आपके शरीर को हानि भी पहुंच सकती है।”

“मेरे शरीर को तो कोई हानि नहीं पहुंचेगी नीलाभ ... परंतु तुम्हें अपने शरीर की चिंता करनी चाहिये .... कहीं मेरी चोंच से तुम्हें कोई हानि ना पहुंचे?” गरुणदेव ने एक प्रकार से नीलाभ को चेतावनी देते हुए कहा।

“तो फिर आप मेरे शरीर से माँस का सेवन कर सकते हैं गरुणदेव।” नीलाभ ने गरुण की ओर बढ़ते हुए कहा- “किसी शुभ कार्य को करने के लिये मुझे अगर अपना शरीर गंवाना भी पड़े, तो मुझे कोई आपत्ति नहीं।”

नीलाभ के शब्दों को सुन गरुण ने आगे बढ़कर अपनी चोंच का प्रहार नीलाभ के दाहिने हाथ पर किया और उसके हाथ से माँस का एक टुकड़ा काट लिया।

गरुण की चोंच के प्रहार से नीलाभ को तीव्र दर्द महसूस हुआ, परंतु उसके मुंह से आह तक नहीं निकली।

इस बार गरुण ने नीलाभ के बांए हाथ पर अपनी चोंच का प्रहार किया और पिछली बार की तरह इस बार माँस का एक बड़ा सा टुकड़ा काट लिया।

2 टुकड़े खाने के बाद गरुण ने कहा- “मैं तुम्हारे व्यवहार से अत्यंत प्रसन्न हुआ नीलाभ। अब तुम दशावतार मंदिर की ओर जा सकते हो।”

गरुण के शब्द सुन नीलाभ प्रसन्नता से दशावतार मंदिर की ओर उड़ चला।

नीलाभ मंदिर के बाहर उतरा और झुककर मंदिर की चौखट को अपने हाथों से स्पर्श कर अपने माथे से लगाया।

अब नीलाभ ने अपने पैर में पहने कपड़े के जूते को बाहर उतारा और मंदिर के अंदर की ओर चल दिया।

अंदर से मंदिर काफी विशाल था। मंदिर के अंदर बीचोबीच में भगवान विष्णु का मंडप बना था। उसके चारो ओर 10 भव्य मंडप बने थे, जो कि उनके हर अवतार के प्रतीकचिन्ह के रुप में थे।

नीलाभ को भगवान राम का मंडप ढूंढने में ज्यादा मेहनत नहीं करनी पड़ी।

भगवान राम की बालरुप की मूर्ति भी अपने हाथों में धनुष लिये हुए थी, जिसके कारण वह अत्यंत ही मनोहारी लग रही थी।

मंदिर की दीवारों पर भी भगवान राम के बालरुप के आकर्षक चित्र बने हुए थे। कुछ देर के लिये तो नीलाभ मंत्रमुग्ध होकर भगवान राम की उस मूर्ति को देखने लगा, फिर उसे याद आया कि वह यहां उस मूर्ति को लेने आया है और गरुणाक्ष पर्वत पर पवनपुत्र उनकी राह देख रहे हैं।

यह सोच नीलाभ ने भगवान राम की मूर्ति को प्रणाम किया और उसे उसकी जगह से उठाकर अपने हाथों में ले लिया।

भगवान राम की मूर्ति को उठाते ही अचानक से नीलाभ को अपने दोनों हाथों में तेज जलन महसूस हुई। नीलाभ ने घबराकर अपने हाथों को देखा।

यह जलन उसी घाव से हो रही थी, जिसे गरुण ने उनके हाथों का माँस खाकर किया था। परंतु नीलाभ ने उस जलन की परवाह ना करते हुए मूर्ति को लेकर मंदिर के बार की ओर आ गया।

मंदिर के बाहर निकलकर नीलाभ ने अपने जूते पहने, पर जैसे ही वह उड़ने चला, उसे अपने पूरे शरीर में तेज जलन का अहसास हुआ।

अब नीलाभ ने भगवान राम की मूर्ति को वहीं जमीन पर रखा और अपने पूरे शरीर को देखने लगा। इस समय उसे अपने पूरे शरीर की खाल धीरे-धीरे पिघलती हुई सी महसूस हुई।

“लग रहा है कि गरुणदेव के चोंच में किसी प्रकार का पदार्थ लगा था, जिसके कारण मेरा पूरा शरीर पिघल रहा है ..... पर ... पर मुझे अपने शरीर के पिघलने से पहले ही भगवान राम की मूर्ति को पवनपुत्र तक पहुंचाना ही होगा।”

यह सोच नीलाभ ने भगवान ने श्री राम की मूर्ति को दोबारा से उठाया, पर इस बार नीलाभ को मूर्ति का भार कुछ ज्यादा ही भारी महसूस हुआ।

नीलाभ ने किसी प्रकार उस मूर्ति को अपने दोनों हाथों में उठाया और अपने नीलपंख के सहारे आसमान में उड़ गया।

तभी नीलाभ के शरीर का माँस तेजी से अपनी जगह छोड़ने लगा और इसी के साथ मूर्ति का भार भी लगातार बढ़ रहा था।

नीलाभ ने अब अपने उड़ने की गति की और बढ़ा दिया, परंतु नीलाभ को इस समय वह 500 मीटर की दूरी ही बहुत ज्यादा महसूस हो रही थी।

मूर्ति का भार अब असहनीय हो गया था, जिसे लेकर उड़ना बहुत ही मुश्किल लग रहा था, परंतु नीलाभ किसी प्रकार से हनुमान तक पहुंचना चाहता था?

नीलाभ को अब गरुणाक्ष पर्वत पर खड़े हनुमान दिखाई देने लगे थे, कि तभी नीलाभ के हाथ से भगवान श्री राम की मूर्ति फिसलकर नीचे की ओर गिर गई।

जब तक नीलाभ कुछ समझ पाता, मूर्ति उसके हाथों से गायब हो चुकी थी।

नीलाभ मूर्ति को पकड़ने के लिये नीचे की ओर लपका, कि तभी नीलाभ को एक जोर का चक्कर आया और नीलाभ हवा में लहराकर नीचे जमीन पर आ गिरा।

उधर भगवान राम की मूर्ति जमीन पर गिरने से पहले ही उड़कर वापस मंदिर की ओर चली गई और मंदिर में अपने स्थान पर स्वयं ही प्रतिस्थापित हो गई।

उधर नीलाभ को जमीन पर गिरते देख हनुमान और गरुण भागकर नीलाभ के पास आ गये।

नीलाभ ने गरुण को देखते हुए अपने हाथ जोड़ते हुए पूछा- “यह कैसी माया है गरुणदेव? मेरा शरीर किस प्रकार पिघल रहा है?”

“मेरी चोंच में किसी भी प्रकार के विष को समाप्त करने की औषधि भरी है, जो उस विष के प्रभाव को मेरे मुंह में जाने से पहले ही समाप्त कर देती है। शायद आपके शरीर पर मेरी उस औषधि का द्रव्य लग गया है, जो तेजी से आपके शरीर के विष को समाप्त करता जा रहा है और चूंकि आपका शरीर पूरी तरह से विष से ही बना है, इसलिये आपका शरीर भी उस द्रव्य के प्रभाव से पिघलता जा रहा है।” गरुण ने कहा।

यह सुनकर नीलाभ ने अपने हाथ जोड़कर नीलाभ की ओर देखते हुए कहा- “मुझे क्षमा करें महाबली, मैं आपको दिया हुआ वचन नहीं पूर्ण कर सका .... मैं आपको आपके प्रभु श्री राम के बालरुप के दर्शन नहीं करवा सका ... मुझे क्षमा करें।”

“तो क्या तुम इतनी जल्दी अपनी हार स्वीकार कर लोगे नीलाभ?” हनुमान ने नीलाभ की आँखों में देखते हुए कहा।

हनुमान की बात सुन नीलाभ आश्चर्य में पड़कर सोचने लगा- “यह महाबली क्या कह रहे है? क्या अभी कोई उपाय शेष है? जिससे मैं महाबली को अभी भी प्रभु श्री राम के बालरुप के दर्शन करा सकूं। .... महाबली की बातों में कुछ तो रहस्य अवश्य है? पर कैसे? .... अब तो मेरे शरीर में इतनी शक्ति भी नहीं बची है कि मैं दोबारा से मूर्ति को लेकर आ सकूं। ... फिर ... फिर भला किस प्रकार मैं बजरंग बली को दिये वचनों को पूर्ण कर सकता हूं?”

नीलाभ तेजी से सोच रहा था कि तभी उसकी नीली आँखें किसी आशा की किरण से चमचमा उठीं।

अब नीलाभ अपने शरीर का आकार 50 फुट का कर लिया। यह नीलाभ के अपने आकार बढ़ाने की अधिकतम सीमा थी।

अब नीलाभ ने अपनी आँखें बंद कर प्रभु श्री राम की मूर्ति को ध्यान किया। अब नीलाभ की आँखों में नागशक्ति के प्रभाव से कुछ देर पहले देखी प्रभु श्री राम की मूर्ति नजर आने लगी।

नीलाभ ने अब अपनी आँखें खोल दीं और हनुमान के ओर अपना चेहरा करते हुए कहा- “हे बजरंगबली, मैं आपको आपके प्रभु श्री राम के दर्शन अपनी आँखों के माध्यम से कराना चाहता हूं .... कृपा करके मेरे शरीर के नष्ट होने के पहले अपने प्रभु के दर्शन करें पवनपुत्र।”

अब हनुमान की निगाहें नीलाभ की आँखों में दिख रहे प्रभु श्री राम की बालरुप मूर्ति पर थीं। मूर्ति पर नजर पड़ते ही कुछ पलों के लिये हनुमान भगवान राम की भक्ति में खो गए।

भगवान राम के बालरुप के मनोहारी दर्शन करने के पश्चात् हनुमान की निगाहें नीलाभ के तेजी से पिघलते शरीर पर पड़ी।

“आप दिव्य हो नीलाभ और आपकी भावनाएं भी अत्यंत पवित्र हैं .... मैं आपसे अत्यंत प्रसन्न हुआ, इसलिये मैं आपके शरीर को महादेव की शक्तियां धारण करने का आशीर्वाद देता हूं।”

इतना कहकर हनुमान ने नीलाभ के निश्चेत होते शरीर को देखा और नीलाभ के माथे पर अपना हाथ रख दिया।

हनुमान के ऐसा करते ही नीलाभ के शरीर पर फिर से तेजी से माँस चढ़ने लगा और कुछ ही क्षणों में नीलाभ अपने असली रुप में आ गया।

नीलाभ ने ठीक होते ही अपनी आँख बंद कर हनुमान को प्रणाम किया, पर जब नीलाभ ने अपनी आँखें खोलीं, तो वह इस समय गंधमादन पर्वत पर स्थित कमल सरोवर के पास खड़ा था।

परंतु कमल सरोवर के पास स्थित हनुमान रुपी दिव्य वृक्ष अब अपने स्थान पर नहीं था।

नीलाभ ने एक बार फिर हनुमान को मन ही मन प्रणाम किया और फिर महादेव के अगले अवतार पिप्पलाद को ढूंढने चल दिया।

◆ ◆ ◆

चैपटर-14

रहस्यमई फीनीक्स

30.01.2002, बुधवार, ब्लैकून

ओरस इस समय ब्लैकून के अंदर स्थित समयचक्र पर बैठा हुआ था। इस समय ओरस के हाथ में 25 जनवरी सन 2027 का पेरिस का न्यूजपेपर थमा था।

ओरस ने आश्चर्य से एक बार अपने शरीर को देखा और फिर ब्लैकून पर एक नजर मारी। इसके बाद ओरस की निगाह लगातार अपने हाथ में पकड़े न्यूजपेपर पर थी, जिसमें बुरी तरह से जली हुई जेनिथ की लाश की फोटो दिख रही थी।

"हे मेरे ईश्वर! यह सब क्या हो रहा है?" ओरस मन ही मन बुदबुदाया- "मैं तो भविष्य में 25 वर्ष आगे इसलिये गया था कि देख सकूं कि मैं और जेनिथ एक साथ किस प्रकार से रह रहे हैं? .... पर 25 वर्ष आगे का भविष्य तो मेरी सोच से बिल्कुल ही अलग निकला। ना तो जेनिथ मुझे पहचान पाई और ना ही उसे किसी के बारे में कुछ पता था? और मेरे पिता गिरोट जाने कहां से जेनिथ के पास पहुंच गये? जबकि वह तो 20 वर्ष पहले ही डेल्फानो पर मारे जा चुके थे। इसके बाद जब मैं छिप कर जेनिथ के घर पहुंचा तो मुझे जेनिथ के घर के एक कमरे में सन राइजिंग सहित उस पर सफर कर रहे सभी लोगों की फोटो दिखाई दी, पर सुयश व शैफाली को छोड़कर सभी की फोटो पर क्रॉस का निशान लगा था। इसका मतलब जेनिथ जानबूझकर मुझसे झूठ बोल रही थी। पर उसने बाकी लोगों की फोटो पर क्रॉस क्यों लगा रखा था? क्या सुयश और शैफाली को छोड़कर भविष्य में सभी लोग मारे जा चुके हैं? ... और जब मैं इन सभी रहस्यों को जानने के लिये जेनिथ से मिलने गया, तो जेनिथ भी मारी जा चुकी थी। .... पर .... पर मात्र एक घंटे में 1 साल 2 दिन का समय कैसे व्यतीत हो गया? और मुझे इसका पता भी नहीं चला। ..... पर सबसे बड़ी

बात तो यह है कि ज़ेनिक्स मेरी बात का जवाब क्यों नहीं दे रही थी? .... और ... और इस समय ज़ेनिक्स कहां है?"

ज़ेनिक्स को अपने स्थान से गायब देख जाने क्यों ओरस को बहुत अजीब सा महसूस होने लगा? क्योंकि ज़ेनिक्स ने इससे पहले कभी भी ऐसा नहीं किया था?

अब ओरस ब्लैकून में चारो ओर घूमकर ज़ेनिक्स को ढूंढने लगा, पर ओरस को ज़ेनिक्स ब्लैकून के चारो भागों में कहीं नजर नहीं आई?

थक-हार कर ओरस वापस आकर समयचक्र पर बैठ गया कि तभी ओरस को जेनिथ की आवाज सुनाई दी।

"नक्षत्रा-नक्षत्रा .... क्या तुम मेरी आवाज सुन रहे हो?" जेनिथ ने ओरस रुपी नक्षत्रा को पुकारते हुए कहा।

यह देख ओरस ने झपटकर एक हेडफोन सरीखे यंत्र को अपने सिर पर चढ़ाते हुए कहा- "हां जेनिथ मैं तुम्हारी बात सुन रहा हूं। कहो क्या कहना चाहती हो?"

ओरस की आवाज सुन मानों जेनिथ की जान में जान आई- "थैंक गॉड नक्षत्रा कि तुम अब भी मेरे साथ हो। मैं तुम्हें पिछले एक दिन से लगातार पुकार रही हूं, पर तुमने मेरी आवाज नहीं सुनी। तुम ठीक तो हो ना नक्षत्रा? और तुम पिछले एक दिन से कहां गायब हो गये थे? क्या कुछ ऐसा है, जो कि तुम मुझसे छिपा रहे हो नक्षत्रा?"

जेनिथ तो जैसे एक साँस में ही सारे प्रश्न पूछ लेना चाह रही थी।

"नही-नहीं तुम घबराओ नहीं जेनिथ। मुझे कुछ नहीं हुआ है?" ओरस ने सफाई देते हुए कहा- "मैं बस अपने एक नये प्रयोग में व्यस्त हो गया था। शायद इसीलिये मैं तुम्हारी बात सुन नही पाया। ... पर अब मैं अपना प्रयोग पूर्ण कर चुका, इसलिये तुम्हारे पास उपस्थित हूं।"

यह सुनकर जेनिथ ने राहत की साँस ली- "तुमसे बात ना होते देख मैं तो बिल्कुल घबरा ही गई थी। चलो अच्छा ये बताओ कि तुमने किस नई चीज का निर्माण कर लिया?"

अब जेनिथ की आवाज में खुशी झलकने लगी थी।

“सॉरी जेनिथ, पर मुझे तुमसे थोड़ा सा समय और चाहिये। ... वो क्या है कि अभी मुझे अपने प्रयोग की एक आखिरी बार टेस्टिंग करनी है। उसके बाद ही मैं तुम्हें उसके बारे में बता पाऊंगा। .... तब तक के लिये मुझे आज्ञा दो।” ओरस ने अपने उलझे बालों में अपनी उंगली फंसाकर उसे ऊपर करते हुए कहा।

“ओ.के. इसका मतलब मेरे लिये कुछ सरप्राइज है। ... ठीक है, तुम पहले अपना प्रयोग पूरा कर लो, फिर मैं तुमसे बात करुंगी।”

इतना कहकर जेनिथ चुप हो गई, पर ओरस की उलझन अभी भी बरकरार थी। उसे अब ज़ेनिक्स की चिंता होने लगी थी।

तभी जाने क्यों ओरस को अपने पिता के कहे अंतिम शब्द याद आ गये- “ “ज़ेनिक्स ..... संरक्षिका का ध्यान रखना और समय आने पर उसका रहस्य ओरस को बता देना।”

“यह संरक्षिका क्या है? और पिताजी ने समय आने पर कौन सा रहस्य ज़ेनिक्स को मुझे बताने के लिये कहा था?”

ओरस ने एक बार फिर समयचक्र को देखा और उस पर से खड़ा हो गया।

अब ओरस धीरे-धीरे चलता हुआ ब्लैकून के दूसरे भाग में आ गया। इस भाग में देवता नोवान की एक बड़ी सी प्रतिमा लगी थी। देवता नोवान के कंधे पर एक फीनीक्स पक्षी बैठा था।

देवता की प्रतिमा के नीचे, सामने की ओर एक गोल काँच का पारदर्शी केबिन बना था।

उस पारदर्शी केबिन को देख ओरस को एक बार फिर अपने पिता की बात याद आ गई- “ब्लैकून का यह भाग ब्रह्मांड की सभी घटनाओं का संरक्षण करता है। यानि की यहां से तुम ब्रह्मांड की अतीत में बीती हुई किसी भी घटना को देख सकते हो, परंतु इस काँच के केबिन में प्रवेश करने के लिये, तुम्हें देवता नोवान से आज्ञा मांगनी होगी और वह आज्ञा तभी देंगे, जब उन्हें तुम्हारा कार्य उचित लगेगा?”

अपने पिता के कहे शब्दों को याद कर ओरस देवता नोवान के सामने आ खड़ा हुआ। उसने एक बार अपना सिर उठाकर देवता नोवान को देखा

और फिर जोर से आवाज लगाते हुए कहा- “देवता नोवान! मैं गिरोट पुत्र ओरस आज स्वयं को बहुत उलझन में महसूस कर रहा हूं। आज मेरी उलझन को समाप्त करने के लिये यहां पर ज़ेनिक्स भी उपस्थित नहीं है। मुझे पता है कि आपने मेरे बचपन में चुपके-चुपके मुझे बहुत सा ज्ञान दिया था। इसलिये हे देवता नोवान आप इस समय भी मेरा मार्गदर्शन करें।”

यह कहकर ओरस चुप हो गया और देवता नोवान की मूर्ति की ओर सिर उठाकर देखने लगा।

तभी देवता नोवान के कंधे पर बैठा फीनीक्स पक्षी स्वतः ही जीवित हो गया और वहां रखे काँच के केबिन के ऊपर उड़ने लगा।

इसी के साथ अग्नि के समान सुर्ख लाल और पीले रंग में रंगे उस फीनीक्स पक्षी ने अपने मुंह से एक अजीब सी तरंगें निकालीं।

जैसे ही वह तरंगें उस काँच के केबिन से टकराईं, उसका द्वार खुल गया और वह फीनीक्स पक्षी उस काँच के केबिन में प्रवेश कर गया।

यह देख ओरस धीरे-धीरे चलता हुआ उस काँच के केबिन में प्रवेश कर गया। जैसे ही ओरस ने केबिन में प्रवेश किया, वह केबिन सुर्ख लाल रंग की रोशनी से भर गया।

वह रोशनी इतनी तेज थी कि कुछ क्षणों के लिये ओरस को कुछ दिखाई ही नहीं दिया। धीरे-धीरे उस लाल रोशनी की चमक कम होने लगी।

अब ओरस ने अपने आपको एक ऐसे कमरे में पाया, जिसके बीचोबीच एक फीनीक्स पक्षी की भांति एक लाल रंग की बड़ी सी कुर्सी रखी थी, जिसके चारो ओर से तेज लाल रंग की ऊर्जा निकल रही थी।

उस कुर्सी को देखकर ऐसा लग रहा था कि मानो कोई सजीव फीनीक्स पक्षी अपने पंख फैलाये ओरस को अपनी गोद में बैठने के लिये बुला रहा हो।

ओरस को कुछ समझ नहीं आया? पर वह आगे बढ़कर उस फीनीक्स कुर्सी पर बैठ गया।

ओरस के बैठते ही उस कुर्सी ने अपने पंखों को बंद कर ओरस के शरीर को अपने अंदर छिपा लिया। इसी के साथ ओरस को ऐसा लगा,

जैसे कि उसके पूरे बदन में आग लग गई हो।

ओरस को इस समय अपने शरीर पर एक तेज जलन का अहसास हो रहा था, पर यह अहसास ज्यादा देर तक नहीं रहा।

अचानक ओरस को हवा में उड़ता हुआ एक चश्मा अपनी ओर आता हुआ महसूस हुआ। जो कि पास आकर स्वयं ही ओरस की आँखों पर चढ़ गया।

उस चश्में का शीशा भी लाल रंग का ही था। शीशे के आँखों पर चढ़ते ही ओरस को अपने आसपास के दृश्य में बदलाव होता हुआ दिखाई देने लगा।

कुछ ही देर में ओरस के सामने एक दृश्य बिल्कुल साफ दिखाई दे रहा था, पर यह दृश्य को देखते ही ओरस की आँखें आश्चर्य से बिल्कुल फैल सी गईं।

तो आइये समय ना बरबाद करते हुए, हम भी ओरस को दिख रहे दृश्यों की ओर चलते हैं।

....

“मिस्टर गिरोट, क्या आप समयचक्र के प्रयोग के लिये पूरी तरह से तैयार हैं?” जेनिथ ने गिरोट की ओर देखते हुए पूछा।

गिरोट ने अपने माथे पर छलक आए पसीने की एक बूंद को अपने हाथों से पोंछा और हां की मुद्रा में अपना सिर हिला दिया।

गिरोट को हां की मुद्रा में सिर हिलाते देख जेनिथ समयचक्र की ओर बढ़ गई।

जेनिथ ने एक बार समयचक्र को ध्यान से देखा। समयचक्र पर फीनीक्स इंटरनेशनल के ‘लोगो’ के रुप में एक लाल रंग का फीनीक्स पक्षी बना था, जो कि अपने पंख फैलाए था।

अब जेनिथ सधे कदमों से समयचक्र की ओर बढ़ गई। इस समय जेनिथ के चेहरे पर एक विजयी मुस्कान दिखाई दे रही थी।

इस समय जेनिथ एक ऐसे कमरे में थी, जिसकी दीवारें बुलेटप्रूफ काँच की बनीं थीं। उस काँच के कमरे के बाहर बहुत से वैज्ञानिक और शोधकर्ता खड़े हुए थे।

उन शोधकर्ताओं के पीछे बहुत से पत्रकार अपने कैमरामैन को लिये खड़े थे।

सभी को जेनिथ के इस समयचक्र के चलने का इंतजार था, जो जेनिथ और गिरोट को 30 वर्ष पीछे ले जाने वाला था।

एक तरह से जेनिथ के इस पूरे प्रयोग का 'लाइव टेलीकास्ट' किया जा रहा था। आखिर 'टाइम मशीन' रोज-रोज थोड़े ही बनती है।

सुरक्षावश उस काँच के कमरे में जेनिथ और गिरोट के सिवा कोई नहीं था?

समयचक्र इस समय एक गोल से प्लेटफार्म पर रखा था।

अब जेनिथ जाकर समयचक्र की कुर्सी के ऊपर बैठ गई और गिरोट समयचक्र से जुड़े कुछ बटनों से छेड़छाड़ करने लगा।

कुछ ही देर में एक तेज आवाज के साथ समयचक्र की मशीन शुरु हो गई। समयचक्र को शुरु होता देख गिरोट काफी उत्तेजित सा नजर आने लगा।

वह लगातार समयचक्र से जुड़े बटनों से खेल रहा था।

कुछ देर बाद गिरोट स्वयं भी समयचक्र के प्लेटफार्म पर आकर खड़ा हो गया। तभी समयचक्र के प्लेटफार्म से 2 बड़े से छल्ले निकले और समयचक्र को घेरकर तेजी से उसके चारो ओर नाचने लगे।

उन दोनों छल्लों की गति लगातार बढ़ती जा रही थी। कुछ ही देर में उन छल्लों की गति इतनी बढ़ गई कि कमरे के बाहर खड़े लोगों को समयचक्र दिखाई देना ही बंद हो गया।

इस समय गिरोट और जेनिथ दोनों उन छल्लों के बीच में ही थे। फर्क सिर्फ इतना था कि गिरोट प्लेटफार्म पर खड़े होकर समयचक्र की मशीन को नियंत्रित करने की कोशिश कर रहा था और जेनिथ समयचक्र की कुर्सी पर आँख बंद किये हुए निश्चिंतता से बैठी थी।

अब गिरोट ने समयचक्र के नीचे लगे एक लीवर को ऊपर की ओर कर दिया और वहां लगी एक पट्टीनुमा स्क्रीन पर समय को सेट करने लगा।

तभी अचानक से जाने क्या हुआ और समयचक्र के नीचे बने प्लेटफार्म को एक तेज झटका लगा।

इस अंजाने तीव्र झटके की वजह से गिरोट के पैर लड़खड़ाए और गिरोट समयचक्र की कुर्सी की ओर गिरने लगा।

स्वयं को गिरने से बचाने के लिये गिरोट ने समयचक्र में लगे उस लीवर को पकड़ लिया। गिरोट के ऐसा करते ही उसके शरीर के भार से वह लीवर स्वतः ही नीचे की ओर दब गया।

इसी के साथ उन दोनों छल्लों के नाचने की गति इतनी तेज हो गई कि समयचक्र से चिंगारियां सी निकलने लगीं।

इन अजीब सी आवाजों को सुनकर जेनिथ ने घबराकर अपनी आँखें खोल दीं और डरी-डरी सी समयचक्र को देखने लगी।

गिरोट के हाथ से लीवर दबते ही समयचक्र की पट्टीनुमा स्क्रीन पर समय अपने आप बदलने लगा और इससे पहले कि गिरोट कुछ कर पाता, चिंगारियां छोड़ते हुए समयचक्र में एक तीव्र धमाका हुआ और जेनिथ का शरीर हवा में उड़ता हुआ एक काँच की दीवार से आ टकराया।

केबिन से बाहर खड़े लोग इस अंजान धमाके से घबरा गए। कुछ लोगों के मुंह से तो तेज चीख भी निकल गई।

तभी पूरे कमरे में एक तेज नीली ऊर्जा चारो ओर बिखर गई। उस नीली ऊर्जा की चमक इतनी तीव्र थी कि कमरे के बाहर खड़े सभी लोगों की आँखें अपने आप बंद हो गईं।

तभी वह सारी ऊर्जा वापस उसी समयचक्र में समा गई, जहां से वह निकली थी और इसी के साथ समयचक्र गिरोट सहित अपने स्थान से गायब हो गया।

यह दृश्य देख ओरस हैरान हो गया क्योंकि यह वही दृश्य था, जिसमें जेनिथ मारी गई थी। तभी ओरस की आँखों के सामने का दृश्य बदल गया।

अब ओरस को समयचक्र एक नीले रंग के प्रकाशपुंज के रुप में पृथ्वी की बाहरी कक्षा के चक्कर लगाता हुआ दिखाई दिया। समयचक्र अब एक नीली ऊर्जा के ग्लोब की भांति प्रतीत हो रहा था।

तभी सुदूर आकाशगंगा में एक स्थान पर छोटा सा धमाका हुआ और उससे निकलकर एक सूक्ष्म लाल रंग की किरण समयचक्र की ओर आई। इसी के साथ पृथ्वी की बाहरी कक्षा में घूम रहा समयचक्र अपनी दिशा परिवर्तित करके उस धमाके की ओर खिंचने लगा।

अब समयचक्र की गति बहुत ज्यादा तेज हो गई थी। वह एक प्रकाशकिरण की भांति उस धमाके की ओर जा रहा था।

जिस स्थान पर वह रहस्यमय धमाका हुआ था, उस स्थान पर लाल रंग का आँख के समान एक द्वार बन गया था, जो कि तेजी से अपना आकार छोटा करता जा रहा था।

धीरे-धीरे वह द्वार अपने स्थान से गायब हो गया, पर उसके गायब होने के पहले ही समयचक्र उस द्वार में समा चुका था।

अब जिस स्थान पर वह द्वार बना था, उस स्थान पर ब्लैक होल दिखाई देने लगा था।

ओरस की निगाहें अभी भी उस विचित्र घटना पर बनी हुई थीं।

समयचक्र अब पूरी तरह से अनियंत्रित होकर किसी अंधेरे कुंए में गिरता हुआ सा प्रतीत हो रहा था।

तभी ओरस को उस अंधे कुंए में एक स्थान पर तेज पीली रोशनी दिखाई दी, जो कि शनैः-शनैः पास आती जा रही थी।

कुछ ही देर में समयचक्र पूरी तरह से उस पीली रोशनी में नहा उठा। अब ओरस को समयचक्र के आसपास का दृश्य साफ नजर आने लगा।

वह कोई हरा-भरा छोटा सा ग्रह था, जिसके आसमान पर इस समय 2 सूर्य अपनी पीली किरणें बिखेरते हुए चमक रहे थे।

पर ओरस की नजर जैसे ही उस ग्रह पर पड़ी, उसके आँखें आश्चर्य से फैल गईं और उसके मुंह से एक ही शब्द निकला- “डेल्फानो!”

उधर समयचक्र के निकलते ही वह द्वार अपने आप अदृश्य हो गया, जिसमें से यात्रा करके समयचक्र डेल्फानो पर पहुंचा था।

अब समयचक्र उस ग्रह के गुरुत्वाकर्षण की वजह से तेजी से नीचे की ओर जाने लगा।

कुछ ही देर में समयचक्र उस ग्रह पर बनी एक छोटी सी झील में जा गिरा। समयचक्र के गिरने की वजह से उस झील का पानी हवा में उछल गया।

वह झील ज्यादा गहरी नहीं थी। समयचक्र झील के पानी को चीरता हुआ उसकी तली में जाकर रुक गया।

उस नीले रंग की विचित्र ऊर्जा ने अभी भी समयचक्र को अपने घेरे में ले रखा था, जिसकी वजह से गिरोट बेहोशी की हालत में अभी भी समयचक्र से चिपका हुआ था।

तभी समयचक्र अपने स्थान से हिला और स्वतः ही झील की सतह की ओर चल दिया।

झील की सतह पर पहुंचकर भी समयचक्र रुका नहीं, बल्कि वह झील के किनारे की ओर जाने लगा।

झील के किनारे पहुंचने पर अचानक से वह नीली ऊर्जा अपने स्थान से हिली और समयचक्र से अलग होकर एक मानव शरीर धारण करने लगी।

ओरस अपनी फटी-फटी आँखों से उस दृश्य को देख रहा था, क्योंकि अब उस नीली ऊर्जा ने ज़ेनिक्स का रुप धारण कर लिया था।

आज शायद पहली बार ओरस ने ज़ेनिक्स को इतने पास से देखा था। तभी ज़ेनिक्स का चेहरा देखते हुए ओरस अचानक से चौंक गया क्योंकि इस समय उसे ज़ेनिक्स बिल्कुल जेनिथ के जैसी दिखाई दे रही थी।

“तो क्या???? तो क्या जेनिथ ही ज़ेनिक्स है?” ओरस के मुंह से यह शब्द बिल्कुल कंपकंपाते हुए निकल रहे थे- “इसका मतलब कि जब जेनिथ समयचक्र में दुर्घटना का शिकार हुई थी, तो ... तो उसके शरीर की

ऊर्जा ही ज़ेनिक्स के रुप में परिवर्तित हो गई थी। .... पर ...पर मायावन से तो दोनों ही साथ में थीं ..... यह कैसे हो सकता है? और ... और ज़ेनिक्स ने तो कभी भी नहीं बताया जेनिथ के बारे में? ..... हां याद आया। उस दिन वह कह रही थी कि शायद कभी उसका शरीर हुआ करता था? .... फिर .. कहीं ऐसा तो नहीं कि ज़ेनिक्स ने मुझे जानबूझकर भविष्य में भेजा था? ..... कहीं इस पूरे घटनाक्रम के पीछे जेनिथ का हाथ तो नहीं? .... मुझे लग रहा था कि मैं जेनिथ के मस्तिष्क से खेल रहा था ... पर ... पर अब जाने क्यों मुझे ऐसा महसूस हो रहा है कि जेनिथ सबकुछ पहले से ही जानती थी।”

इस समय ओरस का मस्तिष्क मानों उसके वश में ही नहीं था। वह तो बस सोचे ही जा रहा था .... अच्छा .... बुरा .... इन सबसे परे थे इस समय उसके विचार, पर ओरस की निगाहें अभी भी समयचक्र के पास खड़ी जेनिथ .... म ... म .... मेरा मतलब है कि ज़ेनिक्स की ओर थे।

अब ज़ेनिक्स ने गिरे पड़े गिरोट को उठाने की असफल चेष्टा की, परंतु ज़ेनिक्स के हाथ गिरोट के आर-पार हो गये। यह देख ज़ेनिक्स घबराकर अपना हाथ और शरीर देखने लगी।

इस समय ज़ेनिक्स समझ नहीं पा रही थी कि उसका शरीर इस नीली ऊर्जा के रुप में कैसे बदल गया? वह तो बस जल्दी से जल्दी गिरोट को उठाना चाह रही थी।

तभी ज़ेनिक्स को वातावरण हल्के से लाल रंग का होता हुआ महसूस हुआ। ज़ेनिक्स ने अपना सिर उठाकर ऊपर आसमान की ओर देखा।

वह लाल रोशनी ऊपर आसमान की ओर हो रही थी, जो कि शनैः-शनैः ज़ेनिक्स की ओर ही आ रही थी।

अब ज़ेनिक्स हैरानी से ऊपर की ओर देखने लगी। कुछ ही देर में वह लाल रोशनी ज़ेनिक्स के पास पहुंचकर जमीन पर रुक गई। ऐसा लग रहा था कि मानो वह लाल रोशनी इस समय समयचक्र को निहार रही थी।

तभी वह लाल रोशनी बिल्कुल गायब हो गई और उसकी जगह पर एक इंसान खड़ा नजर आने लगा, जिसे देखते ही ओरस पहचान गया। वह

और कोई नहीं बल्कि डेल्फानो के देवता नोवान थे, जिनके कंधे पर एक फीनीक्स पक्षी बैठा था।

अब नोवान ध्यान से ज़ेनिक्स की ओर देखने लगा। तभी देवता नोवान के कंधे पर बैठे फीनीक्स पक्षी ने ज़ेनिक्स को देख जोर-जोर से आवाज करना शुरु कर दिया।

फीनीक्स की आवाज सुन एक पल के लिये ज़ेनिक्स घबरा गई, पर तभी ज़ेनिक्स को याद आया कि उसका शरीर तो है ही नहीं।

अब फीनीक्स, ज़ेनिक्स को छोड़ उड़कर गिरोट के शरीर के पास आ गया और अपने पंखों से गिरोट के शरीर को ढक लिया।

ज़ेनिक्स आश्चर्य से फीनीक्स की गतिविधियां देख रही थी।

कुछ देर बाद फीनीक्स गिरोट के शरीर से हट गया, पर फीनीक्स के हटते ही गिरोट अपने स्थान से उठकर बैठ गया और आश्चर्य से अपने चारो ओर देखने लगा।

पर अपने चारो ओर निगाह जाते ही गिरोट बुरी तरह से घबरा गया। अब वह कभी नीली ऊर्जा वाली ज़ेनिक्स को, कभी हवा में उड़ते फीनीक्स पक्षी को तो कभी डेल्फानो की धरती को देख रहा था।

चूंकि नोवान का शरीर भी इंसान की ही तरह था, इसलिये सबकुछ देखने के बाद गिरोट घबराकर नोवान के पास आ खड़ा हुआ।

“आप कौन हो? और मैं इस समय कहां हूं?” गिरोट के शब्दों में घोर आश्चर्य नजर आ रहा था- “क्या मैं मर चुका हूं?”

पर गिरोट के शब्दों को सुन नोवान ने कोई जवाब देने की जगह फीनीक्स पक्षी की ओर अपने दाहिने हाथ की तर्जनी उंगली उठाई।

नोवान के ऐसा करते ही फीनीक्स पक्षी वापस आकर नोवान के कंधे पर बैठ गया।

“मेरा नाम नोवान है और तुम अभी मरे नहीं हो, बल्कि भटककर इस ग्रह पर आ गए हो। इस ग्रह का नाम डेल्फानो है और मैं इस ग्रह का आखिरी जीवित इंसान हूं।” नोवान ने ओरस की ओर देखते हुए जवाब

दिया- “तुम कौन हो? और तुम्हारे इस नीली ऊर्जा वाले साथी का क्या नाम है?”

नोवान के शब्द को सुन गिरोट ने ध्यान से ज़ेनिक्स की ओर देखते हुए कहा- “य ..यह मेरे साथ नहीं है। मैं तो इसे जानता तक नहीं हूं।”

गिरोट की बात सुनकर ज़ेनिक्स ने कुछ कहने की कोशिश की, पर उसके मुंह से आवाज नहीं निकली। यह देख नोवान ने फीनीक्स को देखते हुए अपने मुंह से एक अजीब सी सीटी जैसी ध्वनि निकाली।

उस सीटी की आवाज को सुनते ही फीनीक्स पक्षी, नोवान के कंधे से उड़ा और अपने पंख से ज़ेनिक्स के शरीर को ढकने लगा।

वैसे तो ज़ेनिक्स का कोई शरीर ही नहीं था, पर कुछ देर के लिये ही सही फीनीक्स ने ज़ेनिक्स को पूरी तरह से ढक लिया।

मात्र 10 सेकेण्ड के बाद ही फीनीक्स, ज़ेनिक्स के शरीर से हट गया, पर अब आश्चर्यजनक तरीके से ज़ेनिक्स बोलने लगी थी।

“मैं जेनिथ हूं गिरोट।” ज़ेनिक्स ने कहा- “तुम्हारे समयचक्र की ऊर्जा से मेरा शरीर नष्ट हो गया है, पर पता नहीं कैसे इस नीली ऊर्जा ने मेरी आत्मा को अब भी बांधे रखा है? मैं तो तुमसे बात भी नहीं कर पाती, पर पता नहीं इस फीनीक्स पक्षी ने मेरे साथ क्या किया कि मेरी आवाज आ गई? .... जाने क्यों इस समय ऐसा लग रहा है कि जैसे इस फीनीक्स पक्षी ने मुझे नया जीवन दे दिया हो?”

ज़ेनिक्स की बात सुन नोवान मुस्कुरा उठा- “इसे तुम अपना नया जीवन ही समझो जेनिथ और तुम लोगों को यह फीनीक्स पक्षी ही अपनी शक्तियों से यहां लाया है। शायद मेरे इस फीनीक्स पक्षी को तुम्हारे यान पर लगा वह फीनीक्स का निशान पसंद आ गया हो? इसलिये यह जानबूझकर तुम दोनों को यहां लाया हो।”

नोवान ने समयचक्र पर लगे फीनीक्स के निशान की ओर इशारा करते हुए कहा- “और आज से मैं तुम्हें जेनिथ नहीं बल्कि ज़ेनिक्स ही कहूंगा। .... शायद यही नाम तुम्हारे लिये सही रहेगा जेनिथ और फीनीक्स का मिला जुला रुप ‘ज़ेनिक्स’, जिसे समय ने उलझाकर डेल्फानो पर ला

दिया। शायद किसी ऐसे नवनिर्माण के लिये, जो भविष्य में समय को भी बांधने में सफल हो सके।"

"आप क्या कह रहे हैं नोवान, हमें कुछ समझ में नहीं आ रहा है?" ज़ेनिक्स ने नोवान की ओर देखते हुए पूछा।

"अभी कुछ भी बताने का उचित समय नहीं है ज़ेनिक्स।" नोवान ने टूटे-फूटे समयचक्र को निहारते हुए कहा- "पर यकीन मानो कि फीनीक्स की शक्ति अबाध है, अगर इसने तुम्हें यहां लाने का फैसला लिया है, तो अवश्य ही कुछ सोच-समझ कर यह फैसला लिया होगा। इसलिये मुझ पर अविश्वास प्रकट मत करो और बिना कुछ पूछे, चुपचाप मेरे पीछे आओ?"

पता नहीं नोवान के शब्दों में ऐसा क्या था कि ज़ेनिक्स और गिरोट बिना कुछ पूछे नोवान के पीछे-पीछे चल पड़े।

इसी के साथ ओरस की आँखों के सामने से सभी दृश्य गायब हो गये।

अब ओरस ने अपने चेहरे को अपने हाथों से टटोलकर देखा, इस समय ओरस की आँखों पर चढ़ा वह लाल रंग का चश्मा कहीं गायब हो चुका था।

चश्मे को गायब देख ओरस ने सामने की ओर देखा। ओरस के सामने देखते ही फीनीक्स पक्षी वाली कुर्सी ने अपने पंख फैला दिये।

अब ओरस फीनीक्स कुर्सी से उतरकर काँच के केबिन से बाहर आ गया।

ओरस के काँच के केबिन से बाहर निकलते ही फीनीक्स पक्षी भी काँच के केबिन से बाहर आ गया। इसी के साथ केबिन का दरवाजा स्वतः ही बंद हो गया।

उधर फीनीक्स पक्षी उड़कर वापस देवता नोवान की मूर्ति के कंधे पर बैठ गया।

अब ओरस वापस समयचक्र वाले कमरे की ओर बढ़ गया, परंतु इस समय उसके चेहरे पर बहुत निश्चिंतता के भाव नजर आ रहे थे। शायद यह भाव अब ओरस की जिंदगी में भी बदलाव लाने वाले थे।

चन्द्र शक्ति

तिलिस्मा 7.12

सुयश सहित सभी कैश्वर के बनाये हुए समयजाल में फंसकर फ्रीज हो चुके थे और किसी चमत्कार के होने का इंतजार कर रहे थे?

तभी जेनिथ ने अपने मन में नक्षत्रा को याद किया- “यह क्या हुआ नक्षत्रा? यह अचानक से समय कैसे रुक गया? क्या इस समय को तुमने रोका है?”

“नहीं जेनिथ, इस बार समय को मैंने नहीं रोका है।” नक्षत्रा ने कहा- “मुझे लग रहा है कि इस बार समय को कैश्वर ने रोका है? तभी तुम भी एक स्थान पर फ्रीज हो गई हो।”

“अब क्या होगा नक्षत्रा?” जेनिथ ने व्याकुल स्वर में कहा- “यह इस बार किस प्रकार का मायाजाल कैस्पर ने बनाया है? अरे अगर कोई हिल ही नहीं पायेगा, तो इस मायाजाल से निकलेगा कैसे?”

जेनिथ ही क्या, इस खतरे को कोई भी नहीं समझ पा रहा था? ऐसी स्थिति में ना तो कोई एक दूसरे से बात कर पा रहा था? और ना ही अपने शरीर को हिला पा रहा था। बस वह सभी अपने मन में सोच पा रहे थे।

तभी रोबोट के हाथ में पकड़ा ‘समय’ वाला बोर्ड भी गायब हो गया। अब रोबोट के पास सिर्फ 3 बोर्ड ही बचे थे- “गति, बल और कार्य”

सभी को इसी प्रकार फ्रीज हुए काफी देर हो गया, पर कोई भी इस स्थिति से बाहर निकलने का प्लान नहीं बना पा रहा था।

इस समय बस एक ही व्यक्ति था, जो कि हिल डुल रहा था और वह था ब्लैकून में बैठा राजकुमार ओरस, जो कि अपना सिर पकड़े समयचक्र की कुर्सी पर बैठा था।

तभी हवा में तैरता हुआ ज़ेनिक्स का नीला शरीर वहां प्रकट हुआ।

ज़ेनिक्स को अचानक देखकर ओरस चौंक सा गया। पर तुरंत ही उसने स्वयं के मन को नियंत्रित करते हुए कहा- “तुम कहां थी ज़ेनिक्स? मैं

तुम्हें काफी समय से पूरे ब्लैकून में ढूंढ रहा था। यहां तक कि मैंने तुम्हें भविष्य से भी आवाज लगाई थी पर तुमने उस समय भी मेरी आवाज का कोई उत्तर नहीं दिया था? क्या कुछ ऐसा है जो तुम मुझसे छिपा रही हो ज़ेनिक्स?"

"मैं कुछ देर के लिये ब्लैकून से बाहर गई थी। इस वजह से मैंने तुम्हारी आवाज को सुन कोई उत्तर नहीं दिया था? मुझे पता है कि तुम्हारे मस्तिष्क में इस समय बहुत से प्रश्न घूम रहे हैं, परंतु अभी मुझसे कुछ मत पूछो ओरस? अभी मेरे जवाब देने का उचित समय नहीं आया है। पर यकीन मानो जल्द ही वह समय आने वाला है जब मैं तुम्हें तुम्हारे सभी प्रश्नों का उत्तर दूंगी। पर अभी तुम्हें जेनिथ की परेशानियों को दूर करना चाहिये इस समय वह तिलिस्मा के एक द्वार में पूरी तरह से फंस गई है और उसे इस द्वार से सिर्फ तुम ही बचा सकते हो?"

"पर अगर मैं इस समय जेनिथ को बचाने के लिये गया तो जेनिथ के सामने इसी समय मेरा रहस्य खुल जायेगा?" ओरस ने उलझे-उलझे से स्वर में कहा।

अब ओरस थोड़ा परेशान सा नजर आने लगा।

"इतना परेशान क्यों हो ओरस?" ज़ेनिक्स ने ओरस को देखते हुए कहा- "यह समय तो एक ना एक दिन आना ही था। कब तक तुम जेनिथ और उसके दोस्तों के छिप कर रह पाते? कैश्वर ने यह द्वार तुम्हें ही ध्यान में रखकर बनाया है, इसलिये तुम्हारी सहायता के बिना जेनिथ और उसके साथी इस द्वार को पार नहीं कर पायेंगे।"

"मुझे उन सभी की सहायता करने में कोई परेशानी नहीं है, पर .... पर मैं अभी जेनिथ के सामने नहीं आना चाहता था।" ओरस की आवाज में व्यग्रता साफ नजर आ रही थी- "अब वह बार-बार मुझसे मेरे बारे में पूछेगी ... और फिर ... और फिर सब कुछ मुझे उसे बताना ही होगा?"

"लेकिन तुम्हारे पास और कोई उपाय भी नहीं है ओरस? तुम्हें उनकी मदद करनी ही होगी।" ज़ेनिक्स ने ओरस को समझाते हुए कहा।

ज़ेनिक्स की बात सुनकर ओरस ने धीरे से अपना सिर हिलाया और समयचक्र से उठकर खड़ा हो गया। अब ओरस चलता हुआ एक मशीन के पास जाकर खड़ा हो गया।

मशीन के पास पहुंचकर ओरस ने अपने दोनों हाथों को ऊपर की ओर उठाया। ओरस के ऐसा करते ही मशीन से एक बैंगनी रंग की धातु की कवच जैसी पोशाक प्रकट हुई और स्वतः ही ओरस के शरीर पर पहन गई।

अब ओरस एक महाबलशाली योद्धा की भांति प्रतीत हो रहा था। ओरस के हाथों की मसल्स दूर से ही चमक मार रहे थे और उसके सुनहरे बाल हवा में लहरा रहे थे।

अब ओरस ने अपने दाहिने हाथ की कलाई पर बंधे ब्रेसलेट पर लगा एक हरा बटन दबा दिया, जिसके फलस्वरुप ओरस का शरीर ब्लैकून से गायब हो गया और अगले ही पल वह उस ग्रह पर सबके सामने प्रकट हो गया।

जैसे ही ओरस पर सभी की निगाह पड़ी, वह उसे तुरंत पहचान गये।

“अरे यह तो वही योद्धा है, जिसने एक बार गैस वाली जगह पर जेनिथ की जान बचाई थी।” क्रिस्टी ने ओरस को निहारते हुए मन ही मन सोचा।

तभी जेनिथ की निगाह भी ओरस पर जा पड़ी। जेनिथ मंत्रमुग्ध सी ओरस को देख रही थी। ओरस की भी निगाह एक पल के लिये जेनिथ से जा टकराई, पर तुरंत उसने स्वयं को नियंत्रित किया और हवा में उड़ते हुए कैलाश पर्वत की ओर चल दिया।

“नक्षत्रा, क्या तुम इस योद्धा को देख रहे हो?” जेनिथ ने नक्षत्रा को पुकारते हुए कहा- “क्या तुमने कभी इससे पहले इस योद्धा को देखा है?”

“नहीं जेनिथ, मैं इस योद्धा का नहीं जानता।” ज़ेनिक्स ने ओरस की आवाज में जेनिथ से बात करना शुरु कर दिया- “और मुझे तो यह भी समझ में नहीं आ रहा कि इस योद्धा पर यहां के समय का कोई प्रभाव क्यों नहीं पड़ रहा?”

नक्षत्रा की बात सुन जेनिथ दुखी हो गई। दरअसल जब से उसे पता चला था कि किसी अंजान योद्धा ने उसकी जान बचाई थी, तब से उसे यही लग रहा था कि कहीं वह योद्धा नक्षत्रा ही तो नहीं है? पर आज उसके शक का अंत हो गया था।

अब जेनिथ बस हवा में उड़ते उस देवता जैसे योद्धा को देख रही थी, जो कि शनैः-शनैः कैलाश पर्वत के पास जा रहा था।

ओरस कैलाश पर्वत पर पहुंचकर उतर गया और चारो ओर देखने लगा।

“हो ना हो इस समय को गति देने वाला कुछ ना कुछ इस पर्वत पर ही होगा?” ओरस मन ही मन बुदबुदाया।

तभी ओरस की निगाह कैलाश पर्वत की ढलान पर अटकी एक बड़ी सी चट्टान की ओर गई। वह चट्टान ओरस को थोड़ी अजीब सी लगी, इसलिये ओरस ध्यान से उस चट्टान को देखने लगा।

अब ओरस को उस चट्टान के पीछे से पानी के बहने की आवाज सुनाई दी। ओरस ध्यान से उस आवाज को सुनने लगा।

“यह आवाज शत-प्रतिशत पानी के बहने की ही है।” ओरस ने अपने कानों पर जोर देते हुए कहा- “इसका मतलब कि इस चट्टान के पीछे जो पानी है, उस पर भी इस समय के रुकने का कोई प्रभाव नहीं पड़ा है। यानि की अगर इस चट्टान को हटाया जाये, तो यहां से पानी की धारा बह निकलेगी और .... और हो सकता है कि इसी के साथ यह रुका हुआ समय भी चलने लगे?

यह सोचकर ओरस ने अपनी बलशाली भुजाओं के एक झटके से ही उस भारी चट्टान को अपने हाथों में उठा लिया।

ओरस ने जैसे ही चट्टान को अपने हाथों में उठाया, उसके पीछे से जल की धारा फूट पड़ी और इसी के साथ रुका हुआ समय फिर से चलने लगा।

यह देख ओरस ने अपने हाथ में चट्टान को दूर उछाल दिया। पर इसके बाद जैसे ही ओरस पीछे पलटा, उसे अपनी ओर आते हुए सुयश, जेनिथ सहित सभी लोग दिखाई दिये।

उन्हें अपनी ओर आता देखकर ओरस बिना एक पल गंवाये अपनी जगह से गायब हो गया और वह ब्लैकून में प्रकट हुआ।

“बाल-बाल बचा, नहीं तो आज तो मेरा रहस्य खुल ही जाना था।” ओरस ने कहा।

उधर उस योद्धा को गायब होते देख सभी के बीच फिर से एक बार अटकलों का दौर शुरु हो गया।

“पता नहीं कौन था वह योद्धा? जो बार-बार इस तिलिस्म में प्रकट होकर हमें बचा रहा है।” जेनिथ ने उस योद्धा को याद करते हुए कहा- “उसका स्वरुप बिल्कुल देवताओं के समान था।”

जेनिथ तो जैसे उस योद्धा को भूल ही नहीं पा रही थी।

तभी सुयश की आवाज ने जेनिथ के सपनों को विराम दिया- “अब उस योद्धा के बारे में बाद में बात कर लेंगे, पहले हमें अपना ध्यान वापस इस तिलिस्म पर लगाना होगा।”

सुयश की बात सुन सभी कैलाश पर्वत से निकल रही उस अविरल जलधारा को निहारने लगे।

“कैप्टेन अंकल, मुझे तो ये अविरल जलधारा पावन नदी गंगा की प्रतीत हो रही है।” शैफाली ने अपने ज्ञान का परिचय देते हुए कहा- “क्योंकि गंगा की धारा ही महादेव की जटाओं से निकलती है और वही पवित्र गंगा की धारा ही समय को गति प्रदान कर सकती है। ..... और उधर देखिये अब रोबोट के हाथों में सिर्फ ‘बल और कार्य’ के ही बोर्ड बचे हैं।”

“इसका मतलब यह कैलाश पर्वत ही महादेव के शिवलिंग का प्रतीक है, तभी इससे महादेव की जटाएं और गंगा की धारा निकली है।” सुयश ने भी शैफाली की बात का समर्थन करते हुए कहा- “यानि की अब हमें कैसे भी करके कैलाश पर्वत से दूर हवा में लटके चन्द्रमा को कैलाश पर्वत के ऊपर लाकर लगाना होगा?”

“क्याऽऽऽऽऽ?” सुयश के शब्द सुन जेनिथ के चेहरे पर आश्चर्य के भाव उभर आये- “अब इतने विशाल चन्द्रमा को हम इस पर्वत तक कैसे ला पायेंगे?”

“हो सकता है कि यहां पर ही ‘बल’ का प्रयोग करना हो, तभी रोबोट के हाथ में पकड़ा अगला बोर्ड ‘बल’ का ही है।” तौफीक ने रोबोट के हाथ

में पकड़े बोर्ड की ओर इशारा करते हुए कहा।

अब सभी धीरे-धीरे कैलाश पर्वत की ओर चल दिये, पर जैसे-जैसे सभी आगे बढ़ रहे थे, गंगा की धारा की फुहार और ऊंची होती जा रही थी।

जब तक सभी पर्वत के नीचे पहुंचे, गंगा की धारा की फुहार चन्द्रमा तक पहुंचने लगी थी और वह पतित पावनी नदी, अपने पवित्र जल से चन्द्रमा को नहलाने लगी।

"अरे! अब गंगा की धारा तो चन्द्रमा तक जा पहुंची। देखो, गंगा की शुद्ध धारा की वजह से चन्द्रमा की चमक और बढ़ सी गई है।

तभी गंगा के पास जाती हुई शैफाली का पैर गंगा के जल में पड़ गया और इससे पहले कि कोई कुछ ओर समझ पाता, शैफाली का शरीर भारविहीन होकर हवा में तैरने लगा।

"अरे! यह शैफाली का शरीर गुरुत्वाकर्षण से मुक्त कैसे हो गया?" ऐलेक्स ने उछलकर शैफाली को पकड़ने का प्रयास करते हुए कहा।

पर जैसे ही ऐलेक्स का हाथ शैफाली के हाथ से टकराया, ऐलेक्स का शरीर भी शैफाली के शरीर की भांति भारविहीन हो हवा में तैरने लगा।

"अभी और कोई इन दोनों के शरीर को पकड़ने की कोशिश मत करना।" अलबर्ट ने चीख कर सभी को सावधान करते हुए कहा- "हमें पहले इस स्थान के तिलिस्म को ध्यान से समझना होगा।"

अलबर्ट की आवाज सुन किसी ने भी शैफाली व ऐलेक्स के शरीर को छूने की कोशिश नहीं की। ऐलेक्स और शैफाली का शरीर पहले की ही भांति हवा में तैर रहा था।

तभी ब्रूनो और ऐमू उड़ते हुए शैफाली के पास जा पहुंचे। ब्रूनो ने शैफाली के कपड़े को अपने मुंह से पकड़कर शैफाली को खींचने की कोशिश की, पर इस प्रयास में ब्रूनो भी उस गुरुत्वाकर्षण के मायाजाल में फंस गया।

अब ब्रूनो अपने पंख हिलाकर भी अपने शरीर को नियंत्रित नहीं कर पा रहा था। यह देख ऐमू उन सभी से थोड़ा दूर हटकर उड़ने लगा।

“शैफाली, क्या तुम हवा में अपना शरीर नियंत्रित कर पा रही हो?” सुयश ने तेज आवाज में शैफाली से पूछा।

“नहीं कैप्टेन अंकल, मैं हवा में अपना शरीर नियंत्रित नहीं कर पा रही हूं।” शैफाली ने कहा- “और कितनी भी शक्ति लगाकर एक ही स्थान पर घूम रही हूं?”

“कैप्टेन, आप मुझे भी शैफाली और क्रिस्टी के पास जाने की आज्ञा दीजिये।” क्रिस्टी ने सुयश की ओर देखते हुए कहा- “मैं अभी कुछ समय पहले भी तिलिस्मा के एक द्वार में कुछ इसी प्रकार की मुसीबत का सामना कर चुकी हूं। इसलिये मुझे इन दोनों से ज्यादा इस वातावरण का अभ्यास है।”

क्रिस्टी की बात सुनकर सुयश ने क्रिस्टी को हवा में जाने की इजाजत दे दी।

सुयश की सहमति मिलते ही क्रिस्टी ने हवा में एक तेज छलांग लगाई और गंगा की जलधारा में भीगती हुई ऐलेक्स की ओर जाने लगी।

ऐलेक्स के पास पहुंचने के बाद भी क्रिस्टी रुकी नहीं, उसने तेजी से ऐलेक्स के एक पैर को पकड़कर झटका दिया, जिसकी वजह से ऐलेक्स थोड़ा पीछे आ गया, पर ऐलेक्स के शरीर से गति लेते हुए क्रिस्टी और तेजी से चन्द्रमा की ओर चल दी।

कुछ आगे जाने के बाद क्रिस्टी ने शैफाली के शरीर के साथ भी वही किया, जो उसने ऐलेक्स के साथ किया था, इससे क्रिस्टी के शरीर की गति और तेज हो गई और वह बहुत ही तेजी से चन्द्रमा तक जा पहुंची।

तभी क्रिस्टी को अपने चेहरे के पास उड़ता हुआ ऐमू दिखाई दिया। क्रिस्टी ने इशारे से ऐमू को दूर रहने को कहा।

क्रिस्टी का इशारा समझ ऐमू क्रिस्टी से थोड़ा दूरी बनाकर उड़ने लगा। अब ऐमू गंगा की जलधारा से भी बचने की कोशिश कर रहा था।

उधर क्रिस्टी अब चन्द्रमा को अपने हाथों से पकड़ने की कोशिश करने लगी, पर चन्द्रमा में किसी भी प्रकार का कुछ पकड़ने वाला स्थान ना होने के कारण क्रिस्टी को काफी मुश्किल आ रही थी।

“कैप्टेन, जब तक मैं चन्द्रमा को पकड़ नहीं लेती, मैं इसे अपनी ओर खींच नहीं पाऊंगी।” क्रिस्टी ने चीखकर सुयश से कहा- और बिना किसी स्थान पर पैर रखे मैं इसे धक्का भी नहीं दे सकती। अब आप ही बताइये कि ऐसी स्थिति में मैं क्या करुं?”

क्रिस्टी की बात सुनकर सुयश अपने चारो ओर देखने लगा। तभी सुयश की नजर महादेव की जटा सरीखी उस विशाल रस्सी पर पड़ी, जो कि अभी भी वहीं पड़ी थी।

यह देख सुयश की आँखें तेजी से चमकने लगीं।

“क्रिस्टी, मैं तुम्हारे पास तक महादेव की जटाओं को भेज रहा हूं, मुझे लगता है कि चन्द्रमा को महादेव की जटाओं के सिवा कोई नहीं बांध सकेगा।” यह कहकर सुयश ने अपने मुंह से एक तेज सीटी की आवाज निकाली, जिसे सुनकर ऐमू उड़कर सुयश के पास जा पहुंचा।

सुयश ने महादेव की जटाओं का एक सिरा ऐमू को पकड़ा दिया।

“यह आप क्या कर रहे हैं कैप्टेन?” तौफीक ने आश्चर्य से सुयश की ओर देखते हुए कहा- “यह इतनी विशाल रस्सी, यह ऐमू कैसे उठा पायेगा? इसे ऊपर पहुंचाना तो दूर की बात है।”

तौफीक की बात सुन सुयश धीमे से मुस्कुराया और तौफीक को ऐमू की ओर देखने को कहा।

“हर-हर महादेव।” ऐमू ने महादेव के नाम का जयकारा लगाया और उस विशाल रस्सी का एक सिरा अपने मुंह में दबाकर क्रिस्टी की ओर उड़ चला।

ऐमू का यह कारनामा देख सभी आश्चर्य से भर उठे। पर उन सभी को यह कहां पता था कि ऐमू तो महादेव का सबसे बड़ा भक्त है। यह वही ऐमू था, जो महादेव की अमरकथा सुनकर अमृत्व प्राप्त कर चुका था।

ऐमू उड़ते हुए भी गंगा की जलधारा से दूर था। कुछ ही देर में ऐमू ने महादेव की जटाओं को क्रिस्टी को पकड़ा दिया।

क्रिस्टी ने जैसे ही महादेव की जटाओं को चन्द्रमा से स्पर्श कराया, जटाओं ने स्वयमेव ही चन्द्रमा को अपने पाश में जकड़ लिया।

यह देख क्रिस्टी सहित सभी के चेहरे पर मुस्कुराहट आ गई। तब तक शैफाली और ऐलेक्स ने भी उन जटाओं को पकड़ लिया और उसका सहारा लेकर सुयश तक आ गये।

जैसे ही शैफाली और ऐलेक्स के पैर ने जमीन को छुआ, उनके शरीर पर हुआ गंगा की जलधारा का असर समाप्त हो गया।

अब सभी ने कैलाश पर्वत पर खड़े होकर चन्द्रमा को नीचे खींचने के लिये अपने बल का प्रयोग करना शुरु कर दिया।

सभी के सम्मिलित बल के फलस्वरुप चन्द्रमा अपना स्थान छोड़ धीरे-धीरे नीचे की ओर आने लगा।

यह देख सभी उत्साहित हो गये और उन्होंने अपनी शक्ति को बढ़ा दिया।

कुछ ही देर के भागीरथी प्रयास के बाद सभी ने मिलकर चन्द्रमा को पर्वत की चोटी पर ला ही दिया।

जैसे ही चन्द्रमा ने कैलाश पर्वत के शिखर के छुआ, महादेव की जटाओं ने स्वयमेव उसे जकड़कर पर्वत पर स्थिर कर दिया।

इसी के साथ रोबोट अपने हाथ में पकड़े बोर्ड के साथ स्वयं गायब हो गया और वातावरण में महादेव के त्रिशूल और डमरु फिर से प्रकट होकर कैलाश के शिखर पर स्थापित हो गये।

अब सबको कैलाश पर्वत के ऊपर आसमान में महादेव का छाया शरीर दिखाई देने लगा। महादेव के छाया शरीर ने अपने हाथ हवा में उठाये, जिससे एक सुनहरी किरण निकलकर सरोवर के पानी में पड़ी।

तीसरे नेत्र के समान बने सरोवर का पानी महादेव के हाथ से निकली किरणों से तुरंत सूख गया और उस सूखे हुए सरोवर में एक द्वार खुलता हुआ दिखाई दिया।

इसी के साथ महादेव का छाया शरीर कहीं विलीन हो गया।

“लगता है कि कैलाश पर्वत को महादेव के शिवलिंग के रुप में स्थापित करना ही इस द्वार का कार्य था, इसीलिये यह कार्य पूर्ण होते ही

रोबोट भी कहीं गायब हो गया? और सरोवर ने हमें आगे जाने के लिये द्वार खोल दिया।” सुयश ने उस कृत्रिम कैलाश को हाथ जोड़ते हुए कहा।

“जो भी हो कैप्टेन, मैं कैश्वर के इस द्वार को मरते दम तक नहीं भूलूंगी क्योंकि जो भी हो, पर कैश्वर के इस द्वार ने तो हमें महादेव के दर्शन ही करा दिये।” जेनिथ ने श्रृद्धा से भावविभोर होते हुए कहा।

“और मेरे दर्शन!” नक्षत्रा ने जेनिथ के मन में कहा।

“तुमने कुछ कहा क्या नक्षत्रा?” जेनिथ ने नक्षत्रा की आधी-अधूरी बातों को सुन ना समझने वाले भाव से कहा।

“नहीं-नहीं ... मैं भी तुम्हारे शब्दों से सहमत हूं। मैं तो बस यही कहना चाहता था।” नक्षत्रा ने अपने शब्दों को गोल-मोल घुमाते हुए कहा।

उधर अब सभी सरोवर के द्वार में प्रवेश कर तिलिस्मा के अगले द्वार की ओर बढ़ चले।

◆ ◆ ◆

चैपटर-15

निम्फिया महल

3 दिन पहले ....
27.01.02, रविवार, निम्फिया महल, सीरीनिया के जंगल, ग्रीस

रोजर अपने बनाए हुए सुनहरे द्वार से बाहर निकला। इस समय भी उसने स्वयं को एक जंगल में पाया, परंतु इस भयानक जंगल में भी उसके सामने एक भव्य महल दिखाई दे रहा था, जिस पर अंग्रेजी के बड़े अक्षरों से 'निम्फिया महल' लिखा था।

"चूंकि मेलाइट एक 'फ्रेश वाटर निम्फ' (स्वच्छ पानी में रहने वाली अप्सरा) है, शायद इसीलिये देवी आर्टेमिस ने उसके महल का नाम निम्फिया रखा है।" रोजर ने महल को चारो ओर से देखते हुए कहा।

निम्फिया महल लकड़ी की शानदार कारीगरी का नमूना लग रही थी। पूरा महल अलग-अलग प्रकार की लकड़ियों से निर्मित लग रहा था, जिसमें बीच-बीच में सोने एवं अन्य बहुमूल्य रत्नों का प्रयोग किया गया था।

महल का द्वार अर्द्धगोलाकार चौखट पर बना था, जिस पर सामने की ओर अनेकों सोने की कीलें निकलीं थीं। ऐसा शायद बड़े जंगली जानवरों से बचने के लिये किया गया था, जिससे बड़े जानवर टक्कर मारकर उस दरवाजे को तोड़ ना दें।

मुख्य द्वार के ऊपर सोने के हिरन के सिर की एक त्रिआयामी मूर्ति लगी थी, जो कि दीवार से बाहर की ओर उभरी हुई थी। उस मूर्ति की 12 सींघें भी सोने से ही निर्मित दिखाई दे रहीं थीं।

महल की दीवारों पर भी कई उभरी हुई चित्रकारी की गई थी, जो उस महल की भव्यता में चार चाँद लगा रहे थे।

रोजर काफी देर तक मंत्रमुग्ध हो उस निम्फिया महल को देखता रहा और फिर उसके मुख्य द्वार के पास जा पहुंचा।

महल के मुख्य द्वार से कुछ पहले ही रोजर को जमीन पर खिंची हुई एक अर्द्धगोलाकार रेखा दिखाई दी। परंतु रोजर ने उस रेखा पर ध्यान नहीं दिया और मुख्य द्वार की ओर बढ़ने लगा।

परंतु जैसे ही रोजर का पैर जमीन पर बनी उस रेखा से टकराया, रोजर के शरीर को एक तेज झटका लगा।

इस शक्तिशाली झटके से रोजर लड़खड़ाकर 4-5 कदम पीछे हो गया। अब रोजर ध्यान से उस रेखा को देखने लगा।

“लगता है कि यह किसी प्रकार की सुरक्षा रेखा है, जिसे मेलाइट या फिर देवी आर्टेमिस ने इस महल की सुरक्षा के लिये बनाया होगा?” रोजर ने मन ही मन सोचा- “यानि कि मुझे इस सुरक्षा रेखा को छुए बिना ही उस पार जाना होगा।”

यह सोच रोजर ने इस बार अपना पैर हवा में रखते हुए उस सुरक्षा घेरे के पार जाने की कोशिश की, पर जैसे ही रोजर का पैर हवा में उस रेखा के पास पहुंचा, उसे फिर से तीव्र झटका लगा।

“इसका मतलब इस रेखा के कारण हवा में भी सुरक्षा घेरा बना है। मुझे इस महल में घुसने के लिये कोई और ही तरीका ढूंढना होगा?”

अब रोजर महल के चारो ओर चक्कर लगाने लगा। परंतु उस महल के अंदर प्रवेश करने का एकमात्र रास्ता उस मुख्य द्वार से ही होकर जाता हुआ दिखाई दिया।

यहां तक कि उस महल में कोई खिड़की भी नहीं थी। यह देख रोजर निराश होकर महल के सामने स्थित एक पेड़ के नीचे बैठ गया और महल के अंदर घुसने का कोई और मार्ग तलाशने लगा?

रोजर को वहां बैठे-बैठे काफी देर हो गई। रोजर लगातार सोच रहा था।

आखिरकार रोजर को उस महल में घुसने का तरीका समझ में आ ही गया।

“अगर मैं अपनी नाभि से निकलने वाले दरवाजे को बनाते समय इस निम्फिया महल के अंदर के बारे में सोचूं, तो मैं उस सुनहरे द्वार के माध्यम

से इस महल के अंदर पहुंच सकता हूं।”

यह सोच रोजर ने निम्फिया महल के बारे में सोचते हुए सुनहरा द्वार उत्पन्न किया और फिर डरते-डरते उस सुनहरे द्वार में प्रवेश कर गया।

रोजर का सोचना बिल्कुल सही था, जब वह सुनहरे द्वार से निकला, तो वह निम्फिया महल के अंदर था।

रोजर इस समय एक बड़े से कक्ष में प्रकट हुआ था। उस विशाल कक्ष के बीच में 5 सोने के हिरनी की मूर्तियां लगीं थीं। वह सभी हिरनियां गोलाकार आकृति में खड़ी, अपनी सींघों को जोड़े हुए थीं।

उन सभी के आपस में सींघों को जोड़ने की वजह से उनकी सींघों के ऊपर एक गोलाकार रिक्त स्थान बन गया था, उस रिक्त स्थान पर एक सुनहरा रत्न रखा था, जो कि तेज सुनहरी किरणें बिखेर रहा था।

“यह पांचों हिरनियों की मूर्ति तो मेलाइट की सभी बहनों का प्रतीक लग रही हैं, पर उनकी सींघों पर रखा यह सुनहरा रत्न कैसा है? आकार में तो यह छोटा ही लग रहा है, परंतु इससे निकलने वाली रोशनी तो बिल्कुल मेरी नाभि से निकलने वाली रोशनी के समान है। कहीं यही रत्न तो मेरी शक्तियों का आधार नहीं है?”

यह सोच रोजर उन हिरनी की मूर्तियों के पास पहुंच गया और कुछ ही देर की चेष्टा के बाद उसने उस सुनहरे रत्न को उन हिरनियों की सींघों पर से उतार लिया।

पर रोजर के उस रत्न को पकड़ते ही महल के उस कक्ष की रोशनी कहीं गायब हो गई? अब उस कक्ष में बिल्कुल अंधेरा था, पर रोजर के हाथ में पकड़ा वह रत्न अभी भी अपनी चमक बिखेर रहा था।

“यह पूरे कक्ष का प्रकाश अचानक कैसे गायब हो गया? लगता है कि इसमें भी कोई रहस्य छिपा है।”

तभी रोजर को एक अन्य कमरे से थोड़ी सी रोशनी आती हुई प्रतीत हुई। यह देख रोजर उस सुनहरे रत्न को अपने हाथ में पकड़े उस दूसरे कमरे की ओर चल दिया।

रोजर ने जैसे ही दूसरे कमरे में अपना कदम रखा, उस कमरे में आ रहा प्रकाश भी स्वयं गायब हो गया।

“यह हो क्या रहा है? क्या मुझे इस रत्न को वापस उन हिरनियों की सींघों पर रखना होगा?”

पर अभी रोजर यह सोच ही रहा था कि तभी उसके सामने की एक दीवार किसी सिनेमा हॉल के पर्दे की मानिंद चमक उठी।

यह देख रोजर अपने स्थान पर ही रुक गया।

तभी सामने की दीवार पर रोजर को एक विशाल हाइड्रा ड्रैगन दिखाई दिया, जो कि तेजी से पानी में तैरता हुआ कहीं जा रहा था?

“क्या यह कक्ष किसी प्रकार का सिनेमा हॉल है? या फिर कोई और त्रिआयामी मायाजाल है, जो अपने दृश्यों के माध्यम से मुझे कुछ दिखाना चाह रहा है?”

रोजर की नजरें अब सामने चल रहे दृश्यों की ओर थी। जिसमें अभी भी वह विशाल ड्रैगन पानी में था।

यह ड्रैगन और कोई नहीं बल्कि मैग्ना का ड्रैंगो था।

कुछ ही देर बाद वह ड्रैगन एक नदी के पानी से बाहर निकला और नदी के तट पर घूमने लगा।

परंतु नदी से निकलते ही उस ड्रैगन का आकार बदल गया था। अब वह हवा में उड़ने वाला एक ड्रैगन प्रतीत हो रहा था।

तभी उस दृश्य में परिवर्तन हुआ और वहां पर नदी के किनारे घूमती हुई एक विशाल हिरनी दिखाई दी, जिसे कि रोजर तुरंत पहचान गया।

“मेलाइट! .... पर मेलाइट इस नदी के किनारे क्या कर रही है? ... वहां पर तो वह विशाल ड्रैगन घूम रहा है।” अब रोजर बिना पलकें झपकाए उस दृश्य को निहार रहा था।

तभी उस हिरनी की नजर उस ड्रैगन पर पड़ गई और उसने मेलाइट का रुप धारण कर लिया। अब मेलाइट भागते हुए ड्रैंगो की ओर जा रही थी।

ड्रैंगो की निगाह भी अब मेलाइट पर पड़ गई थी, इसलिये वह भी उसकी ओर ही जा रहा था। मेलाइट को एक ड्रैगन की ओर भागते देख एक पल के लिये रोजर की साँस बंद हो गई।

पर अगला दृश्य देखते ही रोजर की आँखें आश्चर्य से फैल गई, क्योंकि मेलाइट अब ड्रैंगो को गले से लगाकर प्यार कर रही थी।

ड्रैंगो भी अपनी पूंछ हिलाकर अपनी खुशी व्यक्त कर रहा था। यह दृश्य रोजर की समझ से बाहर था।

“कौन है यह ड्रैगन? इस दृश्य को देखकर तो यही प्रतीत हो रहा है कि यह ड्रैगन मेलाइट का पालतू है ... पर इस ड्रैगन ने अपना शरीर कैसे परिवर्तित कर लिया? अभी कुछ देर पहले तो यह एक हाइड्रा ड्रैगन दिख रहा था ... और सबसे बड़ी बात की यह दृश्य मुझे कौन और क्यों दिखा रहा है?”

तभी रोजर को अंधेरे में अपने पीछे किसी के होने का अहसास हुआ और यह अहसास ही रोजर के शरीर को पूरी तरह से कंपा गया। उसे लगा कि अवश्य ही इस अंधेरे में उसके पीछे कोई है?

यह सोच रोजर तेजी से पीछे की ओर घूमा और उस सुनहरे रत्न की रोशनी में इधर-उधर देखता हुआ तेज आवाज में बोला- “क्या कोई है यहां पर?”

परंतु उस विशाल कमरे में रोजर की ही आवाज प्रतिध्वनि कर उसके पास वापस आ गई।

तभी सामने चल रहा दृश्य अचानक से पुनः परिवर्तित हो गया। इस बार एक महाशक्तिशाली पुरुष मेलाइट के सामने खड़ा था, जो मेलाइट को एक सुनहरी कस्तूरी दे रहा था।

“मैं तुम्हारे लिये उचित पुरुष नहीं हूं मेलाइट, तुम्हारे लिये तुम्हारे नाम के अनुरुप ही ‘कोई और’ बना है, तुम्हें इस कस्तूरी के माध्यम से उस ‘कोई और’ को ढूंढना होगा।” शक्तिशाली हरक्यूलिस ने कहा।

“पर कैसे हरक्यूलिस?” मेलाइट ने ना समझने वाले भाव से हरक्यूलिस की ओर देखते हुए कहा- “मैं उसे इस कस्तूरी के माध्यम से

पहचानूंगी कैसे? और ... और मेरे नाम के अनुसार का क्या मतलब है तुम्हारा?”

“तुम्हारे नाम को अगर 2 भागों में तोड़ दिया जाये, तो वह ‘मेल लाइट’ में परिवर्तित हो जायेगा। मेल लाइट मतलब प्रकाश निकालने वाला पुरुष। अर्थात् तुम्हारा जीवनसाथी वही पुरुष होगा, जो अपने शरीर से प्रकाश को निकाल सके। यानि कि जब भी कोई पुरुष तुम्हें पहली बार स्पर्श करेगा, वही तुम्हारा जीवनसाथी होगा। तुम्हें छूते ही तुम्हारे पास उपस्थित यह सुनहरी कस्तूरी उस पुरुष की नाभि में समा जायेगी। इससे जब भी तुम उसके लिये अपने मन में प्यार व्यक्त करोगी, उसकी नाभि से तीव्र प्रकाश की किरणें निकलनें लगेंगी और जैसे ही वह तुम्हें स्पर्श करेगा, वह सुनहरा प्रकाश स्वयं ही बंद हो जायेगा। इसके अलावा इस सुनहरी कस्तूरी में सुनहरा द्वार उत्पन्न करने की अद्भुत शक्ति भी होगी, जो किसी को भी एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुंचा सकेगी। जब वह व्यक्ति इस कस्तूरी की समस्त शक्तियों को समझ जायेगा, उस दिन से वह कभी भी स्वयं को एक सुनहरे हिरन में परिवर्तित कर सकेगा। ऐसी स्थिति में उसके अंदर और भी चमत्कारी शक्तियां प्रवेश कर जायेंगी। .... अब तुम यह कस्तूरी सदा अपने पास ही रखना मेलाइट क्योंकि यही तुम्हारे जीवनसाथी को ढूंढने में तुम्हारी सहायता करेगा।”

इतना कहकर हरक्यूलिस ने अपने हाथ में पकड़ी सुनहरी कस्तूरी को मेलाइट को दे दिया और स्वयं वहां से राजा यूरीस्थियस के दिये अगले कार्य को पूर्ण करने के लिये चल दिया।

इतना दिखाने के बाद उस दीवार रुपी स्क्रीन का चमकना बंद हो गया और कमरे में पुनः अंधकार छा गया।

“अच्छा तो यह रहस्य है मेरी नाभि में समाई उस सुनहरी कस्तूरी का। ... इसका मतलब जिस दिन मैंने मेलाइट को आकृति की कैद से छुड़ाने के लिये पहली बार स्पर्श किया था, उसी दिन से मेरा संबंध अंजाने में ही मेलाइट से जुड़ गया था और यही वजह है कि वह वापस देवी आर्टेमिस के पास नहीं जाना चाहती। ... इसलिये मेलाइट जानबूझकर मुझे छेड़ रही थी।” मेलाइट के बारे में सोचते हुए रोजर के चेहरे पर एक खूबसूरत मुस्कान थिरक उठी- “पर यह ड्रैगन का रहस्य अभी भी मुझे

समझ में नहीं आया। वह दृश्य मुझे क्यों दिखाई दिया?” रोजर तेज आवाज में बड़बड़ा रहा था कि तभी उसे एक अंजानी आवाज सुनाई दी।

“इसका रहस्य तुम्हें मैं बता सकती हूं।” यह अंजानी आवाज एक लड़की की थी, जो कि उसी कमरे से रोजर के पीछे से उभरी थी।

इस अंजानी आवाज को सुन रोजर तेजी से अपने पीछे की ओर पलटा और उस सुनहरे रत्न की रोशनी में अपने पीछे खड़े साये को देखने लगा।

परंतु उस साये पर नजर पड़ते ही रोजर की आँखें आश्चर्य से फैल गईं क्योंकि उसके पीछे और कोई नहीं बल्कि मेलाइट खड़ी थी।

रोजर को समझ नहीं आया कि मेलाइट उतनी दूर, बिना किसी शक्ति के निम्फिया महल कैसे पहुंच गई? पर मेलाइट को देखते ही पता नहीं क्यों रोजर इस बार थोड़ा सतर्क नजर आने लगा था?

◆ ◆ ◆

एटर्नल फ्लेम

31.01.02, गुरुवार, चेस्टनट रिज पार्क, न्यूयार्क, अमेरिका

शलाका अब जेम्स को लेकर सूर्यांश का रहस्य जानने के लिये एक बार फिर से न्यूयार्क पहुंच गई।

शलाका के कहने पर आर्ची ने आर्केडिया को 'ऐरी झील' के पानी में उतार लिया था।

शलाका जेम्स के साथ इस समय आर्केडिया के कंट्रोल रुम में थी।

"आर्ची, यहां से चेस्टनट पार्क की दूरी कितनी है?" शलाका ने सामने की स्क्रीन पर सुंदर झील का नजारा देखते हुए आर्ची से पूछा।

"ऐरी झील से चेस्टनट रिज पार्क की दूरी लगभग 17 किलोमीटर है।" आर्ची ने कहा- "पर आप परेशान मत हों, मैंने आपके चेस्टनट पार्क जाने के लिये, एक कार की व्यस्था कर दी है।"

आर्ची के इतना कहते ही आर्केडिया के एक कमरे का दरवाजा खुला और उसमें से एक काले रंग की खूबसूरत सी कार निकलकर शलाका के सामने आ खड़ी हुई।

वह कार बहुत ही खूबसूरत थी, जिसके दोनों ओर अग्नि की लपटों वाला स्टीकर लगा था।

जेम्स उस कार को हैरानी से देख रहा था।

जेम्स समझ गया कि आग की यह डिजाइन, आर्ची ने जानबूझकर बनाई है, जो कि शलाका की शक्तियों के प्रतीक के रुप में है।

"बहुत ही खूबसूरत कार है आर्ची।" शलाका ने भी कार को देखते हुए कहा- "क्या इसका डिजाइन तुमने तैयार किया है?"

"जी शलाका। इस कार का डिजाइन अभी कुछ दिन पहले, मैने ही किया है।" आर्ची ने कहा- "इसे इस समयकाल के अनुसार आपके लिये तैयार किया गया है। .... वो क्या है कि अब आप इस समयकाल में

वेदालय की भांति घोड़ों का रथ तो नहीं चला सकती हैं ना। ... और हां मैंने इस कार का नाम 'फ्यूट्रान' रखा है"

"मुझे तुम्हारी यह कार और इसका नाम बहुत पसंद आया, पर अब जरा इसके बारे में भी बता दो।" शलाका ने घूमकर चारो ओर से कार को देखते हुए कहा- "क्योंकि अगर इसे तुमने डिजाइन किया है, तो इसमें कुछ ना कुछ विशेषताएं तो अवश्य ही डाली होंगी?"

"फ्यूट्रान पूरी तरह से ऑटोमैटिक कार है। इसे आपको चलाने की जरुरत नहीं पड़ेगी, इसे मैं यहीं आर्केडिया से बैठकर कंट्रोल कर लूंगी।" आर्ची ने कहा- "इसके बारे में अभी ज्यादा मत पूछिये। धीरे-धीरे आप इसके बारे में सबकुछ स्वयं ही जान जायेंगी। .... क्या अब आप दोनों चेस्टनट रिज पार्क तक जाने के लिये तैयार हैं।?"

आर्ची की बात सुनकर शलाका ने अपने सिर को हिलाकर अपनी सहमति दे दी और स्वयं जेम्स को फ्यूट्रान में बैठने का इशारा किया।

जेम्स को समझ नहीं आया कि शलाका यहां पर ही क्यों फ्यूट्रान में बैठ रही है? या फिर यह फ्यूट्रान रोड तक कैसे जायेगी? पर जेम्स, शलाका को आगे की सीट पर बैठता देख, स्वयं भी शलाका के बगल आगे वाली सीट पर आकर बैठ गया।

तभी जेम्स और शलाका को स्वतः ही एक बेल्ट ने जकड़ लिया। शायद वह सुरक्षा बेल्ट थी।

अब फ्यूट्रान तेजी से उस कमरे से बाहर निकली और आर्केडिया के एक द्वार से बाहर निकलकर ऐरी झील के पानी में आ गई।

पानी में भी फ्यूट्रान की स्पीड काफी तेज लग रही थी।

पानी के अंदर ही अंदर चलती हुई फ्यूट्रान, ऐरी झील के किनारे तक जा पहुंची। फ्यूट्रान कुछ देर के लिये पानी के अंदर ही रुकी और फिर एक झटके से झील के बाहर आ गई। शायद आर्ची, फ्यूट्रान के बाहर निकलने के पहले यह चेक कर रही थी कि कहीं कोई बाहर खड़ा तो नहीं है? पर इस समय उस स्थान पर झील के बाहर कोई नहीं था?

अब फ्यूट्रान किसी साधारण कार की तरह सड़क पर चलती हुई स्वतः ही चेस्टनट रिज पार्क की ओर चल दी।

लगभग 10 मिनट में फ्यूट्रान ने 17 किलोमीटर की दूरी तय कर ली। अब वह पार्क के पार्किंग क्षेत्र में पहुंच गई और स्वतः ही पार्किंग में पार्क हो गई।

“अब आप दोनों फ्यूट्रान से उतरकर पार्क में जा सकते हैं।” तभी फ्यूट्रान में आर्ची की आवाज उभरी।

आर्ची की आवाज आते ही जेम्स और शलाका के शरीर पर लगी सुरक्षा बेल्ट हट गई।

जेम्स और शलाका फ्यूट्रान से उतरकर पार्क के द्वार में प्रवेश कर गए।

कुछ आगे बढ़ते ही शलाका को वहां पर लगा हुआ एक बोर्ड दिखाई दिया, जिस पर चेस्टनट रिज पार्क लिखा था। उसे देखकर शलाका को वह दृश्य याद आने लगे, जो कि अग्निका ने उसे दिखाए थे। इसी बोर्ड को तो सूर्यांश ने शलाका को दिखाया था।

शलाका अब जेम्स के साथ अंदाजे से ही उस स्थान की ओर बढ़ गई, जिधर उस समय उसने सूर्यांश को जाते हुए देखा था।

इस समय भी पार्क में काफी टूरिस्ट दिखाई दे रहे थे।

कुछ आगे बढ़ते ही शलाका को भी वह छोटा सा झरना दिखाई देने लगा, जो कि पत्थरों के ऊपर से होकर नीचे की ओर गिर रहा था।

वह झरना छोटा जरुर था, पर काफी आकर्षक सा दिख रहा था, पर शलाका की व्याकुल निगाहें तो उस झरने के नीचे की ओर जल रही उस एटर्नल फ्लेम को देख रही थीं, जो झरने के नीचे भी अपने अस्तित्व को बचाए अनवरत जल रही थी।

उस झरने के स्थान पर काफी लोग खड़े थे और झरने के पानी के पास अपनी फोटो खिंचवा रहे थे।

अब शलाका की नजरें जेम्स से मिलीं और उसने धीरे से जेम्स को वहीं रुकने का इशारा किया। इसके बाद शलाका धीरे से उस एटर्नल फ्लेम की ओर बढ़ गई।

चूंकि वहां पर एटर्नल फ्लेम के पास वैसे ही लोग घूमने जा रहे थे, इसलिये शलाका को उस दिशा में जाते देख किसी को भी कोई आश्चर्य नहीं हुआ?

जेम्स पूरी तरह से अब सतर्क नजर आ रहा था।

तभी शलाका के दिमाग में आर्ची की आवाज सुनाई दी- “क्या आप सच में उस एटर्नल फ्लेम को छूने जा रही हैं शलाका? अगर आप कहें तो पहले मैं उसे चेक कर लूं?”

“नहीं आर्ची उसे चेक करने की कोई जरुरत नहीं है।” शलाका ने कहा- “अगर वह सच की भी कोई अग्नि है, तो भी उसे स्पर्श करते ही मैं उसके बारे में सबकुछ जान जाऊंगी। इसलिये अभी मुझे मत रोको।”

यह कहकर शलाका तेजी से उस अग्नि की लौ में कूद गई।

शलाका को अग्नि में कूदते देख वहां खड़े लोगों के मुंह से जोर की चीख निकल गई। शलाका को देखने के लिये कुछ लोग भी उस ओर को भागे। उन लोगों में जेम्स भी था।

पर उस एटर्नल फ्लेम के पास पहुंचने के बाद भी जेम्स को शलाका कहीं नजर नहीं आई?

“आर्ची।” जेम्स ने घबराकर मन ही मन आर्ची को याद किया- “क्या तुम मेरी आवाज सुन रही हो?”

“हां जेम्स, मुझे तुम्हारी आवाज सुनाई दे रही है।” जेम्स को आर्ची की आवाज अपने मस्तिष्क में आती हुई महसूस हुई।

“क्या तुम बता सकती हो कि इस समय शलाका कहां है? और वह सुरक्षित है कि नहीं?” जेम्स ने आर्ची से पूछा।

“शलाका इस समय मेरी शक्तियों से कहीं दूर है जेम्स। मैं शलाका को ढूंढ नहीं पा रही हूं। वैसे शलाका अपने को सुरक्षित करना जानती है। इसलिये मुझे लगता है कि हमें उसके वापस लौटने की प्रतीक्षा करनी चाहिये।”

तब तक उस स्थान पर भीड़ लगनी शुरु हो गई थी। हर जुबान पर एक ही बात थी कि कोई लड़की एटर्नल फ्लेम के अंदर कूद गई।

जेम्स अब उस भीड़ से दूर हटकर वहीं पार्क में बैठ गया और शलाका के वापस लौटने का इंतजार करने लगा।

आइये चलकर देखते हैं कि शलाका के साथ क्या घटना घट रही है?

....

शलाका जैसे ही उस एटर्नल फ्लेम में कूदी, उसे अपना शरीर किसी बड़े से गड्ढे में गिरता हुआ महसूस हुआ। वह गड्ढा पूरी तरह अग्नि की लपटों से दहक रहा था, पर वह अग्नि शलाका का कुछ नहीं बिगाड़ पा रही थी?

शलाका अभी भी उस अग्नि के बीच पूरी तरह से सुरक्षित थी। शलाका को उस अग्नि में बहुत शांति महसूस हो रही थी।

काफी देर तक ऐसे ही गिरते रहने के बाद शलाका को अपना शरीर किसी धरातल पर रुकता हुआ सा महसूस हुआ। शलाका अब अपने शरीर को संभालते हुए एक दिशा की ओर चल दी।

शलाका जैसे-जैसे आगे बढ़ती जा रही थी, उसे अग्नि कम होती हुई महसूस हो रही थी।

थोड़ी ही देर में शलाका उस अग्नि से बाहर निकली। पर बाहर निकलते ही वह हैरान हो गई क्योंकि यह वही जगह थी, जहां से वह अभी कुछ देर पहले उस एटर्नल फ्लेम के अंदर गई थी।

“यह क्या रहस्य है? मैं तो जहां से अंदर गई थी, घूम-फिरकर वहीं से वापस आ गई।” शलाका ने इधर-उधर देखते हुए सोचा- “पर यह जेम्स कहां चला गया? वह तो इस समय कहीं दिखाई नहीं दे रहा है?”

शलाका अब उस एटर्नल फ्लेम से बाहर आ गई। चूंकि इस समय कई लोग शलाका को घूर रहे थे, इसलिये शलाका ने जल्दी से जल्दी उस स्थान से हटने में ही अपनी भलाई समझी।

शलाका तुरंत उस स्थान से दूर हट गई।

तभी शलाका को पार्क में कुछ अजीब सा महसूस हुआ- “यह क्या? अभी जब मैं इस स्थान से गई थी, तो यह ऊंची प्रतिमा तो यहां पर नहीं थी, फिर इतनी जल्दी यह प्रतिमा यहां किसने बना कर रख दी? .... कुछ

तो जरुर गड़बड़ है? ... मुझे आर्ची से सम्पर्क करना होगा। .... आर्ची ... आर्ची क्या तुम मुझे सुन रही हो?"

"हां शलाका मैं तुम्हें सुन पा रही हूं।" शलाका को अपने मस्तिष्क में आर्ची की आवाज सुनाई दी- "पर ... पर तुम इतने समय तक थी कहां? तुम्हें पता भी है कि मैं तुम्हें कब से ढूंढ रही थी? पर तुम मुझे पूरी पृथ्वी पर कहीं भी दिखाई नहीं दी? क्या तुम किसी अदृश्य स्थान पर पहुंच गई थी?"

"हां, लग तो वह कोई अदृश्य स्थान ही रहा था, पर मुझे वहां सूर्यांश कहीं दिखाई नहीं दिया? और जेम्स कहां है? तुमने उसे कहीं भेजा है क्या?" शलाका ने आर्ची से पूछा।

"सूर्यांश तो अभी यहीं था ... वह भी तुम्हारा कई वर्षों से इंतजार कर रहा था और जेम्स यहां क्या करेगा? वह तो इस समय .....?"

पर आर्ची के कहे शब्द शलाका को समझ नहीं आ रहे थे, इसलिये शलाका ने आर्ची को अपनी बात पूरी करने से पहले ही टोक दिया- "ये तुम क्या कह रही हो आर्ची? सूर्यांश मेरा कई वर्षों से इंतजार कर रहा था? .... पर ... पर मैं तो अभी कुछ देर पहले ही इस एटर्नल फ्लेम में उसे ढूंढने के लिये प्रवेश की थी?"

"कुछ देर पहले .... इसका मतलब कि तुम ... तुम ..... खटाक ... किर्र ... किर्र।" अभी आर्ची शलाका को कुछ बताने ही जा रही थी कि तभी ऐसा लगा जैसे शलाका से उसका सम्पर्क टूट गया हो।

"आर्ची ... आर्ची क्या तुम मेरी बात सुन रही हो? ... तुम क्या कहना चाहती थी? अपनी बात को पूरा करो और जेम्स इस समय कहां है?" शलाका ने घबराकर आर्ची को पुकारा पर इस बार आर्ची ने कोई जवाब नहीं दिया।

"लगता है कि आर्ची का सम्पर्क मुझसे कट गया है। ... पर जेम्स इतनी जल्दी कहां चला गया? ... चलो चलकर फ्यूट्रान के पास देखती हूं। शायद जेम्स वहां चला गया हो?"

यह सोचकर शलाका, पार्क के पार्किंग क्षेत्र की ओर बढ़ गई, पर अभी वह थोड़ा सा ही आगे बढ़ी थी कि तभी उसके मस्तिष्क में एक अंजानी आवाज उभरी- "क्या आप मुझे ढूंढ रही हैं?"

शलाका एक पल में उस आवाज को पहचान गई, वह आवाज शत-प्रतिशत सूर्यांश की थी।

“कौन हो तुम? और इस प्रकार से मेरे साथ खेल क्यों खेल रहे हो?” शलाका की आवाज में इस बार नाराजगी के भाव थे।

“मैं आपके साथ कोई खेल नहीं खेल रहा। मैं तो बस आपको किसी से मिलाना चाहता हूं?” सूर्यांश की आवाज में शैतानियों भरी खनक विद्यमान थी।

“किससे मिलाना चाहते हो?” शलाका ने शंकित स्वर में कहा- “और तुमने आर्ची के साथ क्या किया?”

“मैंने आर्ची के साथ कुछ नहीं किया। मैंने तो बस कुछ देर के लिये उसका सम्पर्क आपसे काट दिया है बस, नहीं तो वह आपको पूरा रहस्य अभी ही बता देती। वैसे अगर आप मुझसे मिलना चाहती हैं तो आपको अभी स्टेचू ऑफ लिबर्टी के पास आना होगा। .... वहीं पर आपको पूरा रहस्य पता चल जायेगा।”

इसके बाद शलाका को सूर्यांश की आवाज आनी बंद हो गई, पर सूर्यांश के शब्दों ने शलाका के दिल में उसके प्रति उत्सुकता और भी ज्यादा बढ़ा दी थी।

शलाका अब लगभग भागती हुई सी चेस्टनट रिज पार्क के पार्किंग क्षेत्र में पहुंच गई, पर फ्यूट्रान इस समय वहां से गायब थी।

शलाका को पता था कि चेस्टनट रिज पार्क से स्टेचू ऑफ लिबर्टी की दूरी लगभग 200 किलोमीटर के आसपास है और इतनी दूरी को साधारण तरीके से तय करने में लगभग 3 से 4 घंटे लग जाने थे।

इसलिये शलाका वहां से एक सुनसान स्थान पर आई और इधर-उधर देखने के बाद अपनी शक्तियों से गायब होकर स्टेचू ऑफ लिबर्टी से कुछ पहले ही पानी के अंदर प्रकट हो गई।

शलाका ने पानी से धीरे से अपना सिर निकाला और फिर तैर कर लिबर्टी आइलैण्ड की ओर जाने लगी।

लिबर्टी आइलैण्ड पर पहुंचकर शलाका पानी से बाहर निकली और धीरे से स्टेचू ऑफ लिबर्टी की ओर चल दी।

कुछ ही देर में शलाका स्टेचू ऑफ लिबर्टी के नीचे थी। शलाका ने अपने शरीर को हल्का गर्म करके अपने वस्त्रों को सुखा लिया था।

“अरे यह स्टेचू ऑफ लिबर्टी के पास का हिस्सा इतना खाली कैसे है? यहां पर तो हमेशा काफी भीड़ रहती थी।” शलाका ने अपने चारो ओर देखा, पर उसे उस स्थान पर इस समय एक भी इंसान नजर नहीं आया। यह देख शलाका के चेहरे पर आश्चर्य के भाव आ गये।

अब शलाका की नजर तेजी से चारो ओर सूर्यांश को ढूंढने लगी।

तभी शलाका की नजर स्टेचू ऑफ लिबर्टी के ऊपर के आसमान की ओर गई। आसमान की ओर देखते ही शलाका बुरी तरह से चौंक गई।

शलाका को आसमान में इस समय घने काले बादल दिखाई दे रहे थे, पर वह काले बादल आसमान में उड़ रहे एक विचित्र जीव के खुले हुए मुंह से निकल रहे थे।

उस विचित्र जीव के शरीर का सिर वाला हिस्सा किसी सर्प के समान था, पर उसका शरीर किसी मानव की ही तरह था। उस जीव की एक विशाल पूंछ भी थी, जिसकी संरचना काँटे के समान थी।

तभी स्टेचू ऑफ लिबर्टी के चारो ओर पानी में कुछ बोट दिखाई देने लगीं, जिन पर शक्तिशाली सर्च लाइट लगी थी। देखने से ही लग रहा था कि वह सभी बोट कोस्ट गार्ड या पुलिस की हैं।

सभी बोट की सर्च लाइट अब आसमान में उड़ रहे उस विचित्र जीव की ओर थीं।

उस विचित्र जीव पर प्रकाश पड़ने से वह जीव और भी हिंसक नजर आने लगा। उसने अपने मुंह से एक जोर की आवाज निकाली और ढेर सारा काला धुंआ अपने मुंह से उगल दिया।

अब उस स्थान पर काला धुंआ इतना ज्यादा फैल गया कि उस गाढ़े काले बादल ने पूरी तरह से सूर्य को ढक लिया।

सूर्य का प्रकाश नीचे ना पहुंचने की वजह से अब दिन में भी उस स्थान पर गहन अंधकार दिखाई देने लगा था।

“सूर्यांश ने मुझे यूं ही यहां नहीं बुलाया है, अवश्य ही कोई बड़ा खतरा यहां मंडरा रहा है?” शलाका ने मन ही मन सोचा- “और शायद इस मुसीबत का पता मुझे छोड़कर यहां सभी मनुष्यों को है, इसीलिये इस समय यहां पर और कोई भी मनुष्य नहीं है? ... पर यह सूर्यांश इस समय है कहां पर?”

अब उन काले बादलों की एक टुकड़ी ने स्टेचू ऑफ लिबर्टी के ऊपर चक्कर लगाना शुरु कर दिया। तभी शलाका को उस विचित्र जीव से कुछ दूरी पर चक्कर लगाते हुए 4 हेलीकॉप्टर दिखाई दिये, जिन पर ‘NYPD’ लिखा था, जिसका साफ मतलब था कि वह सभी हेलीकॉप्टर न्यूयार्क पुलिस के थे और वह दूरी बनाकर उस जीव पर नजर रख रहे थे।

तभी उस जीव की निगाह एक हेलीकॉप्टर की ओर गई और उसने अपनी पूंछ को लंबा करके उस हेलीकॉप्टर पर वार कर दिया।

उस जीव की विचित्र पूंछ हवा में लहराती हुई एक हेलीकॉप्टर की ओर झपटी और इससे पहले कि उस हेलीकॉप्टर का पायलेट कुछ कर पाता? उस जीव की कंटीली पूंछ ने हेलीकॉप्टर को बीच से काट दिया।

अब वह हेलीकॉप्टर 2 टुकड़ों में होकर समुद्र में जा गिरा। पता नहीं उस हेलीकॉप्टर का पायलेट बच पाया? या फिर हेलीकॉप्टर के साथ उसने भी जलसमाधि ले ली।

तभी हवा में एक तेज रोशनी सी जगमगाई और वह रोशनी का प्रकाशपुंज उड़ते हुए, तेजी से उस जीव की ओर लपका। वैसे तो वह रोशनी काफी तेज थी, फिर भी शलाका ने उस तेज प्रकाशपुंज को एक क्षण में ही पहचान लिया, वह प्रकाशपुंज और कोई नहीं बल्कि सूर्यांश था?

“यह तो सूर्यांश है, पर इसके शरीर से इतनी तेज रोशनी कैसे निकल रही है? ऐसा लग रहा है कि जैसे आकाश में नया सूर्य उदय हो गया हो।” शलाका मंत्रमुग्ध सी हवा में उड़ते सूर्यांश को निहार रही थी।

इस समय सूर्यांश ने लाल और काले रंग का एक कवच अपने शरीर पर धारण कर रखा था। तभी सूर्यांश ने अपने हाथों को आसमान की ओर

कर दिया। अब सूर्यांश के हाथों से एक सुनहरी प्रकाश की किरण निकलकर उन गाढ़े काले बादलों को काटने लगी।

जहां से काले बादल कटे, वहां से सूर्य की रोशनी ने पृथ्वी का स्पर्श किया।

सूर्यांश को बादलों को काटते देख वह जीव तेजी से सूर्यांश की ओर लपका और पास पहुंचकर उसने सूर्यांश पर अपनी कंटीली पूंछ का वार कर दिया।

सूर्यांश ने उस जीव की पूंछ का वार अपनी हथेली से रोक लिया और उस जीव को देखने लगा, तभी उस जीव की आँखों से घातक बिजली की किरणें निकलीं और सूर्यांश के कवच से जा टकराईं।

बिजली के तेज प्रहार से सूर्यांश का तो कुछ नहीं बिगड़ा, पर उसके हाथ से उस सर्पमानव की पूंछ निकल गई।

अब उस सर्पमानव ने अपने मुंह को खोलकर अग्नि की तेज लपटें सूर्यांश पर छोड़ दीं। उन अग्नि की लपटों से सूर्यांश का कवच काला पड़ गया।

अब सूर्यांश ने गुस्सा कर अपने मुंह से एक सीटी बजाई, जिससे हवा में बादलों के समान, कुछ गोल छल्ले बनकर उस सर्पमानव की ओर झपटे। उन गोल छल्लों ने सर्पमानव के शरीर को जगह-जगह से जकड़ लिया।

अब उन छल्लों की वजह से सर्पमानव का दम घुटने लगा। यह देख सर्पमानव ने अपनी कंटीली पूंछ को लंबा करके उन छल्लों को काट दिया।

अब वह सर्पमानव सूर्यांश को और मौका नहीं देना चाहता था, इसलिये उसने फिर से अपना मुंह खोला। इसी के साथ उसके मुंह से एक काले रंग का गोला निकला, जो हवा के सम्पर्क में आते ही अपना आकार बढ़ाना शुरु हो गया।

उस काले गोले से बिजली की तरंगे भी निकल रहीं थीं।

“यह काला गोला तो काफी खतरनाक लग रहा है। इससे बचने के लिये मुझे समय शक्ति का प्रयोग करना होगा। समय शक्ति के प्रभाव से यह

गोला हवा में ही रुक जायेगा, फिर मैं इस गोले पर किसी प्रकार नियंत्रण प्राप्त कर लूंगा?”

यह सोच अब सूर्यांश की आँखों से एक नीले रंग की ऊर्जा निकलकर उस काले गोले की ओर बढ़ी, जो कि सूर्यांश की समय शक्ति थी, पर इससे पहले कि वह समय शक्ति, उस काले गोले का कुछ बिगाड़ पाती, काले गोले से एक जोर का चक्रवात बाहर निकला।

वह चक्रवात इतना तेज था कि सूर्यांश की समय शक्ति अपना रास्ता भटक गईं और चक्रवात में लिपटकर वहां से कुछ दूर स्थित लिबर्टी स्टेट पार्क में लगी एक विशाल घड़ी से टकरा गईं।

उस नीली ऊर्जा के समय शक्ति से टकराने की वजह से, वह घड़ी अपने स्थान से निकलकर जमीन पर आ गिरी। पर भला यह था कि वहां पर मौजूद कोई टूरिस्ट उस घड़ी की चपेट में नहीं आया।

वह चक्रवात, समय शक्ति सहित, उस घड़ी में प्रवेश कर गया। अब उस घड़ी के अंदर बीच-बीच में वह नीली ऊर्जा अपनी चमक बिखेर रही थी।

उधर वह काला गोला अब सूर्यांश के चारो ओर तेजी से घूम रहा था। उस काले गोले को देख सूर्यांश घबरा गया और उसने नीचे खड़ी शलाका की ओर देखा।

एक क्षण के लिये शलाका की नजरें सूर्यांश से मिलीं। शलाका को सूर्यांश की आँखों में ना जाने क्या महसूस हुआ? कि वह एक पल के लिये सब कुछ भूल गई। उसे तो यह याद भी नहीं रहा कि वह इस समय कहां पर खड़ी है?

अब शलाका के शरीर पर सुनहरे रंग के कवच के समान पोशाक नजर आने लगी। इसी के साथ शलाका का शरीर स्वतः ही हवा में उठा और उस काले गोले और सूर्यांश के बीच आ गया। शलाका की आँखों से मानों अग्नि निकल रही हो। अब शलाका खतरनाक भाव से उस सर्पमानव और उस काले गोले को देख रही थी।

काला गोला अभी भी अपना आकार बढ़ाता जा रहा था। तभी शलाका के हाथ में उसका विनाशकारी त्रिशूल नजर आने लगा। यह देख

सूर्यांश के चेहरे पर खुशी के भाव झलके।

अब उस गोले का आकार स्टेचू ऑफ लिबर्टी से भी बड़ा हो गया था और उससे निकल रही बिजली, नीचे बोट में मौजूद पुलिसकर्मियों के दिलों में दहशत भर रही थी, पर वह सभी मूक दर्शक से बने उस विचित्र युद्ध के साक्षी बन रहे थे।

उधर काले गोले का बढ़ना अब रुक गया था, पर जैसे ही शलाका ने त्रिशूल का वार उस गोले पर करने की कोशिश की, शलाका के हाथ से त्रिशूल खिंचकर उस गोले से जा चिपका।

यह देख शलाका की आँखें आश्चर्य से फैल गईं- “यह कैसे संभव है? मेरी इच्छा के बिना कोई भी मेरे त्रिशूल को नहीं खींच सकता? .... यह कौन सी शक्ति है?”

“यह देवताओं की शक्ति है।” तभी शलाका को अपने पीछे से आवाज सुनाई दी, जो कि सूर्यांश की थी- “इस शक्ति को सिर्फ और सिर्फ सूर्याग्नि ही खत्म कर सकती है।”

सूर्यांश के शब्द सुन शलाका आश्चर्य से भर उठी और वह पीछे पलट कर ध्यान से सूर्यांश को देखने लगी- “कौन हो तुम? तुम्हें सूर्याग्नि के बारे में कैसे पता चला? यह बात तो मेरे या आर्यन के सिवा कोई भी नहीं जानता?”

पर इससे पहले कि सूर्यांश, शलाका के शब्दों का जवाब दे पाता, उस काले गोले से तीव्र विद्युत की तरंगें निकलकर शलाका के पीठ पर आ गिरीं और शलाका आसमान में लहरा कर जमीन की ओर गिरने लगी।

यह देख सूर्यांश के मुंह से तेज चीख निकली- “माँऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽ!”

और इसी के साथ सूर्यांश तेजी से शलाका की ओर लपका।

पर शलाका तो इस समय विद्युत के प्रहार को बिल्कुल ही भूल गई थी, उसके कानों में तो अर्द्धचेतना में भी एक ही शब्द गूंज रहा था- “माँऽऽऽऽऽऽऽऽ।”

तभी शलाका को अपना शरीर हवा में झूलता हुआ प्रतीत हुआ। एक पल के लिये उसे ऐसा महसूस हुआ कि वह इस समय किसी के मजबूत

हाथों में है?

कुछ ही पलों में शलाका का मस्तिष्क थोड़ा जागृत हुआ। उसने धीरे से अपनी आँखें खोलीं और उस चेहरे की ओर देखा, जिसने उसे अपने हाथों में पकड़ रखा था।

इसी के साथ वह झटके से खड़ी हो गई- "आर्यन तुम .... यहां पर?"

शलाका ने अब अपने मस्तिष्क को एक झटका दिया। उसे लगा कि वह कोई भ्रम है, परंतु वह भ्रम नहीं था।

"मैं आर्यन नहीं सुयश हूं शलाका .... पर तुम इतने दिन से कहां थी? और आज अचानक कहां से आ गई? .... देखो तुम्हारा पुत्र सूर्यांश कितना बड़ा हो गया है?" सुयश की आवाज में दुनिया भर का आश्चर्य दिखाई दे रहा था।

"सुयश??? .... पर ... पर तुम तो तिलिस्मा में थे, तुम बाहर कब आए? और ... और सूर्यांश मेरा पुत्र कैसे हो सकता है?" शलाका को कुछ समझ ही नहीं आ रहा था, पर अब वह सूर्यांश को उस विचित्र जीव से लड़ते हुए देख रही थी, जो कि अपने हाथों से सुनहरी ऊर्जा का वार उस जीव पर कर रहा था।

"ये तुम्हें क्या हो गया है शलाका? तुम ऐसे क्यों बोल रही हो? ... अरे तिलिस्मा तो मैंने आज से 10 वर्ष पहले ही तोड़ दिया था और ... और तुम हमारे पुत्र सूर्यांश को क्यों नहीं पहचान पा रही हो?" सुयश के शब्द पूरी तरह से आश्चर्य से भरे थे।

"ये क...क... कौन सा वर्ष है?" शलाका ने कांपते शब्दों में सुयश को देखते हुए पूछा।

"ये 2013 चल रहा है।" सुयश ने कहा- "पर अभी भी मुझे तुम्हारा इस प्रकार से व्यवहार करना समझ में नहीं आ रहा है।"

"पर अब मुझे सबकुछ समझ में आ रहा है।" अचानक शलाका के चेहरे से सभी परेशानियों के बादल हट गये, अब वो प्यार भरी नजरों से सूर्यांश को देखते हुए बोली- "मैं तुम्हें सबकुछ बताती हूं सुयश, पर पहले मुझे मेरे पुत्र को बचाने दो, जो कि अभी मुसीबत में है।"

यह कहकर शलाका उड़ते हुए उस ओर चल दी, जिधर सूर्यांश इस समय उस सर्पमानव से युद्ध कर रहा था, पर तभी शलाका को उस काले गोले ने बीच में ही रोक लिया।

शलाका का त्रिशूल अब भी उस काले गोले से चिपका हुआ था। उस काले गोले को बीच में आते देख शलाका के हाथ से अग्नि की तीव्र लपटें निकलकर उस गोले पर गिरने लगीं।

पर उस दृश्य को देखकर साफ प्रतीत हो रहा था कि शलाका की अग्नि से उस गोले पर कोई प्रभाव नहीं पड़ रहा है?

यह देख शलाका के हाथ से इस बार अग्निचक्र निकला और उस काले गोले को काटता हुआ दूसरी ओर निकल गया। काला गोला शलाका के इस वार से बीच से कट गया, पर जैसे ही अग्निचक्र गोले के दूसरी ओर निकला, वह काला गोला पुनः जुड़ गया।

अब उस काले गोले से एक बिजली की रस्सी निकली और उसने शलाका का गला पकड़ लिया। रस्सी के कारण शलाका को अपना गला घुंटता सा प्रतीत होने लगा।

तभी सुयश हवा में उड़ते हुए आगे आया। इस समय उसके हाथ में सूर्य के समान चमकती हुई एक तलवार दिखाई दे रही थी।

सुयश ने उस सूर्य के समान चमचमाती तलवार से, शलाका के गले में लिपटी, बिजली की रस्सी को 2 टुकड़ों में विभक्त कर दिया।

तभी सर्पमानव से लड़ता हुआ सूर्यांश लड़ना छोड़, सुयश और शलाका को एक साथ देख, खुश होकर उन दोनों की दिशा में आ गया।

"अरे वाह! आखिरकार मैंने आप दोनों को मिला ही दिया।" सूर्यांश के चेहरे पर खुशी के भाव स्पष्ट देखे जा सकते थे- "अब आप दोनों देर ना करें और इससे पहले कि कोई अनिष्ट हो जाये, आप सूर्याग्नि की सम्मिलित शक्ति से इस सर्पमानव और उसके काले गोले का अंत करें।"

यह सुन अब शलाका के हाथ में भी एक तलवार नजर आने लगी, जिससे अग्नि की लपटें निकल रहीं थीं।

शलाका की नजर अब सुयश के हाथ में थमी तलवार पर पड़ी। शलाका को अपनी तलवार की ओर देखते पाकर सुयश ने शलाका का हाथ थामा और फिर अपने हाथ में पकड़ी सूर्य तलवार को शलाका की अग्नि तलवार से छुआ दिया।

जैसे ही दोनों तलवारों ने एक दूसरे को स्पर्श किया, एक झटके के साथ दोनों तलवारें आपस में जुड़कर एक हो गईं।

अब वह तलवार कुछ ज्यादा ही लंबी हो गई और उसकी चमक थोड़ी और बढ़ गई, पर अब शलाका ने सुयश के हाथ से वह तलवार ली और एक तेज आवाज करती हुई उस काले गोले से जा टकराई।

सूर्याग्नि के काले गोले से टकराते ही काला धुंआ फिर से वातावरण में बिखरने लगा, पर इस बार सूर्याग्नि ने उस काले धुंए को पूरी तरह से पी लिया। देखते ही देखते वह पूरा काला गोला सूर्याग्नि में समा गया।

यह देख सूर्यांश ने खुश होकर एक जोर का जयकारा लगाया- “इसी बात पर बोलो मम्मी-पापा की जय।”

सूर्यांश के शब्द सुन शलाका और सुयश के चेहरे पर एक मुस्कान आ गई, पर वह मुस्कान ज्यादा देर नहीं रही, क्योंकि उस काले गोले को समाप्त होते देख उस सर्पमानव ने अपनी पूंछ से सूर्यांश पर हमला बोल दिया।

सर्पमानव की पूंछ अब किसी सर्प की तरह हवा में लहरा कर सूर्यांश पर हमला कर रही थी, जिससे सूर्यांश इधर-उधर उछल कर बचने की कोशिश कर रहा था, पर जब भी सूर्यांश उस सर्पमानव पर हमला करता, सर्पमानव की पूंछ किसी कवच की तरह सर्पमानव के शरीर के चारो ओर लिपट जा रही थी और सूर्यांश का हर वार उस सर्पमानव की पूंछ पर बेअसर साबित हो रहा था।

यह देख शलाका उस सर्पमानव की ओर लपकी। शलाका को अपनी ओर आता देख सर्पमानव ने अपनी पूंछ को अपने शरीर के चारो ओर लपेट लिया।

पर शलाका के तलवार के वार ने उस सर्पमानव को उसकी पूंछ सहित बीच से चीर डाला।

एक पल में ही वह सर्पमानव मरकर समुद्र में जा गिरा। सर्पमानव को मरते देख चारो ओर घूम रहे पुलिस वालों ने राहत की साँस ली। अब उनकी नजरें सुयश, शलाका और सूर्यांश की ओर थीं।

सभी को अपनी ओर देखते पाकर शलाका ने सुयश व सूर्यांश का हाथ पकड़ा और एक तेज रोशनी बिखेरती हुई हवा में कहीं गायब हो गई?

उधर उस सर्पमानव के मरने के बाद लिबर्टी स्टेट पार्क में, इधर-उधर छिपे कुछ टूरिस्ट अपने-अपने स्थानों से निकलकर बाहर आ गये। सभी का ध्यान उस पार्क में हुई टूट-फूट की ओर था।

तभी एक 8 वर्षीय बालक अपने माता-पिता को ढूंढता हुआ, धीरे-धीरे चलकर उस टूटी हुई घड़ी के स्थान पर जा पहुंचा।

घड़ी में समाई सूर्यांश की समय शक्ति की वह नीली ऊर्जा अभी भी अपनी चमक बिखेर रही थी। यह देख उस बालक ने आगे बढ़कर उस घड़ी को स्पर्श कर लिया।

जैसे ही उस बालक ने उस घड़ी को स्पर्श किया, विद्युत का एक तेज झटका लगने की वजह से वह बालक उछलकर कुछ दूर जा गिरा।

यह देख पीछे से आ रही उस बालक की माँ के मुंह से एक जोर की चीख निकल गई- “गिरोऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽट।”

अब वह भागकर गिरोट के पास पहुंच गई और उसे उठाकर देखने लगीं- “गिरोट तुम ठीक तो हो ना? तुम्हें कहीं चोट तो नहीं आई?”

अपनी माँ की आवाज सुन गिरोट ने अपनी आँखें खोल दीं- “मैं ठीक हूं माँ, मुझे कुछ नहीं हुआ?”

गिरोट को सही सलामत देखकर गिरोट की माँ खुश होकर गिरोट को लेकर उसके पिता को ढूंढने चल दी, पर गिरोट की आँखों में इस समय एक नीली चमक दिखाई दे रही थी, जो कि उसका भूत, भविष्य और वर्तमान सभी कुछ बदलने वाली थी, पर गिरोट स्वयं भी इस ‘समय शक्ति’ से अंजान था, वह तो इस समय बस अपनी माँ के मिल जाने पर खुश नजर आ रहा था।

◆ ◆ ◆

प्रश्नावली

दोस्तों जैसा कि आप देख रहे हैं कि यह कथानक बहुत तेजी से बढ़ता जा रहा है और हर पेज पर आपके दिमाग एक नया प्रश्न खड़ा करता जा रहा है। प्रश्नों की संख्या अब इतनी ज्यादा हो चुकी है कि अब वह मस्तिष्क में एकत्रित नहीं हो पा रहे हैं। तो क्यों न इन सारे प्रश्नों को एक जगह पर एकत्रित कर लें -

1) पंचशूल का निर्माण किसने और क्यों किया था?

2) मेलाइट का ड्रैंगो से क्या रिश्ता था?

3) क्या था फेरोना ग्रह के जनक, पेन्टाक्स का रहस्य?

4) एण्ड्रोनिका में जाने के बाद धरा और मयूर का क्या हुआ?

5) महावृक्ष के स्वप्नतरु में क्या और भी रहस्य छिपे थे?

6) क्या मुफासा और कागोशी को सच में कलाट ने मारा था?

7) कौन था जैगन का गुरु कुवान? क्या मकोटा को वुल्फा उसी से मिला था?

8) तीसरे पिरामिड में कुवान की मूर्ति के नीचे खड़े निष्क्रिय जीव योद्धा कौन थे?

9) क्या मकोटा सुरंग के रास्ते तिलिस्मा में प्रवेश कर सका?

10) क्या था उस रक्त भैरवी की डिबिया के अंदर, जिसे नीलाभ ने हनुका को दिया था?

11) क्या नीलाभ महादेव के अन्य रुपों से आशीर्वाद ले पाया?

12) क्या था नीलाभ के रक्त से बनी चिड़िया नीलिमा का रहस्य?

13) ज़ेनिक्स ने संरक्षिका के बारे में अभी तक ओरस को क्यों नहीं बताया था? क्या संरक्षिका में भी कुछ रहस्य छिपे थे?

14) क्या एलात्रा, एलनिको और ओलैनो के मरने के बाद एंड्रोवर्स पावर और खतरनाक हो गये?

15) शलाका की अति आधुनिक कंप्यूटर आर्ची का निर्माण किसने किया था?

16) क्या शलाका का आर्केडिया यान, शलाका के पिता का था? कहां था इस समय शलाका का पिता?

17) क्या कैस्पर, मेरोन और सोफिया को हेडिस की कैद से छुड़ाने अंडरवर्ल्ड जा पाया?

18) क्या कैस्पर का सत्य जानने के बाद जीयूष ने किसी प्रकार से कैस्पर की मदद की?

19) क्या कैस्पर की बताई तैयारियों को वारुणि पूरा कर पाई?

20) क्या कैस्पर और वारुणि सभी ब्रह्मांड रक्षकों को संगठित कर पाये?

21) वुल्फा के मरने के बाद मकोटा ने क्या किया?

22) विद्युम्ना का क्या हुआ? क्या विद्युम्ना अपना बदला लेने के लिये दोबारा आई?

23) अगर ब्रूनो ही ड्रैंगो था? तो फिर लैडन नदी के अंदर सो रहा ड्रैंगो कौन था?

24) साफ दिख रहा था कि ज़ेनिक्स कैश्वर के साथ है, तो क्या वह ओरस से भी झूठ बोल रही थी? ज़ेनिक्स आखिर ऐसा क्यों कर रही थी?

25) क्या कैश्वर अपने नये शरीर में प्रवेश करने के बाद और भी खतरनाक हो गया?

26) क्या ऐमू को कभी अमरकथा का भान हो पाया?

27) क्या वेगा, कलाट और युगाका नकली वीनस को पहचान सके?

28) भविष्य की जेनिथ, ओरस, सुयश और तौफीक को क्यों नहीं जानती थी?

29) क्या वेदांत रहस्यम् में अभी और भी रहस्य छिपे थे? जिन्हें अभी शलाका देख नहीं पाई थी।

30) ज़ेनिक्स ने कैश्वर के माध्यम से फेरोना ग्रह पर संदेश क्यों भिजवाया था?

31) कैस्पर ने छिपकर शैफाली को कैसा प्लान बताया था?

32) मेघवर्ण और लावण्या का क्या हुआ?

33) क्या माया की दी हुई पुस्तक देवयुद्ध से सीखकर वारुणि अपनी तैयारियां पूरी कर सकी?

34) क्या वारुणि, शलाका को व्योम और त्रिकाली से मिला सकी?

35) नीलाभ के शरीर में वास करने वाली निकुंभ नाम की नीली शक्ति और नीलपंख कौन हैं?

36) जेनिथ के घर के पास पहरा दे रहा गार्ड और उसके घर का रंग अचानक से कैसे बदल गया था?

37) भविष्य की जेनिथ ने अपने कमरे में लगी तस्वीरों पर क्रॉस का निशान क्यों लगा रखा था?

38) ओरस भविष्य में जाकर कुछ ही घंटों में 1 वर्ष 2 महीने आगे कैसे चला गया था?

39) क्या रोजर को जो हेयर क्लिप अमारा ने दी थी, उसमें भी कुछ रहस्य छिपा था?

40) न्यूयार्क के पार्क में जल रही एटर्नल फ्लेम में क्या भविष्य में जाने का रास्ता छिपा था?

41) वीनस का अपहरण करने वाली वह काँच की तितली कौन थी? और उसने वीनस का अपहरण क्यों किया था?

42) आकृति के चक्र का क्या रहस्य था? क्या आकृति के पास और भी शक्तियां थीं?

43) कौन था नोवान? और वह ज़ेनिक्स व गिरोट को लेकर कहां गया?

44) क्या था नोवान के फीनीक्स पक्षी का रहस्य?

45) निम्फिया महल में हिरनियों की सींघों पर रखा वह सुनहरा रत्न कैसा था?

46) निम्फिया महल में मेलाइट कैसे पहुंच गई? क्या वही रोजर को स्क्रीन के माध्यम से सभी रहस्यों के बारे में बता रही थी?

47) क्या फ्यूट्रान कार को सच में आर्ची ने बनाया था?

48) सूर्यांश की समय शक्ति का क्या रहस्य था? क्या गिरोट की रचना समयचक्र, असल में सूर्यांश की शक्ति थी?

49) कैसा था तिलिस्मा का आगे का मायाजाल? क्या वह आगे और कठिन होता गया?

50) क्या तिलिस्मा में घुसे सभी लोग तिलिस्मा को पार कर काला मोती प्राप्त कर सके?

दोस्तों ऐसे ही ना जाने कितने सवाल होंगे जो आपके दिमाग में घूम रहे होंगें? दोस्तों इन सभी अनसुलझे सवालों के जवाब पेज की कमी के कारण, हम इस पुस्तक में नहीं दे पा रहे हैं। तो इंतजार कीजिए हमारे इस उपन्यास के अगले एवं आखिरी भाग का जिसका नाम है-

"देवयुद्ध- महासंग्राम गाथा"

जिसमें हम आपको ले चलेंगे, एक ऐसे युद्धस्थल पर, जहां पृथ्वी पर छिपी अनेकों दिव्य शक्तियों आपस में टकराने वाली हैं। यह एक ऐसा देवयुद्ध होगा, जिसे आप सदियों तक भूल नहीं पायेंगे।

इस उपन्यास के बारे में अपने अमूल्य सुझाव हमें अवश्य भेजें।

मेल आई डीः
shivendra.suryavanshi2@gmail.com

फेसबुक पेजः
@shivendrasuryavanshitheuthor

दोस्तों इस पुस्तक को लिखने में बहुत मेहनत और शोध लगा है। अगर आपको यह पुस्तक अच्छी लगी, तो कृपया इस पुस्तक को रिव्यू या रेटिंग देना ना भूलें। आपका यह छोटा सा प्रयास मुझे और अच्छा लिखने के लिये प्रेरित करता रहेगा।

आपका दोस्त

शिवेन्द्र सूर्यवंशी

◆ ◆ ◆

लेखक के बारे में

शिवेन्द्र सूर्यवंशी

“कृति का संकलन हूं, नये शब्दों का संचार हूं मैं,
अनकही गाथा हूं, या मस्तिष्क का विचार हूं मैं,
मेरे कथनों की कल्पना का सागर असीम है,
लफ्जों में बिखरी हुई, वीणा की झंकार हूं मैं,
मत दीजिये मेरे अलफाजों को पंक्तियों की चुनौती,
जो रुह को महका दे, फजा में बिखरी वो बयार हूं मैं,
मेरा वजूद छाया है अनंत ब्रह्मांड की गहराई में,
शिवेन्द्र’ हूं मैं, किताबों में सिमटा संसार हूं मैं”

दोस्तों इन्द्रधनुष के रंगों की मांनिद होती है एक लेखक की रचनाएं। जिस प्रकार इन्द्रधनुष में सात रंग होते हैं, ठीक उसी प्रकार लेखक की रचनाओं में भी सात रंग पाये जाते हैं। हर रंग अपने आप में एक अलग पहचान रखता है। एक उच्चस्तरीय लेख लिखने के लिए सबसे पहले एक सम्मोहक कथानक की आवश्यकता होती है, फिर इसके एक-एक पात्र को मनका समझकर माला में पिरोया जाता है, जिससे पाठकों को हर एक पात्र के जीवंत दर्शन हो सके। फिर कल्पना के असीम सागर में डुबकी लगाकर मोतियों की तरह एक-एक शब्द को चुनकर उनके भावों को अभिव्यक्त करना पड़ता है। तब कहीं जाकर तैयार होती है एक लेखक की रचना।

दोस्तों मेरा नाम शिवेन्द्र सूर्यवंशी है। आपके लिए शायद यह लेखक व इसकी लेखनी नयी है। पर यह कलम आज से लगभग 25 वर्ष पहले से निरंतर रात की तन्हाइयों में कोरे कागज पर एक अनकही दस्तक देती चली आ रही है। यह अनकही दस्तक “रिंग ऑफ़ अटलांटिस” नामक एक कथा श्रृंखला का रुप लेकर अब आपके समक्ष है। यह मेरा वादा है कि इस कथा श्रृंखला की हर एक पुस्तक अपने आप में अद्वितीय होगी।

इस श्रृंखला की छठी पुस्तक काला मोती आपके हाथ में है। इस श्रृंखला का आखिरी भाग देवयुद्ध 31 मार्च 2022 को प्रकाशित होगा।

दोस्तों इस किताब को लिखने में बहुत समय और मेहनत लगी है। इसे पढ़कर कृपया रिव्यू के माध्यम से अपने विचार जरुर व्यक्त करियेगा।
हमारी मेल आई डी है

मेल आई डीः shivendra.suryavanshi2@gmail.com
फेसबुक पेजः @shivendrasuryavanshitheauthor